नीराजन

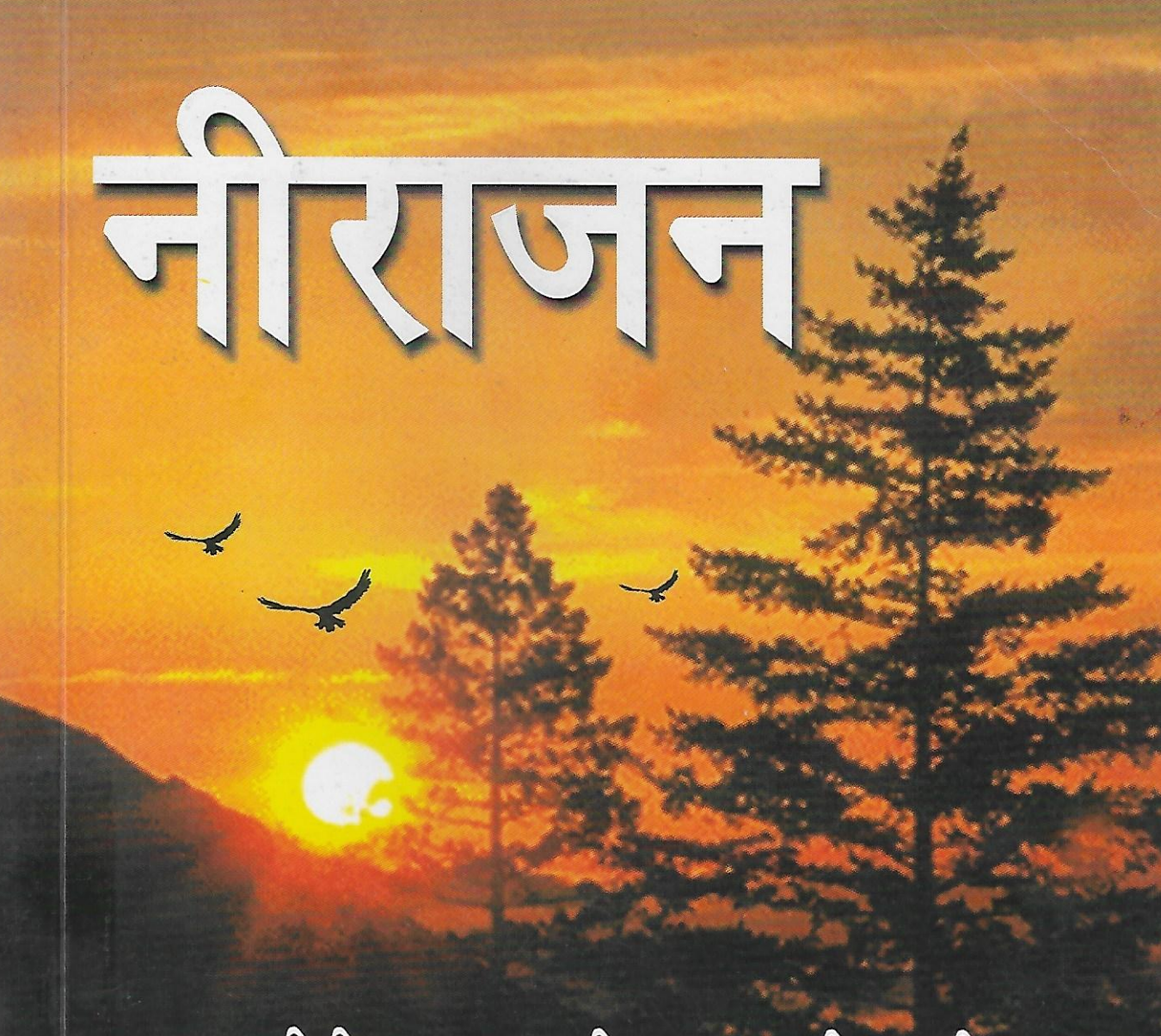

नयन छोड़े स्वप्न ने, खग ने बसेरा

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर
सत्र: २००३-२००४

आराध्या

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला, या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा, या श्वेत पद्मासना।।
या ब्रह्माऽच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

नीराजन

पं० दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर

वार्षिक पत्रिका : २००३ - २००४

संरक्षक
श्री ओमशंकर त्रिपाठी

संपादक
श्रीमती शारदा राव
(अंग्रेजी प्रभाग)

संपादक
श्री दुर्गेश वाजपेयी
(हिन्दी प्रभाग)

हमारा साध्य

प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल,
प्रबल आत्मविश्वासयुक्त बौद्धिक
क्षमता एवं निस्सीम भाव संपन्ना
मनःशक्ति का अर्जन कर,
अपने जीवन को निस्पृह भाव
से भारत माँ के चरणों में
अर्पित करना ही हमारा परम
साध्य है ।

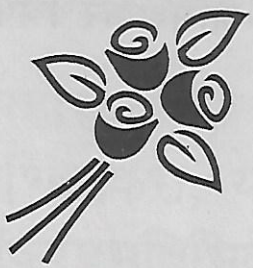

अनुक्रम

1.	सम्पादकीय (अपनी बात)		7
2.	वार्षिक आख्या - 2002-2003	- ओमशङ्कर, प्रधानाचार्य	9
3.	अब व्यर्थ मुझे दहलाना	- ओमशङ्कर त्रिपाठी	14
4.	सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'	-	16
5.	उत्कंठा, योजना, श्रम तथा उल्लास का उत्सव : वार्षिकोत्सव	नीराजक	19
6.	पं० दीनदयाल उपाध्याय जी का सम्पूर्ण जीवन वृत्त	- निखिल श्रीवास्तव	21
7.	औरों की दृष्टि में पं० दीनदयाल उपाध्याय	- अनिमेष द्विवेदी	24
8.	राष्ट्र के स्वरूप पर दीनदयाल जी का चिन्तन	- अर्पित शिवहरे	27
9.	महर्षि पाणिनिः	- शीतांशु तिवारी	30
10.	समयस्य सदुपयोगः	- निखिल श्रीवास्तव	30
11.	किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या	- कुशाग्र कृष्णन	31
12.	पुण्यसलिला भागीरथी	- मृत्युंजय कटियार	32
13.	शीतयुद्ध और अन्तरिक्ष प्रतिस्पर्द्धा	- कुमार गौरव	33
14.	पर्यावरण का बचाव	- भालेन्दु प्रताप सिंह	35
15.	विद्यार्थी कैसा हो ?	- राजगौरव कटियार	36
16.	ब्लैक होल (कृष्ण गुहा)	- अमित कुमार चौधरी	37
17.	परोपकारः	- राजगौरव कटियार	37
18.	दहेज प्रथा : सामाजिक दोष	- अमित कुमार गौतम	38
19.	विवेकानन्द के जीवन पर माँ शारदा का प्रभाव	- रवि सिंह	39
20.	मंगलग्रह	- अमित कुमार चौधरी	40
21.	सी०एन०जी० क्या है ?	- सूरज पटेल	41
22.	सकारात्मक सोच की महत्ता	- सूरज पटेल	41
23.	शिष्टाचार	- प्रशांत पाण्डेय	42
24.	आतंकवाद	- विश्वास गुप्त	42
25.	सफलता क्या है ?	- सौम्यशील सिंह	43
26.	आजाद कौन है ?	- सौम्यशील सिंह	44
27.	जैसी करनी वैसी भरनी	- प्रफुल्ल सचान	45
28.	भ्रष्टाचार	- सुयश मधुर दीक्षित विवेक सिसौदिया	47
29.	धूमकेतु	- अक्षय यादव	48
30.	मौन का महत्त्व	- अनिल मौर्य	48
31.	मोह के दुष्परिणाम	- शशांक तिवारी	49
32.	हिन्दू स्वराज्य का अन्तिम दीपक 'शिवाजी'	- जयंत यादव	49
33.	मेरी राज्य स्तरीय बाक्सिंग यात्रा	- दिलीप कुमार	50

34.	ईश्वर मुझको फेल न करना	- अर्पित पोरवाल	51
35.	शिक्षक	- अविनाश अवस्थी	52
36.	ये नेता हैं भाई	- मृत्युञ्जय कटियार	53
37.	अहंकार	- अभय प्रताप सिंह	54
38.	बचपन	- प्रशान्त श्रीवास्तव	55
39.	जंगल में क्रिकेट	- क्षितिज मिश्र	56
40.	हिन्दी का अपमान	- शिवम शर्मा	57
41.	वीरप्पन (हास्य कविता)	- शशांक सुनार	58
42.	कहानी आविष्कारों की	- प्रशान्त सचान	59
43.	सफलता का रहस्य	- आनन्द राज सिंह	60
44.	दूरदर्शन मानव विकास में बाधक	- आलोक शुक्ल	61
45.	मेरे जीवन का अविस्मरणीय क्षण	- शशांक यादव	62
46.	बालक जार्ज की परोपकारिता व सत्यवादिता	- कुशाग्र कृष्णन्	63
47.	नर-पिशाचों की नृशंसताएँ	- मुकेश पटेल	64
48.	क्या आप जानते हैं ?	- शशांक	65
49.	दूरदर्शन : शारीरिक विकास में बाधक	- अभय प्रताप सिंह सेंगर	66
50.	बकरे की भूख	- आयुष तिवारी	67
51.	चमत्कारी बाबा लक्ष्मणदास जी	- जयन्त यादव	68
52.	हमारे विद्यालय में श्री प्रेमभूषण जी	- कुलदीप यादव	69
53.	कम्प्यूटर युग में ब्रेल लिपि	- आशीष वर्मा	69
54.	खुदी को कर बुलन्द इतना - - -	- शौर्यजीत सिंह	70
55.	जीवित जीवाश्म (कल्पनाधृत)	- प्रशान्त पाण्डेय	70
56.	स्वर्ग का सपना	- गौरव अग्निहोत्री	71
57.	नमक औषधि के रूप में	- ऋषि द्विवेदी	72
58.	पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता 2003	-	73
59.	गाय शब्द से बने अनेक शब्द	-	73
60.	शहीद रामप्रसाद बिस्मिल	- निशीत कुमार	74
61.	सफलता के रहस्य	- निखिल श्रीवास्तव	76
62.	मेहनत का रंग	- आशीष यादव	79
63.	विश्व के कुछ खास नगरों, देशों की उपाधियाँ	-	80
64.	कठिन जीवन का सहज अभ्यास : शिविर	- प्रत्यूष प्राञ्जल	82
65.	भारतीय संस्कृति	- सोमनाथ सिंह	83
66.	देव और दानव	- उदित पाण्डेय	84
67.	भारत में बाल श्रम	- सात्विक	85
68.	मान्यताएँ एवं वैज्ञानिक आधार	- महेन्द्र कुमार पाल	86
69.	संस्कृत सम्पर्क-भाषा भवितुं शक्या	- अखिल कुमार त्रिपाठी	88
70.	सुख और दुःख	- अनिल कुमार	90

71.	सिद्धान्तनिष्ठ चन्द्रशेखर आजाद	- शशांक पाण्डेय	92
72.	मन के जीते जीत ...	- आशीष पाण्डेय	93
73.	भारतीय अध्यात्म की प्रस्तावना	- मृदुल मिश्र	95
74.	संयंत्र वैमानिकी : एक शताब्दी और वैमानिकी का भविष्य	-	96
75.	ज्ञान-सूत्र	- आनन्द बाबू	98
76.	तुलसी का भक्ति भाव	- आलोक मिश्र	99
77.	हमारी मनाली यात्रा	- ऋतुपाल	101
78.	परोपकार	- संजीव कुमार	104
79.	पूरा इतिहास बदल देंगे	- दीपक सिंह चौहान 'अंगार'	105
80.	आचार्य की महत्ता	- नितिन कुमार	106
81.	मित्रता क्या है	- उदित कुमार पाण्डेय	107
82.	वृक्षारोपण	- शिवम द्विवेदी	108
83.	जीवन	- अनिल कुमार	109
84.	नैतिकता का क्षरण हुआ है	- निशान्त आनन्द	110
85.	माँ बुला रही है...	- नमन चतुर्वेदी	111
86.	रहनुमा हमारे	- अमिय आनन्द पाण्डेय	112
87.	मुशर्रफ और बुश	- ऋषि द्विवेदी	113
88.	दीनदयाल जी की पावन स्मृति में	- निखिल श्रीवास्तव	114
89.	बदल दो राह	- गौरव कृष्ण	115
90.	नेता और ज्योतिषी	- अजय सिंह यादव	116
91.	विज्ञान से सम्बन्धित दोहे	- अखिल मिश्र	117
92.	कल्पना की स्मृति में	- अंकित झा	118
93.	तीन की महिमा	- दिलीप गुप्त	119
94.	विदेशी का स्थान	- अनुराग मिश्र	119
95.	एक नया इतिहास लिखेंगे	- विकास शर्मा	120
96.	सीमा पर लड़ रहे जवान	- संकल्प त्रिवेदी	120
97.	मेरा विद्यालय	- एक नीराजक	121
98.	आशा	- आनन्द शाक्य	121
99.	नव समाज निर्माण करेंगे	- अंकित शर्मा	122
100.	मैया मोरी मैं रेल टिकट नहिं लायो	- निखिल श्रीवास्तव	122
101.	कृष्ण लीला	- आलोक शुक्ल	123
102.	प्रभात वर्णन	- आलोक शुक्ल	124
103.	'प' से पढ़ाई	- शीतांशु तिवारी	124
104.	कश्मीर	- सुमित	125
105.	जग की शान भारत देश	- आशीष पाण्डेय	126
106.	प्रेरक वाक्य	- प्रशान्त पाण्डेय	127
109.	संस्कृत वाङ्मय के कवि व लेखक	- भालेन्दु प्रताप सिंह	127

English Section

1.	Editorial	-	Sharda Rao	128
2.	Dr. Rajendra Prasad The first President of India	-	Abhishek	129
3.	Swami Vivekanand Urge the Surge of India	-	Ashish Verma	130
4.	Best Use of Time	-	Kushagra Krishnan	131
5.	Hymans	-	Pushkar Srivastava	131
6.	Tears	-	Arpan Srivastava	132
7.	Mother	-	Arpan Srivastava	132
8.	Where there is a will there is a way	-	Sant Mani	133
9.	2nd World War	-	Saurabh Dubey	134
10.	Bharadwaja	-	Drishya Muni Chakma	135
11.	Relation between India & Pakistan	-	Pankaj	135
12.	The Memoures of Pt. Deen Dayal Ji	-	Anuraj Mishra	136
13.	Our India	-	Rishabh Kishore Suryvanshi	136
14.	Health is Wealth	-	Sanjeev Kumar	137
15.	The Gifts of Science	-	Sanjeev Kumar	137
16.	Smile	-	Saumya Sheel Singh	138
17.	A Cricket Match	-	Yogendra Singh	139
18.	Child is the Father of man	-	S.M. Gaurav	140
19.	Desire Veils Wisdom	-	Deepak Singh Chauhan	141
20.	Good Boys are those	-	Rishi Kumar Rajput	142
21.	Science the enemy of man	-	Manas Bharadwaj	143
22.	If I were the Prime Minister	-	Prasant Kumar	143
23.	Tell me God	-	Saurabh Singh	144
24.	Thoughts Culture	-	Gaurav Krishna	145
25.	Poem ("Perfect Silence')	-		145
26.	Blessings of Self-Control	-	Anurag Rajput	146
27.	Mother Nature	-	Nikhil Srivastava	147
28.	Value of Plants	-	Nikhil Srivastava	147
29.	Trust	-	Saumya Sheel Singh	148
30.	God Helps Those who help themselves	-	Pradeep Tripathi	149
31.	Just Children	-	Raj Gaurav	149
32.	Should Students Take Part in Politics ?	-	Tarun Agrawal	150
33.	Pearl of Wisdom	-	Ashish Pal	151
34.	Thanks to	-	Raman Priyadarshi	151
35.	My Dream	-	Nikhil Srivastava	152
36.	हाईस्कूल परीक्षा 2004 में प्रविष्ट छात्रों की सूची	-		153
37.	इण्टरमीडिएट परीक्षा 2004 में प्रविष्ट छात्रों की सूची	-		157
38.	हमारा आचार्य परिवार	-		160

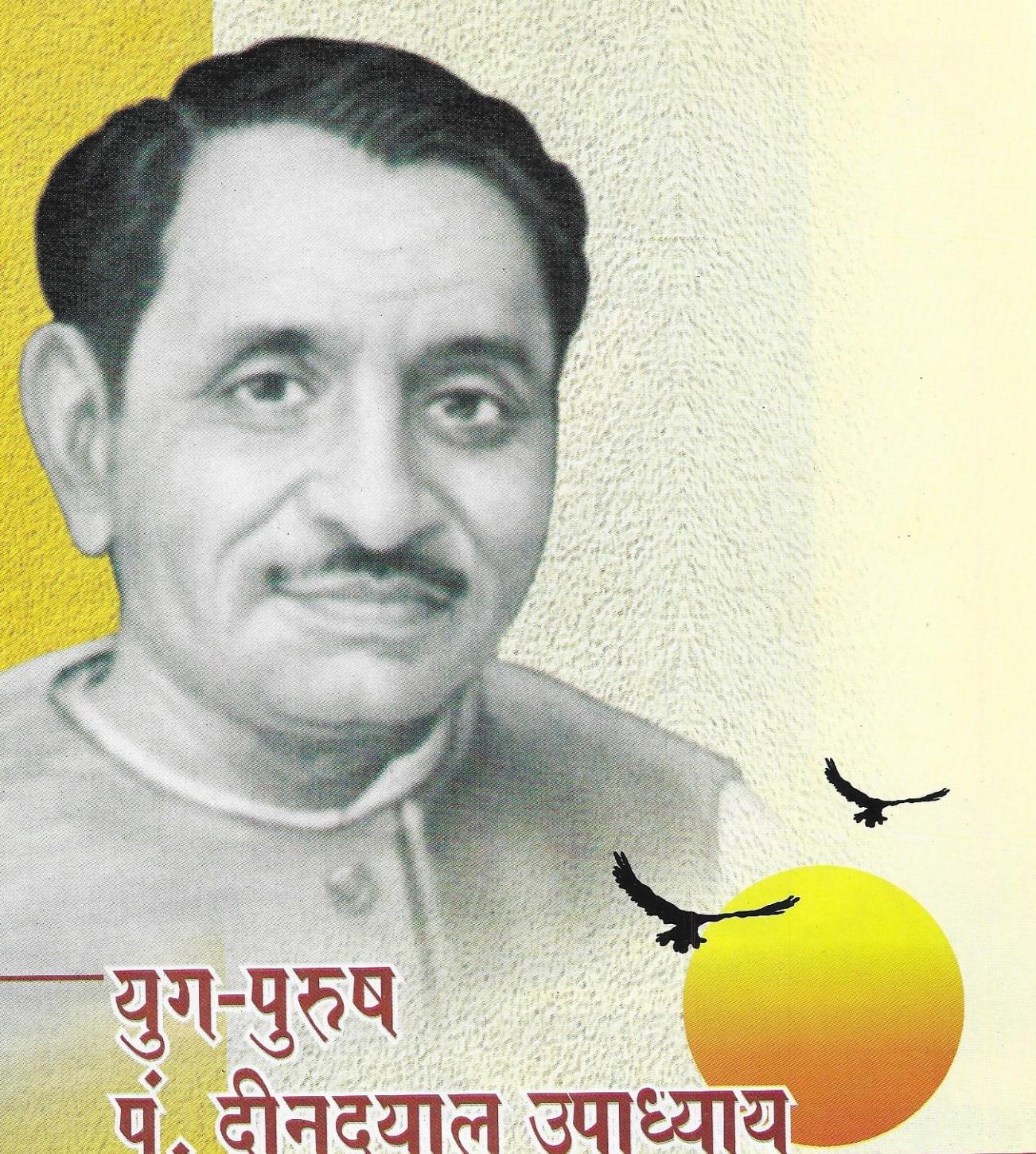

युग-पुरुष
पं. दीनदयाल उपाध्याय

विद्यालय के इस मधुवन के, रंग-रूप रस गंध तुम्हीं हो।
नीराजक नत-शिर होते हैं, भावों के अनुबंध तुम्हीं हो।

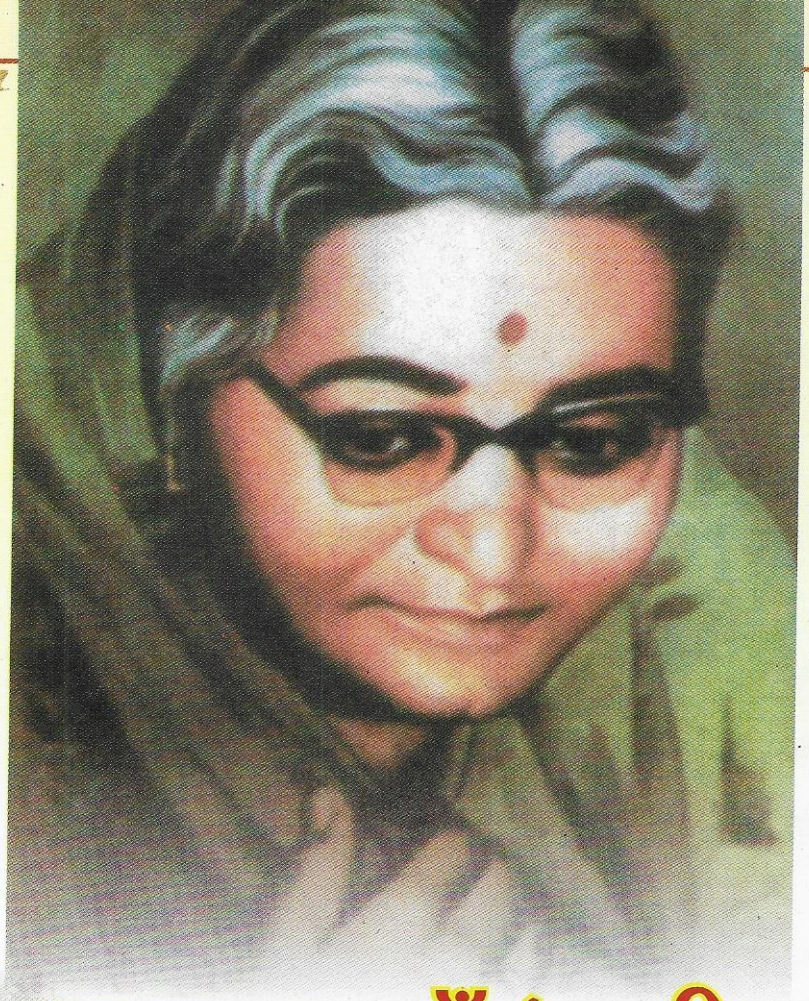

वत्सला माँ 'बूजी'

आपने ही विद्यालय को मूर्त रूप दिया

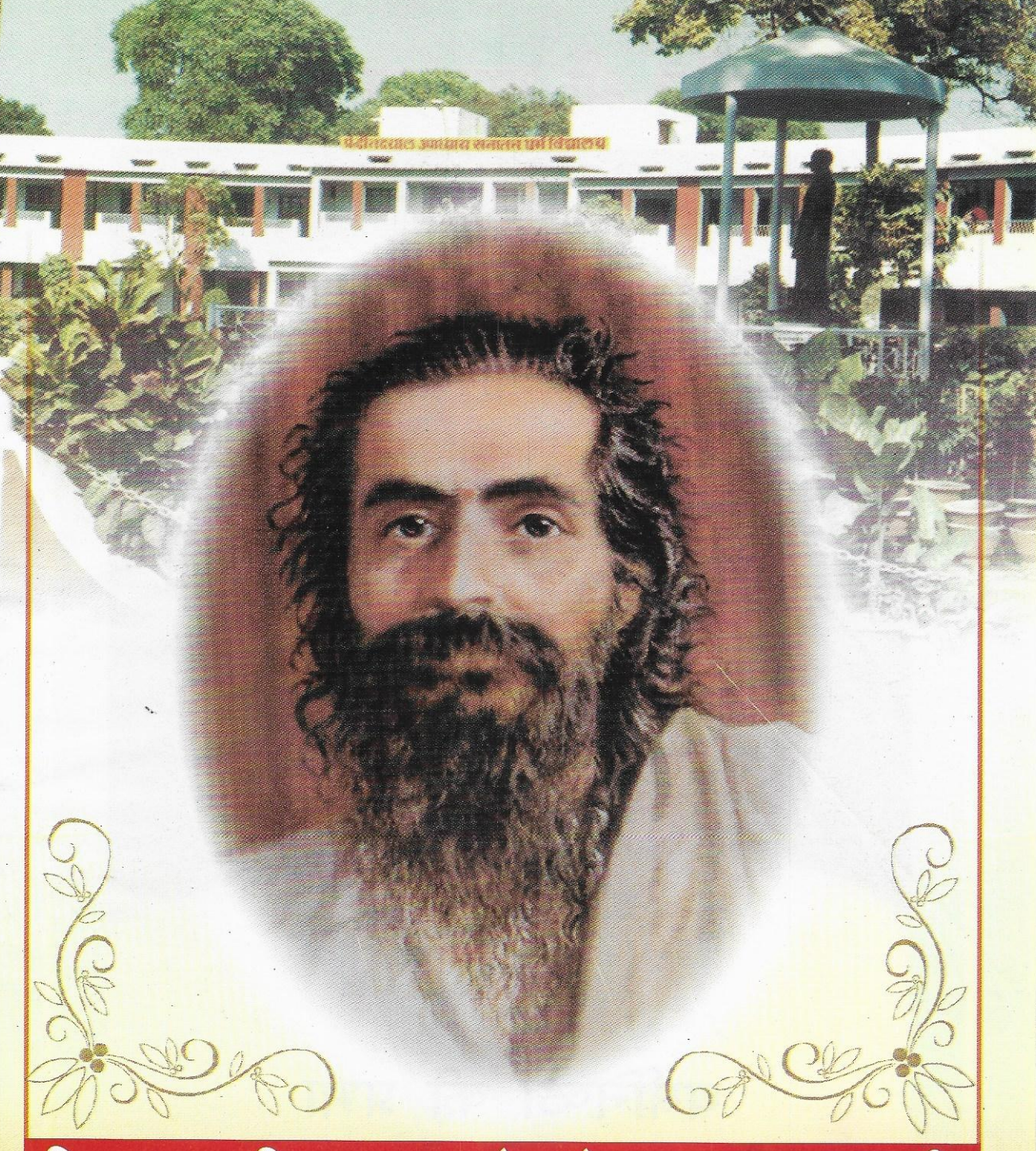

विद्यालय का शिलान्यास करने वाले परम पूज्य '''गुरु जी'

विद्यालय की नींव रख, धन्य कर गये धाम।
नीराजक वन्दन करें, जपें तुम्हारा नाम।।

ब्रह्मलीन श्री भाउराव देवरस

धर्मनिष्ठा की प्रभा
हे भावनाओं के सुमन
ओ वशी! युग के तपस्वी
शत नमन, शत शत नमन।

सम्पादकीय

अपनी बात

किसी शायर ने लिखा है - ''कौन मानेगा सबसे कठिन है सरल होना ।'' सौ प्रतिशत सत्य है यह । कठिन हो जाना सरल है परन्तु सरल और सहज हो जाना कठिन है । कठिन इसलिये भी है क्योंकि इसमें अहंकार मरता है और अहंकार को कोई मारना नहीं चाहता । हम अपने अहंकार को ही अपनी पहचान मान बैठते हैं । ''मैं ये हूँ, मैंने यह किया, मुझसे ही यह सब चलता है'' इत्यादि भाव अहंकार की शाखाएँ प्रशाखाएँ हैं ।

हम 'कल्याण' जैसी धार्मिक पुस्तकों में कुछ चित्र देखते हैं जिनमें कहीं किसी ऋषि का शान्त सुन्दर आश्रम होता है । हरा भरा उपवन होता है, किसी वट-वृक्ष के नीचे ऋषि ध्यान मग्न हैं और आश्रम के सरोवर में शार्दूल और सुरभि एक साथ जलपान कर रहे हैं । हम आश्चर्य करते हैं कि ऐसा क्यों होता है, ऐसा भला कैसे संभव है ? उसका उत्तर है कि वास्तव में ऋषि के हृदय से, मन और वाणी से प्रेमभाव सतत् निसृत होता रहता था जिससे वे सदा ही सहज भाव में अवस्थित रहते थे । व्यापक तथा निष्काम प्रेमभाव जब जीवन का स्थाई भाव हो जाता है तो वह ही व्यक्ति को 'सहज' बना देता है । प्राचीनकाल में उन ऋषियों के प्रेमभाव तथा सहजभाव की तरंगें पूरे परिवेश को प्रभावित करती थीं जिसके कारण हिंसक पशु भी अपनी कुप्रवृत्ति का परित्याग कर देते थे ।

संसार में मनुष्य के चलाए कुछ नहीं चलता है चलाने वाली शक्ति भिन्न है । परमशक्तिशाली है परमात्मा । सारी श्रेष्ठता मेरे राम में ही तो निहित है जो शबरी के जूठे बेर खाते थे, निषादराज को गले लगाते थे- वह भी कोई आडम्बर, प्रदर्शन के लिये नहीं । अंतःकरण से सहज स्फूर्त था वह प्रेमभाव ।

मनुष्य तो निमित्त मात्र है, करवाने वाले तो परमात्मा हैं - वे आज तुम्हारे माध्यम से कुछ करवाते हैं तो कल किसी और के माध्यम से यही काम करवायेंगे । समर्थ गुरु रामदास भिक्षाटन करते हुए द्वार-द्वार जाते थे और प्रत्येक द्वार पर आवाज लगाते थे - ''भवति भिक्षां देहि, भवति भिक्षां देहि'' यह सुनकर जब घरों की माताएँ- सुन्दर थाल में बढ़िया बढ़िया सुस्वादु भोजन परोसकर लाती थीं और उन्हें देती थीं तो रामदास अगला चरण कहते थे - ''आम्हीं काय कुणाँ सा खातो, राम आम्हाला देतो'' मराठी में कहे गये इस वाक्यांश का आशय यह है कि - ''हम किसी का क्या खा रहे हैं ? राम हमारा दे रहा है ।'' आज वह

तुम्हारे माध्यम से देता है, कल किसी और माध्यम से देगा, उसकी इच्छा नहीं होगी तो नहीं भी देगा। समर्थ गुरु रामदास उन गृह-माताओं के मन में भिक्षा देते समय उपजे कर्ताभाव, अहंकारभाव को मारने लिये ही ऐसा कहा करते थे।

भगवान श्रीकृष्ण का उपदेश भी यही है कि हम सभी कर्तव्यों का निष्काम भाव से पालन करें और कर्ताभाव से भी मुक्त रहें। कर्ताभाव या कर्तापन से मुक्त होना बड़ी बात है परन्तु परमात्मा के समीप हो जाने का सोपान भी यही है। कवि-वचन इस सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण है - ''लघुता से प्रभुता मिलै प्रभुता से प्रभु दूरि'' यह लघुता जो काम्य है वह ही सहज-भाव है। व्यक्ति की सरलता, सहजता, निश्छल, निष्कपट व्यवहार, मीठी वाणी, कर्ताभाव तथा अहंकार भाव से मुक्त होना ही 'लघुता' है यही सहज भाव है। ऐसे 'लघु' के पास ही 'प्रभु' हैं - प्रभु की कृपा है। जो परमात्मा के जितना निकट पहुँच जाता है वह उतना ही 'सहज' तथा प्रेमयुक्त हो जाता है। इसलिये नीराजन पढ़ने वाले नयी-नवेली उम्र के मेरे प्रिय नीराजको ! यह सब बातें हमारे और तुम्हारे लिये ही हैं। हमको भी यह आत्मसात् करना है और तुमको भी यह समझना सीखना है। परमात्मा का प्रिय बनने के लिये तुम्हें प्रेममय होना होगा। प्रेम तुम्हारा स्वभाव होना चाहिये क्योंकि हमारे श्रीराम प्रेमस्वरूप हैं। यह प्रेम बड़ा पावन और लोकोत्तर है - यह किसी एक के लिये नहीं सभी के लिये चाहिये। जड़-चेतन सभी के लिये। प्रेम तुम्हारा स्वभाव होना चाहिये- जैसे एक जलता हुआ दीपक है। वह प्रकाशमय है। दीपक से प्रकाश झरता है तो क्या किसी एक के लिये झरता है ? वह तो सभी के लिये होता है। जैसे पुष्प से निसृत होती हुई सुगंध, उस पर किसी का पता ठिकाना नहीं लिखा होता, उसके लिये कोई पोस्टमैन भी नहीं आता। सुमन की वह सुगंध तो उठती है मुक्त आकाश में- सभी के लिये परार्थ ही। हम ऐसा हो जाने की परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

अन्त में नीराजन के इस अंक के सम्पादन के लिये मैं आचार्य महानुभावों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। आँग्ल-प्रभाग के सम्पादन में शारदा दीदी का सहयोग श्लाघ्य है। आचार्य श्री बिहारी लाल जी, गया प्रसाद जी, मनोज जी, रामतीर्थ जी, गणेश जी इत्यादि के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूं। सर्वाधिक श्रेय तो मा० प्रधानाचार्य जी को है जिन्होंने इति से आदि तक 'इत्यादि' इसकी चिन्ता की है। मुद्रक महोदय यद्यपि कार्य में 'अपेक्षित त्वरा' से विरक्त रहे हैं तथापि उनका विद्यालय से लगाव प्रशंसनीय है। पत्रिका में सहयोग देने वाले छोटे-छोटे नीराजकों के प्रति भी मैं विशेष स्नेहिल हूँ।

—दुर्गेश वाजपेयी

वार्षिक आख्या - 2002-2003

—ओमशंकर
प्रधानाचार्य

स्थापना -

''तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें न रहें'' का जीवन-मंत्र लेकर चलने वाले इस आर्ष परम्परा के ध्वजवाहक-युग-दधीचि पं० दीनदयाल उपाध्याय ने भारत माता के चरणों में अपना जीवन न्योछावर कर दिया। सामान्य जनमानस के लिए यह वाक्य एक रूढ़ शब्दावली हो सकता है; किन्तु हम उनके वंशज अपनी पूरी आस्था के साथ कहते हैं कि पण्डित जी का जीवन हमारे राष्ट्र की अनुपम थाती है और उनकी साधना देश का जीवन्त इतिहास है।

वास्तव में यह विद्यालय उनके आदर्शों को मूर्त रूप देने का शपथ-पत्र है। इसका एक-एक अक्षर अंकित करने का महत्वपूर्ण कार्य जिन महनीय पुरुषों ने किया, उनमें इस विद्यालय की कल्पना-मूर्ति गढ़ने वाले मौन तपस्वी पूज्य भाउराव, इसकी आधारशिला रखने वाले युगद्रष्टा **परम पूज्य श्री गुरु जी,** भव्य भवन को मूर्त रूप देने वाली त्यागमूर्ति **ममतामयी बूजी** और इसकी कंचन-काया में प्राण भरने वाले निष्काम कर्मयोगी **माननीय बैरिस्टर साहब** सदा ही स्मरणीय रहेंगे।

संवत् 2026 की गुरु पूर्णिमा (18 जुलाई 1970) के पावन पर्व से प्रारम्भ अपना यह विद्यालय आज अपना तैंतीसवाँ वार्षिकोत्सव मना रहा है।

इस विद्यालय के कल्पना-शिल्प का आधार उदात्त भावना तथा प्रारूप जाग्रत विवेक है। हमारा लक्ष्य यह भी है कि जिन देशद्रोहियों के घिनौने षड्यंत्र तथा सत्ता की गर्हित लिप्सा के कारण पण्डित जी की क्रूर हत्या की गयी, उन विषैले विचारों को आमूल समाप्त कर दिया जाये और ऐसे विष-वृक्ष फिर कभी न पनपें, इसकी सुनिश्चित व्यवस्था भी की जाये।

पं० दीनदयाल जी भारत, भारती और भारतीयता के मूर्तिमान स्वरूप थे। इस विद्यालय के प्रयोग और परिणाम उनकी इसी भावना की प्रतिकृति हैं। विद्यालय द्वारा संस्कारित दृढ़ इच्छा-शक्ति सम्पन्न आदर्शप्राण पीढ़ी शनैः-शनैः समाज को अपने अस्तित्व का बोध कराने लगी है। अतः हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ब्रिटिश दासता के काल से चली आ रही पब्लिक स्कूलों की भ्रामक चकाचौंध से सर्वथा अलग यह विद्यालय **भारतीय संस्कारों की पुनर्स्थापना में एक सुस्पष्ट, गतिमान, तेजोदीप्त और प्रभावी उपक्रम है** तथा वर्तमान व्यावसायिक प्रलिप्सु कर्दम में एक उन्नत-अडिग शैल-श्रृंग।

कलेवर -

षष्ठ कक्षा के मात्र 24 छात्रों से प्रारम्भ होकर निरन्तर प्रगति करता हुआ यह विद्यालय आज विज्ञान वर्ग में मान्यता प्राप्त पूर्ण विकसित इण्टरमीडिएट विद्यालय है।

जिस भूमि पर यह विद्यालय स्थित है, वह श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा प्रदत्त है। महामण्डल की इस उदारता का विद्यालय चिर ऋणी रहेगा। प्रारम्भिक अर्द्धचन्द्राकार दुमंजिले भव्य भवन का निर्माण श्रद्धेया बूजी ने अपने नितान्त व्यक्तिगत साधनों से करवाया, जो अपने में एक महिमामय उद्धरण है। आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे इस भवन का विस्तार तथा अन्य भवनों का भी निर्माण होता गया यथा विज्ञान-वीथी, भाउराव-भवन, नरेन्द्र-निवास छात्रावास, प्राचार्य-आवास, माधव-स्मृति क्रीड़ा-परिसर व प्रेक्षागार तथा आचार्य और कर्मचारी आवास आदि।

वर्तमान समय में लगभग 7500 वर्ग फीट का एक भव्य विशालकक्ष निर्माणाधीन है। इसके लिये विद्यालय स्वर्गीय श्री नरेन्द्र मोहन जी का आभारी है कि उन्होंने कृपापूर्वक अपनी सांसद निधि से पच्चीस लाख रुपये का अनुदान देकर विद्यालय परिवार को कृतार्थ किया है।

इस समय षष्ठ से द्वादश तक 7 कक्षाओं के 16 अनुभागों में छात्रों की संख्या 786 है। इनमें से 230 छात्रावासीय हैं जो कि विद्यालय के ऊपरी खण्ड, पीछे भाउराव-भवन तथा नरेन्द्र-निवास में रहते हैं। इनमें उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के साथ ही उत्तरांचल, बिहार, झारखण्ड, बंगाल, मध्यप्रदेश तथा अरुणांचल प्रदेश के छात्र भी हैं, जिनके भोजन, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अनुशासन आदि की चिन्ता विद्यालय-परिसर में ही निवास करने वाले सुयोग्य आचार्यों द्वारा की जाती है। वास्तव में **हमारी अभिलाषा इस विद्यालय को पूर्णरूपेण आवासीय विद्यालय बनाने की है,** जिससे अपना सुचिंतित व्यक्ति-निर्माण का कार्य हम और अधिक प्रभावी ढंग से कर सकें।

विद्यालय में पढ़ाने वाले आचार्यों की संख्या प्रधानाचार्य सहित वर्तमान समय में 27 है। लगभग सभी प्रशिक्षित परास्नातक हैं।

विद्यालय के पास लगभग **एक लाख रु० से अधिक मूल्य की 15000 से अधिक पुस्तकों से सम्पन्न पुस्तकालय** भी है। वाचनालय में 7 दैनिक, 3 साप्ताहिक तथा 10 मासिक पत्र-पत्रिकायें आती हैं। मुख्य समाचार, सुभाषित, सामान्य ज्ञान इत्यादि श्याम-पटों पर लिखे जाते हैं।

इस विद्यालय को शासन द्वारा विशिष्ट विद्यालय के रूप में कुछ विशेषताओं के आधार पर ही मान्यता दी गयी थी, जिनमें **छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान प्रमुख है।** इसी विशेषता के प्रति सचेत रह कर हम विद्यालय के छात्रों का समग्र विकास करने में सफल भी हैं।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

परिषदीय परीक्षाएँ

विद्यालय की दशम कक्षा का प्रथम दल 1975 में तथा द्वादश का प्रथम दल 1981 में उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा में सम्मिलित हुआ। परीक्षा-परिणाम प्रारम्भ से ही अत्युत्तम रहा है। प्रदेश में सर्वोत्कृष्ट परीक्षा परिणामों के आधार पर ही शासन विगत वर्षों से विद्यालय को **इण्टरमीडिएट का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय घोषित कर रहा है। वर्ष 2003 का परीक्षा-परिणाम निम्नांकित है :**

वर्ष - 2003

	दशम	द्वादश
कुल छात्र	136	118
उत्तीर्ण	136	118
न्यायालय में विचाराधीन	—	—
ससम्मान	47	38
प्रथम श्रेणी	86	74
द्वितीय श्रेणी	03	6
तृतीय श्रेणी	00	00
प्रदेश में स्थान	09 (तृतीय, 12वाँ, 12वाँ, 15वाँ, 15वाँ, 21वाँ, 22वाँ, 24वाँ, 24वाँ)	08 (प्रथम, 6वाँ, 14वाँ, 16वाँ, 19वाँ, 20वाँ, 22वाँ, 24वाँ)

अद्यतन समेकित (Cumulative)

	दशम (29 वर्षों का)		द्वादश (22 वर्षों का)	
कुल छात्र	2558	—	2106	—
उत्तीर्ण	2542	99.37	2089	99.19
ससम्मान	0968	37.84	483	22.93
प्रथम श्रेणी	1246	48.71	1242	58.97
द्वितीय श्रेणी	0318	12.43	359	17.05
तृतीय श्रेणी	0010	00.39	05	00.24
प्रदेश में स्थान	105		84	

अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ -

1. उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित प्रदेश स्तरीय संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता में दशम कक्षा के छात्र चि० अखिल त्रिपाठी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
2. राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र नई दिल्ली द्वारा आयोजित 'वैज्ञानिक संभाषण' प्रतियोगिता "संयंत्र उड्डयन, एक प्रवर्तक शताब्दी एवं वैमानिकी का भविष्य" विषय पर बोल कर विद्यालय की कक्षा दशम के छात्र चि० जीत सिंह आर्य ने पूरे देश में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यह छात्र 11 अक्टूबर को दिल्ली में सम्पूर्ण प्रदेश का नेतृत्व करेगा।
3. इण्टरमीडिएट परीक्षा 2003 में चि० शैलेन्द्र केसरवानी तथा चि० नवनीत पाल को कम्प्यूटर विषय में प्रदेश में सर्वोच्च अंक प्राप्त होने पर राज्य विज्ञान केन्द्र ने पुरस्कृत किया।

प्रतियोगी परीक्षाएँ

इंजीनियरिंग मेडिकल तथा प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में विद्यालय के छात्रों की सफलता का गौरवशाली अध्याय भी प्रथम बैच से ही प्रारम्भ हो गया था। गत वर्ष की उपलब्धियाँ इस प्रकार हैं :

जे०ई०ई०/संयुक्त प्रवेश परीक्षा (आई०आई०टी०, मर्चेण्ट नेवी तथा धनबाद खनन महाविद्यालय हेतु) (सी०बी०एस०ई०)	20
यू०पी०सी०ए०टी०/(क्षेत्रीय अभियान्त्रिकी विद्यालय)	75
कुल (इंजीनियरिंग)	95
सी०पी०एम०टी० / संयुक्त चिकित्सा प्रवेश परीक्षा (मेडिकल कॉलेजों हेतु)	08

NDA और CDS के माध्यम से सेना से पहुँचे हुए लगभग 35 सैन्य अधिकारी और संघ लोक सेवा आयोग से चयनित लगभग 20 प्रशासनिक अधिकारी विद्यालय से प्राप्त संस्कारों एवं जीवन के उदात्त आदर्शों का प्रकटीकरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। विशेष बात यह है कि इन सब के विद्यालय से सतत् जीवन्त सम्बन्ध बने हुए हैं।

शिक्षा विभाग द्वारा संचालित 'एकीकृत छात्रवृत्ति' तथा 'राष्ट्रीय प्रतिभा खोज' परीक्षाओं में भी हमारे छात्र कीर्तिमान स्थापित करते आ रहे हैं।

विद्या भारती द्वारा संचालित 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' तथा हिन्दी समिति की 'हिन्दी ज्ञान परीक्षा' में भी अपने छात्र प्रति वर्ष शत प्रतिशत सफलता पाते हैं। श्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामण्डल द्वारा आयोजित मानस तथा गीता परीक्षाओं में अपने विद्यालय को सदैव महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

छात्रवृत्तियाँ

शासन द्वारा स्वीकृत छात्रवृत्तियों का वर्तमान सत्र का विवरण इस प्रकार है-

1.	राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृत्ति	01
2.	राष्ट्रीय योग्यता छात्रवृत्ति	52
3.	एकीकृत तथा अन्य	104

इसके अतिरिक्त हमारे अनेक छात्र अन्य स्रोतों से भी छात्रवृत्ति पा रहे हैं। इन छात्रवृत्तियों के दाता महानुभावों तथा न्यासों/संस्थाओं के नाम निम्नांकित हैं। हम इनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक शिक्षा समिति
श्री जयनारायण चेरिटेबल ट्रस्ट
श्रीमती सरस्वती देवी एवं श्री हरि मोहन गर्ग छात्रवृत्ति
श्रीमती सावित्री अग्रवाल
श्री कन्हैयालाल गोपालदास अग्रवाल
श्री इन्द्रजीत जैन स्मारक छात्रवृत्ति
श्री प्रेम नारायण जी सोमानी
इंडिया जापान सोसाइटी
श्री हरि भार्गव ट्रस्ट
श्रीमती प्रेमा गुप्ता छात्रवृत्ति
श्री सोमनाथ चोपड़ा
तथा पूर्व छात्र चि० प्रवीण भागवत और चि० संदीप मेहरोत्रा।

विद्यालय के पूर्व छात्र स्व० गुरुवर शरण अवस्थी की स्मृति में उत्कृष्ट अभिनेता छात्र को पुरस्कार दिया जाता है। यह स्थायी पुरस्कार उनके पिता डॉ० सन्त शरण अवस्थी ने प्रारम्भ किया था।

पाठ्येत्तर गतिविधियाँ

खेल-कूद व शारीरिक शिक्षा

विद्यालय में शारीरिक शिक्षा की भी व्यवस्थित योजना है। सामूहिकता की भावना विकसित करने हेतु योगासन व समता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही अपने सीमित साधनों में हमने खो-खो, कबड्डी, बॉलीबॉल, टेबिल टेनिस तथा बाक्सिंग जैसे खेलों में पर्याप्त कौशल प्रदर्शित किया है।

विद्यालय में सैनिक शिक्षा को भी महत्त्व दिया जाता है। इस दृष्टि से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन०सी०सी०) की वरिष्ठ तथा कनिष्ठ इकाइयाँ विद्यालय में सफलतापूर्वक चलायी जा रही है। इनके प्रभारी विद्यालय के ही आचार्य हैं।

घर के सुरक्षित व सुविधाभोगी वातावरण से निकलकर छात्र स्वावलम्बन एवं कठोर जीवनचर्या का अभ्यास करते हुए देश का प्रत्यक्ष अध्ययन करें, इस दृष्टि से विद्यालय के छात्र प्रायः प्रतिवर्ष ही देशदर्शन हेतु जाते रहते हैं। इस योजना के अन्तर्गत अपने छात्र देशदर्शन हेतु देश के लगभग सभी कोनों में जा चुके हैं। इस वर्ष भी हमारा एक देशदर्शन दल दिनांक 29 सितम्बर को हिमांचल प्रदेश की यात्रा पर गया था, इस दल में 60 छात्र, 08 अध्यापक तथा 02 कर्मचारियों ने भाग लिया।

नैतिक शिक्षा -

हमारी समय-सारणी में नित्य प्रातः मानस, गीता आदि ग्रन्थों के शिक्षाप्रद अंशों से युक्त प्रार्थना के बाद सदाचार बेला का प्रावधान है, जिसमें पूर्व निर्धारित आचार्य कथा, जीवनी आदि के माध्यम से छात्रों को आदर्श जीवन का पाठ पढ़ाते हैं। छात्रों में सर्वगुण-सम्पन्न व्यक्तित्व की स्थापना के प्रोत्साहन हेतु नियत मापदण्डों पर खरा उतरने वाले सर्वश्रेष्ठ छात्र को विद्यालय-रत्न पुरस्कार दिये जाने की भी योजना है।

समग्र व्यक्तित्व विकास

निर्भीक-सुचारु अभिव्यक्ति, उत्तरदायित्व तथा नेतृत्व भावना छात्रों की मानसिकता का अनिवार्य अंग बने, इस दृष्टि से विद्यालय में तीन संस्थाएँ कार्य करती हैं- अष्टम कक्षा तक बाल-भारती, नवम-दशम में किशोर-भारती और एकादश-द्वादश में तरुण-भारती - जिनके अन्तर्गत छात्र विद्यालय के विविध सामूहिक कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। छात्रावास में भी विभिन्न पदों पर नियुक्त छात्र निर्णय-प्रक्रिया तथा छात्रावास-संचालन में गंभीर भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय के बाहर नगर, जनपद, प्रदेश स्तरों पर आयोजित वाद-विवाद, लेखन, ललित कला प्रतियोगिताओं में विद्यालय के छात्र लगातार भाग लेकर प्रतिष्ठा पाते रहते हैं।

कम्प्यूटर शिक्षण

विद्यालय का कम्प्यूटर-विभाग सुव्यवस्थित और आधुनिकतम सुविधाओं से सुसम्पन्न है। सॉफ्टवेयर के माध्यम से कम्प्यूटरों पर ही पूर्ण अध्यापन तथा स्वनिर्मित सॉफ्टवेयर द्वारा ऑन-लाइन परीक्षा हमारी विशिष्टता है। इसके साथ ही हमने अपने विद्यालय में छात्रों की प्रवेश-प्रक्रिया को भी कम्प्यूटरीकृत कर दिया है। प्रवेश-परीक्षा का परिणाम भी विगत तीन वर्षों से इण्टरनेट पर जारी किया जाने लगा है।

इसके अतिरिक्त हम अन्य संस्थाओं के लिये भी सॉफ्टवेयर का निर्माण कर रहे हैं। दीनदयाल शोध संस्थान, नई दिल्ली तथा आई०आई०टी० कानपुर को भी हमारे इस विभाग ने वेब साइट तथा सॉफ्टवेयर निर्माण में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है।

युग-भारती

बाल, किशोर और तरुण-भारती की श्रृंखला में अगली कड़ी है युग-भारती अर्थात् विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था। जिस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति हेतु इस विद्यालय की स्थापना की गयी थी, उसकी पूर्ति हेतु यह अनिवार्य था कि दशम या द्वादश उत्तीर्ण करने को ही छात्र का विद्यालय के साथ सम्बन्धों की समाप्ति न माना जाये, इसीलिए बहुत पहले ही पूर्व छात्रों की संस्था के रूप में संविधान, कार्यकारिणी इत्यादि के साथ तरुण-भारती की स्थापना हो गयी थी, जो कि अब युग-भारती के नाम से पंजीकृत हो चुकी है। युग-भारती ने अपने शिविरों, ग्राम-सम्पर्क-योजनाओं एवं संचार-साधनों के प्रसार आदि से समाज को अपनी लगन और निष्ठा का परिचय दिया है।

पूर्व छात्रों का विद्यालय से यह जुड़ाव विद्यालय की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है और समाज के लिये एक अनुकरणीय उदाहरण भी।

माँ सुशीला वात्सल्य मंदिर

विद्यालय द्वारा प्रारम्भ हो रहा यह एक पावन प्रकल्प है, जिसका उद्देश्य समाज के सुविधा-वंचित शिशुओं को जीवन की आवश्यक सुविधाओं के साथ पालन-पोषण तथा समुचित अध्ययन की व्यवस्था करना है।

इसके लिये विद्यालय के दाहिने पार्श्व में वी०एस०एस०डी० महाविद्यालय के अनुग्रह से प्राप्त भूमि पर एक भव्य भवन निर्माणाधीन है। युग-भारती के ही एक सक्रिय सदस्य (पूर्व छात्र) के द्वारा इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये निर्मित हो रहे भवन का पूरा व्यय भार वहन करने का अनुकरणीय संकल्प लिया गया है। भविष्य में इस वात्सल्य मंदिर के द्वारा पालित-पोषित एवं मार्गदर्शित छात्रों का यशस्वी जीवन समाज के लिये भी अनुकरणीय उदाहरण बन सकेगा, इसी विश्वास के साथ विद्यालय यह प्रकल्प प्रारम्भ करने जा रहा है। इस सेवाभावी पावन प्रकल्प में आप सबके सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है।

भारतीय चिन्तन में शिक्षा का उद्देश्य विषय का कक्षा-शिक्षण मात्र नहीं, अपितु व्यक्ति-निर्माण के माध्यम से समाज-जागरण माना गया है। समाज का प्रज्ञा-प्रवाह अवरुद्ध होना भी स्वाभाविक है, अतः आदर्श स्थिति यह होगी कि विद्यालय समाज को ऐसे सुयोग्य नागरिक प्रदान करें जो समस्त सामाजिक विकृतियों से अछूते रह कर अपनी तेजस्विता से निरन्तर नवजीवन का संचार करते हुए प्रज्ञा-प्रवाह की निरन्तरता बनाए रखें। दुर्भाग्यवश आज अधिसंख्य शिक्षा संस्थान इस उद्देश्य को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में युग-भारती के सहयोग से विद्यालय की प्रभावी भूमिका निश्चय ही भारत के स्वर्णिम भविष्य की दिशा में एक आश्वस्ति है।

अन्त में ईश्वर से प्रार्थना है कि छात्रों में राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व के उत्कर्ष में आप सभी समाज-बन्धुओं का सहयोग हमें निरन्तर मिलता रहे। ★

अब व्यर्थ मुझे दहलाना

—श्री ओमशङ्कर त्रिपाठी

श्री ओमशंकर त्रिपाठी की यह कविता उनके जीवन, व्यक्तित्व, चिन्तन तथा सिद्धान्तों को ही सीधे-सीधे व्यक्त करती है । उन्होंने श्रीमन्तों से कृतार्थ होकर कभी अपने सुख-सूत्र नहीं सँवारे । प्राचीनकाल से ही मगहर अकल्याणकारी तथा काशी कल्याणप्रद मोक्ष-दायिनी मानी जाती रही है परन्तु वे कहते हैं कि उन्होंने न तो कभी दुनिया की लीक पर मगहर को कोसा है और न ही काशी की चिरौरी की है । ये कविता में प्रयुक्त काशी और मगहर सिर्फ उन स्थानों की ओर ही संकेत नहीं करते बल्कि एक व्यापक व्यंजना देते हैं जिसे ज्ञानवृद्ध समझेंगे । भावावेग में वे अपनी मनःस्थिति यहाँ तक पाते हैं कि वे दुनिया को ललकारते हुए कहते हैं कि अब मुझे दहलाना या बहलाना व्यर्थ है । इस कविता में उनकी कलम उन्हें लगभग स्थितप्रज्ञ तथा समदर्शी बता रही है । कवि कोई भी हो जिस समय उसके चित्त में उदात्त भावों के साथ कविता आविर्भूत होती है वे क्षण अलौकिक हो जाते हैं वे देवत्व तक पहुँचाने वाले क्षण ही यदि जीवन के स्थाई भाव हो जाएँ तब तो कहना ही क्या ?

— सम्पादक

मुझको भावी से मतलब क्या, मैं वर्तमान का हामी हूँ
हो कोई साथ नहीं फिर भी, अपने पथ का अनुगामी हूँ ।

महलों से हुआ न मोह कभी, कुटिया से नहीं गुरेज रहा
वैभव का चाव अभावों से उतना न कभी परहेज रहा ।

मैंने मगहर को कब कोसा, काशी की कहाँ चिरौरी की ?
जिस धज से गोमुख को पूजा, तट 'कर्मनास' की भँवरी की ।

हो काम किसी का इससे क्या
मैं नाम नहीं हूँ नामी हूँ ।।१।। हो कोई साथ - - - -

अपनी मीनार उठाने को मन्नत मानी हो याद नहीं
उसकी दीवार न बन पाये जिद और नहीं फरियाद कहीं
संबल साधा आदर्शों का मृग तृष्णा हो अथवा यथार्थ
सुख-सूत्र सँवारे नहीं कभी, श्रीमन्तों से होकर कृतार्थ

खोने-पाने का चाव नहीं,
मैं आत्मदान का कामी हूँ ।।२।। हो कोई साथ - - - -

मैं कहाँ रहा किस दर भटका, इसका हिसाब न लगाया है
भीतर झाँका देखा पाया, हर दर अपनी ही छाया है
अब व्यर्थ मुझे दहलाना या बहलाना किसी बहाने से
हो गयी चाल बेहाल, हुई नदियाँ दो-चार मुहाने से

फिर सभी नजारे देख
हो गया अपनेपन का स्वामी हूँ ।।३।। हो कोई साथ - - - -

आकुल प्राणों को पी पीकर, पाले अपने विश्वास विवश
अरमानों की आहुतियों से, वेदी धधकायी रात-दिवस
संकल्प अधूरे झोली में, पावों की चाल निराली है
झंझायें उठने से पहले ही अपनी 'जोत' बुझा ली है ।

जानता स्वर्ण-नगरी है यह
पर ओढ़े सीतारामी हूँ ।।४।। हो कोई साथ - - - -

संकेत व्यर्थ हो जहाँ, वहाँ अंकुश की भी औकात नहीं
रातें मसान जब हो जाएँ, तब सपनों की सौगात कहीं ?
दर-दर पसरा है बियावान सुनसान हमारा सहचर है
हर पोर फकीरी बाने में, पर अंधकार अब अनुचर है

पग बढ़ा रहा भरपूर, मगर
लगता है विवश विरामी हूँ ।।५।।
हो कोई साथ नहीं - - - - - -

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

वे एक रचनाधर्मी और विद्वान् साहित्यकार, कुशल प्रधानाचार्य और आचार्य हैं । वे प्रणव के साथ संयुक्त मदनारि हैं । अपने विद्यार्थियों के उपयोगार्थ उन्होंने अनेक साहित्यकारों की जीवनी तथा साहित्यिक परिचय लिखवाये हैं उन्हीं में से अज्ञेय का साहित्यिक परिचय यहाँ प्रस्तुत हैं । **— सम्पादक**

सन् 1942 से 1952 तक का हिन्दी साहित्य का काल प्रयोगवादी आन्दोलन का समय माना जाता है सन् 1911 में जन्मे अज्ञेय इस आन्दोलन का नेतृत्व करने वाले साहित्यकार हैं । प्रगतिवादी विद्रोही स्वर को प्रयोगों में परिवर्तित करना, प्रयोगवादी विचार का मूल बिन्दु है । सन् 1943 में 'तार सप्तक' एक ऐसा संग्रह साहित्य के अध्येताओं के मध्य उपस्थित किया गया जिसमें नये-नये प्रयोग करने का दावा किया गया था । कथ्य से लेकर शिल्प तक सभी प्रयोग अपने में अभिनव थे ऐसा कथन तार सप्तक के सम्पादक अज्ञेय का था ।

वास्तव में अज्ञेय की काव्य यात्रा सन् 1933 से प्रारम्भ होती है जब उन्होंने भग्नदूत और 'चिन्ता' नामक संग्रहों में अपनी छायावादी शैली का परिचय देते हुए साहित्यिक प्रस्तुतियाँ पाठकों के समक्ष रखीं । उस समय की उनकी कविताओं में व्यक्त किये गये जीवन मूल्य, बिम्ब कला आग्रह और ऐन्द्रिक आवेग आदि सभी पर छायावाद की स्वप्निल छाया मँड़राती मालूम पड़ती है, किन्तु कालान्तर में उनका रचना कौशल छायावादी स्वप्निल संसार से मुक्त होता गया तथा काव्य में नये-नये प्रयोग करने की उनकी नैसर्गिक वृत्ति अकुलाने लगी ।

अज्ञेय का जीवन 'वृत्त' किसी रोचक उपन्यास से कम दिलचस्प नहीं है । समय सीमा की मर्यादा में उनके इस जीवन वृत्त की झलक प्रस्तुत है । सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च सन् 1911 (7 फाल्गुन शुक्ल 1967 (वि०सं०) देवरिया जिले के 'कसया' नामक स्थान में पुरातत्व अनुसंधान शिविर में हुआ । उनके पिता डॉ० हीरानन्द शास्त्री संस्कृत के विद्वान् और भारत सरकार के पुरातत्व विभाग के उच्च पदस्थ अधिकारी थे पिता की स्थानान्तरित होने वाली सरकारी नौकरी के कारण बालक अज्ञेय का जीवन प्रारम्भ से ही यायावरी रहा है । विचित्र बात यह है कि सरकारी नौकरी में होने के बाद भी पं० हीरानन्द शास्त्री को स्कूली शिक्षा की अपेक्षा घरेलू शिक्षा में अधिक विश्वास था और इसीलिये अज्ञेय की प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत की मौखिक परम्परा से प्रारम्भ हुई । इस काल में उन्होंने जहाँ एक ओर संस्कृत के पण्डितों से रामायण हितोपदेश रघुवंश आदि संस्कृत आख्यायन पढ़े । वहीं मौलवी के द्वारा शेख साही की पुस्तकें गुलिस्तां और दोस्ताँ' भी अपने जेहन में अंकित की साथ ही अमेरिकी पादरी से बाइबिल भी पढ़ने का अवसर मिला । पिता के द्वारा दी गयी यह शैक्षिक संस्कार-शबलता अज्ञेय के जीवन में स्थायीभाव बनकर दृढ़ीभूत हो गयी और इसका चित्रण उन्होंने अपनी पुस्तक आत्मनेपद में (17वें पृष्ठ पर) बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है । हिन्दी साहित्य का यह निराला व्यक्तित्व सन् 1987 के 4 अप्रैल को संसार को विदा कह गया ।

साहित्यिक परिचय- अज्ञेय की साहित्यिक यात्रा भी उनके जीवन की भाँति ही टेढ़ी-मेढ़ी पगडण्डियों से होते हुए अपने काल्पनिक लक्ष्य की ओर बढ़ती प्रतीत होती हैं ।

'अज्ञेय' के साहित्यिक उन्मेष के समय रचनाधर्मिता में कुछ ऐसी अराजकता उत्पन्न हो गयी थी कि उससे किसी भी प्रकार के मार्गदर्शन की अपेक्षा करना बेमानी हो गया था इसीलिये अज्ञेय के साहित्य में अहं का विस्फोट सामाजिकता सौन्दर्य, प्रेम, दर्शन, विद्रोह, प्रकृति, रूमानियत और यथार्थवाद आदि सभी कुछ अल्प अथवा प्रभूत रूप

में प्राप्त होता है। किन्तु देखा जाये तो यह सब कुछ अज्ञेय की बौद्धिकता का ही परिणाम है। उनके साहित्य में सूक्ति निर्माण की प्रवृत्ति तो मिलती है किन्तु प्रायः हार्दिक हरारत का अभाव है। किन्तु इसके साथ सह भी सच है कि अज्ञेय ने साहित्य में नव नवोन्मेषशालिनी दिशाओं के द्वार भी खोले हैं। उनका साहित्य पढ़ने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि वह पाठक को एक भाव विशेष के लिये आकर्षित करते हैं और जब तक वह उस भाव तक पहुँचे अज्ञेय दूसरी प्रस्तुति की तैयारी कर लेते हैं। आशय यहै कि उनके साहित्य में भी उनके जीवन की तरह की त्वरा दिखाई देती है।

प्रथाओं के विरोधी अज्ञेय साहित्य में नये-नये प्रतिमान गढ़ने में सिद्ध हस्त हैं। ये प्रतीक और प्रतिमान अर्थवत्ता की दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। एक उदाहरण देखिये -

''हम नदी के द्वीप हैं।
हम नहीं कहते कि हमको छोड़कर स्रोतस्विनी बह जाय, वह हमें आकर देती है।'

पुराने उपमान अज्ञेय की दृष्टि में निस्सार हो गये हैं। इसीलिये वह नये-नये उपमानों का प्रयोग करते हैं। उनकी दृष्टि में उनकी नायिका कुछ इस प्रकार है -

बिछली घास हो तुम
या शरद के साँझ के सूने गगन की पीठिका पर
डोलती कलगी अकेली बाजरे की।

अज्ञेय की कविता में उतनी दुरूहता न होने पर भी कवि अपनी बात इतने अल्प शब्दों में कहना चाहता है कि उसका आशय मिलता ही नहीं।

'जीवन मर्म' नामक उनकी रचना का ऐसा ही उदाहरण देखिये -

झरना : झरता पत्ता
हरी डाल से
अटक गया।

अज्ञेय का रचना संसार भी बड़ा व्यापक और विस्तृत है। निम्नांकित सूची देखकर इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

काव्य - इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्र धनुष रौंदे हुये से, अरी ओ करुणा प्रभामय आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ सागर मुद्रा आदि।

कहानी - विपथगा, परम्परा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, अज्ञेय की कहानियाँ (तीन भागों में)

उपन्यास -

1. शेखर एक जीवनी
2. नदी के द्वीप
3. अपने-अपने अजनबी

निबन्ध तथा संस्मरण

1. त्रिशंकु (निबन्ध)
2. आत्मनेपद

हिन्दी साहित्य एवं आधुनिक परिदृश्य

1. संवत्सर

2. अद्यतन
3. आल बाल
4. कवि दृष्टि

यात्रा वृत्तान्त

1. अरे यायावर रहेगा याद ।
2. एक बूँद सहसा उछली ।

सम्पादित ग्रन्थ

1. प्रथम तार सप्तक
2. दूसरा तार सप्तक
3. तीसरा तार सप्तक
4. चौथा तार सप्तक
5. पुष्करिणी
6. रूपांतरा
7. नेहरू अभिनन्दन ग्रन्थ
8. समकालीन कविता में छन्द
9. दिनमान आदि

अज्ञेय का रचना संसार किसी निर्धारित सिद्धान्त और निश्चित लक्ष्य को लेकर नहीं चला है उनके विचार सहज उनका चिन्तन मुक्त और उनका लेखन योजना मुक्त रहा है। इसीलिये अनेक स्थानों पर सामाजिक व्यवस्था के विरोध में अपनी बात एक विचित्र अंदाज में कही है। एक कबूतर के जोड़े को देखकर वे कह उठते हैं -

हाय तुम्हारी नैसर्गिकता ? मानव-नियम निराला है ।
वह तो अपने से अपना प्रणय छिपाने वाला है ।

एक-आध स्थानों पर कवि ने अपनी प्रकृति के विरुद्ध समाज पर तीखे व्यंग्य करने का भी प्रयास किया है। उनकी रचनायें साँप के प्रति तथा सागर और गिरगिट इसी प्रकार के उदाहरण हैं।

अज्ञेय की भाषा प्रतीक प्रधान है। उन्होंने अनुभव किया है कि जो भाषा उनको उत्तराधिकार में मिली है वह आधुनिक युग की जटिल संवेदनाओं को व्यक्त करने में सक्षम नहीं है। उसकी व्यंजकता घिस चुकी है और इसीलिए उन्होंने भाषा की व्यंजकता बढ़ाने के लिये नये-नये प्रयोग किये। उनकी भाषा पर संस्कृत का उत्तराधिकार तो स्पष्ट दिखाई देता है किन्तु उर्दू की अति नाटकीयता का प्रभाव कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता।

अज्ञेय की छन्द योजना में भी नवीनता है। यद्यपि निराला जी ने छन्द की लयात्मकता को तोड़ा अवश्य है पर वह उससे पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाये किन्तु अज्ञेय उससे सर्वथा मुक्त हैं। उनके अनुसार वह शब्दों के लयात्मक संगठन की अपेक्षा अर्थ की लय पर अधिक विश्वास रखते हैं।

इस प्रकार अज्ञेय हिन्दी साहित्य के एक अद्‌भुत व्यक्तित्व हैं। उन्होंने अपने लिये स्वयं ही कहा है - 'यों मैं कवि हूँ आधुनिक हूँ नया हूँ' काव्य तत्व की खोज में कहाँ नहीं गया हूँ ? चाहता हूँ आप मुझे, हर एक शब्द पर सराहते हुए पढ़ें। जैसे आपको रुचे स्वयं गढ़ें।

उत्कंठा, योजना, श्रम तथा उल्लास का उत्सव : वार्षिकोत्सव

—नीराजक

जैसे हमारे घर में विवाह होने पर या पुत्र के जन्म पर हर्षोल्लास का माहौल रहता है जैसे होली या दीपावली में हमारे परिवारों में उत्सव का माहौल रहता है उसी प्रकार से हमारे दीनदयाल विद्यालय का त्योहार है हमारा वार्षिकोत्सव। हमारा वार्षिकोत्सव हमारे भीतर उत्साह, उल्लास और उमंग का संचार करता है। विद्यालय के जन्म से लेकर आज तक लगातार होने वाले हमारे वार्षिकोत्सव में सितम्बर 2003 में मुख्य अतिथि थे सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी, लेखक पद्मश्री श्री वचनेश त्रिपाठी तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सहसर कार्यवाह मा० मदनदास जी देवी।

वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ अभिभावक सम्मेलन के साथ हुआ। अभिभावक सम्मेलन में विभिन्न अभिभावकों ने अपनी समस्याएँ तथा सुझाव रखे। विद्यालय के मा० सचिव जी की उपस्थिति में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी ने उन सभी समस्याओं तथा शिकायतों का समाधान किया तथा इस बात पर जोर दिया कि सभी लोग शिक्षा के मूल उद्देश्य को पहचानें। वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन परम्परागत रूप से वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं माननीया श्रीमती प्रभा त्रिपाठी (संयुक्त शिक्षा निदेशक, कानपुर मण्डल)। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ० प्रकाश अवस्थी (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष हिन्दी विभाग वी०एस०एस०डी० कॉलेज) ने की। निर्णायक मण्डल के सदस्यों में श्री विश्वम्भर नाथ द्विवेदी, श्रीमती कमलेश अवस्थी तथा श्रीमती सुजाता चतुर्वेदी थीं। वाद-विवाद का विषय था - ''शिक्षा का वैश्वीकरण राष्ट्रहित में है या नहीं''। वाद-विवाद प्रतियोगिता में छात्र तथा छात्रा वर्ग अलग-अलग थे जिसमें नगर के विभिन्न विद्यालयों ने हिस्सा लिया। सभी प्रतिभागियों ने अपने-अपने विषय के समर्थन में अनेक विचारणीय तर्क प्रस्तुत किये। किसी ने वैश्वीकरण को गुलामी का दस्तावेज बताते हुए कहा कि - ''कभी एक मात्र विदेशी कम्पनी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हमको सैकड़ों वर्ष तक गुलाम बनाकर रखा था परन्तु आज तो हजारों विदेशी कम्पनियाँ भारतवर्ष में हैं।'' तो किसी ने वैश्वीकरण को शिक्षा के लिये संजीवनी बताया। दीनदयाल विद्यालय के छात्र चि० निखिल सचान ने विषय के पक्ष में अपने विचार रखते हुए 'गैट समझौते' का उदाहरण दिया और वैश्वीकरण को शिक्षा के लिये हानिकारक बताया। अपने ही विद्यालय के छात्र चि० अरविन्द प्रताप सिंह ने विषय के विपक्ष में अपने विचार रखते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रचार व प्रसार के लिये विश्व बैंक के सहयोग का उल्लेख किया। छात्र वर्ग में दीनदयाल विद्यालय के निखिल व अरविन्द को क्रमशः प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ तथा सरदार पटेल इण्टर कॉलेज के अतुल तिवारी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। शील्ड शिवाजी इण्टर कॉलेज को प्राप्त हुई। छात्रा वर्ग में नन्दलाल खन्ना विद्यालय की शाम्भवी मिश्रा को प्रथम, सनातन धर्म विद्या मंदिर की नेहा मिश्रा को द्वितीय तथा शिवाजी इण्टर कॉलेज की श्रुति वर्मा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। छात्रा वर्ग की शील्ड मिली सनातन धर्म विद्या मन्दिर विद्यालय को। विद्यालय में विज्ञान प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया जिसमें छात्रों ने विभिन्न प्रकार के मॉडल्स प्रदर्श बना कर प्रदर्शित किये। विज्ञान प्रदर्शनी की मुख्य अतिथि थीं श्रीमती टी० गुप्ता (प्रवक्ता आई०आई०, कानपुर) तथा श्री रघुराज सिंह (प्रमुख-कम्प्यूटर प्रभाग- एच०बी०टी०आई०)।

वार्षिकोत्सव के तीसरे दिन राष्ट्रीय गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें नगर के विभिन्न विद्यालयों ने हिस्सा लिया। छात्र तथा छात्रा वर्ग की प्रतियोगिताएँ अलग-अलग हुईं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मा० रमेश मरोलिया जी थे जो स्वयं भी अच्छे गायक हैं। पूरा वातावरण संगीतमय था। स्वर और लय की लहरें उठ रही थीं भावनाओं का तट था और संगीत सिन्धु के अनन्त छोर से राष्ट्रीयता का मरीचिमाली झाँक रहा था। छात्र वर्ग में दीनदयाल विद्यालय के चि० अंकित शर्मा ने प्रथम स्थान, वीरेन्द्र स्वरूप एजूकेसन सेण्टर के चि० अनिरुद्ध सिंह ने द्वितीय तथा जुगल देवी विद्यालय के चि० शिवम पाठक को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। छात्रा वर्ग में वीरेन्द्र स्वरूप

विद्यालय की कुमारी विनीति सिंह को प्रथम जुगलदेवी विद्यालय की कुमारी प्राची कुदेशिया को द्वितीय तथा पूर्णचन्द्र विद्या निकेतन की कुमारी सौम्या आनन्द को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। मुख्य अतिथि श्री रमेश मरोलिया ने बचपन की यादों को ताजा करते हुए बच्चों को कभी भी आत्मविश्वास न छोड़ने की प्रेरणा दी।

वार्षिकोत्सव के चौथे दिन शारीरिक योग, व्यायाम, आसन, एन०सी०सी० परेड, डेमो इत्यादि कार्यक्रम हुए जिसमें मा० मदनदास जी देवी मुख्य अतिथि थे। विविध कुंजों के छात्र विविध वेशों में योग व्यायाम करते हुए बड़े ही शोभन लग रहे थे। कदम से कदम मिलाकर चलते हुए मान-वन्दना के लिये बढ़ते एन०सी०सी० के छात्र और तरुण भारती के मंत्री भैया के द्वारा कार्यक्रम का साहित्यिक भाषा में संचालन एक दिव्य तथा अलौकिक वातावरण की सृष्टि कर रहा था। मा० मदनदास जी ने प्रदेश में स्थान प्राप्त छात्रों तथा विभिन्न गतिविधियों में स्थान प्राप्त छात्रों को पुरस्कृत भी किया। इसके बाद मा० मदनदास जी ने छात्रों को सम्बोधित किया तथा देश के प्रति कृतज्ञ होने की प्रेरणा भी दी। इससे पूर्व दोपहर में मदनदास जी ने पूर्व छात्रों की संस्था 'युग-भारती' के सदस्यों से भी बातचीत की तथा उन्हें मध्यमार्ग का अनुसरण करते हुए समाजसेवा की प्रेरणा दी।

वार्षिकोत्सव का पाँचवाँ दिन था रंगमंचीय कार्यक्रमों का जिसमें मुख्य रूप से सुभाष चन्द्र बोस के जीवन पर आधारित विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी का लिखा हुआ नाटक मंचित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री श्री वचनेश त्रिपाठी थे। नाटक का अभ्यास कई दिन पहले से चल रहा था जिसमें मुख्य भूमिका निभाई थी श्री बालेश्वर शर्मा तथा आचार्य श्री गया प्रसाद वर्मा ने। नाटक में सुभाष की भूमिका क्रमशः तीन छात्रों राहुल, स्नेहिल तथा कृत्तिवास ने निभाई। नाटक का प्रारम्भ एक कक्षा के दृश्य से होता है जिसमें विद्यार्थी कक्षा की सज्जा कर रहे हैं। बालक सुभाष अंग्रेज अधिकारी का चित्र लगाने का विरोध करते हैं यह विरोध, स्वाभिमान और स्वाधीनता की भावना क्रमशः सुभाष के हृदय में बलवती होती जाती है। आई०सी०एस० की परीक्षा उत्तीर्ण करके भी वे अंग्रेजों की नौकरी स्वीकार नहीं करते हैं और अंग्रेजों की पराधीनता से भारत माता को स्वतन्त्र कराने का संकल्प लेते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव में सुभाष विजयी होते हैं और गाँधी जी से मतभेद के कारण वे अध्यक्ष पद त्याग भी देते हैं और बर्लिन जाकर आजाद हिन्द फौज की स्थापना करते हैं।

जवाहरलाल नेहरू के रूप में नमन चतुर्वेदी गाँधी जी के रूप में आशीष कुमार, प्रधानाचार्य के रूप में शोभित खरे अंग्रेज गवर्नर के रूप में सौरभ त्रिपाठी क्रान्तिबाबू के रूप में प्रत्यूष प्रांजल तथा अंग्रेज अधिकारी के रूप में अभिनन्दन तिवारी थे। नाटक की तैयारी में श्री बालेश्वर शर्मा तथा आचार्य श्री गयाप्रसाद वर्मा ने अथक परिश्रम किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री वचनेश त्रिपाठी ने देशभक्ति के अनेक प्रेरक संस्मरण सुनाते हुए तत्कालीन विकट परिस्थितियों तथा देशभक्ति का वर्णन किया। नाटक के अतिरिक्त कार्यक्रम में सरस्वती वन्दना तथा अभिनय गीत भी प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम में वचनेश जी का भव्य स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि का प्रधानाचार्य जी ने परिचय तथा सचिव मा० वीरेन्द्र जीत सिंह जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में पिछले वर्ष के अच्छे छात्र अभिनेताओं को भी पुरस्कृत किया गया जिनमें आशुतोष द्विवेदी को प्रथम अभिनन्दन तिवारी को द्वितीय तथा स्नेहिल त्रिपाठी को तृतीय स्थान दिया गया। चि० अभिषेक अग्निहोत्री को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का गुरुवर शरण अवस्थी पुरस्कार दिया गया।

वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन कवि सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता वीर रस के प्रखर कवि पं० धर्मपाल अवस्थी जी ने तथा संचालन व्यंग्य विधा के कवि श्री राघवेन्द्र जी ने किया। कवि सम्मेलन में देवल आशीष, ओमनारायण शुक्ल, पं० दूधनाथ शर्मा 'श्रीष' सुमन दुबे आदि ने विशाल कक्ष में साक्षात् वाग्देवी का अवतरण अपने छन्दों के सोपानों से किया। कवि सम्मेलन के साथ ही वार्षिकोत्सव का प्रेरक व रोचक समापन हो गया तथा वार्षिकोत्सव अपने समाप्त हो जाने की प्रतीक्षात्मक पीड़ा भी हमको दे गया।

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता में बाल वर्ग में प्रथम स्थान

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी का सम्पूर्ण जीवन वृत्त

—निखिल श्रीवास्तव
अष्टम 'क'

कर्ममय जीवन सदा उपकार की वाणी रहा था,
जब कभी भी मौन टूटा, तत्व ही तुमने कहा था,
साधना के दीप बाती, जगमगाती है तुम्हारी,
यज्ञ की समिधा बनेंगे है शपथ यह अब हमारी ।।

नेतृत्व की अपरिमित क्षमता के धनी, ऐसा कर्मशील एवं प्रेरणादायी व्यक्तित्व जो साधना में ही उत्पन्न हुआ, साधना में ही गतिमान रहा और साधना में ही तिरोहित हो गया। समानता, समरसता, कर्मठता, ज्ञानवत्ता, सहिष्णुता आदि गुणों से युक्त होने पर भी जिनमें कभी अहं भाव उत्पन्न नहीं हुआ। जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देशसेवा और पर-शुश्रूषा में ही व्यतीत कर दिया। ऐसे सेवाव्रती, त्यागी, मनीषी महामानव पं० दीनदयाल उपाध्याय जी थे जिन्होंने अपने कर्मों से समाज को नई दिशा प्रदान की।

ध्येय पथ का मजगतम अविगम राही,
साधना भी रही जिसकी हृदयग्राही,
देव दुर्लभ, प्रकृति संस्कृति का उपासक
'राष्ट्रधर्म' जगा बना उसका प्रकाशक ।।

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी व्यक्ति मात्र नहीं थे। व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अद्भुत समन्वय देखने के लिए उनका जीवन जाज्वल्यमान प्रतीक है। पं० दीनदयाल जी ने अपने नाम को यथार्थ सिद्ध किया। वे दूसरों के प्रति स्नेही तथा जागरूक रहते थे इसलिए दीनदयाल जी दीनदयाल बने। उन्होंने कभी अपना प्रचार करने का प्रयास नहीं किया। उनका जीवन अत्यन्त सादा व विचार उच्च कोटि के थे। उनके ये गुण निम्नलिखित पंक्तियों से परिलक्षित होते हैं :

सादा जीवन उच्च विचार,
नहीं स्वयं का कभी प्रचार ।
दीनबन्धु थे दीनदयाल
हृदय सिन्धु सा बड़ा विशाल ।।

जीवन परिचय - पं० दीनदयाल उपाध्याय जी का जीवन एक ऐसे दैदीप्यमान सूर्य के समान था जिन्होंने अपने तेज से, अपनी साधना के तप से, अपने आचरण से देश की सुप्त जनता को अन्धकार से प्रकाश की ओर आकर्षित किया। उनका जीवन एक ओर पीड़ित मानवता के लिए उद्धारक था वहीं दूसरी ओर स्वार्थलोलुप सत्ता शक्ति के लिए अवरोधक भी था।

ऐसे महान पुरुष युगद्रष्टा का आविर्भाव आश्विन मास विक्रम संवत् उन्नीस सौ तिहत्तर की कृष्ण पक्ष त्रयोदशी तदनुसार पच्चीस सितम्बर उन्नीस सौ सोलह को हुआ। ऐसे महान व्यक्तित्व को अस्तित्व प्रदान करने वाली उनकी माता का नाम रामप्यारी देवी था। इनके पिता श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय जी जलेसर रोड के रेलवे स्टेशन पर स्टेशन मास्टर थे। इनके नाना पं० चुन्नीलाल शुक्ल जी जयपुर-अजमेर रेलवे स्टेशन पर स्टेशन मास्टर थे। इनके नाना ग्राम धनकिया के वासी थे। दीनदयाल जी का जन्म इनके नाना के घर हुआ था। इनके पितामह पं० हरीराम शास्त्री जी थे। बचपन में इनका नाम दीनदयाल रखा गया परन्तु लोग उन्हें स्नेह से 'दीना' कहकर पुकारते थे। इनके जन्म के समय सम्पूर्ण विश्व में भारत का, भारत में उत्तर प्रदेश का, उत्तर प्रदेश में मथुरा का और मथुरा में नगला चन्द्रभान का यश

बढ़ा। ज्योतिषियों ने इनका जन्म देखकर यह बताया था कि यह बालक परम विरागी, महान तपस्वी, अद्वितीय विचारक, विद्वान् वक्ता और राजनेता बनेगा। दो वर्ष पश्चात् इनके परिवार को एक और पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। पुत्र का नाम शिवदयाल (शिबू) रखा गया। एक वर्ष पश्चात् ही उनके पिता श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय जी की संदेहास्पद परिस्थितियों में मृत्यु हो गयी। दोनों बालकों के लिए पिता का बिछोह जैसे-जैसे कम होता जा रहा था कि तभी आठ अगस्त उन्नीस सौ चौबीस का वह क्रूर दिन आया जब उनकी माँ उन दोनों बालकों को अनाथ छोड़कर चल बसीं।

कहा भी गया है कि काल किसी के सुख-दुःख की चिन्ता नहीं करता जब वह धरती पर अपने चरण रखता है तब धरती रोती है और वह एक न एक को अपने साथ ले जाता है। दोनों बालकों के लिए माता-पिता का बिछोह असहनीय था। तब दोनों बालकों के पालन-पोषण और उनकी शिक्षा की व्यवस्था करके उनके नाना ने उनको उनके मामा श्री राधारमण शुक्ल जी के पास गंगापुर भेज दिया। पं० चुन्नीलाल शुक्ल जी सन् उन्नीस सौ छब्बीस में परलोक सिधार गए। दीनदयाल जी ने अपनी पढ़ाई का क्रम सन् उन्नीस सौ पच्चीस से आरम्भ किया। ''सामान्य परिवार में जन्म लेकर असामान्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व धारण करना सामान्य कार्य नहीं है।''

यद्यदाचरति श्रेष्ठः, तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते, लोकस्तदनुवर्तते ।।

(श्रीमद्भगवद्गीता)

शैक्षिक जीवन - पं० दीनदयाल उपाध्याय जी बाल्यकाल से ही अत्यन्त मेधावी थे। अपनी मेधा का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने पाँच मार्च उन्नीस सौ सत्ताईस को कक्षा चतुर्थ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उस समय तक गंगापुर सिटी में केवल कक्षा चार तक की पढ़ाई ही होती थी अतः आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें कोटा भेजा गया। वहाँ कक्षा पञ्चम, षष्ठ, सप्तम में भी सर्वप्रथम रहे। कक्षा अष्टम तथा नवम की पढ़ाई उन्होंने राजगढ़ से परीक्षा देते हुए पास की। वहाँ भी वे सर्वप्रथम रहे। दीनदयाल जी इतने मेधावी थे कि जब किसी दशम कक्षा के छात्र को कोई सवाल नहीं समझ में आता तो दीनदयाल जी को कक्षा नवम से बुलाया जाता और वे सादर सवाल करके चले आते थे। सन् उन्नीस सौ चौंतीस में उन्होंने मैट्रिक (हाईस्कूल बोर्ड) की परीक्षा सीकर के कल्याण हाईस्कूल से दी। इन्होंने सम्पूर्ण बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। महाराज सीकर को जब यह ज्ञात हुआ तब उन्होंने दीनदयाल जी को दस रुपये मासिक छात्रवृत्ति, एक स्वर्ण पदक तथा प्रारम्भ के प्रवेश एवं पुस्तकों आदि के खर्च के लिए दो सौ पचास रुपए दिए। इसके बाद अजमेर बोर्ड ने भी इनको स्वर्ण पदक प्रदान किया। इसके पश्चात् दीनदयाल जी की इच्छा पिलानी में पढ़ने की हुई अतः सन् उन्नीस सौ पैंतीस में वे पिलानी गये। वहाँ से उन्होंने सन् उन्नीस सौ सैंतीस में बिरला इण्टर कॉलेज से इण्टरमीडिएट की परीक्षा दी। वहाँ भी वे बोर्ड में सर्वप्रथम रहे। उनकी दिव्य प्रतिभा से प्रभावित होकर श्री घनश्यामदास जी बिरला ने दीनदयाल जी को दस रुपये मासिक छात्रवृत्ति, एक स्वर्ण पदक और पुस्तकों आदि के खर्च के लिए दो सौ पचास रुपये दिए।

उनकी एक विशिष्टता थी कि उन्होंने इण्टर में गणित में कमजोर छात्रों का एसोसिएशन बनाया और इसका नाम 'ज़ीरो एसोसिएशन' रखा गया। इस एसोसिएशन के छात्रों की समस्याओं का समाधान वे स्वयं करते थे। इसका प्रभाव उसी वर्ष सामने आया और उन सब विद्यार्थियों ने इण्टर में अच्छे अंक प्राप्त किए।

दीनदयाल जी की बाल्यकाल से ही एक विशिष्टता यह भी थी कि वे अपने से अधिक दूसरों को ध्यान रखते थे जब सभी लोग गहरी नींद में सो जाते तो वे एक कोने में लाइट न जलाकर लालटेन का प्रयोग करते थे जिससे किसी को बाधा न हो।

दीनदयाल जी ने बी०ए० की परीक्षा कानपुर नवाबगंज स्थित वी०एस०एस०डी० कालेज से प्रथम श्रेणी में पास की। सन् उन्नीस सौ सैंतीस में बलवन्त महाशिन्दे जी के माध्यम से वे संघ के सम्पर्क में आए और तभी से वे अध्ययन कार्यों के साथ-साथ संघ कार्यों में भी रुचि लेने लगे। उन्होंने एम०ए० का प्रथम वर्ष आगरा के सेण्ट जॉन्स कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में किया। एम०ए० का द्वितीय वर्ष करते समय उनकी बहन (सगी नहीं) का स्वास्थ्य खराब हो जाने के कारण उन्हें उसको पहाड़ पर निसर्गोपचार हेतु ले जाना पड़ा। कारणवश, उन्होंने द्वितीय वर्ष का अध्ययन स्थगित कर दिया।

उनके कार्य - पं० दीनदयाल उपाध्याय जी एक कर्मशील योगी, महामानव, दृढ़ संकल्पी तथा समाजसेवी और प्रमाण शिल्पी थे। एक बार कक्षा में प्रश्न एक विधि में हल करवाया गया था परन्तु उन्होंने परीक्षा में दूसरी विधि से उसे हल कर दिया। जब उनसे पूछा गया कि यह दूसरी विधि कहाँ से निकली तो उन्होंने बड़ी ही विनम्रता से उत्तर देते हुए कहा कि पहली विधि तो आती ही थी मैंने दूसरी विधि से हल करने का प्रयास किया और सवाल हल हो गया। ऐसी जिज्ञासु तथा जागरुक प्रवृत्ति।

पं० दीनदयाल उपाध्याय जी ने सन् उन्नीस सौ सैंतीस से लेकर उन्नीस सौ सरसठ तक संघ कार्य को पूर्ण श्रद्धा, लगन, आत्मविश्वास तथा प्रामाणिकता से संचालित करते हुए संघ को नए आयाम प्रदान किए। सन् उन्नीस सौ इक्यावन में इक्कीस सितम्बर को लखनऊ में प्रादेशिक सम्मेलन बुलाकर प्रदेश जनसंघ की स्थापना की। इसके अतिरिक्त उन्होंने राष्ट्रधर्म (मासिक) पाञ्चजन्य (साप्ताहिक) स्वदेश दैनिक आदि पत्रिकाओं का सम्पादन किया।

उनके विचार - पं० दीनदयाल जी कहते थे स्वाध्याय का अर्थ है अपने बारे में अध्ययन। उनका कहना था कि शिक्षा को किसी भी प्रकार से ग्रहण करना चाहिए। उन्होंने चरैवेति का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।

चरैवेति का अर्थ - लगातार आगे बढ़ते रहो। लक्ष्य प्राप्ति हेतु निरन्तर आगे बढ़ते रहना ही उचित है। हाथ पर हाथ रखकर बैठना उचित नहीं।

बाधाएँ कब बाँध सकी हैं,
आगे बढ़ने वालों को,
विपदाएँ कब रोक सकी हैं,
मरकर जीने वालों को।

दीनदयाल जी ने एकात्ममानववाद की संकल्पना को प्रस्तुत करते हुए कहा कि -

पूँजीवाद मानव शरीर को पुर्जे के समान मानता है और समाजवाद अतिसाम्य से ग्रस्त है इसलिए इन दोनों व्यवस्थाओं में मुझे भारत का भविष्य नजर नहीं आता अतः मैंने एकात्ममानववाद की संकल्पना को प्रस्तुत किया है।

एकात्ममानववाद की अवधारणा -

जब मनुष्य, आत्मा और व्यवस्था के मध्य मतैक्य हो जाता है तब एकात्ममानववाद की अवधारणा जन्म लेती है। ये उन सभी व्यवस्थाओं से कोसों दूर हैं जो मानव को शरीर तक रोककर वैचारिक ताना बाना बुनती है।

दीनदयाल जी कहते थे कि - स्वदेशी को युगानुकूल और विदेशी को स्वदेशानुकूल बनाकर ग्रहण करना चाहिए।

मृत्यु - ग्यारह फरवरी उन्नीस सौ अड़सठ को वह क्रूर दिन आया जब भारतीय प्रजातन्त्र की राजनीतिक क्षितिज पर विचार, कार्य और प्रगति की महान आशाएँ लेकर जो अति दिव्य जीवन उभर कर सामने आ रहा था उसे कुछ सत्तालोलुप नेताओं द्वारा रहस्यास्पद स्थितियों में षड्यंत्र रचकर मार डाला गया।

फिर पड़ा काल का क्रूर हाथ, तुम चिरनिद्रा में लीन हुए।
किस वज्र हृदय से सहन करें, आश्चर्य, क्षुब्ध श्री हीन हुए॥

उपसंहार - "दीपक चाहे छोटा हो या बड़ा जब सूर्य अपना आलोकवाही उसे कर्तव्य सौंपकर चुपचाप डूब जाता है तब जल उठना ही उसके अस्तित्व की शपथ है और वही उसका जाने वाले को प्रणाम है।"

तुम यती, तपस्वी, कर्मवती, वैरागी-त्यागी आप्तकाम।
हे युगद्रष्टा ! हे युगनिर्माता स्वीकार करो युग का प्रणाम॥

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता में किशोर वर्ग में प्रथम स्थान

औरों की दृष्टि में पं० दीनदयाल उपाध्याय

—अनिमेष द्विवेदी
नवम 'ख'

एकात्ममानववाद के उद्घोषक राष्ट्रवादी चिन्तन के उन्नायक, अविराम कर्म साधना में लीन, राजनीति में शुचिता के महान समन्वयक एवं युग द्रष्टा पं० दीनदयाल उपाध्याय की स्मृतियों में डूबना पुण्य सलिला माँ भागीरथी में स्नान के समान है। कर्मपथ के इस अविराम राही की यादें मन एवं तन को पवित्र कर देती हैं।

युग प्रवर्तक राष्ट्र के ओ राष्ट्रवादी सन्त
तुम धरा के रत्न दुर्लभ शक्तिपुंज अनन्त
टूटते समाज के तुम एकता के दूत
विश्व की अद्भुत धरोहर भारती के पूत
विकास पंक्ति में खड़ा जो आखिरी इंसान
तुमने कहा कोई नहीं बस यही भगवान

अजातशत्रु - वास्तव में पण्डित जी की कुशाग्रता, कुशल संगठन क्षमता, कर्तव्यनिष्ठा एवं सरलता इस कदर थी कि प्रत्येक व्यक्ति उनमें अपनेपन की खोज कर लेता था। उन्हें संसद सदस्य हीरेन मुखर्जी (कम्युनिष्ट द०) ने अजातशत्रु कहा था तो इसमें कोई अतिशयोक्ति न थी।

सक्रिय राजनीति में रहने के बाद भी अन्य दलों व विचारधाराओं के लोग उनके असाधारण गुणों के कारण उनका सम्मान करते थे। भारत के पूर्व राष्ट्रपति वी०वी० गिरि द्वारा पण्डित जी के बारे में की गयी टिप्पणी पूर्ण सार्थक है -

"Mr. Upadhyaya was a leader of undoubted integrity and has engaged himself in the service of the nation. He would have made contribution to the resurgence of new India. He was young and full of life."

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई द्वारा पण्डित जी के विषय में दिए गए विचार उल्लेखनीय हैं -

"श्री उपाध्याय देश के अनन्य सेवक, निष्ठावान एवं चरित्रवान राजनीतिज्ञ थे। भारतीय संस्कृति, धर्म एवं देश की अखण्डता में उन्हें बड़ी श्रद्धा थी। इन्हीं गुणों के कारण मैं उनसे प्रत्यक्षतः परिचित न होते हुए भी श्रद्धा करता था।"

भारत के पूर्व गृहमंत्री यशवन्तराव चह्वाण ने उनके बारे में कहा था -

"श्री उपाध्याय एक निस्पृह कार्यकर्ता, योग्य एवं निष्ठावान राजनीतिज्ञ थे। जनसंघ के अध्यक्ष होने के अतिरिक्त वे अपने अधिकारों में भी जन नेता थे।"

वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी, संसदविद् एवं संसद सदस्य आचार्य कृपलानी ने कहा था -

"श्री उपाध्याय एक दैवी पुरुष थे। वे मातृभूमि की एकता और अखण्डता के पुजारी थे। वे अपनी पार्टी को समर्पित थे परन्तु उनकी चेतना जाग्रत थी। उनके जैसे व्यक्तियों की देश में आज कमी है।"

गांधी युग की अग्रिम पंक्ति के नेता, शीर्ष राजनीतिज्ञ एवं स्वतन्त्र पार्टी के संस्थापक चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के पण्डित जी के बारे में विचार उल्लेखनीय हैं -

''श्री उपाध्याय देश के राजनैतिक क्षेत्र में गिने चुने प्रतिभाशाली व्यक्तियों में से एक थे।''

परम पूज्य सन्त 'श्री करपात्री जी महाराज' ने सूत्र वाक्य में उनके व्यक्तित्व को उजागर किया है -

''पण्डित दीनदयाल जी धर्म सापेक्ष राजनीति के प्रबल समर्थक एवं सशक्त स्तम्भ थे।''

दीनदयाल जी के व्यक्तित्व को जानने के लिए विभिन्न व्यक्तियों द्वारा उल्लिखित संस्मरणों के साथ को प्रस्तुत करना समीचीन होगा।

स्वभाषा के प्रति प्रेम

पं० दीनदयाल जी उस समय सह प्रान्त प्रचारक थे। वे एक कार्यक्रम में मैनपुरी आए थे। डॉ० पुरंग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर कार्यवाह थे। उन्होंने कार्यक्रम विषयक जानकारी प्राप्त करने के लिए मुझे (लेखक) पत्र लिखा, जो अंग्रेजी में था। अतः मैंने भी उस पत्र का उत्तर अंग्रेजी में लिखा और उनके कम्पाउण्डर को देने लगा। इतने में दीनदयाल जी ने पत्र माँगा और उसे पढ़कर फाड़ दिया तथा मुझसे मुस्कराकर बोले ''अरे भई ! डाक्टर भी हिन्दी जानते हैं और तुम भी। फिर तुम अंग्रेजी का प्रयोग क्यों करते हो।'' उनके इस वाक्य में कितनी शिक्षा तथा स्वभाषा के प्रति प्रेम भरा था। ऐसे थे हमारे पंडित जी।

गिरिराज किशोर, जयपुर

स्वदेशी से प्रेम

एक बार मैं नागपुर संघ कार्यालय में शेविंग कर रहा था। इतने में कोई आया और मेरा (लेखक) शेविंग शोप खिड़की से बाहर फेंक दिया। मुझे लगा कि मुझसे कोई मजाक कर रहा होगा। फिर मैंने गुस्से से ऊपर देखा तो वहाँ दीनदयाल जी खड़े थे। मैं उन्हें देखकर हैरान हो गया कि दीनदयाल जी तो कभी मजाक करते नहीं लेकिन उन्होंने आज ऐसा क्यों किया। इतने में वे बोले - ''देखो भाई ! नाराज न होना। यह विदेशी कम्पनी का साबुन है। बाजार में देशी माल उपलब्ध रहता है, तो तुम विदेशी माल का प्रयोग क्यों करते हो ?'' फिर मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ।

बाबूराव पालधीकर, कटक

दुर्भाग्यपूर्ण 'शेर'

मेरे और दीनदयाल जी के सम्बन्ध और सम्पर्क बहुत अच्छे थे। मुझे हिन्दी तथा उर्दू के शायरी और शेर सुनने तथा सुनाने का बड़ा शौक था। जब भी मैं उनके पास होता, एक न एक अवश्य सुनाता था। बात है 10 फरवरी सन् 1968 की। दीनदयाल जी लखनऊ से पटना सियालदह एक्सप्रेस से जाने वाले थे। रेलवे स्टेशन पर विदायी देने वाले कार्यकर्ताओं में मैं (लेखक) भी था। चर्चाएँ चल रही थी कि अकस्मात् पण्डित जी ने मुझसे कहा - ''अरे भाई पीताम्बरदास तुमने आज कोई 'शेर' नहीं सुनाया।'' सहसा मुख से एक 'शेर' निकला -

निकले थे कहाँ जाने के लिए
पहुँच गये कहाँ मालूम नहीं
राहों में भटकते कदमों को
मंजिल की निशा मालूम नहीं

वे अपने स्वभाव के अनुसार मुझसे बोले - ''वाह वाह''। अचानक गार्ड ने सीटी दी, वे ट्रेन पर चढ़ गये। गाड़ी चल दी। दोनों के हाथ नमस्कार के लिए मेरे भी, उनके भी। मैंने सोचा कि मुझे एक से एक अच्छे शेर याद थे,

लेकिन आज मुँह से कितना मनहूस शेर निकला । राजनीतिक दल के लिए कहे गए शेर का सम्बन्ध दीनदयाल जी की यात्रा से जुड़ गया ।

पीताम्बर दास
लखनऊ

पं० दीनदयाल जी के निधन पर समूचा राष्ट्र शोकाकुल हो उठा । राजनीतिक नेताओं के अतिरिक्त समाचार पत्रों एवं संगठनों ने उनके जो उद्‌गार व्यक्त किये, वे उनके व्यक्तित्व की ऊँचाइयों का बोध कराते हैं । भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने कहा -

> ''श्री उपाध्यायजी देश के राजनीतिक जीवन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे थे । ऐसी दुखद परिस्थितियों में उनकी असामयिक और अप्रत्याशित मृत्यु से उनका कार्य अधूरा रह गया ।''

तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष नीलम संजीव रेड्डी ने पण्डित जी के बारे में कहा -

> "The country was poorer by the loss of a selfless leader."

अन्य व्यक्तियों द्वारा अर्पित की गईं श्रद्धांजलियाँ निम्नवत् हैं -

> ''यह एक ऐसा आघात है जो शब्द की सीमा से परे है ।' **परम पूज्य गुरु जी**

> ''पं० दीनदयाल जी की हत्या वस्तुतः देश के लिए एक बड़ा अपशकुन है । यह राष्ट्र का दुर्भाग्य है कि उसने देश की एकता एवं विश्व बन्धुत्व की स्थापना में संलग्न एक महामानव को आज खो दिया ।''
> **हनुमान प्रसाद पोद्‌दार**
> सम्पादक, कल्याण

> ''सूरज छिप गया, तारों की छाया में मार्ग ढूँढ़ना होगा । पंडित जी कुशल संगठक, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ, प्रभावी वक्ता, मौलिक विचारक एवं भारतीय संस्कृति के सन्देशवाहक थे । उनकी राजनीति रचनात्मक एवं दृष्टिकोण समन्वयात्मक था । वे सनातन संस्कृति के पुजारी थे, साथ ही अतीत से लेकर उज्ज्वल भविष्य के स्वप्नद्रष्टा भी थे ।''
> **अटल बिहारी वाजपेयी**
> तत्कालीन अध्यक्ष, भारतीय जनसंघ

चरैवेति चरैवेति - वास्तव में रत्नगर्भा भारत माँ का यह अनन्य सपूत अपनी गतिशीलता के कारण अल्प समय में सबकी आँखों का तारा बन गया । इस महान देशभक्त, कुशल संगठक, मौलिक विचारक एवं रससिद्ध साहित्यकार को यह राष्ट्र कभी भुला नहीं सकता । आइये हम जनदीप स्मारिका के पं० दीनदयाल जी के अन्तिम सम्पादकीय के शीर्षक को अपने जीवन का पाथेय बना ले -

चरैवेति ! चरैवेति !!

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता में तरुण वर्ग में प्रथम स्थान

राष्ट्र के स्वरूप पर दीनदयाल जी का चिन्तन

—अर्पित शिवहरे
द्वादश 'ख'

प्रस्तावना - *''राष्ट्र के लिए चार बातों की आवश्यकता होती है । प्रथम भूमि और जन, जिसे हम देश कहते हैं । दूसरी इच्छा शक्ति यानी सामूहिक जीवन का संकल्प । तीसरी एक व्यवस्था, जिसे हम नियम या संविधान कह सकते हैं और जिसके लिए सबसे अच्छा शब्द हमारे यहाँ प्रयुक्त हुआ है, वह है - धर्म और चौथा - जीवन-आदर्श ।''*

— पं० दीनदयाल उपाध्याय

निश्चित रूप से देश, संकल्प, धर्म और आदर्श किसी राष्ट्र के अस्तित्व की अनिवार्यताएँ हैं, किन्तु इन शब्दों में छिपे हुए सिद्धान्तों का अनावरण किये बिना पंडित जी के सम्पूर्ण चिन्तन का सार खोजा नहीं जा सकता । इसी क्रम में राष्ट्र के स्वरूप पर उस महामनीषी के गतिशील चिन्तन से आपको जोड़ने का प्रयास कर रहा हूँ ।

1. राष्ट्र का मौलिक स्वरूप और भावना

(i) भूमि - भूमि के पार्थिव स्वरूप के प्रति हम जितने जागरुक होंगे, हमारी राष्ट्रीयता उतनी ही बलवती होगी। पृथ्वी सच्चे अर्थों में समस्त राष्ट्रीय विचारधाराओं की जननी है । जो राष्ट्रीयता पृथ्वी से नहीं जुड़ी, वह निर्मूल है ।

(ii) जन- भूमि और जन के सम्मिलन से ही राष्ट्र का स्वरूप होता है । जन के कारण ही पृथ्वी को 'मातृभूमि' की संज्ञा दी जाती है । भूमि माता है और जन सच्चे अर्थों में उसके पुत्र ।

(माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः)

इसी भावना से राष्ट्र निर्माण के अंकुर उत्पन्न होते हैं ।

(iii) सामूहिक संकल्पशक्ति - संघ बनाकर उठना ही प्रगति का मार्ग है । मनुष्य अमरत्व चाहता है और वह अमरत्व संभूति से ही प्राप्त होता है (सभूत्या अमृतं अश्नुते) दूसरा पक्ष यह कि जन का प्रवाह अनन्त होता है । सहस्त्रों वर्षों में भूमि के साथ राष्ट्रीय जन ने तादात्म्य प्राप्त किया है । इतिहास के अनेक उतार-चढ़ाव पार करने के बाद भी राष्ट्रीय जन लहरों के आगे बढ़ने के साथ ही साथ ऐसी सामूहिक इच्छाशक्ति संजोये हुए है, जो उन्हें कर्म और श्रद्धा के द्वारा उत्थान के अनेक सोपानों पर चढ़कर प्राप्त हुई है । इसी राष्ट्रीय चेतना को उद्दीप्त करने के लिए पंडित जी ने उद्घोष किया - ''जिस राष्ट्र-मन्दिर का निर्माण इतने दिनों से अनेक आत्मविज्ञानी ऋषि-मुनि, दिग्विजयी सम्राट, कवि, कलाकार, साहित्यकार, स्मृतिकार करते चले आ रहे हैं, आज हमें उस मन्दिर में राष्ट्र-पुरुष की मूर्ति स्थापित कर उसे अभिमंत्रित करना है । भगवान को धन्यवाद दें कि यह सौभाग्य हमको प्राप्त हुआ । हम इस मन्दिर के प्रथम पुजारी बने। ऐसा प्रबन्ध कर चलें कि पीछे आने वाली पीढ़ियाँ अनन्तकाल तक इसमें पूजा कर सकें ।'' यही संकल्पशक्ति राष्ट्रीय जीवन का आधार है ।

2. राष्ट्र के सिद्धान्तों की मूल प्रकृति : चिति

'चिति', राष्ट्र की आत्मा का शास्त्रीय नाम है । यह एक शास्त्रीय उक्ति है, कि प्रत्येक समूह की एक मूल प्रकृति होती है । 'चिति' राष्ट्र की वही मूल प्रकृति है, जो जन्मजात होती है, किन्हीं ऐतिहासिक कारणों से नहीं बनती है । चिति

के कारण ही राष्ट्र का भिन्न व्यक्तित्व उजागर होता है। प्रत्येक समाज चिति के साथ ही उत्पन्न होता है और चिति ही उसकी संस्कृति की दिशा निर्धारित करती है। दीनदयाल जी के शब्दों में - ''इसी आत्मा के आधार पर राष्ट्र का निर्माण होता है और यही आत्मा राष्ट्र के प्रत्येक श्रेष्ठ व्यक्ति के आचरण द्वारा प्रकट होती है।''

3. 'स्व' का उन्नयन : राष्ट्रीय अस्मिता

राष्ट्र का स्वरूप एक ऐसे तत्व के अस्तित्व पर निर्भर करता है, जो अदृश्यमान होते हुए भी सर्वाधिक तीव्रता से अपना अनुभव कराने में सक्षम है। यह राष्ट्रीय अस्मिता ही है, जिसके नष्ट होने पर विश्व पटल पर तमाम राष्ट्र केवल अतीत की स्मृति मात्र बनकर रह गये हैं। प्राचीन यूनान, रोम, मिस्र का अस्तित्व आज नहीं है, यद्यपि भूमिखण्ड और लोग वहाँ आज भी हैं।

पं० दीनदयाल जी ने इस सम्बन्ध में एक बहुत ही व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया - ''प्रत्येक व्यक्ति की तरह प्रत्येक राष्ट्र का भी एक 'स्वत्व' होता है। वही उसके जीवन का मूल स्वर है, जिसके साथ अन्य सब स्वर मिलकर समरसता उत्पन्न करते हैं।'' इसी भावना से अनुप्राणित होकर एक अंग्रेज बालक स्वयं को दिग्विजयी पूर्वजों के वंशज के रूप में देखता है और अपने प्रतिद्वन्द्वी के हौसले पस्त कर देता है।

4. उन्नयन की पृष्ठभूमि : अखण्ड भारत की भावना एवं विशुद्ध भारतीय राष्ट्रवाद

एकता की अनुभूति के अभाव में हम अलग हुए, यही भाव हमें अखण्ड बनायेगा। हमारा राष्ट्र एवं संस्कृति अखण्ड है। 'खण्ड' तो विकृति का नाम है। इसलिए हमें यह भाव छोड़ देना चाहिए, तभी हमारा अन्तःसंघर्ष समाप्त होकर दिग्विजय का सम्बल प्राप्त कर सकेगा। इस सम्बन्ध में पंडित जी का कहना था -

''इस पुण्यभूमि में आज तक जो प्रजा उत्पन्न हुई और जो आज है, उनमें क्रमानुसार स्थान और काल के चाहे जितनी भिन्नताएँ हों, किन्तु उनके जीवन में एकता और समरसता का दर्शन अखण्ड भारत का प्रत्येक पुजारी करेगा।''

पंडित जी का विचार था कि यदि पश्चिमी राष्ट्रवाद की विभीषिकाओं से विश्व को बचाना है तो भारतीय राष्ट्रवाद को ही संगठित करके सशक्त और समर्थ रूप में खड़ा करना होगा। इसकी व्याख्या करते हुए वे कहते हैं - ''इतिहास के हजारों वर्षों में भारत के द्वारा मानव जाति को पीड़ा पहुँचाने वाला संसार में एक भी पृष्ठ नहीं मिलता। भारतीय राष्ट्रवाद में तो केवल विश्वमंगल की भावना है - - - - - और कुछ नहीं।'' इसके अतिरिक्त पश्चिमी राष्ट्रवाद ने पिछले 5000 वर्षों में, जो भीषण दृश्य उपस्थित किये, उनसे कोई अनभिज्ञ नहीं है।

5. धर्म और भारतीय एकात्मवादी संस्कृति

'श्रेयससिद्धि स धर्मः' अर्थात् जिससे ऐहिक एवं पारलौकिक उन्नति हो, वही धर्म है। स्पष्ट है कि धर्म एक व्यापक दृष्टिकोण है। धर्म के तत्व सनातन एवं सर्वव्यापी हैं। 'धर्म' को मानव जीवन की सम्पूर्ण आचार संहिता का तात्विक आधार कहा जाता है। शायद इसी कारण उस युगद्रष्टा ने धर्म और राष्ट्र का सम्बन्ध इस प्रकार परिभाषित किया - ''राष्ट्र, धर्महीन और धर्मनिरपेक्ष उसी तरह नहीं हो सकता जैसे अग्नि तापहीन या तापनिरपेक्ष नहीं हो सकती। राष्ट्र तो धर्म राष्ट्र ही हो सकता है, क्योंकि राष्ट्र और धर्मनिरपेक्षता दोनों एक-दूसरे के विरोधी हैं।''

धर्म एवं संस्कृति किसी राष्ट्र के निवासियों की श्वास-प्रश्वास है। संस्कृति के बिना जन की कल्पना कबंध मात्र है। ज्ञान और कर्म के पारस्परिक प्रकाश की संज्ञा ही संस्कृति है। यही कारण है कि संस्कृति में जन के जीवनादर्श भलीभाँति प्रतिबिम्बित होते हैं। पंडित जी के शब्दों में - ''हमारी संस्कृति की पहली विशेषता यह है कि वह सम्पूर्ण समाज का, सम्पूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है। हमारी संस्कृति एकात्मवादी है। यही कारण है कि यह चिर पुरातन होते हुए भी नित्य नूतन है एवं अध्यात्म-प्रधान होने के बावजूद भौतिक जीवन की समस्याओं के प्रति भी उदासीन नहीं है।''

6. राष्ट्र में लोकतन्त्र एवं राजनीतिक गति

लोकतन्त्र की व्याख्या इस प्रकार की गयी कि लोकतन्त्र वाद-विवाद के द्वारा चलने वाला राज्य है। 'वादे-वादे जायते तत्वबोधः' हमारे यहाँ की पुरानी उक्ति है। भाव यह कि हम दूसरे पक्ष की बात ध्यानपूर्वक सुनें और उसमें जो सत्यांश है, उसे ग्रहण करें। यही लोकतन्त्र की भारतीय दृष्टि है।

पंडित जी ने भारत की संघीय कल्पना को राजनीति की एक बड़ी भूल के रूप में स्वीकारा है। उनका कहना है कि राज्यों के अधिकार का प्रश्न राष्ट्रीयता के अभाव में भयंकर रूप धारण कर सकती है। उस द्रष्टा की यह बात कालान्तर में नितान्त सत्य सिद्ध हुई। पं० दीनदयाल उपाध्याय ने सर्वप्रथम राजनीतिक दलों के लिए एक संयुक्त आचार संहिता की आवश्यकता की बात कही। राजनीतिक दलों को केवल स्वार्थों की पूर्ति हेतु एकत्रित जनसमूह नहीं बनना चाहिए, अपितु अपनी कार्यशैली में परिष्करण की आशा के साथ कुछ आदर्शों (सिद्धान्तों) की स्थापना करनी चाहिए।

7. भारतीय अर्थव्यवस्था

पं० दीनदयाल उपाध्याय ने अर्थशास्त्र की 500 से भी अधिक पुस्तकों का अध्ययन किया और देश तथा काल के अनुसार कुछ निष्कर्ष निकाले। कुछ प्रमुख बिन्दु निम्नांकित हैं -

1. पूँजीवाद मानव शरीर को पुर्जे के समान मानता है तथा साम्यवाद अति समय से त्रस्त है। अतः उन्होंने एकात्ममानववाद की कालजयी संकल्पना प्रस्तुत की।
2. उद्योगों के स्वामित्व के ढाँचे के सम्बन्ध में व्यावहारिक रुख अपनाते हुए कहा कि न तो पूर्णरूपेण राष्ट्रीयकरण ठीक है और न यह कि बिल्कुल राष्ट्रीयकरण न हो।
3. उत्पादन बढ़ाने के लिए उन्होंने मशीनों के प्रयोग पर बल दिया किन्तु पूर्णरूपेण मशीनीकरण की कड़ी आलोचना की।
4. कृषि क्षेत्र के पुनर्निर्माण के लिए व्यापक योजना तैयार की। उनके अनुसार कृषि को नियोजन में ठीक वरीयता नहीं मिली। वरीयता का क्रम यह होना चाहिए - कृषि, छोटे उद्योग, बड़े उद्योग।
5. आर्थिक विषमता दूर करने के लिए उन्होंने अधिकतम आय निश्चित करने की बात कही तथा 'काम के अधिकार' को मूल अधिकारों में जोड़ने का प्रस्ताव रखा।

समाहार - अटक से कटक, कच्छ से कामरूप और काश्मीर से कन्याकुमारी तक भूमि के कण-कण को केवल पुण्य और पवित्र ही नहीं, अपितु आत्मीय मानने की भावना 'अखण्ड भारत' के अन्दर अभिप्रेत है। यही भावना राष्ट्र का सच्चा स्वरूप निर्मित करती है।

पंडित जी ने देशवासियों को प्रेरणा देते हुए कहा - ''श्रम से पराङ्मुख राजनीति, आर्थिक एवं सामाजिक संरक्षण समाप्त करने होंगे। जहाँ समानता एवं सुन्दरता है, वहीं शिव एवं सुन्दर है। जो नीति एवं व्यवस्था - - - - - हमें आलसी, कर्महीन एवं निद्रालु बनाये, वह कलयुगी है। उसको बदलना होगा।'' कृतयुग का उद्घोष है -

कलिः शयानो भवति, संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठस्त्रेता प्रवति, कृते सम्पद्यते चरन्॥
चरैवेति ! चरैवेति !!

महर्षि पाणिनिः

—शीतांशु तिवारी
अष्टम 'क'

संस्कृतभाषायाः व्याकरणशास्त्रे पाणिनिर्महान् वैयाकरणः अभवत् । अस्य पितुर्नाम पणिनः, मातुश्च नाम दाक्षी आसीत् । तस्माद् दाक्षीपुत्रः पाणिनिः कथ्यते । छन्द शास्त्रस्य रचयिता पिङ्गलः पाणिनेः अनुजः आसीत् । अतः छन्द शास्त्रं पिङ्गलशास्त्रं इत्युच्यते । पाणिनिः ख्रिष्टाब्दात् पञ्चशतवर्षपूर्वम् (500 ई०पू०) अजायत् । तस्य जन्म शलातुर ग्रामे अभवत् । तस्माद् अयं श्लातुरीयः अपि उच्यते । शलातुर ग्रामस्यैव नाम सम्प्रति लाहौर इति जातम् ।

पाणिनिः पूर्वं जड आसीत् । तस्य गुरोर्नाम वर्ष आसीत् । एतद् विषये कथासरित्सागरे उक्तम् -

अथ कालेन वर्षसय शिष्यवर्गो महानभूत् ।
तत्रैकः पाणिनिः नाम जड बुद्धितरोभवत् ।।

गुरोः वर्षस्य उपदेशेन भगवतो महेश्वरस्य प्रसन्नतायैः विद्याकामः पाणिनिः कठोरं तपः अकरोत् । येन महेश्वरः प्रसन्नः जातः । सं नृत्यन् चतुर्दशवारं डमरूं (ढक्काम्) अवादयत् । तदुक्तम् -

नृत्तावसने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् ।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद् विमर्शो शिवसूत्र जालम् ।।

तेन डमरूनादेन स चतुर्दश माहेश्वर सूत्राणि प्राप्तवान् । एतानि सूत्राणि आश्रित्य पाणिनिः अष्टाध्यायी नामकं संस्कृत व्याकरणस्य प्रसिद्धं ग्रन्थम् अरचयत् । तस्मिन् ग्रन्थे अष्ट अध्यायाः । तेषु प्रायः चतुः - सहस्रमितानि (4000) सूत्राणि सन्ति । असौ महर्षिः जाम्बवतीविजयम् इति काव्यमपि रचितवान् । किन्तु इदं काव्यम् इदानीं नोपलभ्यते ।

तपोवने शिष्यान् अध्यापयोऽस्य वार्द्धवयं जातम् । एकदा तत्र स तपोलीनः आसीत् । तदानीमेकः क्रुद्धः व्याघ्रः तं भक्षितवान् । तेन स पञ्चत्वं गतः । तदुक्तं पञ्चतन्त्रे -

सिंहोः व्याकरणस्य कर्तुरहरत्प्राणान् प्रियान् पाणिनेः ।

✶

समयस्य सदुपयोगः

—निखिल श्रीवास्तव
अष्टम 'क'

मानव जीवने समयस्य महत्त्वं सर्वाधिकं वर्तते । सर्वाणि कार्याणि समये एव भवन्ति, असमये किमपि कार्यं न सिध्यति । कृषकः समये क्षेत्राणि न कर्षेयुः बीजानि न च वपेयुश्चेत तर्हि कृषिः कथं सफला भविष्यति । ये छात्राः समये अध्ययनं न कुर्वन्ति तेषां सम्पूणनि जीवनानि पश्चाताप पूर्णानि जायन्ते । एवमेव सर्वेषां कार्याणां निश्चितं कालं अस्ति ।

समयः क्षणमपि न तिष्ठति । यः समयः गतः स पुनः न परावर्तते । ये जनाः कालगतिं जानन्ति ते एक क्षणमपि वृथा न गमयन्ति । ते जीवनस्य प्रथमे भागे मनोयोगेन विद्यां, द्वितीये भागे धनं, तृतीय भागे च पुण्यम् अर्जन्ति । ये इत्थं न आचरन्ति तेषां जीवनं निरर्थकमेव । उक्तञ्च -

प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं पुण्यम्, चतुर्थे किं करिष्यति ।।

✶

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या

—कुशाग्र कृष्णन्
अष्टम 'क'

परमेश्वरेण जगति समुत्पादितेषु विद्या एव सर्वश्रेष्ठं द्रव्यम् । विद्याधनात् विहीनः यो मानवः अस्ति सः मूढग्रामीणः कथ्यते । उत्तम ज्ञानेन विना यथा पशुः धर्माधर्मयोः विचारं कर्तुं न शक्नोति तथैव मानवोऽपि विद्यया विहीनः पाप-पुण्ययोः कर्त्तव्याकर्त्तव्योः विचारं कर्तुं न पारयति । उक्तञ्च -

''उत्तम विद्या लीजिए, यदपि नीच पै होय ।
पर्‌यौ अपावन ठौर में, कञ्चन तजत न कोय ।।''

विद्याविहीनः मानवः अन्धः एव कथ्यते । अतएव विद्या धनस्य सर्वेतद्धनेभ्यः प्रधानोक्ता । इयञ्च विद्याधनस्य प्रधानता यदन्यानि व्ययीकृतानि क्षयं यान्ति, किन्तु विद्या धनं व्ययेन संवर्द्धते । तथाहि -

''अपूर्वो कोऽपि कोषोऽयं, विद्यते तव भारति ।
व्ययतो वृद्धिमायाति, क्षयमायाति सञ्चयात् ।।''

विद्याधनस्य इयमपि विशेषता यदिदं धनं न केनापि चोरयितुं शक्यते । क्रूरोऽपि कोऽपि नरपतिः विद्याधनं हर्तुं न प्रभवति किञ्चिदुक्तवान् -

''न चौरहार्यं न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं,
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।।''

विद्या विनयं ददाति, विनयात् पात्रताम्, पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनाद्धर्मः ततः सुखम् कथितञ्च -

''विद्या ददाति विनयम्,
विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति,
धनाद्धर्मः ततः सुखम् ।।''

अतएव सारांश रूपे - ''विद्याधनं सर्व धनप्रधानम् ।''

पुण्यसलिला भागीरथी

—मृत्युञ्जय कटियार
अष्टम 'क'

पवित्रं वर्तते नीरं त्वदीयं देवि ! हे गङ्गे ।
हिनस्ति हि जनानां पापंत्वदीयं वारि हे गङ्गे !
सुराणामापगा प्रथिता ।
भुवि त्वं जाह्नवी कथिता ।
अहो ! भागीरथी जाता
तदन्विह भीष्मसः ख्याता !!

भवति मुक्तिस्तवालोकाञ्जनिगंङ्गे ! जननि गङ्गे !
सगर पुत्रान् महायोधान् ।
कपिलशापेन सन्दग्धान् ।
पवित्रं कर्तुमेव त्वम् ।
सुसिक्तान् कर्तुमेव त्वम् !!

भगीरथ तपः सन्तुष्टः धरित्रीमागता गङ्गे !
दधार त्वां जटारण्ये
महेशो हे भुवनवन्द्ये !
अतो गङ्गाधरो मातः !
शिवस्त्वत कारणाज्ञातः !!

प्रभावोऽयं महिम्नस्ते धारायां भासते गङ्गे !
प्रयागे यमुनया साकम्
यदा त्वं वहसि धिङ्नाकम् ।
प्रसन्ने सङ्गमे लोकाः
मुदा स्नात्वा सदाऽशोकाः !!

दिवं गच्छन्ति देहान्ते ध्रुवंगंगे ! जननि गङ्गे !

इण्टरमीडिएट परीक्षा २००३ में प्रदेश में कीर्तिमान बनाने वाले विद्यालय के कीर्तिकेतु

अभिनव त्रिपाठी
प्रदेश में प्रथम स्थान 89.2%

शैलेन्द्र केसरवानी
षष्ठ (६वाँ)

आदेश यादव
(१६वाँ)

मनोज कुमार त्रिपाठी
(२२वाँ)

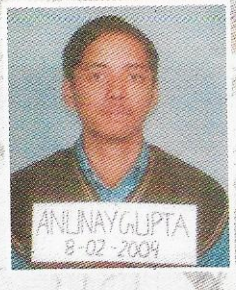

अनुनय गुप्त
प्रदेश में सोलहवाँ स्थान

आदित्य तिवारी
प्रदेश में बीसवाँ स्थान

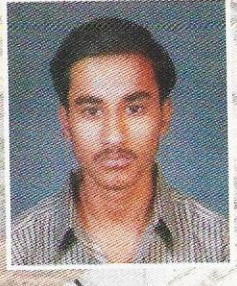

प्रज्ञेश गुप्त
प्रदेश में चौदहवाँ स्थान

आकाशदीप कसौंधन
प्रदेश में चौबीसवाँ स्थान

हाईस्कूल परीक्षा 2003 में प्रदेश में स्थान प्राप्त छात्र

शोभित खरे

प्रदेश में पन्द्रहवाँ स्थान
83.17%

अमित कुमार वर्मा

प्रदेश में बाइसवाँ स्थान
81.83%

श्वेतांक दीक्षित

प्रदेश में बारहवाँ स्थान
83.33%

शशांक पाठक

प्रदेश में चौबिसवाँ स्थान
81.5%

सौम्यशील सिंह

प्रदेश में तृतीय स्थान
87%

अुनराज गुप्त

प्रदेश में बारहवाँ स्थान
83.66%

अनुराग तिवारी

प्रदेश में चौबीसवाँ स्थान
81.7%

सचिन गुप्त

प्रदेश में पन्द्रहवाँ स्थान
83.17%

तरूण अग्रवाल

प्रदेश में इक्कीसवाँ स्थान
82%

''शीतयुद्ध और अन्तरिक्ष प्रतिस्पर्द्धा''

—कुमार गौरव
एकादश 'क'

अन्तरिक्ष के मामले में दो देशों के बीच सदैव शीतयुद्ध जैसा माहौल बना रहा। परन्तु वर्तमान समय में तो प्रत्येक देश अपने कदम अन्तरिक्ष की ओर बढ़ा रहा है। अन्तरिक्ष सम्बन्धी कार्यों के लिए सर्वोपरि दर्जा प्राप्त करने में अमेरिका तथा रूस के बीच सदैव ही होड़ लगी रही है।

यदि एयरोनॉटिक्स व स्पेस रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट के क्षेत्र में विश्व की सबसे आधुनिक और सबसे बड़ी संस्था की बात करें तो नेशनल एयरोनॉटिक्स एण्ड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा NASA) का नाम सबसे पहले आता है जो अपनी स्थापना की 45वीं वर्षगाँठ मना रहा है। नासा अमेरिका द्वारा संचालित विश्व की सबसे बड़ी एयरोनॉटिक्स एजेंसी है। इसकी शुरुआत 31 जनवरी 1958 में वर्नहर वॉन ब्राउन के नेतृत्व में यू एस आर्मी बैलिस्टिक मिसाइल एजेंसी द्वारा अमेरिका के पहले कृत्रिम उपग्रह या सेटेलाइट 'एक्सप्लोर वन' को सफलतापूर्वक अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित कर की गयी। 1 अक्टूबर 1958 को नासा ने विधिवत् कार्य करना प्रारम्भ किया।

इसकी स्थापना के पीछे का कारण है सोवियत संघ रूस का इससे पहले अन्तरिक्ष अभियान प्रारम्भ करना। 4 अक्टूबर 1957 को रूसी वैज्ञानिकों ने पहला कृत्रिम उपग्रह 'स्पुतनिक वन' को लांच करके दुनिया भर में हलचल मचा दी। इसकी प्रतिक्रिया अमेरिका में इतनी जबरदस्त हुई मानो दूसरा पर्ल हार्बर हादसा हो गया हो। स्पुतनिक के साथ ही अन्तरिक्ष की रेस शुरू हो चुकी थी और इसमें रूसी बाजी मार चुके थे, रूस के बढ़ते कदम रोकने के लिए अमेरिका को नासा जैसे शीर्ष संगठन की स्थापना करनी पड़ी। इसके बाद से ही दोनों देशों के बीच अन्तरिक्ष अभियान को लेकर शीतयुद्ध जैसी स्थित बनी रही।

चाँद यात्रा की एक घटना को देखें तो सोवियत संघ के विभाजन होने, तक हर मामले में चाहे वह पहला अन्तरिक्षयात्री हो, पहला स्पेसवॉक हो, पहली महिला अन्तरिक्षयात्री हो और पहला स्पेस स्टेशन हो, रूसी लगातार बाजी मारते रहे और नासा को नम्बर दो पर संतोष करना पड़ा।

तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति कैनेडी के चन्द्रमा पर मानव भेजने के आह्वान पर नासा ने अपना सारा ध्यान इसी दिशा में केन्द्रित किया। जिसके फलस्वरूप उसने इस योजना का मूर्त रूप सन् 1969 में प्रदान किया। उस दिन जब 20 जुलाई 1969 को स्पेसक्राफ्ट 'अपोलो-11' के अन्तरिक्षयात्री नील आर्मस्ट्रांग ने लैंडर ईगल की मदद से चन्द्रमा की सतह पर पाँव रखा तो सारा विश्व विज्ञान की इस प्रगति को देखकर भौचक्का रह गया।

इस समय रूसी वैज्ञानिक शान्त नहीं बैठे थे वे इस समय अन्तरिक्ष में तैरते हुए एक बेस यानि स्पेस स्टेशन के निर्माण की बेहद महत्वाकांक्षी योजना पर काम कर रहे थे। सोवियत वैज्ञानिकों ने नासा के चन्द्र अभियान के लगभग 2 वर्ष बाद 19 अप्रैल 1971 को विश्व के पहले स्पेस स्टेशन 'साल्यूत-वन' को लांच कर एक बार फिर नासा को पीछे छोड़ दिया।

इसको टक्कर देने के लिए अमेरिका में भी इसकी प्रतिक्रिया हुई और नासा ने सोवियत स्पेस स्टेशन के मुकाबले में अमेरिका का पहला प्रायोगिक स्पेस स्टेशन 'स्काई लैब' 1973 में अन्तरिक्ष भेज दिया परन्तु स्काई लैब को इससे जुड़ी दहशत के कारण ज्यादा जाना जाता है। 1989 तक पूरी तरह कबाड़ हो चुका अनियंत्रित स्काई लैब जुलाई महीने में पश्चिमी आस्ट्रेलिया के एस्पेरांस कस्बे के निकट गिरकर नष्ट हो गया। स्काई लैब 16 वर्षों तक अन्तरिक्ष में रहा था और इस दौरान अन्तरिक्षयात्रियों के कई दलों ने स्काई लैब और साल्यूत-वन पर विभिन्न प्रयोग किए जिनका फायदा बाद में मीर और उसके बाद इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन के निर्माण और उन पर काम के दौरान मिला।

नासा के अब तक के इतिहास में कोई भी स्पेसक्राफ्ट इतने ग्रहों, विशाल एस्ट्रॉएड बालों और उपग्रहों की यात्रा नहीं कर सका है जितना कि 'वॉयेजर-1' और 'वॉयेजर-2' नाम के जुड़वा स्पेसक्राफ्टों ने की है। इन्हें नासा ने

1977 को लांच किया था। बढ़ते अन्तरिक्ष कार्यक्रमों और इन पर होने वाले भारी खर्च को कुछ कम करने के लिए राकेट प्रक्षेपण की जगह ऐसे शटल की जरूरत महसूस की जाने लगी जिन्हें बार-बार इस्तेमाल किया जा सके। इस आवश्यकता को ध्यान में रखकर नासा ने कार्य प्रारम्भ किया तथा सबसे पहले अन्तरिक्षयान कोलंबिया का निर्माण किया जो 12 अप्रैल 1981 को अन्तरिक्ष यात्रियों जॉन यंग और बॉब क्रिपेन को लेकर अन्तरिक्ष में गया। यही इसकी पहली उड़ान थी। नासा के बेड़े में बाद में पाँच अन्तरिक्ष यान कोलंबिया, एंडिएवर, डिस्कवरी, चैलेंजर और अटलांटिस शामिल हुए। लेकिन 28 जनवरी 1986 को लिफ्ट आफ के तुरन्त बाद भयंकर विस्फोट के साथ ही चैलेंजर के टुकड़े-टुकड़े हो गए। इसमें सात अन्तरिक्षयात्री मारे गये थे।

जबकि इधर सोवियत संघ रूस अपनी सबसे महत्वपूर्ण घटना स्पेस स्टेशन 'मीर' परियोजना की शुरूआत किए हुए था। विश्व के सबसे पहले स्पेस स्टेशन 'साल्युत वन' के बाद 1986 को मीर के प्रमुख मोड्यूल को अन्तरिक्ष रवाना कर इस परियोजना की शुरूआत की गई। मीर का निर्माण अन्तरिक्ष में ही उसके विभिन्न मोड्यूल्स को जोड़कर किया गया था। अभी यह परियोजना अपनी अर्द्ध सीमा पर थी कि 90 दशक की शुरूआत में ही सोवियत संघ के तत्कालीन राष्ट्रपति मिखाइल गोर्वाच्योव की नीतियों ने देखते ही देखते तूफान का रूप ले लिया और सोवियत संघ रूस का विशाल आकार अपने ही भार से भरभरा गया। इस पूरे राजनीतिक भूचाल के बीच रूसियों का अन्तरिक्ष कार्यक्रम लगभग निष्क्रिय पड़ा रहा, जबकि उधर आधी दुनिया दूर अमेरिका में नासा अपने मुख्य प्रतिद्वन्दी की दुर्दशा पर मुस्कराता हुआ एयरोनॉटिक्स व अन्तरिक्ष के नए-नए कार्यक्रम बनाने में जुटा रहा। रूस के नया देश बनने के बाद मीर के निर्माण का काम फिर शुरू हुआ और अमेरिका के सहयोग से यह 1996 तक जारी रहा।

अब रूस व अमेरिका के बीच दोस्ती हो जाने के कारण अन्तरिक्ष कार्यक्रम में मिलाजुला सहयोग प्राप्त हो गया और इस दिशा में एक नए युग की शुरूआत हुई। 3 फरवरी 1994 को नासा के स्पेस शटल मिशन एसटीएस-60 के छह सदस्यीय मिशन में शामिल सेर्गेई के० क्रीकालेव ऐसे पहले रूसी थे जो नासा का स्पेस सूट पहनकर अन्तरिक्ष रवाना हुए। 1994 से 1998 के बीच नासा के शटल ने मीर के लिए 11 उड़ाने भरीं। 1995 में नॉर्म धागार्ड ऐसे पहले अमेरिकी अन्तरिक्ष यात्री बने जिन्हें रूस में प्रशिक्षित कर रूसी सोयूज स्पेसक्राफ्ट द्वारा मीर भेजा गया। नार्म ने मीर में 115 दिन तक रहने का रिकार्ड बनाया। वहीं महिलाओं में 1996 को मीर गई अमेरिका की शैनोन लुसिड ने वहाँ 181 दिन तक रहने का रिकार्ड बनाया।

मीर अब तक का सबसे विशाल स्पेसक्राफ्ट था, इसमें एक विशाल लैब के साथ ही रहने और काम करने के लिए विशाल मोड्यूल्स थे। मीर का मुख्य मोड्यूल छह स्कूल बसों जितना विशाल था और इसका कुल भार 250 टन था। मीर में अक्सर तीन अन्तरिक्षयात्री चालक दल के रूप में मौजूद रहते थे लेकिन कभी-कभी यह संख्या छह तक भी पहुँच जाती थी।

अब इधर नासा तथा रूसी वैज्ञानिकों का ध्यान मंगल में जीवन की किरण खोजने में लगा था। मार्स ग्लोबल सर्वेयर पहला सफल स्पेसक्राफ्ट था जिसे 7 नवम्बर 1996 को मंगल भेजा गया था और 1998 तक मंगल की परिक्रमा करते हुए इसके धरातल के अध्ययन के साथ-साथ इस ग्रह का नक्शा भी तैयार करता रहा। 4 जून 1997 को मार्स पाथफाइंडर स्पेसक्राफ्ट मंगल की सतह पर उतरने में कामयाब रहा। पाथफाइंडर के साथ एक छोटा रोवर सोजर्नर भी भेजा गया था। सोजर्नर ने पाथफाइंडर से निकल कर मंगल की सतह का जायजा लिया और 550 चित्र पृथ्वी पर भेजे। पाथफाइंडर ने मंगल के 1600 चित्रों समेत 2.6 अरब बाइट डाटा पृथ्वी पर भेजा। इस ग्रह पर खोजी अभियान के चलते 1997 में यूरोपियन स्पेस एजेंसी के हेगेंस प्रोब के साथ कासिनी स्पेसक्राफ्ट को हमारे सौरमंडल के एक महत्वपूर्ण ग्रह शनि की ओर भेजा गया। कासिनी 2004 की गर्मियों तक शनि पहुँच जाएगा। कासिनी अब तक की सर्वोत्कृष्ट टेक्नोलॉजी से युक्त स्पेसक्राफ्ट है और वह शनि के एस्ट्रॉएड छल्लों के अध्ययन के साथ ही इसके वातावरण और चुम्बकीय क्षेत्र का अध्ययन करेगा। कासिनी शनि के चन्द्रमा टाइटन व अन्य चन्द्रमाओं का भी अध्ययन करेगा।

अन्तरिक्ष अभियान की दौड़ के चलते नासा मीर के समकक्ष एक और अन्तरिक्ष बेस या स्टेशन बनाने की परियोजना में लग गया। 1993 में तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन के समय इसका नाम अल्फा रखा गया तथा इसके डिजाइन पर कार्य शुरू हो गया। परन्तु इसी वर्ष इस परियोजना में रूसी भी शामिल हो गए और तब इसका नया नामकरण हुआ 'इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन' या 'आईएसएस (ISS)'। आईएसएस का निर्माण 1998 में अमेरिका व रूस समेत 16 अन्य देशों के सहयोग के साथ शुरू हुआ और वर्ष 2000 में इसमें पहले चालक दल ने प्रवेश किया।

3 सितम्बर 2000 को नासा के एक स्पेक्ट्रोमीटर ने अंटार्कटिक प्रदेश के ऊपर पृथ्वी के वातावरण की सुरक्षा कवच ओजोन की पर्त पर एक छेद का पता लगाया। यह छेद अमेरिका के क्षेत्रफल से तीन गुने से अधिक बड़ा था। सबसे चिन्ता की बात यह है कि यह अब भी करीब 110 लाख वर्गमील की दर से बढ़ता जा रहा है।

21वाँ दशक अन्तरिक्ष अभियान के लिए कुछ शुभ नहीं साबित हो रहा है। इस दशक के प्रारम्भ में ही 23 मार्च 2001 को 15 वर्ष पुराने रूसी अन्तरिक्ष स्टेशन मीर की यात्रा समाप्त हो गई और इसने फिजी में नाडी के पास दक्षिण प्रशान्त महासागर में गिरकर हमेशा के लिए विदा ले ली। इसी कड़ी के रूप में 1 फरवरी 2003 का दिन नासा और भारत समेत पूरे विश्व के लिए बेहद दुर्भाग्यशाली साबित हुआ। इस दिन अपने 16 दिवसीय अन्तरिक्ष अभियान को पूरा करके पृथ्वी लौट रहा कोलंबिया स्पेस शटल कैनेडी स्पेस सेंटर में लैंड करने से मात्र 16 मिटन पहले ही आकाश में भीषण विस्फोट के साथ अपने सात सदस्यीय चालक दल समेत कण-कण बिखर गया। भारत ने इस हादसे में प्रतिभाशाली विज्ञानी कल्पना चावला को खो दिया। इन सब हादसों के होते हुए भी अन्तरिक्ष की दौड़ कमजोर नहीं पड़ी है। भारत अपने 2010 तक चन्द्रमा पर मानव रहित यान भेजने की तैयारी में लगा है। 15 अक्टूबर 2003 को अन्तरिक्ष यान शेनचाओ-पाँच से भेजे गये अन्तरिक्ष यात्री यांग लिवेई के अन्तरिक्ष में कदम पड़ते ही चीन एशिया का पहला देश तथा दुनिया में अमेरिका व रूस के बाद अन्तरिक्ष में मानव भेजने वाला तीसरा देश हो गया।

✶

पर्यावरण का बचाव

—भालेन्दु प्रताप सिंह
अष्टम 'क'

पर्यावरण दो शब्दों 'परि + आवरण' से मिलकर बना है। 'परि' का अर्थ है चारों ओर तथा 'आवरण' का अर्थ है, जो ढके हुए है या घेरे हुए है। इस प्रकार शाब्दिक रूप से पर्यावरण का अर्थ हुआ, वे वस्तुएँ (भौतिक और अभौतिक) जो चारों ओर से व्यक्तियों को घेरे रहती हैं।

पर्यावरण और मानव जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक व्यक्ति पर्यावरण के साथ निरन्तर संघर्ष करता आया है। डार्विन ने तो यहाँ तक कह दिया कि वे प्राणी जो पर्यावरण से अनुकूलन नहीं कर पाते, उनकी मृत्यु हो जाती है। अतः पर्यावरण एक ऐसी शक्ति है, जो जीवों को बदलने के लिये बाध्य करती है। मानव अपने को पर्यावरण के अनुकूल नहीं ढालता वरन् पर्यावरण को अपने अनुकूल परिवर्तित करने का प्रयास करता है। परन्तु आज मानव अपना जीवन सुखमय बनाने के लिये पर्यावरण प्रदूषित कर रहा है। जैसे - वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, विद्युत प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण, मृदा प्रदूषण आदि। मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिये आज पेड़-पौधों व जीव-जन्तुओं को नष्ट कर रहा है, जिससे पारिस्थितिक सन्तुलन बिगड़ रहा है और अनेक प्राकृतिक आपदाएँ मनुष्यों व जन्तुओं को झेलनी पड़ रही हैं। अब तक भारत में पौधों की 24 जातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं तथा 132 विलुप्त होने की कगार पर हैं। पौधे पर्यावरण का अभिन्न अंग हैं- "The plants are the green gold." ''वनों का नष्टीकरण दुर्भिक्ष को बुलावा देना है।''

अतः मनुष्य को पर्यावरण के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिये। यद्यपि केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा प्राणी संरक्षण व वन्य संरक्षण के उपाय किए जा रहे हैं, जिसमें सफलता भी प्राप्त हुई है। सम्पूर्ण देश में लगभग 165 प्राणी शरणस्थल तथा 15 राष्ट्रीय उद्यान स्थापित किये गए हैं। वन्य प्राणियों में संरक्षण एवं शोध को राष्ट्रीय स्तर पर प्रोत्साहित किया जा रहा है। ''भारतीय वन्य जीव संसाधन'' जो कि देहरादून में स्थित है, इसका उल्लेखनीय उदाहरण है। परन्तु अभी भी पूर्ण सफलता नहीं मिली है। अतः पर्यावरण को बचाने के लिये मनुष्य को हर संभव प्रयास करने चाहिये।

✶

विद्यार्थी कैसा हो ?

—राज गौरव कटियार
अष्टम 'क'

विद्यार्थी के लिये अंग्रेजी में शब्द Student *है । इस शब्द का प्रत्येक अक्षर विद्यार्थी की विशेषताओं का बोध कराता है । इसी का विश्लेषण किया है राजगौरव ने ।*
— सम्पादक

'विद्यार्थी' अर्थात् 'विद्या + अर्थी' (विद्या ग्रहण करने वाला) मनुष्य अपने सम्पूर्ण जीवन में कुछ न कुछ सीखता है अर्थात् उसका विद्यार्थी जीवन कभी समाप्त नहीं होता ।

विद्यार्थी शब्द का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द है - 'Student' इस शब्द में सात अक्षर हैं । S इस शब्द का प्रथम अक्षर है । यह Service अथवा सेवाभाव का बोध कराता है । विद्यार्थी को अपने शिक्षकों, बुजुर्गों, समाज व राष्ट्र की सेवा करना चाहिए ।

द्वितीय अक्षर T. Time अथवा समय का प्रतीक है । विद्यार्थी को अपना प्रत्येक कार्य समय पर करना चाहिए।

तृतीय अक्षर U से तात्पर्य है Use अर्थात् विद्यार्थी को अपने समय का जो कि बहुत महत्वपूर्ण है, सदुपयोग करना चाहिए । चतुर्थ अक्षर D, Duty अर्थात् कर्तव्य का बोध कराता है । विद्यार्थी को अपने कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वाह करना चाहिए । विद्यार्थी को किसी भी स्थिति में अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं होना चाहिए । कर्त्तव्यपरायणता विद्यार्थी का मुख्य गुण है ।

पाँचवें अक्षर E का अर्थ है, Early Riser के रूप में आता है । अध्ययनशीलता विद्यार्थी के लिए प्रातःकाल जल्दी उठना आवश्यक है ।

छठे अक्षर N को Nice के रूप में (अर्थात् सुन्दर) लिया जाना चाहिए । उसका चरित्र सुन्दर व हृदय साफ होना चाहिए । उसका कार्य व्यवहार व आचरण उत्तम होना चाहिए । अपने से बड़ों व बुजुर्गों के प्रति उसका व्यवहार सुन्दर, शिष्ट, विनम्र व आदरभाव से पूर्ण होना चाहिए ।

Student शब्द का अन्तिम अक्षर T है अर्थात् Truthful विद्यार्थी को सदैव सत्यपथ का अनुसरण करना चाहिए । अगर विद्यार्थी सत्यपथ से पृथक् हो जाता है तो उस पर से शिक्षक का विश्वास उठ जाता है ।

*

करि फुलेल को आचमन, मीठो कहत सराहि ।
ऐ गंधी मति मंद तू, अतर दिखावत काहि ।।

– बिहारी लाल

खगोल विज्ञान

ब्लैक होल (कृष्ण गुहा)

—**अमित कुमार चौधरी,** अष्टम 'क'

ब्लैक होल ऐसे खगोलीय पिण्ड को कहते हैं जिसका गुरुत्व बल प्रकाश को भी नहीं निकलने देता है। गुरुत्वाकर्षण की प्रवृत्ति वस्तु को सिकोड़ने की होती है। जब तक अन्य बलों के द्वारा इस प्रवृत्ति को रोका जा सकता है तब तक वस्तु का आकार स्थिर रहता है। यदि ये बल प्रतिरोध में कामयाब न रह सके तो वस्तु का आकुंचन होने लगता है। गुरुत्वीय आकुंचन में गुरुत्वाकर्षण के अजीब गुण के दर्शन होते हैं। सामान्य बल का यह गुण होता है कि उसके अनुसार घूमने पर वस्तु का प्रभाव कम होता जाता है लेकिन गुरुत्वाकर्षण ऐसा बल है जिसके अनुसार घूमने पर बल बढ़ता है। यही कारण है कि बहुत बड़े द्रव्यमान वाले तारों का गुरुत्वाकर्षण उन पर इतना हावी नहीं हो जाता है कि उसकी सिकुड़न रोकना संभव नहीं होता। इस क्रिया को गुरुत्वीय पतन कहते हैं ऐसी स्थिति में पिण्ड ब्लैक होल का रूप धारण कर लेते हैं। ब्लैक होल के क्षितिज में किसी भी संदेश या प्रकाश का जाना संभव नहीं है।

ब्लैक होल के क्षितिज का व्यास उसके द्रव्यमान के अनुपात में घटता बढ़ता है। यदि सूर्य का ब्लैक होल बने तो उसका व्यास 6 कि०मी० होगा तथा पृथ्वी का ब्लैक होल बने तो उसका व्यास 1.6 से०मी० होगा परन्तु सूर्य व पृथ्वी इतने वस्तुमान के नहीं हैं कि इनके ब्लैक होल बनें।

✶

परोपकारः

—**राजगौरव कटियार,** अष्टम 'क'

"परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम् ॥"

अस्मिन् संसारे नानाविधाः पुरुषाः सन्ति। कश्चित् स्वार्थमेव मुख्यं गणयति अन्यश्च परार्थ कृत्वा स्वार्थमपि साधयति। अपरश्च स्वार्थं त्यक्त्वा परार्थ मेव मुख्यं स्वकर्त्तव्यम् गण्यते। वस्तुतः ते मनुष्याः एव धन्याः सन्ति ये सर्वदा स्वार्थंपरित्यज्य परोपकारमेव कुर्वन्ति। ये परोपकारं कुर्वन्ति ते पुण्यं प्राप्य इहलोके सुखमनुभूय परलोके अपि सुखमनुभवन्ति। परोपकारिणां सर्वत्र मानं भवति। तेषां सर्वाणि कार्याणि बिना प्रयासेन सिद्धयन्ति। मृत्योः पश्चात् तेषां यशः शरीरं तिष्ठति। यः परोपकारं करोति, तस्य हृदयं पवित्रं विनयशीलं सदयं सरसं च जायते। तेषां सन्ततिरपि सुखं मानञ्च अधिगच्छति।

इह संसारे ये महापुरुषाः अभवन् ते सर्वे परोपकारार्थ एव स्वप्राणान् अत्यजन्। सर्वे महापुरुषाः सर्वदा परोपकारं कुर्वन्ति। महापुरुषाणां परोपकारः एव स्वकीयं कार्यं भवति। महर्षिः दधीचिरपि शरीरदानेन देवानामुपकारं कृतवान्। परोपकारस्य भावनयैव महाराजः शिवि, कपोतस्य परित्राणाय स्वहस्ताभ्याम् निजमांसमुत्कृत्य श्येनाय ददौ। स्थावराः वृक्षाः अपि स्वशरीरं भसीकृत्य मनुष्याणामुपकारं कुर्वन्ति। अतः अस्माभिः अपि यथाशक्ति परोपकारः कर्त्तव्यः।

परोपकारस्य महिमा सर्वेषु शास्त्रेषु अस्ति। अस्माकं धर्मे अष्टादश पुराणानि सन्ति। सर्वेषु पुराणेषु परोपकारस्य महिमास्ति। केनचित् कविना लिखितम् -

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्यवचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥"

✶

दहेज प्रथा : सामाजिक दोष

—अमित कुमार गौतम
अष्टम 'ख'

दहेज प्रथा एक सामाजिक बुराई है । लोग इसकी आलोचना भी करते हैं परन्तु बहुतांश लोग जब अपने पुत्र का विवाह करते हैं तो शादी के बाजार में वे अपने मॉडल की कीमत लगाते हैं । दूल्हे बिकते हैं । यह स्थिति बूढ़ों को समझाने से नहीं सुधरेगी । विवाह के समय लड़के खुद दहेज के मामले में अपने अड़ियल घरवालों का विरोध करें।
— सम्पादक

प्रस्तावना - दहेज का दानव आज भारतीय समाज में विनाशलीला मचाए हुए है । दहेज के कारण कितनी ही युवतियों को काल के क्रूर हाथों में सौंपने की अमानवीय प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है । प्रतिदिन समाचार-पत्रों से इन दुर्घटनाओं के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं । भारतीय समाज का यह कोढ़ निरन्तर विकृत रूप धारण करता जा रहा है । समय रहते इस भयानक रोग का निदान और उपचार आवश्यक है, अन्यथा समाज की नैतिक मान्यताएँ नष्ट हो जायेंगी और मानव-मूल्य समाप्त हो जायेंगे ।

दहेज का अर्थ - सामान्यतः दहेज का तात्पर्य उस सम्पत्ति तथा वस्तुओं से समझा जाता है, जिन्हें विवाह के समय वधू-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जाता है । मूलतः इसमें स्वेच्छा का भाव निहित है, किन्तु आज दहेज का अर्थ इससे नितान्त भिन्न हो गया है। अब इसका तात्पर्य उस सम्पत्ति अथवा मूल्यवान वस्तुओं से है, जिन्हें विवाह की एक शर्त के रूप में कन्या-पक्ष द्वारा वर-पक्ष को विवाह से पूर्व अथवा बाद में देना पड़ता है ।

धन के प्रति अधिक आकर्षण - आज का युग भौतिकवादी युग है । समाज में धन का महत्त्व बढ़ता जा रहा है । धन सामाजिक प्रतिष्ठा एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा का आधार बन गया है । मनुष्य येन-केन-प्रकारेण धन के संग्रह में लगा हुआ है । वर-पक्ष ऐसे परिवार में ही सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है जो धन-सम्पन्न हो तथा जिससे अधिकाधिक धन प्राप्त हो सके ।

बाल विवाह- बाल-विवाह के कारण लड़के अथवा लड़की को अपना जीवन-साथी चुनने का अवसर नहीं मिलता । विवाह सम्बन्ध का पूर्ण अधिकार माता-पिता के हाथ में रहता है। ऐसी स्थिति में लड़के के माता-पिता दहेज की माँग अधिक करते हैं ।

ऋणग्रस्तता - दहेज-प्रथा के कारण वर-पक्ष की माँग को पूरा करने के लिए कई बार कन्या के पिता को ऋण भी लेना पड़ता है । परिणामस्वरूप अनेक परिवार आजन्म ऋण की चक्की में पिसते रहते हैं ।

आत्म हत्या - दहेज के अभाव में उपयुक्त वर न मिलने के कारण अपने माता-पिता को चिन्तामुक्त करने के लिए तथा ससुराल द्वारा अपमानित होने पर स्त्रियाँ आत्महत्या कर लेती हैं ।

अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन - अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देने से वर का चुनाव करने के क्षेत्र में विस्तार होगा तथा युवतियों के लिए योग्य वर खोजने में सुविधा होगी । इससे दहेज की माँग में भी कमी आयेगी ।

युवकों को स्वावलम्बी बनाया जाए - स्वावलम्बी होने पर युवक अपनी इच्छा से लड़की का चयन कर सकेंगे। स्वावलम्बी युवकों पर माता-पिता का दबाव कम होने पर दहेज के लेन-देन में स्वतः कमी आएगी ।

लड़कियों की शिक्षा - जब युवतियाँ भी शिक्षित होकर स्वावलम्बी बनेंगी तो वे स्वयं नौकरी करके अपना जीवन-निर्वाह करने में समर्थ हो सकेंगी ।

उपसंहार - दहेज प्रथा एक सामाजिक बुराई है, अतः इसके विरुद्ध स्वस्थ जनमत का निर्माण करना चाहिए। जब तक समाज में जागृति नहीं होगी, दहेज-प्रथा के दैत्य से मुक्ति पाना कठिन है । सभी के सहयोग से दहेज-प्रथा का अन्त हो सकता है ।

✶

विवेकानन्द के जीवन पर माँ शारदा का प्रभाव

—रवि सिंह, दशम 'ख'

1. प्रस्तावना - जब भगवान मानव-जाति के उद्धार के लिये धराधाम में अवतरित होते हैं, तब उनके साथ उनकी शक्ति का स्त्री रूप में प्रायः आविर्भाव होता है, जो उनकी अभिन्न सहचरी होती है और उनकी शक्ति के रूप में उनके अवतरण के कारण को लक्ष्य तक पहुँचाने के लिये निस्स्वार्थ समर्पण के भाव से सहायक सिद्ध होती है।

वर्तमान युग में वही दिव्य शक्ति माँ शारदा के रूप में आविर्भूत हुई, जो भगवान श्री रामकृष्ण परमहंस के दैवी कार्य को सम्पन्न कराने में सहायिका सिद्ध हुईं। तभी तो श्री रामकृष्ण उनके सम्बन्ध में कहा करते थे, ''वह शारदा है - सरस्वती है। ज्ञान देने के लिये आयी है। ..... वह मेरी शक्ति है।''

नील आकाश के पृष्ठ पर अगणित नक्षत्र झिलमिला उठे थे। मानो देव-ललनाएँ कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देख रही थीं कि इस रजनी में आनन्द-पुलकित होकर धरणीतल पर किसका आविर्भाव हुआ?

भगवान श्रीरामकृष्ण ने अपनी लीला-सहधर्मिणी 'माँ शारदा' के सम्बन्ध में बड़े ही भाव-विभोर होकर कहा, ''..... रूप रहने से कहीं अशुद्ध मन से देखने पर लोगों का अकल्याण न हो, इसलिये इस बार रूप ढककर आना हुआ है। ..... वह शारदा है - ज्ञानदायिनी है।''

2. माँ शारदा का जीवन-पुंज - एक शताब्दी पूर्व पुण्य भूमि भारत की दिव्य सुषमा को लेकर बंगाल के एक दरिद्र ब्राह्मण-परिवार में श्रीमती शारदामणि देवी का आविर्भाव हुआ। जाड़े के समय में 22 दिसम्बर 1853 ई० की पौष कृष्णा सप्तमी तिथि में लक्ष्मी वार (गुरुवार) को माँ शारदा का जन्म हुआ था। घर-घर आनन्दोत्सव हो रहा था। सर्वत्र मानो पार्वती देवी के अपने पीहर आने का आगमन संगीत झंकृत हो रहा था। निस्तब्धता को भंग करते हुए मुखर्जी परिवार में मंगल-ध्वनि के साथ शंख-नाद होने लगा। सारी यातनाओं को भूलकर श्यामासुन्दरी की दृष्टि अपनी प्रथम सन्तान लक्ष्मी जैसी कन्या के कमनीय मुख पर पड़ी। इस बालिका के जन्म के कारण ही बाँकुड़ा जिले का यह छोटा सा शस्य-श्यामल गाँव जयरामबाटी जगत-विख्यात हो गया। माता-पिता उसे सारु कहकर पुकारते थे। मई 1859 ई० में रामकृष्ण जी 29 वर्ष के तथा शारदामणि 6 वर्ष की थी जब उनका विवाह जयरामबाटी में सम्पन्न हुआ। 15 अगस्त 1886 ई० दिन रविवार को स्वामी रामकृष्ण परमहंस अकस्मात् बारम्बार पुलकित होकर रात्रि 1 बजकर 6 मिनट को समाधि में लीन हो गये। इस कुठाराघात से माँ शारदा को गहरा आघात लगा और वे धीरे-धीरे क्षीण होती गईं। श्री रामकृष्ण देव के साथ श्री शारदा देवी का चौतींस वर्ष का स्थल-विच्छेद समाप्त हुआ। 20 जुलाई 1920 ई० श्रावण मंगलवार को रात्रि में डेढ़ बजे शिव-योग से 66 वर्ष 7 मास की आयु में मंगल मयी पराशक्ति श्रीमाँ का परमशिव श्रीरामकृष्ण के साथ चिरमिलन हो गया।

3. विवेकानन्द जी के हृदय में माँ शारदा का स्थान - माँ का स्थान तो सदैव ही सर्वोपरि रहा है, तो कोई उस माँ को कैसे भूल सकता है ? जिसने उसके जीवन को राष्ट्रोन्मुखी बना दिया है। 'माँ' एक ऐसा शब्द है, जिसे सुनते ही मन में भावनाओं का सागर उमड़ पड़ता है; उसमें तीर्थों जैसी पवित्रता, पृथ्वी जैसा धैर्य, सागर जैसी गम्भीरता को अपने में संजोए हुए है। माँ अपने बच्चों को आंचल में रखकर सम्पूर्ण कष्टों को स्वयं सहती है। कुछ ऐसे महनीय व्यक्तित्व हुए जिनकी स्नेहमयी छाया में हमारे युगपुरुषों के व्यक्तित्व का निर्माण हुआ, जो स्वयं प्रसिद्धि पराङ्मुख रहे परन्तु अपने सान्निध्य की छाया से दूसरों को प्रकाशित कर गए।

इन्हीं में से एक महीयसी भगवान रामकृष्ण परमहंस की सहधर्मिणी माँ शारदा जिनका प्रबल व्यक्तित्व नरेन्द्र को गढ़ गया। उनका सान्निध्य पथप्रदर्शिता जिसने नरेन्द्र को विवेकानन्द बना दिया।

4. माँ शारदा का विवेकानन्द के जीवन पर प्रभाव - स्वामी विवेकानन्द रामकृष्ण परमहंस के प्रिय शिष्य थे इसलिये स्वाभाविक था कि उनका गुरुमाता (माँ शारदा) के प्रति लगाव था। नरेन्द्र भले ही माँ शारदा के सम्पर्क में कम रहे हों, परन्तु माँ शारदा का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। नरेन्द्र उनको माँ से ऊपर का दर्जा देते थे। स्वामी रामकृष्ण परमहंस की मृत्यु के पश्चात् यदि कोई नरेन्द्र (विवेकानन्द) के व्यक्तित्व की यात्रा का पथ-प्रदर्शक गुरु तो वह माँ शारदा थीं। यदि कोई लता को आधार दे परन्तु वह लता को कोई सहारा न दे, तो यह लता व्यर्थ हो जाएगी और

सहारा देने पर वह सीधे खड़े होकर जन-समूह को फल-फूल प्रदान करती है। विवेकानन्द ने कहा था कि, ''श्री माँ बगला देवी की अवतार हैं। वर्तमान समय में सरस्वती के रूप में उनका आविर्भाव हुआ है।''

स्वामी विवेकानन्द ने भी उनके असली रूप को पहचान लिया। वे उन्हें- 'जीती-जागती दुर्गा' के रूप में देखा करते थे। तभी तो इस अपरोक्ष दर्शन पर प्रतिष्ठित हो उन्होंने कहा था, ''माँ के जीवन की अपूर्व विशिष्टता कौन समझ सका है ? कोई भी नहीं। किन्तु धीरे-धीरे सब जान सकेंगे। जिस शक्ति के बिना जगत् का उद्धार नहीं हो सकता, उसी महाशक्ति का भारतवर्ष में पुनः जागरण करने के लिये माँ अवतीर्ण हुई हैं, और उनका आदर्श लेकर एक बार फिर संसार में गार्गी और मैत्रेयी के समान स्त्री-रत्न उत्पन्न होंगे।''

5. उपसंहार- हम देखते हैं कि श्रीराम का सीता के साथ, श्रीकृष्ण का राधा के साथ, बुद्ध का यशोधरा के साथ और चैतन्य का विष्णुप्रिया के साथ इस जगत् में आगमन हुआ। ये आदर्श नारियाँ जो एक ही दिव्य शक्ति की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं ईश्वर की लीला के आविर्भाव में सहायक हुई हैं।

उनका यह दैवी-मातृत्व आदर्श-पत्नी, आदर्श संन्यासिनी और आदर्श गुरु आदि के रूपों में प्रकट हुआ हैं। इन नाना रूपों में उन्होंने जगत् के सम्मुख भारतीय नारी को तथा उसके आदर्शों को प्रस्तुत किया है, जिसमें पवित्रता, दया और सरलता का समावेश है। आत्मानुभूति और सेवा के द्वारा उन्होंने भारतीय संस्कृति और समाज में नूतन जीवन संचारित किया है। उनका चरित्र सामाजिक सेवा के विविध क्षेत्रों में कार्य करने वालों को सतत् प्रेरणा प्रदान करता रहेगा और आध्यात्मिक साधकों के लिये स्फूर्तिदायक सिद्ध होगा; क्योंकि उनके जीवन और उपदेशों में समस्त आत्मिक संशयों को दूर कर 'परम सत्य' तक पहुँचने की क्षमता है।

अब यह संसार की नारियों का धर्म है कि वे उनके पद-चिह्नों पर चल कर अपने को उनके जीवन के अनुरूप ढालने का प्रयत्न करें।

मंगल ग्रह

प्रस्तुतिः—अमित कुमार चौधरी, अष्टम 'क'

मंगल हमारे सौरमण्डल के आन्तरिक ग्रहों में सबसे बाहरी ग्रह है। मंगल की मिट्टी में आयरन ऑक्साइड पाया जाता है जिसकी वजह से यह लाल दिखता है। मंगल के दो उपग्रह हैं जिनका नाम है - डिमॉस और फोबोस।

मंगल का एक दिन 24 घण्टे 37 मिनट के बराबर होता है। किन्तु इसका एक वर्ष 687 दिन का होता है। मंगल का औसत तापमान $-9^{o}C$ से $-23^{o}C$ तक होता है। मंगल का वायुमण्डल अत्यन्त विरल है। जिसका मुख्य अवयव कार्बन-डाई-आक्साइड है।

मंगल ग्रह की सतह ऊबड़-खाबड़ गढ्ढों से भरी है और वहाँ पर कई मृत ज्वालामुखियों के प्रमाण मौजूद हैं। यहाँ पर ओलम्पस मॉन्स नामक ज्वालामुखी स्थित है जो एवरेस्ट से तीन गुना ऊँचा है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह पता चला है कि यहाँ कभी सागर था। यह सागर यहाँ के सघन वायुमण्डल के कारण था जो यहाँ कभी उपस्थित था। लेकिन अब ऐसा नहीं है अब यहाँ पर वायुमण्डल विरल है। पृथ्वी की ही तरह मंगल में भी प्रमुख रूप से चार ऋतुएँ हैं।

अन्तरिक्ष यान ''पाथफाइंडर'' के द्वारा भेजे गए चित्रों से पता चलता है कि करोड़ों वर्ष पूर्व मंगल पर जल अत्यधिक मात्रा में पाया जाता था। यहाँ पर काफी समय पूर्व आए बाढ़ के चिह्न भी पाए गए हैं।

सन् 1999 में सर्वेयर ने मंगल पर 160 कि०मी० लम्बी चुम्बकीय पट्टी का पता लगाया। यह पट्टी इस ग्रह की प्राचीन चुम्बकत्व की अवशेष है जो कि मंगल की सतह पर पूर्व से पश्चिम की ओर जाती है।

सी०एन०जी० क्या है ?

—सूरज पटेल
नवम 'क'

सी०एन०जी० अर्थात् कंप्रेस्ड नेचुरल गैस एक प्राकृतिक गैस है जो धरती के भीतर पाये जाने वाले हाइड्रोकार्बनों का मिश्रण है। इसमें 80 से 90 प्रतिशत मात्रा मीथेन गैस की होती है। यह रंगहीन, गंधहीन एवं हवा से हल्की होती है। इसे वाहनों में प्रयोग करने के लिये 200-250 कि०ग्रा० प्रति वर्ग से०मी० दाब पर संपीड़ित किया जाता है। सी०एन०जी० में कार्बन का सिर्फ एक यौगिक मीथेन है। सी०एन०जी० को पेट्रोल व डीजल के स्थान पर उपयोग करने का कारण यह है कि इससे पेट्रोल व डीजल की अपेक्षा 70% कार्बन मोनो ऑक्साइड 87 प्रतिशत नाइट्रोजन ऑक्साइड कम उत्सर्जित होती है। इससे जैविक गैसें भी लगभग 89% कम उत्सर्जित होती हैं। इसकी ऑक्टेन संख्या 125 से 130 होने के कारण भी यह ईंधन का एक बेहतर विकल्प मानी जा रही है। इसकी विस्फोटक सीमा पेट्रोल व डीजल से बहुत ज्यादा है। अतः प्रदूषण को कम करने में सी०एन०जी० एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

✶

सकारात्मक सोच की महत्ता

—सूरज पटेल
नवम 'क'

एडीसन बल्ब के आविष्कार में दस हजार बार असफल हुआ। पर नकारात्मक सोच उसे हतोत्साहित न कर सकी। वह जब असफल होता तो यही कहता कि अब मैंने एक और विधि जान ली है जिससे विद्युत लैंप नहीं बनाया जा सकता। इसी सकारात्मक सोच के कारण ही वे अंततः सफल हुए। हमें चीजों को सकारात्मक रूप से देखना चाहिये। यदि एक गिलास दो सौ मि०मी० का है और उसमें सौ मि०मी० दूध भरा है और हम यह कहते हैं कि यह गिलास आधा भरा है तो यह हमारी सकारात्मक सोच होगी पर अगर हम यह कहते हैं कि यह आधा खाली है तो यह हमारी नकारात्मक सोच होगी।

हम देखते हैं कि सकारात्मक सोच से व्यक्ति कितने चमत्कारिक कार्य करने में सफल हो जाता है। महान मुक्केबाज मोहम्मद अली ने अपनी शर्ट पर लिख रखा था कि मैं महानतम हूँ। इसे पढ़-पढ़ कर उनमें सकारात्मक सोच की शक्ति आती गयी और वे सफलता के मुकाम पर पहुँचे।

अगर आपको विश्वास है कि आप कोई काम कर सकते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि आपके मार्ग में बाधाएँ नहीं आयेंगी, आप पराजित नहीं होंगे। लेकिन आपकी सकारात्मक सोच आपको इस कुंठा से ऊपर उठा देगी। महान कवि राल्फ वाल्डो एमरसन के अनुसार, "पराजय का कारण बाहर नहीं आपके भीतर विद्यमान है।" वास्तव में उद्देश्य की अस्पष्टता की आपकी अपनी कमजोरी के अलावा आपके अन्दर और कोई अलंघ्य बाधा नहीं है।

✶

शिष्टाचार

—**प्रशान्त पाण्डेय,** नवम 'क'

अपने जीवन में हम आए दिन शिष्टाचार शब्द का प्रयोग करते रहते हैं। शिष्टाचार अर्थात् शिष्ट (सभ्य) आचरण। यूँ तो सभ्य आचरण का क्षेत्र व्यापक और विस्तृत है। लेकिन फिर भी संक्षिप्त रूप में हम कह सकते हैं कि जो व्यक्ति मृदुभाषी है, दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करता है, नम्र तथा उदारमन है, साथ ही सहज सरल व किसी का बुरा न चाहने वाला है, वह सभ्य है, शिष्ट है।

इसके साथ ही हमारे मस्तिष्क में एक प्रश्न गूँजता है कि आखिर इस शिष्टाचार की आवश्यकता क्या है ? इस विषय में मेरा मानना है कि अगर समाज में शिष्टाचार का अभाव है तो वह असभ्य और मृतवत् है। समाज में असभ्य व्यक्ति की उपस्थिति शून्य है। वह न किसी का प्रिय होता है और न ही स्नेही। अगर मनुष्य शिष्ट नहीं है तो प्रतिपल बाधाओं से उसका सामना होगा तथा उसके कार्य अवरुद्ध होंगे और वह एक सफल आदमी बनने में असमर्थ रहेगा।

अशिष्ट व्यक्ति को शैशव से मृत्यु पर्यन्त उपेक्षित रहना पड़ता है। घर हो, परिवार हो, विद्यालय हो या कोई सामाजिक संस्था हो, जहाँ भी वह जाता है, उसे निन्दा, अपमान तथा उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। उसका सान्निध्य सबके लिए असहनीय हो जाता है और तब उसे तनाव या चिन्ता घेर लेती है। अशिष्ट व्यक्ति समाज तो क्या घर के लोगों द्वारा भी त्याज्य हो जाता है।

ईश्वर ने हमें जीवन रूपी जो अमूल्य निधि प्रदान की है, उसकी हमें कद्र करनी चाहिए, सद्गुणों को अपनाकर जीवन को सफल व सुन्दर बनाने का प्रयास करना चाहिए, ताकि मृत्यु के बाद भी हम एक शिष्ट प्राणी के रूप में याद किये जाते रहें।

✶

आतंकवाद

—**विश्वास गुप्त,** सप्तम 'क'

अब वक्त आ गया है, जाग जायें हम ?
दुश्मन है कौन अमन का, पहचान जायें हम ॥

अपने आतंक से जनमन में भय की भावना का निर्माण कर अपना उद्देश्य सिद्ध करने का सिद्धान्त आतंकवाद है। आज राजनीतिक नेता शान्ति का प्रवचन देते रहते हैं और आतंकवाद के विरुद्ध कोई कड़ा कदम नहीं उठाते हैं जिससे आतंकवाद का शिकार साधारण जनता बनती है।

आतंकवाद हमारे देश में एक गम्भीर समस्या बन चुका है, जिसका प्रायोजक हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान ही है जहाँ के शासक सदा आतंकवाद को प्रोत्साहित करके कश्मीर को हथियाने का प्रयास कर रहे हैं।

आतंकवाद का मुख्य कारण देश की राजनीति बन गई है। नेता केवल भाषण देना जानते हैं। प्रत्येक भारतीय के मन में यह प्रश्न बार-बार उठता है कि अत्याचार, उग्रवाद का शिकार कोई नेता नहीं बनता, अपितु इसका पहला शिकार जनता ही बनती है। आज हमारे देश में प्रजातंत्र है फिर भी राजनीतिक नेता हमारी शान्ति में चिन्ता की बेड़ियाँ डाल देते हैं।

अन्ततः हमें राजनीति का बहिष्कार क्रान्ति द्वारा करना है। स्वतन्त्रता 'क्रान्ति' है और क्रान्ति ही हमें स्वर्णिम भविष्य में ले जा सकती है। आज हमें इस भयानक परेशानी का सामना एकजुट होकर करना है। जिस प्रकार एक अँगुली कोई कार्य नहीं कर सकती तो पाँचों अँगुलियों से ही कार्य करना पड़ता है। इसी प्रकार से हम भी एक संगठन बनाकर आतंकवाद का सामना करते हुए आतंकवाद को जड़ सहित नष्ट कर सकते हैं। आज समय की भी यही माँग है कि 'आतंकवाद' का दमन करना ही हमारा प्रमुख लक्ष्य हो। ✶

सफलता क्या है ?

—सौम्यशील सिंह,
एकादश 'क'

चि० सौम्यशील का समग्र व्यक्तित्व आकर्षक है । वह नामानुकूल है । हाईस्कूल की परिषदीय परीक्षा में तृतीय स्थान प्राप्त सौम्यशील यदि 'सफलता क्या है' ? का विश्लेषण कर रहे हैं तो वाज़िब है । विचारों का निबन्धन करते हुए वे कुछ भावनाओं के वेग में भी बह गये हैं जिससे इस रचना को लगभग गद्यगीत कहा जा सकता है । मैं कमोबेश बिना छेनी-हथौड़ी लगाए इसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करता हूँ । **सम्पादक**

सफलता और असफलता के विषय पर बहुत चिन्तन हुआ है । जरूरत है तो हमें इतिहास से कुछ सीखने की । जब हम सफल व्यक्तियों की जीवनियों पर नज़र डालते हैं कि सभी में निस्संदेह मिलते-जुलते कुछ खास गुण हैं, चाहे वे किसी भी युग के रहे हों । सफलता सिर्फ एक संयोग नहीं है यह हमारे नजरिये का नतीजा है । सफलता कोई अजूबा नहीं है । यह तो सिर्फ कुछ बुनियादी उसूलों का लगातार पालन करने का नतीजा है । इसका उल्टा भी उतना सही है । असफलता सही मायनों में कुछ गलतियों को लगातार दोहराने का नतीजा है । यह सब सुनने में बहुत आसान लग रहा होगा लेकिन हकीकत यही है सत्य सदैव सुन्दर होता है । मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह आसान है लेकिन यह यकीनन सरल है ।

ऐसा क्यों होता है कि एक व्यक्ति एक के बाद एक सफलता हासिल करता चला जाता है, जबकि दूसरे लोग सिर्फ तैयारियों में ही लगे रहते हैं ?

यदि ऐसे सवालों के जवाब पाठ्यक्रम में शामिल किये जाएँ तो ये शिक्षा-प्रणाली में क्रान्ति ला देंगे । असाधारण व्यक्ति अवसर ढूँढ़ता है जबकि साधारण आदमी सुरक्षा खोजता है ।

कुछ लोगों के लिए दौलत ही सफलता है तो कुछ के लिए नाम कमाना, अच्छी सेहत, सुखी परिवार, सुख, संतोष और दिलो दिमाग का चैन । परन्तु अर्ल नाइटिंगल तो कुछ और ही कहते हैं ''मूल्यवान लक्ष्य की लगातार प्राप्ति का नाम ही सफलता है ।'' "Success is a progressive realization of a worthy Goal"

परन्तु मेरे लिए इसका मतलब कुछ और है -

सदा मुस्कुराना और सबको प्यार करना
गुणी जनों का सम्मान पाना ।
बच्चों के दिल में रहना
सच्चे आलोचकों की स्वीकृति पाना ।।
झूठे दोस्तों की दगाबाज़ी को सहना ।।
खूबसूरती को सराहना ।
दूसरों में खूबियाँ तलाशना ।
किसी उम्मीद के बिना ।
दूसरों के लिए खुद को अर्पित करना ।।
उत्साह के साथ हँसना और खेलना ।।

और मस्ती भरे तराने गाना,
इस बात का अहसास,
कि आपकी जिन्दगी ने किसी एक व्यक्ति का
जीवन आसान बनाया ।
यही सच्ची सफलता है ।।

सिर्फ जिन्दगी न गुजारो-जियो । सिर्फ छुओ नहीं- महसूस करो । सिर्फ देखो नहीं - गौर करो । सिर्फ पढ़ो नहीं - जीवन में उतारो । सिर्फ सुनो नहीं - ध्यान से सुनो । सिर्फ ध्यान से न सुनो - समझो । यही सफलता का राज एवं मूल मंत्र है ।

✶

आजाद कौन है ?

—सौम्यशील सिंह
एकादश 'क'

जो जीवन में चुनौतियों का आगे बढ़कर सामना करते हैं तथा खतरे मोल लेते हैं वे ही कुछ विशिष्ट बन पाते हैं ।
— सम्पादक

हँसने में बेवकूफ समझे जाने का डर है ।
रोने में जज्बाती समझे जाने का डर है।
लोगों से मिलने में नाते जुड़ने का डर है ।
अपनी भावनाएँ प्रकट करने में मन की बात खुल जाने का डर है ।
अपने विचार, अपने सपने लोगों से कहने में
उनके चुरा लिए जाने का डर है ।
किसी से प्रेम करने पर बदले में प्रेम न पाने का डर है ।
जीने में मरने का डर है ।
आशा में निराशा का डर है ।
कोशिश करने में असफलता का डर है ।

लेकिन खतरे जरूर उठाने चाहिए क्योंकि जिन्दगी में खतरे न उठाने से अस्तित्व को ही खतरा है जो व्यक्ति खतरे नहीं उठाता न तो कुछ करता है वह न कुछ पाता है, और न ही कुछ बनता है ।

वे जिन्दगी में दुःख दर्द से तो बच सकते हैं लेकिन वे सीखने, महसूस करने, बदलाव लाने, आगे बढ़ने या प्रेम करने और जीवन जीने को सीख नहीं पाते हैं अपने नज़रिये की जंजीरों में बँधकर गुलाम बन जाते हैं और अपनी आज़ादी खो देने देते हैं । सिर्फ खतरे उठाने वाला इंसान ही, सही मायनों में आज़ाद है ।।

✶

जैसी करनी वैसी भरनी

—प्रफुल्ल सचान
दशम 'ग'

यद्यपि कहानियाँ कल्पनाधृत होती हैं परन्तु यह नितान्त काल्पनिक हवाई कहानी है तथापि इसका उद्देश्य शिक्षाप्रद तथा सार्थक है । ईर्ष्यालु व्यक्ति क्या नहीं कर सकता? और कुल मिलाकर ईर्ष्यालु व्यक्ति अपना ही नुकसान करता है । कथानक अनगढ़ है, भाषा साधारण तथा उद्देश्य शैक्षिक है । — **सम्पादक**

कहा जाता है कि यदि किसी व्यक्ति के पड़ोसी दुष्ट, ईर्ष्यालु और कपटी भावावृत्ति के हैं तो उसका जीवन नरक हो जायेगा । ये पड़ोसी उसकी सफलताओं में बाधक बन जायेंगे । इसके विपरीत यदि उसे सज्जन पड़ोसी मिल जायें तो उसे स्वर्ग में निवास की अनुभूति होगी । इसी तथ्य पर आधारित एक बीती हुई गाथा नीचे द्रष्टव्य है -

रामपुर गाँव में किशन नाम का एक किसान रहता था । उसका स्वभाव बहुत ही विचित्र था। वह चतुर धैर्यवान और परिश्रमी था । उसने कक्षा पाँच अपने ही गाँव के प्रा०शि०प० से पास किया था, लेकिन घर की स्थिति खराब होने के कारण उसे पढ़ाई छोड़कर खेती में जुटना पड़ा । किशन अब 30 बीघे भूमि का स्वामी है । किशन सुख-सम्पन्न होते हुए भी तमाम व्याधियों में फँसा रहता है, उसके पड़ोसी उससे बहुत ईर्ष्या करते हैं, मानो वे ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं । किशन के पास एक भैंस थी जो एक दिन में लगभग 15 लीटर दूध देती थी लेकिन उसके चारों पड़ोसियों की भैंसें केवल 6 लीटर दूध ही दे पाती थीं, इससे उसके पड़ोसी जलने लगे और अकारण ही उसकी भैंस को मार डाला । किशन बहुत दुःखी हुआ, वह जानता था कि ये किसका काम है, लेकिन उसने धैर्य रखा, और अपनी भैंस की खाल को बैलगाड़ी में रखकर दुकान की ओर चल पड़ा । करीब 10 मील चलने के बाद उसे दुकान मिली, लेकिन उस दुकानदार ने खाल लेने से मना कर दिया । जब वह दुकान पहुँचा तो उस समय रात होने वाली थी । किशन ने सोचा कि इस खाल को कहीं किसी जंगल में फेंक दूँगा और वह गाँव की ओर चल पड़ा । रास्ते में एक घना जंगल मिला, तभी आकाश में काले बादल उमड़ने लगे, शायद आँधी पानी आने के आसार थे। किशन जल्दी से एक पेड़ पर खाल को लेकर बैठ गया । थोड़ी ही देर बाद तीन चोर किसी राजा के घर से एक बोरा सोना लूटकर आ रहे थे । दुर्भाग्य से वे चोर उसी पेड़ के नीचे बैठ गए जिस पर किशन बैठा था और वे बटवारा करने लगे, तीनों चोर बहुत ही लालची थे । जब भी कोई चोर इधर-उधर देखने लगता तो दूसरा उसका थोड़ा सोना अपने में डाल लेता । इस प्रकार ये प्रक्रम चलता रहा तभी एक चोर बोला अगर तुमने बेईमानी की तो भगवान गाज गिरा देंगे । केवल इतनी ही आवाज से किशन जाग गया और नीचे की ओर जैसे ही देखा उसकी आँखें पीली हो गईं और खाल उसके हाथ से छूट गई जो उन्हीं चोरों के ऊपर गिर पड़ी । अब वे अन्धविश्वासी चोर ''भागो भगवान जी ने गाज गिरा दी' यह कहते-कहते भाग गये । तब किशन नीचे आया और सोने को भर कर गाड़ी में लादकर गाँव की ओर चल पड़ा और उस खाल को वहीं गाड़ दिया । किशन अपने गाँव करीब सुबह पाँच बजे पहुँच पाया। उसके चारो पड़ोसी उसी की चर्चा कर रहे थे, तभी उन्होंने किशन को देखा लेकिन उन्हें उस बोरे का कुछ रहस्य समझ में नहीं आ रहा था, तब उन लोगों ने बड़ी जिज्ञासा से किशन से पूछा - ''कि किशन भाई ! तुम इसमें क्या भरे हो।'' तब उसने कहा कि - ''इसमें सोना है ।'' वे पड़ोसी भौचक्के रह गए । तब उनमें से एक पड़ोसी ने चतुराई से पूछा कि यह तुम्हें कैसे मिला तब किशन ने उन्हें अपनी भैंस को मारने का सबक सिखाने के लिए उसने भी चतुराई से कहा कि यह सोना मुझे दुकानदार ने भैंस की खाल के बदले में दिया है, तुम लोग भी अगर चाहो तो तुम अपनी-अपनी भैंसों की खाल बेंचकर सोना प्राप्त कर सकते हो ।

अब चारों मूर्ख पड़ोसी अपनी-अपनी भैसों को मार डालते हैं और दुकान की ओर चल पड़ते हैं । जब वे दुकान में पहुँचते हैं, तो वे सभी बड़े गर्व से कहते हैं कि आप हमारी इन खालों को ले लीजिए और हमें चार बोरा सोना दे दो, तब दुकानदार ने सोचा कि शायद ये पागल हैं, तथा उसने कहा कि हम भैंस की खाल नहीं लेते हैं । बेचारे मूर्ख पड़ोसी अपने किए पर बहुत पछताए। उन्हें सोना तो नहीं मिला लेकिन भैंसे जरूर चली गईं । फिर वे वापस गाँव लौट आते

हैं और किशन के सोने की चर्चा करते हैं, और अन्त में योजना बनी कि किशन के सोने को राख कर दिया जाए। आखिर ईर्ष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या ? आदत से लाचार है। उस समय गर्मी का मौसम था, सभी बाहर लेटते थे, किशन भी बाहर लेटता था जब रात को सब सो गए तो उसके चारों पड़ोसियों ने उसके घर में आग लगा दी और सोना, कोयला बन गया जब सुबह हुई तो किशन को रात भर हुई करतूत का पता चला। किशन को सोने के जलने का उतना कष्ट न था जितना उसके घर का।

किशन ने उस राख हुए सोने को बोरे में भर कर बैलगाड़ी में लादा और फेंकने के लिए चल पड़ा, रास्ते में उसे एक राजा की बेटी मिली उसने कहा कि भैया आप हमें वैद्य के यहाँ जाने के लिए बैलगाड़ी में थोड़ी दूर के लिए बैठ जाने दीजिए तो किशन ने कहा कि मैं तुम्हें एक ही शर्त पर बैठा सकता हूँ यदि तुम छींको न। इस पर वह राजी हो गई और बैठ गई, लेकिन थोड़ी ही देर में दुर्भाग्य से उसने छींक दिया, और जब उसने सचमुच में देखा कि सोना वाकई में राख हो गया है। अतः उसे पूरा एक बोरा सोना भुगतान करना पड़ा और इस प्रकार फिर वह एक बोरा सोना बैलगाड़ी में लादकर गाँव की ओर चल पड़ा। जब पड़ोसियों ने देखा कि यह बोरे में क्या ले आ रहा है, तब उन पड़ोसियों ने उससे पूछा तो उसने सारी घटना का वर्णन कर दिया इस घटना से प्रभावित होकर उन्होंने कुछ और ही सोचा। वह यह कि यदि हम भी राख भर के ले जाएँ तो हमें भी सोना मिल सकता है, लेकिन यह कहना जितना सरल है उतना ही करना कठिन था। इस बात का उन्हें अंदाजा न था। फिर भी उन्होंने वैसा ही किया और बोरा भर राख लेकर चल पड़े और उन्हें भी एक औरत मिली लेकिन वह बहुत गरीब थी, उसने भी कहा जो राजा की बेटी ने कहा था और उस लालची पड़ोसी ने भी किशन की कही शर्त झोंक दी और वह राजी होकर बैठ गई और थोड़ी ही देर में उस औरत का घर आ जाता है लेकिन उसने छींका नहीं, तभी उसको शंका होती है कि यह झूठ तो नहीं बोल रहा है, और उसने बोरे को खुलवाया तो उसने देखा उसमें लकड़ी का जला बुरादा भरा है। इस पर उसने आदमी को अपनी चप्पल से खूब पिटाई की। बेचारा किसके चक्कर में फँस गया, मुझे तो देखकर उस मूर्ख पर दया आती है।

अब वे और भी ज्यादा किशन पर क्रोधित हो जाते हैं, और अन्ततः उसे जान से मारने की योजना बनाते हैं। उन्होंने योजना बनाई कि रात को किशन को उठाकर नदी में जलाकर फेंक देंगे।

रात हो गयी थी, करीब 2 बजे उसे चारपाई सहित उठाकर नदी के पास ले जाते हैं, तभी एक पड़ोसी कहता है कि माचिस तो घर पर ही भूल आया हूँ। लेकिन अकेले माचिस लेने कोई भी जाने को तैयार न था, इसलिए चारों पड़ोसी एक साथ घर जाते हैं। लेकिन किशन जाग रहा था वह सिर्फ उनकी करतूत देखने के लिए ही सोने का नाटक कर रहा था। इस प्रकार अब सुबह के 4 बज गये थे। तभी वहाँ से एक चरवाहा 10-12 भैंसे चराता चला आ रहा था, तो किशन ने उससे कहा कि भैया आप भैंसें चराते-चराते थक गये होंगे अतः आप थोड़ी देर के लिए इस चारपाई में आराम कर लीजिए मैं तब तक इन्हें चराता हूँ। इस प्रकार वह सो जाता है, ठीक उसी के पाँच मिनट बाद वे चारों पड़ोसी आते हैं, और उसे देखे बिना उस पर मिट्टी का तेल डालकर आग लगाकर नदी में चारपाई सहित फेंक देता है, बेचारा वह चरवाहा निरर्थक ही मारा जाता है और चारों पड़ोसी घर के बाहर किशन के मरने की खुशी एक दूसरे से इजहार कर रहे थे तभी उन्होंने किशन को देखा और एक ने कहा यह तो किशन है, फिर दूसरे ने कहा वो भी देखो 10-12 भैंसों के साथ आ रहा है। उन्होंने दौड़कर किशन से पूछा कि तुम इतनी भैंसे कहाँ से लिए आ रहे हो तब किशन भी चालाकी से कहता है, कि अरे भाई ये सब आपकी ही कृपा है आपने हमें नदी के किनारे फेंका था इसलिए हमें भैंसें ही मिलीं, यदि आप लोग मुझे और गहरे फेंकते तो हमें हाथी-घोड़े मिलते।

अब वे चारों पड़ोसी सोचने लगे कि यदि हम भी नदी में जाएँ तो हमें हाथी, घोड़े, भैंसें आदि मिल सकती हैं, तो सभी ने कहा कि किशन भाई हमें भी आप नदी में फेंक दीजिए तो हम आपका यह अहसान कभी नहीं भूलेंगे। सभी नदी पर पहुँचते हैं, तो पहला कहता है, कि भैया आप हमें खूब गहरे फेंकना ताकि हमें हाथी, घोड़ा मिलें इसी प्रकार दूसरा कहता है, कि हमें इतना गहरे फेंकना ताकि हमें शेर, चीते, भालू मिल सकें। इस प्रकार चारों का अन्त हो जाता है।

ईर्ष्यालु पुरुष न ही अपनी उन्नति कर सकता है न ही दूसरों को करने देता है, वह मात्र एक रोड़ा बना रहता है।

भ्रष्टाचार

—सुयश मधुर दीक्षित, विवेक सिसौदिया
सप्तम 'क'

आज पूरे देश में भ्रष्टाचार व्याप्त है जिसके लिये सिर्फ नेता नहीं, पूरा समाज दोषी है। समाज स्वयं भ्रष्टाचार का पोषण करता है । नेता, अधिकारी या क्लर्क कोई भी हो, है तो वह समाज का ही अंग । यदि पूरा समाज भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड़ा हो जाए तो भ्रष्टाचार रह ही नहीं सकता है । इसी विषय पर सप्तम के सुयश और विवेक के विचार दृष्टव्य हैं । **— सम्पादक**

भ्रष्टाचार यह शब्द भ्रष्ट + आचार इन दो शब्दों के परस्पर मेल से बना है । इस प्रकार भ्रष्टाचार का अर्थ हुआ कि, भ्रष्ट अर्थात् खराब, निम्न स्तर का आचरण व व्यवहार ।

वर्तमान समय में भ्रष्टाचार हमारे देश की एक प्रमुख जटिल व गम्भीर समस्या है । इसका स्वरूप बड़ा ही विकराल है तथा यह और अधिक विस्तृत होता जा रहा है । आज हमारे देश का कोई भी क्षेत्र, कोई भी समुदाय, कोई भी संस्था शायद इस रोग से मुक्त नहीं है।

आज हमारे देश के कई नेता, प्रतिष्ठित व सम्मानित व्यक्ति व अन्य कई जिम्मेदार व्यक्ति इस भ्रष्टाचार के मामले में लिप्त हैं । जिसकी जानकारी सभी लोगों को है । फिर भी उन्हें कोई दण्ड क्यों नहीं मिला ? यह एक दूसरा भ्रष्टाचार है ।

कुछ वर्षों पूर्व बिहार के मुख्यमंत्री रह चुके श्री लालू प्रसाद यादव द्वारा किये गये चारे घोटाले का क्या परिणाम हुआ ? कुछ नहीं । यदि और ज्यादा अतीत में न जायें और आजकल समाज में हो रहे इन घोटालों व भ्रष्टाचार को इसकी, उसकी गलती कहकर यदि छोड़ भी दें तो वर्तमान समय में हमारे देश में एक और बड़ा भ्रष्टाचार 'स्टांप घोटाला' हमारे समक्ष प्रस्तुत हुआ है। जिसमें कई नेताओं, मंत्रियों व सफेदपोश व्यक्तियों के शामिल होने का खुलासा हुआ है ।

भ्रष्टाचार से प्रशासन का कोई भी अंग अछूता नहीं है । यहाँ तक कि इससे पुलिस भी ग्रसित हो चुकी है । कई पुलिस थानों में रिपोर्ट लिखवाने गए व्यक्ति की रिपोर्ट न लिखकर उसे परेशान कर भगा दिया जाता है तथा रिपोर्ट लिखने के लिए रुपये लिए जाते हैं । चिकित्सक वर्ग भी इससे ग्रसित हुए बिना नहीं रह सका है । चिकित्सक जो कि, रोगियों के रोगों का उपचार करते हैं आज वो स्वयं भ्रष्टाचार के रोग से ग्रसित एवं पीड़ित हैं परन्तु, आज वो स्वयं अपने इस रोग का उपचार व निदान करने में पूर्णतः असमर्थ नजर आ रहे हैं । समाज के ऐसे हज़ारों दृष्टान्त हमें मिलेंगे जो कि इस भ्रष्टाचार नामक दैत्य के विकराल स्वरूप का दर्शन करा सकते हैं। इस प्रकार भ्रष्टाचार वह दलदल है जिसमें एक बार गिर कर दोबारा सकुशल वापस निकलना मुश्किल ही नहीं असंभव भी है । भ्रष्टाचार वह रोग है जिसके एक बार हो जाने से वह रोग बढ़ता ही जाता है तथा उपचार व निदान न होने की वजह से वह लाइलाज हो जाता है। भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत ही गहरी हैं व दूर-दूर तक फैली हुई हैं । जिन्हें खत्म करना ही हमारा परम कर्त्तव्य होना चाहिए।

लंका में समृद्धि की सीता बन्दी है,
भ्रष्टाचार - समुद्र बीच में भरे हुए
लिए अहिंसा की माला कर में अपने -
राह माँगते राम किनारे खड़े हुए ।

जानकारी

धूमकेतु

—**अक्षय यादव,** नवम 'क'

पुच्छल तारा (धूमकेतु) का शीर्ष बहुत चमकीला होता है और इसके पीछे एक लम्बी चमकती हुई पूँछ होती है। कभी-कभी यह पूँछें इतनी लम्बी होती हैं कि सूर्य से पृथ्वी तक पहुँच सकती हैं- अर्थात् लाखों मील लम्बी।

सन् 1944 में एक ऐसा विचित्र धूमकेतु देखा गया था, जिसकी एक नहीं छः पूँछें थीं जिनकी लम्बाई लाखों मील थी। सन् 1811 में एक ऐसा धूमकेतु प्रकट हुआ था, जिसका सिरा 1700,000 किमी व्यास तथा पूँछ की लम्बाई 2,210,000 किमी थी।

पहली बार, धूमकेतुओं के मार्ग के बारे में एडमंड हेली ने खोज की। वे ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में खगोल-शास्त्र के प्रोफेसर थे। हेली महान वैज्ञानिक न्यूटन के मित्र थे। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की खोज की। सूर्य के गुरुत्वाकर्षण के कारण सारे ग्रह इसकी परिक्रमा करते हैं। तब यह भी पता चला कि ग्रहों की तरह धूमकेतु भी सूर्य की परिक्रमा करते हैं। एडमंड हेली ने पहली बार इसे सिद्ध किया। उन्होंने इस बात की खोज की कि सन् 1531 और 1607 में भी इसी तरह के धूमकेतु प्रकट हुए थे। हेली ने अनेक गणनाएँ कीं। अन्त में वह इस नतीजे पर पहुँचे कि जो धूमकेतु सन् 1531 और सन् 1607 में दिखाई दिया था, वही पुनः 1682 में दिखाई दिया। अर्थात् धूमकेतु 75 या 76 सालों में सूर्य का एक चक्कर लगाता है। अंततः हेली अपनी भविष्यवाणी को सच देखने के लिए जीवित नहीं रहे। 16 साल पहले ही उनकी मृत्यु हो गयी। उन्हीं की स्मृति में वह धूमकेतु हेली धूमकेतु कहलाने लगा।

हेली ने सन् 1537 से 1698 के मध्य देखे गये सभी धूमकेतुओं की कक्षाएँ निर्धारित कीं तथा उनके बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त कीं। सन् 1910 में हेली पुनः देखा गया। 76 वर्षीय चक्र के अनुसार हेली को सन् 1986 में आना था। इस बार दुनिया भर के वैज्ञानिक इसके अध्ययन के लिए पूरी तरह तैयार थे। आस्ट्रेलिया की पॉकर्स वेधशाला सहित विश्व की सभी वेधशालाएँ इस धूमकेतु का बारीकी से अध्ययन करने के लिए अपनी दूरबीनें आकाश की ओर किये तैयार बैठी थीं। यूरोपीय स्पेस एजेंसी (ई०एस०ए०) सोवियत रूस, जापान, नासा के अन्तरिक्षयानों ने हेली धूमकेतु को घेरा एवं ढेर सारी सूचनाएँ एकत्रित कीं।

✶

मौन का महत्व

—**अनिल मौर्य,** दशम 'ग'

जब महाभारत का अन्तिम श्लोक महर्षि वेदव्यास के मुखारबिन्द से निःसृत होकर गणेशजी के सुपाठ्य अक्षरों में भोजपत्र पर अंकित हो चुका, तब गणेश जी से महर्षि ने कहा- ''विघ्नेश्वर, धन्य है आपकी लेखनी ! महाभारत का सृजन तो वस्तुतः आपने किया है। परन्तु एक वस्तु आपकी लेखनी से भी अधिक विस्मयकारी है और वह है आपका मौन। सुदीर्घ काल तक आपका हमारा साथ रहा। इस अवधि में मैंने तो पन्द्रह-बीस लाख शब्द लिखा डाले, परन्तु आपके मुख से मैंने एक भी शब्द नहीं सुना।''

इस पर गणेश जी ने मौन की व्याख्या करते हुए कहा - ''वादरायण जी ! किसी दीपक में अधिक तेल होता है, किसी में कम, परन्तु तेल का अक्षय भण्डार किसी दीपक में नहीं होता। उसी प्रकार देव, मानव, दानव आदि जितने भी तनधारी हैं, सबकी प्राण-शक्ति सीमित है। किसी की कम है, किसी की कुछ अधिक, परन्तु असीम किसी की नहीं। इस प्राण-शक्ति का पूर्णतम लाभ वही पा सकता है, जो संयम से उसका उपयोग करता है। संयम ही समस्त सिद्धियों का आधार है, और संयम का प्रथम सोपान है - वाचोगुप्ति अर्थात् वाक् संयम। जो वाणी का संयम नहीं रखता, उसकी जिह्वा बोलती रहती है। बहुत बोलने वाली जिह्वा अनावश्यक बोलती रहती है, और अनावश्यक शब्द प्रायः विग्रह एवं वैमनस्य उत्पन्न करते हैं, जो हमारी प्राण-शक्ति को सोख लेते हैं।'' यह है मौन का महत्त्व !

आइए, हम सब इसका अभ्यास करें।

✶

मोह के दुष्परिणाम

—शशांक तिवारी, अष्टम 'ख'

सच ही कहा गया है - 'मोह सकल व्याधिन कर मूला' । मोह-माया में फँसा हुआ जीव आजीवन उसके आवरण को भेद नहीं पाता है और उसका परमात्मा की ओर गमन नहीं होता है । मोह के क्या दुष्परिणाम होते हैं - यही इस कथनाक में दिखाया गया है । — सम्पादक

देवर्षि नारद को परिभ्रमण काल में एक वयोवृद्ध धनवान मिला । पूजा बहुत करता था, भक्त लगता था । उसकी ढलती आयु को देखकर नारद बोले, ''परिवार समर्थ हो गया, अब घर से निकलकर वानप्रस्थ लेना चाहिए और लोकसेवा में लगना चाहिए ।'' बात धनवान के गले न उतरी। उसने कहा, ''अभी तो परिवार को सम्पन्न बनाना है, फिर कभी समय होगा, तो चलेंगे ।'' बहुत वर्ष बाद नारद उधर से फिर निकले । धनी भक्त की याद आ गई । उसके घर पहुँचे तो मालूम हुआ, वे कुछ समय पूर्व मर गए । नारद ने दिव्य दृष्टि से देखा तो, प्रतीत हुआ, वह मरकर बैल बन गया है और हल में चलता है । समीप जाकर नारद ने पूर्व जन्म की बात स्मरण दिलाई और कहा, ''अभी भी समय है, हमारे साथ चलो ।'' बैल को पूर्व जन्म स्मरण हो आया । फिर भी उसने सिर हिलाया और कहा, ''परिवार को कमाई करके खिलाता हूँ । मेरे चल पड़ने से इन लोगों की कठिनाई बढ़ेगी ।'' नारद चले गए ।

कई वर्ष बाद फिर आना हुआ । बैल का समाचार पूछने गए, तो ज्ञात हुआ कि वह भी मर गया । अब वह कुत्ता बना बैठा है उसी घर में । नारद बोले, ''कुत्ते की स्थिति में पड़े रहने से क्या लाभ; चलो विश्वकल्याण का कुछ काम करें।'' कुत्ता सहमत न हुआ । उसने कहा, ''विश्वकल्याण से क्या ? परिवार कल्याण ही बहुत है । मैं चल पड़ूँ, तो चोरों की रखवाली कौन करेगा ?' नारद चले गए, फिर तीसरी बार उसी प्रकार लौटना हुआ और नारद जी ने इस बार भी पहले की तरह पूछताछ की । मालूम पड़ा कि कुत्ता मर गया । देखा तो वह साँप बना वहीं एक बिल में सिर चमका रहा था । नारद उसके समीप पहुँचे और कहा, ''ऐसी दुर्गति से क्या लाभ ? अब तो इन लोगों की कोई सहायता भी न बन पड़ती होगी । चलो न ?'' सर्प ने असहमति सूचक सिर हिलाया और कहा, ''घर में चूहे बहुत हैं । इन्हें निगलने तथा डराने का काम क्या कम है ? परिवार का मोह कैसे छोड़ूँ ?'' नारद इसबार भी चले गए । एक दिन साँप बिल से निकला ही था कि घरवालों ने उसकी डण्डे से खबर ली और सिर कुचल दिया । ऐसी दुर्गति न हो, इसलिए आत्मीयजनों के प्रति अनावश्यक अतिशय मोह छोड़कर स्वयं को सत्प्रवृत्ति-संवर्द्धन हेतु समाजरूपी रणक्षेत्र में उतर जाना चाहिए ।

✶

हिन्दू स्वराज्य का अन्तिम दीपक 'शिवाजी'

—जयन्त यादव, एकादश 'क'

शिवाजी का जन्म 29 फरवरी 1630 ई० में जुन्नार के समीप शिवनेर पहाड़ी दुर्ग में हुआ था । शिवाजी के पिता शाह जी भोंसले ने बीजापुर, अहमदनगर, मुगलशाही आदि अनेक मुस्लिम राजवंशों में नौकरी की, परन्तु अपनी माता जीजाबाई और समर्थ गुरु रामदास की प्रेरणा से शिवाजी ने स्वतन्त्र हिन्दू राज्य स्थापित करने का संकल्प लिया। दादा कोंणदेव नामक गुरु ने उन्हें राज्य सम्बन्धी ज्ञान दिया । दक्षिण में सुल्तानों और मुगल सेनाओं के भीषण विध्वंसक कार्य, आगजनी, लूटपाट, धार्मिक अत्याचार, आर्थिक शोषण इत्यादि से शिवाजी काफी प्रभावित हुए थे । उन्होंने अपने देश को इस प्रकार के शोषण व अत्याचार से मुक्त कराने का व्रत धारण किया । उनके वयस्क होने तक दक्षिण में कोई सार्वभौम सत्ता नहीं रह गयी थी । शिवाजी ने 16 वर्ष की उम्र में सिंहगढ़, जावली, कोंकण, औरंगाबाद और सूरत जैसे कई विशाल किले जीत लिए । उनके मुख्य लक्ष्य पूना पर स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना, हिन्दू धर्म, गौ व ब्राह्मणों की रक्षा, मुगलों को खदेड़ना और हिन्दू राज्य की स्थापना करना था । औरंगजेब और आदिलशाह को शिवाजी ने अपनी गुरिल्ला नीति से आजीवन छकाए रखा । जून 1670 में उन्हें मराठा राज्य का संस्थापक घोषित कर छत्रपति की उपाधि दी गई । वे भारत के अन्तिम हिन्दू राष्ट्र निर्माता थे जिसने हिन्दुओं के मस्तक को एक बार फिर ऊपर उठाया ।

मेरी राज्य स्तरीय बाक्सिंग यात्रा

—दिलीप कुमार,
नवम 'क'

हमारा विद्यालय प्रारम्भ से ही प्रत्येक गतिविधि में अग्रणी रहा है। चाहे वह अध्ययन का क्षेत्र हो या अन्य सह पाठ्य गतिविधियों का क्षेत्र। प्रारम्भ से ही हमारे विद्यालय के अनेक विद्यार्थियों ने अनेक स्तरीय प्रतियोगिताओं में अपनी धाक जमाए रखी है। इनमें प्रमुख रूप से खो-खो, कबड्डी, एथलेटिक्स में हमारे विद्यालय की टीम सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती आई है।

इसी प्रकार कुछ वर्ष पहले ही हमारे विद्यालय में वीरेन्द्र जी के निर्देशन में बॉक्सिंग का अभ्यास शुरू हुआ। उनकी प्रेरणा से हम कदम दर कदम बढ़ते गए। प्रथम वर्ष से ही हमारे विद्यालय की टीम ने जिला स्तरीय बॉक्सिंग में अपना दबदबा बनाया और हमारे विद्यालय के पाँच छात्रों ने कानपुर मण्डल का नेतृत्व करते हुए राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया जिसमें दृश्यमुनि चाकमा और कृतिवास शर्मा को द्वितीय तथा शुभम शुक्ल को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। पिछले वर्ष भी हमारे विद्यालय के राकेश कुमार ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। इन्हें राष्ट्रीय शिविर के लिए भी चयनित किया गया।

इस वर्ष भी हमारे विद्यालय की टीम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में ट्रायल हेतु ग्रीन पार्क गई। टीम में - राकेश कुमार, शुभम शुक्ल, अक्षय यादव, अनुराग मिश्र, आनन्द शाक्य, निशान्त, मानस भारद्वाज, एस०एम० गौरव, विधुनाथ, रंजन कुमार और मैं था। जिसमें कुल 15 छात्रों की कानपुर की टीम में हमारे विद्यालय के सात विद्यार्थियों राकेश कुमार, अक्षय यादव, शुभम शुक्ल, अनुराग मिश्र, एस०एम० गौरव, मानस भारद्वाज और मेरा चयन हुआ। अगले दिन हमें झाँसी जाना था सुबह तैयार होकर हम लोग वीरेन्द्र जी के साथ रवाना हुए।

झाँसी पहुँचकर हम लोग ध्यानचन्द खेल स्टेडियम में रुके। हम सब बहुत खुश थे। मेरा पहला वर्ष था। मैंने वहाँ महसूस किया कि दीनदयाल विद्यालय के हम विद्यार्थियों का वहाँ विशेष सम्मान था। हमने अपने शिष्टाचार एवं अनुशासन से अपने विद्यालय की गरिमा को बनाए रखा।

रात्रि के समय बॉक्सिंग का शुभारम्भ हुआ कानपुर की ओर से मेरी पहली बाउट सहारनपुर के राजीव कुमार से थी। मैं काफी सहमा हुआ था किन्तु रिंग पर चढ़ते ही मेरा डर दूर हो गया। रिंग पर चढ़ते ही मैंने प्रेरणास्रोत हनुमान जी का ध्यान किया। मेरा प्रतिद्वन्द्वी शारीरिक रूप से मुझसे हृष्ट-पुष्ट था फिर भी वीरेन्द्र जी के अच्छे तकनीकी खेल प्रशिक्षण की बदौलत मैं इस मुकाबले में विजयी हुआ। इसके बाद के मुकाबलों में अक्षय यादव व राकेश कुमार अच्छे खेल के प्रदर्शन के बावजूद अपना मुकाबला न जीत सके। मेरा सेमी फाइनल मुकाबला गोरखपुर के राजीव चन्द्र से हुआ। थके होने के कारण मैं यह मुकाबला न जीत सका। इस प्रकार मैंने तृतीय स्थान प्राप्त किया। तीन दिन चले इन विभिन्न मुकाबलों में मानस भारद्वाज ने प्रथम और एस०एम० गौरव ने भी तृतीय स्थान प्राप्त किया।

पुरस्कार प्राप्त कर हम रात में ही विद्यालय के लिए रवाना हुए। विद्यालय पहुँचकर छात्रावास के विद्यार्थियों ने मुझे प्रोत्साहित किया। विद्यालय के विशाल कक्ष में हमें प्रधानाचार्य जी के कर कमलों द्वारा पारितोषिक प्राप्त हुआ। सभी छात्रों ने तालियाँ बजाकर हमारा स्वागत किया। इसके पश्चात् प्रधानाचार्य जी ने पुरस्कार के महत्त्व को बताया।

इस यात्रा की यादें हमारे मानस पटल पर कभी धुंधली नहीं पड़ेंगी। यह यात्रा मुझे आगे बढ़ने का सम्बल प्रदान करती रहेगी।

✶

ईश्वर मुझको फेल न करना

—अर्पित पोरवाल
सप्तम 'क'

ईश्वर मुझको फेल न करना ।
पास-पड़ोसी बुरा कहेंगे
संगी-साथी दूर रहेंगे ।
नहीं पिताजी बात करेंगे
भैया मुझ पर खूब हँसेंगे ।

ऐसा मुझसे खेल न करना ।
ईश्वर मुझको फेल न करना ।

अध्यापक नाराज रहेंगे
सभी बिगड़ते काज रहेंगे ।
छोटा भैया संग पढ़ेगा
समय समय पर हँसी करेगा ।

ऐसा मुझसे खेल न करना ।
ईश्वर मुझको फेल न करना ।।

प्रण करता हूँ, खूब पढूँगा
खेल-कूद भी साथ करूँगा ।
इम्तिहान में पास न होऊँ
जीवन में काँटे क्यों बोऊँ ?

ऐसा मुझसे खेल न करना ।
ईश्वर मुझको फेल न करना ।

आज तो हर कृष्ण ने तेवर बदल डाले
हम सुदामा की तरह जिन्दा रहें कब तक ।
प्राणप्यारी कूबरी कुर्सी हुई उनके,
राधिका सी विद्वता धीरज धरे कब तक ।।

शिक्षक

—अविनाश अवस्थी
सप्तम 'क'

शिक्षक विद्यार्थी का निर्माता होता है । अभिमान शून्य, श्रद्धावनत तथा परिश्रमी होकर विद्यार्थी अपना जीवन निर्माण कर सकते हैं तथा शिक्षक विद्यार्थियों का निर्माण कर अपने जीवन को धन्य कर सकते हैं ।

— सम्पादक

माता देती नया जीवन
पिता सुरक्षा करते हैं ।
लेकिन सच्ची मानवता
शिक्षक जीवन में भरते हैं ।

सत्य के पथ पर चलना
शिक्षक हमें बताते हैं ।
जीवन संघर्षों से लड़ना
शिक्षक हमें बताते हैं ।

ज्ञानदीप की ज्योति जलाकर
मन आलोकित करते हैं ।
विद्या का धन देकर हमको
जीवन सुख से भरते हैं ।

जीवन में कुछ पाना है तो
शिक्षक का सम्मान करो ।
शीश झुकाओ श्रद्धा से तुम
नहीं कभी अभिमान करो ।

★

तपकर खरे निकलने वाले कहलाते खञ्जर
दीवारों के बोझ नींव की घुटन वही सहते ।
थोप दिये जिन पर नकली व्यक्तित्व कन्नियों ने
उन ईटों के सिर शिखरों के स्वर्ण-कलश मढ़ते,
यदि न लूटते मुर्गे श्रेय सुबह के लाने का,
आज न दिनकर में यह अन्तर्दाह भरा होता ।।

ये नेता हैं भाई

—मृत्युञ्जय कटियार
अष्टम 'क'

'ये नेता हैं भाई' एक व्यंग्यात्मक तथा यथार्थपरक कविता है । नेता जिन्हें देश की जनता का, उनके हितों का नेतृत्व करना चाहिये वे सिर्फ अपने लिये ही सोचते और करते हैं । आज के नेता देश की समृद्धि के दीमक हैं । इनकी स्वार्थपरता का उन्मूलन आवश्यक है । **— सम्पादक**

ये नेता हैं भाई, ये नेता हैं भाई ।
इन्हें हो बधाई, इन्हें हो बधाई ।।

कमीशन से लाखों की दौलत कमाई ।
गबन और घोटालों से हस्ती बनाई ।।
हवाला से ऊँची हवेली बनाई ।
हजारों की रिश्वत से कोठी सजाई ।।

इन्हें बेइमानी बहुत रास आई ।
ये नेता हैं भाई, ये नेता हैं भाई ।।

विदेशों में लड़के ने की है पढ़ाई ।
वहीं एक लड़की से कर ली सगाई ।।
करोड़ों में बेटी की शादी रचाई ।
कमिश्नर का बेटा है डी०एम० जमाई ।।

तरक्की की उसने भी सूरत बनाई ।
ये नेता हैं भाई, ये नेता हैं भाई ।।

सफर को फ्री की सवारी खड़ी है ।
विदेशों का दौरा भी इनका फ्री है ।।
चिकित्सा की सुविधा भी घर पर मिली है ।
सुरक्षा मिली है, ये वी०आई०पी० है ।।

फ्री में इन्हें मुण्ड देते हैं नाई ।
ये नेता हैं भाई, ये नेता हैं भाई ।।

मगर एक दिन वह भी आया बुरा है ।
गुनाहों का इनके जो गगरा भरा है ।।
महामान्य के घर पे छापा पड़ा है ।
बड़ा माल कोठी में पकड़ा गया है ।।

हवलदार तक कर रहा है खिंचाई ।
ये नेता हैं भाई, ये नेता हैं भाई ।।

अहंकार

—अभय प्रताप सिंह
अष्टम 'क'

"जेतो नीचो ह्वै चलै तेतो ऊँचो होय" जो जितना नीचा अर्थात् विनम्र होकर चलता है वह उतना ही ऊँचा होता जाता है । जहाँ अहंकार होता है वहाँ न भक्ति का बीज फूटता है न ही प्रेम का पौधा पल्लवित होता है ।

— सम्पादक

अहंकार ऐसी बला है,
जिसके आँगन में मानव पला है ।
अंहकार पर है मानव को विश्वास;
उसने किया है मानव का नाश ।।

फिर भी मानव सँभलता नहीं,
अहंकार को त्यागता नहीं ।
अहं के कारण मानव बाद में रोता है;
दुःखों का पहाड़ ढोता है ।।

इसलिए मनुष्य को अहं त्यागना चाहिए,
जीवन के मूल्य को समझना चाहिए ।
लेकिन फिर भी मानव सँभलता नहीं;
अहंकार को त्यागता नहीं ।।

इसके कारण मानव अपना सब गँवाता है,
जो पाया था वह भी खो देता है ।
इसके घेरे में मानव अपना बल विवेक खो देता है;
अपने ही हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार लेता है ।।

इसलिए मनुष्य को अहं त्यागना चाहिए,
जीवन के मूल्य को समझना चाहिए ।
और जब अंहकार चला जाता है;
तो बल, विवेक स्वयमेव आ जाता है ।।

बचपन

—प्रशान्त श्रीवास्तव
अष्टम 'क'

बचपन जीवन का सबसे सुन्दर समय होता है । वह निर्दोष, निर्मल, निर्विकार तथा सहज होता है परन्तु समय का चक्र सतत गतिमान है । बचपन चला जाता है उसकी स्मृतियाँ शेष रह जाती हैं । उन्हीं स्मृतियों को कविता के झरोखे से झाँकता प्रशान्त । **— सम्पादक**

वह प्यारा सा बचपन
वह प्यारी सी लोरी
वह निर्मल हवाएँ
वह खट्टी निबोरी ।

लहलहाते खेत
सरसराती हवाएँ
आनंदित मन
झूमे, मुस्कुराए ।

वह बारिश की बूँदें,
वह नदिया का पानी
वह सुन्दर घरौंदा
चढ़ती जवानी ।।

वह सुन्दर से झरने
वह सौंधी सी माटी
वह प्यारा सा बचपन
खड़िया और पाटी

मगर दूर होता समय जा रहा है
बचपन को छीने चला जा रहा है
उमर बढ़ रही, चल पड़ी रेलगाड़ी
न रोको, न टोको न करो रेख आड़ी ।।

बार बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी
रोना और मचल जाना भी क्या आंनद दिखाते थे
बड़े-बड़े मोती से आँसू जयमाला पहनाते थे ।

जंगल में क्रिकेट

—क्षितिज मिश्र
सप्तम 'ख'

भालू दादा गए खेलने,
चौके-छक्के लगे फेंकने ।

बन्दर मामा थे बेहाल,
फेंक रहे थे स्पिन बाल ।

हरफन मौला चीता आया,
आते ही सिक्स लगाया ।

बल्ला लेकर हाथी आया,
पाँच मिनट में शतक बनाया ।

बैटिंग करने आया शेर,
रन लेने में हो गई देर ।

बड़े जोर से चीखे सारे,
रन आऊट हो गए बेचारे ।

गुस्से में आकर शेर दहाड़ा,
उसने सारा खेल बिगाड़ा ।

गुस्से से सब हो गए लाल,
शेर हुआ डर कर बेहाल ।

शेर को सबने बहुत भगाया,
फिर वह खेलने कभी न आया ।

वह प्रीति की रीति को जानत तो तबहीं तो बच्यौ गिरि ढाहन तैं ।
गजराज चिकारि कै प्रान तज्यौं न जूरयौं संग होलिका वाहन तैं ।
कवि बोधा कछू न अनोखी यहै का बनै नहीं प्रीति निबाहन तैं ।
प्रह्लाद की ऐसी प्रतीति करै तब क्यौं न कढ़ै प्रभु पाहन तै ।।

हिन्दी का अपमान

—शिवम शर्मा
सप्तम 'क'

आजादी के छप्पन वर्षों के बाद भी हिन्दी हिन्दुस्तान में ही उपेक्षित है । अंग्रेजी बोलना और अंग्रेजियत जीवन में लाना शान समझा जाता है । यही गुलामों की संस्कृति है । इस वृत्ति को झकझोरा है शिवम ने।

— सम्पादक

सम्पर्क सूत्र वाली भाषा,
हिन्दी का कैसा आदर है ?
यह राष्ट्रपिता के वचनों का,
शायद घोर निरादर है ॥

जो बात खटकने वाली है,
उस पर विचार तो करें जरा ।
उद्घोषक जितने हैं अपने,
हम परिष्कार तो करें जरा ॥

गाँधी जी ने निज जीवन में,
हिन्दी के लिए कहा था जो ।
भाषा के स्पष्ट समर्थन में,
आजीवन अडिग रहा था जो ॥

सन् पैंसठ के पश्चात् देश से,
अंग्रेजी को जाना था ।
फिर संविधान में उसी जगह,
अपनी भाषा को आना था ॥

अफसोस मगर कितने बरस,
बीते पर वही गुलामी है ।
सर्वोच्च शिखर पर अंग्रेजी,
लेती सम्मान, सलामी है ॥

अब तक उपेक्षित है हिन्दी,
केवल नारे ही शेष मिले ।
हिन्दी का दिवस मनाने को,
अंग्रेजी में आदेश मिले ॥

सरकारी नेता, अधिकारी,
है कहीं किसी का ध्यान नहीं ।
संचार माध्यमों ने बदला,
अब भी अपना परिधान नहीं ॥

*

वीरप्पन (हास्य कविता)

—शशांक सुनार
अष्टम 'क'

चंदन तस्कर वीरप्पन जो मन में आता है वह करता है । बड़ी धनराशि पाने के लिये वह बड़ी-बड़ी हस्तियों का अपहरण करवा लेता है । वह वर्षों से एक समस्या है परन्तु दो-दो प्रदेशों की सरकारें एक अधेड़ 'मुच्छड़' को पकड़ने में लाचार हैं यह और भी बड़ी समस्या है । — **सम्पादक**

मैं वीरप्पन, वज़न है छप्पन
मूँछें भारी-भारी
नेता मेरा वन्दन करते
मैं चन्दन व्यापारी ।

चोर हूँ, बदमाश हूँ
गुण्डा मैं, शैतान हूँ
डराता हूँ, धमकाता हूँ
फिर गोली से उड़ाता हूँ

अगर किया मुझसे विद्रोह,
तो होगी आत्मा राम-प्यारी
नेता मेरा वन्दन करते
मैं चन्दन व्यापारी ।।

डरता है मुझसे समाज
देश का टॉप वन मैं बदमाश
चन्दन तस्कर मेरा नाम
नोट कमाना मेरा काम

दुनिया में हूँ मैं बदनाम
फिर भी रुके न मेरा काम
तमिलनाडु ने मुझ पर
रखा बड़ा ईनाम भारी

नेता मेरा वन्दन करते
मैं चन्दन व्यापारी ।

कहानी आविष्कारों की

—प्रशान्त सचान
अष्टम 'क'

आओ सुनो आविष्कारों की अमर कहानी

बड़े-बड़े विज्ञानविदों ने अचरज एक दिखाया
चढ़ा जहाज आसमान में उड़ना हमें सिखाया ।

मोटर कार दी हेमलर ने, महिमा सबने मानी ।
आओ सुनो आविष्कार की अमर कहानी ।

शक्ति भाप की जेम्सवाट ने दुनिया को बतलाई,
स्टीफेन्स ने इंजन से अनोखी रेल चलाई ।

हुआ साइकिल का निर्माता मैकमिलन सा ज्ञानी ।
आओ सुनो आविष्कार की अमर कहानी ।।

एडीसन ने दिया विश्व को ग्रामोफोन निराला,
धन्य मार्कोनी भी जिसने यह रेडियो निकाला ।

आकर्षण की शक्ति सभी ने न्यूटन से ही जानी ।
आओ सुनो आविष्कार की अमर कहानी ।।

गैलीलियो थे महान जिन्होंने टेलीस्कोप बनाया,
ग्राहमवेल के टेलीफोन ने दुनिया से सम्पर्क कराया ।

देख कम्प्यूटर बैबेज का दुनिया है दीवानी ।
आओ सुनो आविष्कार की अमर कहानी ।।

सफलता का रहस्य

—आनन्द राज सिंह
अष्टम 'ख'

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती ?
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

नन्ही-चींटी जब भोजन लेकर चलती है ।
चढ़ती है दीवारों पर सौ बार फिसलती है ।
मन का विश्वास मन में एकदम भरता है ।
चढ़कर गिरना गिरकर चढ़ना नहीं अखरता है ।
अन्त में उसकी मेहनत बेकार नहीं होती ।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।।

डुबकियाँ सिन्धु में लोग लगाते हैं ।
जाकर खाली हाथ नहीं लौटते हैं ।
मिलते न मोती गहरे पानी में
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती ।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।।

असफलता एक सच्चाई है स्वीकार करो
क्या कमी रह गयी देखो और सुधार करो
नींद-चैन त्यागो तुम जब तक सफल न हो
मत भागो तुम संघर्षों का मैदान छोड़कर
कुछ किये बिना जय-जयकार नहीं होती ।
मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती ।।

दूरदर्शन मानव विकास में बाधक

—आलोक शुक्ल
सप्तम 'क'

आविष्कारों की धरती पर,
मानव ने नव गौरव पाया ।
सुन्दर, सुधर रंगीली झाँकी,
दूरदर्शन की अद्‌भुत छाया ।
आलोचक, निर्देश भी और,
पथदर्शक चहुँदिशि यश फैला ।
किन्तु पतन की अनल लपट,
है नवसमाज के लिए विषैला ।

दूरदर्शन आधुनिक समाज के सुख-शान्ति, विलास और वैभव की वस्तु है, आज सम्पूर्ण समाज दूरदर्शन का गुलाम बन गया है, दूरदर्शन सम्पूर्ण जन-समुदाय की नित्य-प्रतिदिन दिनचर्या का हिस्सा है, मानव इस युग में भोजन के बिना रह सकता है परन्दु दूरदर्शन के बिना कदापि नहीं ।

आज बच्चे, किशोर, वयस्क, बुजुर्ग सभी इसके कायल होते जा रहे हैं, इससे हमारा समाज उत्थान की ओर नहीं अपितु पतन की ओर बढ़ रहा है, इस दूरदर्शन से तात्कालिक सुख तो मिलता है परन्तु इसका हमारे चरित्र पर बहुत प्रभाव पड़ता है । बच्चे दूरदर्शन के ही परिवेश में पलते हैं इसलिए वे अधिक समय तक दूरदर्शन देखने के आदी हो जाते हैं ।

अधिक समय तक दूरदर्शन देखने से बच्चों की आँखों की रोशनी कम हो जाती है और उन्हें शिशु उम्र में चश्मा लग जाता है । इसके साथ ही दूरदर्शन देखने में व्यर्थ का ही समय नष्ट होता है, तेज ध्वनि में दूरदर्शन चलाने से कानों में क्षति पहुँचती है । छोटे बच्चे फिल्में देखकर वैसा ही करने लगते हैं । मारधाड़ की फिल्में देखने से वे कहीं छत से कूदते हैं तो कहीं आग इत्यादि लगा लेते हैं । दूरदर्शन देखने से किशोरों में नशे की भी लत पड़ जाती है, वे अभिनेताओं की तरफ धूम्रपान करने लगते हैं ।

दूरदर्शन से अबोध बालकों की मानसिकता कुण्ठित होती जा रही है, किशोर सही रास्ते में चलने के बजाय गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं, इससे आज के मानव की विचारधारा बदल सी गई है, इस प्रकार दूरदर्शन मानव विकास में सहायक नहीं अपितु बाधक बनता जा रहा है ।

✶

आपसी स्नेह सम्बन्ध घटने लगा
आदमी सिर्फ़ खुद में सिमटने लगा ।
छोड़ चौपाल की बैठकें शाम से
व्यक्ति टी०वी० के सेट से चिपकने लगा ।
स्नेह सौजन्य सौहार्द का मृत्यु से
पूर्व ही हो रहा श्राद्ध तर्पण है ये
दूरदर्शन नहीं दुष्प्रदर्शन है ये ।

मेरे जीवन का अविस्मरणीय क्षण

—शशांक यादव
नवम 'ख'

26 जून 2003 की घटना।

कभी न कभी प्रत्येक व्यक्ति की जिन्दगी में एक पल ऐसा आता है जब उसका अंग अंग भय से काँप उठता है। उसे ऐसे समय में कभी-कभी ऐसा मार्ग चुनना पड़ता है, जिस पर क्या होने वाला है उसे खुद भी नहीं पता होता है। तब अक्सर व्यक्ति का विवेक शून्य हो जाता है और उसे हड़बड़ाहट में यह समझ में नहीं आता है कि उसे क्या करना चाहिये।

ऐसा पल एक बार मेरी जिन्दगी में भी आया। 26 तारीख 2003, दिन शुक्रवार को रात करीब 9 बजे का समय था।

हमें इटावा जाना था वहाँ पर हमारे फूफा जी का स्कूल है उन्होंने अपने गाँव में भागवत कथा करवाई थी, जिस दिन हमें जाना था उस दिन भोज था हम लोगों ने योजना बनाई थी कि हम कानपुर से दोपहर 1 बजे चलेंगे तो दिन में पहुँच जायेंगे। रात में पहुँचना वहाँ खतरे से खाली नहीं है क्योंकि उस पूरे गाँव में बीहड़ ही बीहड़ था। हम लोग नहा धोकर पूरे तैयार हो गए थे मगर जैसे ही चलने लगे वैसे ही गाड़ी खराब हो गई। बहुत कोशिश की गई पर गाड़ी ठीक नहीं हुई तब गाड़ी को गैरिज में ले जाया गया। जब गाड़ी ठीक होकर आई तब शाम के 4 बज चुके थे। अब हम लोग सोच रहे थे कि वहाँ न जायें परन्तु वहाँ जाना भी जरूरी था। शाम को 4 बजे हमारी यात्रा इटावा के लिए शुरू हो गई थी। गाड़ी में मैं, मेरा भाई, मम्मी,पापा, मेरे बाबा और मेरे नाना थे। गाड़ी मेरे नाना चला रहे थे। एक पुल था वहाँ बहुत जाम लगा था परन्तु गाड़ी छोटी होने के कारण हम आसानी से उस जाम से निकल गये थे। तब आगे हम लोग बिना रुके चलते गए जैसे ही हम लोग सिकन्दरा पहुँचे वहाँ मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ हो गयी। गाड़ी के वाइपर न चलने की वजह से हमें वहाँ रुकना पड़ा। जब वर्षा बन्द हुई तब हम वहाँ से फिर चले। आगे सिकन्दरा को पार करने पर एक सूर्या नाम का होटल पड़ता है। वहाँ हम लोग 5 बजे पहुँचे। हम लोगों ने वहाँ पर चाय पी लइया चना खाया और मैंने और मेरे छोटे भाई ने आइस्क्रीम खाई। तब फिर हम लोगों ने वहाँ से चलना शुरू किया और बिना कहीं रुके तेज रफ्तार से चलते गये और प्रवेश किया इटावा में। हम लोग इटावा 7.30 पर पहुँच गय थे। अँधेरा की काली छटा आसमान पर छायी छायी हुई थी। हम लोग बिना कहीं रुके तेज रफ्तार से चल रहे थे। इटावा में प्रवेश के बाद 30 किमी० की दूरी पर फूफा जी का स्कूल था। हम लोग स्कूल 8.30 बजे पहुँच गये थे। वहाँ पर एक चौकीदार के अलावा कोई नहीं था। आगे हम लोगों को गाँव जाने वाले मार्ग के विषय में सन्देह था तो हम लोग लगभग 15 मिनट वहाँ रुके और चौकीदार से पूछा कि "गाँव को जाने वाला मार्ग पक्का है या कच्चा और गाँव स्कूल से कितनी दूर है। तब चौकीदार ने बताया कि, "गाँव इस स्कूल से 12 किमी० दूर है और सड़क पक्की है। उसके बाद उसने कहा कि 8 किमी० के बाद एक मोड़ मिलेगा। वहाँ पर मुड़ना है फिर वहाँ से गाँव 4 किमी० दूर है। हम लोग 9.45 पर वहाँ से चल पड़े,आगे मोड़ मिला। मेरे बाबा ने नाना जी को कहा कि, "यह वह मोड़ है जहाँ मुड़ना है।" क्योंकि बाबा वहाँ बहुत पहले आये थे इसलिए उन्हें कुछ सन्देह हुआ परन्तु नाना जी ने कहा कि चपरासी ने तो मोड़ 8 किमी० दूर बताई थी इसलिये नाना जी ने बाबा की बात को न मानते हुए आगे चलते चले गये। चपरासी के हिसाब से मोड़ 4 किमी० दूर था। आगे हम लोगों को कोई मोड़ नहीं मिला, भय जन्म ले चुका था। हम लोग 6 किमी० चल चुके थे। आगे बाबा ने एक आदमी से कहा कि, "भैया ! बराखेड़ा तलैया नाम का गाँव कहाँ है ? किस मोड़ से है ? तब उस आदमी ने कहा कि, "साहब ! आप वह मोड़ 2 किमी० पीछे छोड़ आये हैं।" यह सुनकर हम लोग बहुत

डरगए क्योंकि वह इलाका बीहड़ था और डकैतों का थार। गाड़ी बैक की गयी और हम लोग फिर उस मोड़ की तरफ चल दिए जो हम लोग 2 किमी० पीछे छोड़ आये थे। आगे एक बिल्ली अचानक रास्ता काट गयी इससे पहले कि ब्रेक लगता गाड़ी वहाँ से निकलगई हम लोग और अधिक भय से पूरी तरह घिर चुके थे। फिर वह मोड़ आ गया। हम लोग मुड़ गये और चलते चले गये; आगे जाकर दो मोड़ मिले। हम लोगों को यह नहीं पता था कि कौन सा मोड़ गाँव की तरफ जाता है। उनमें से एक रास्ता मौत की तरफ जाता था। एक मोड़ दायें तथा दूसरा बायें हाथ जाता था। अन्त में यह निश्चित हो गया कि किस मोड़ से मुड़ना है हम बायें मोड़ पर मुड़ गये थोड़ी दूर आगे चलने पर हमको गाँव दिख गया - जैसे जान में जान आ गयी। यद्यपि हमको रास्ते में कहीं पर भी चोर-डकैत नहीं मिले, किसी भूत, प्रेत, पिशाच ने भी हमारा पीछा नहीं किया था, परन्तु हम लोग भय से बुरी तरह काँप रहे थे। वह पूरा रास्ता भयानक था, हमें आज भी याद आता है। वास्तव में जो विचार मन में बैठ जाता है वह फिर पीछा नहीं छोड़ता है।

✶

बालक जार्ज की परोपकारिता व सत्यवादिता

—कुशाग्र कृष्णन्
अष्टम 'क'

एक पहाड़ी नदी के किनारे सबेरे के समय एक स्त्री बड़े करुणापूर्ण स्वर में चिल्ला रही थी - 'बचाओ ! मेरे बच्चों को।'

लोग दौड़े लेकिन नदी में कूदने का साहस किसी का नहीं हुआ। इतने में अठारह वर्ष का लड़का आया और कोट उतारकर नदी में कूद गया। लोग एकटक देख रहे थे। अनेक बार वह युवक भँवर में जाता दिखा परन्तु वह बालक को पीठ पर लादकर ले आया। दूसरों की रक्षा के लिये अपने प्राणों की बाजी लगाने वाला युवक था - 'जार्ज वाशिंगटन'।

वह अमेरिका के एक किसान का लड़का था। जब वह छोटा था, तो उसके पिता ने उसको एक कुल्हाड़ी दी जिसे लेकर जार्ज बगीचे में चला गया। बगीचे में जो पेड़ देखता, उसी पर कुल्हाड़ी चला देता। जार्ज के पिता ने बड़ी कठिनता से एक पेड़ लगाया था। जार्ज ने उस पर भी कुल्हाड़ी चला दी। इस प्रकार वह घर लौटा।

इधर पिता ने जब पेड़ कटा हुआ देखा तो उन्होंने मालियों से पूछा, परन्तु उन्होंने स्वीकार नहीं किया। तब पिता ने जार्ज से पूछा। जार्ज ने कहा - 'पिताजी ! मैं खेल रहा था और पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाकर आजमा रहा था कि पेड़ कटते हैं कि नहीं। आम के पेड़ को भी मैंने काटा था।'

पिताजी ने कहा कि तुम्हें इस कार्य के लिये कुल्हाड़ी नहीं दी थी, परन्तु सच्चाई पर प्रसन्न हूँ। तेरा अपराध क्षमा करता हूँ।

यही जार्ज वाशिंगटन बड़ा होकर अमेरिका का प्रख्यात अध्यक्ष हुआ।

✶

नर-पिशाचों की नृशंसताएँ

—**मुकेश पटेल,** नवम 'क'

कर्म के लिए मनुष्य स्वतन्त्र है। वह चाहे शुभ करे या अशुभ, इसकी उसे पूरी छूट है। शुभ का फल सदैव श्रेष्ठ तथा अशुभ का निकृष्ट होता है।

ईश्वर ने मनुष्य को विवेक उदात्त होने के लिए दिया है। पर न जाने क्यों वह निम्न और निकृष्ट कर्मों में निरत रहकर दैवदुर्विपाक, दुर्भाग्य एवं दण्ड काभागी बनता है। एलागा बेल्स रोम का सम्राट। यों आयु की दृष्टि से वह अभी किशोर था, किन्तु अतिथि-सत्कार का उसका तरीका बड़ा ही वीभत्स व क्रूर था, इतना क्रूर कि कई बार तो अतिथि के नाम की घोषणा के साथ की अतिथि की हृदय गति रुक जाती थी। एक बार उसके मंत्री बेल्फास ने मंत्री होने के नाते सलाह देने के अपने अधिकार का प्रयोग करते हुए राजा को सलाह दी - ''इन क्रूर कर्मों में संलग्न रहने की तुलना में यदि आप प्रजाहित के कार्यों में तत्पर रहे होते तो आज सर्वत्र आपकी यशगाथा गायी जाती और लोगों के हृदय में आप ही निवास करते।'' इतना कहना था कि दरबार में बेल्फास के नाम की घोषणा कर दी गई; बतायागया कि आज के शाही मेहमान राज्यमंत्री होंगे। अपना नाम सुनते ही मंत्री बेहोश होकर गिर पड़ा। इतने से ही उस निर्दयी का मन पसीजने वाला न था। मेहमान के स्वागत की तैयारी का आदेश दे दिया गया। भोजन कराने के लिए उसे मेहमानखाने में लाया गया। सामने तीक्ष्ण कीलों युक्त लोहे की कुर्सी रखी थी। बैठने के साथ ही एक हृदय विदारक चीत्कार उठी और फर्श रक्त रंजित हो गया। अब तक मंत्री बेहोश हो चुका था। उसे यों ही छोड़ दिया गया। बाद में उसी हालत में उसकी मृत्यु हो गई।

यह बात नहीं कि हर अतिथि को स्वादिष्ट व्यंजन ही परोसे जाते। भोजन का स्तर व्यक्ति के स्तर पर निर्भर करता और प्रायः बदलता रहता। कभी खाने में लोहे की छोटी-छोटी कतरन, काँच के टुकड़े सम्मिलित रहते थे, तो कभी थालियों को बिच्छू और साँपों के टुकड़ों से सजाया जाता। जो कोई इन्हें खाने से इन्कार करता, उसकी सजा दर्दनाक मौत होती, उन्हें जहरीले साँपों के घरों में बन्द कर दिया जाता, जंगली जानवरों के आगे छोड़ा जाता। कई बार उनके हाथ-पैर काट लिए जाते और व्यक्ति को जंजीरों से कस कर जलाशय में कमर तक पानी में खड़ा होने का आदेश मिलता। प्रहरी उसकी निगरानी करते। कई दिनों बाद भूख से निर्बल होकर पैर शिथिल हो जाते और शरीर का वजन सहन करने में अक्षम बनते, तो देह पानी में लुढ़क जाती और दण्डित छटपटाते हुए सदा के लिए शान्त हो जाता।

नृशंस नरेश को जब ये तरीके पुराने दीखते पड़े, और विशेष मनोरंजक न रह गए तो उसने मृत्युदण्ड का दूसरा उपाय निकाला। इसमें एक चिता जलाई जाती। चिता की अग्नि जब अपनी प्रखरता पर होती तो अपराधी को कुछ लोग उठाकर उसमें जिन्दा फेंक देते। अभियुक्त जब उससे बचने के लिए बाहर आने का प्रयत्न करता, तो अग्नि को चारो ओर से घेरकर संतरी अपने बल्लम घोंपकर उसे वहीं गिरा देते। इस प्रकार जल्द ही उसकी मृत्यु हो जाती। राजा को इस क्रीड़ा में असीम आनन्द मिलता। यदा-कदा राजा स्वयं भी मेहमान बनता और दरबारियों के यहाँ भोजन में सम्मिलित होता। इसका अर्थ भी मौत था। देखा जाता कि सम्राट जिस अधिकारी के यहाँ भोजन करता, दूसरे दिन उसके परिवार के किसी सदस्य को वह भी अपने यहाँ भी बुलाता, उसकी आरती उतारता, स्वागत सत्कार करता, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार उसका होता। फिर उसकी आँखे निकाल कर उसे भटकने के लिए छोड़ दिया जाता और मुनादी पिटवा दी जाती कि कोई उसे भोजन न दे। अन्त में भूख-प्यास से उसके प्राण निकल जाते। इतिहास साक्षी है, जिसने भी अति बरती, उसका अन्त भी अन्ततः वैसी ही क्रूरता से हुआ। एलागा बेल्स के मामले में भी यही हुआ। जब उसने अपनी दादी को निमन्त्रित किया तो क्रुद्ध होकर उसके अंगरक्षकों ने निर्ममतापूर्वक बोटी-बोटी काटकर वैसी ही दुर्गति की, जैसी कि उसके द्वारा अनेकों की हुई थी। उसके शरीर के टुकड़े कर उसी के समक्ष गिद्धों को खिलाए जाते रहे व वह तब तक देखता रहा जब तक कि बेहोश होकर उसका जीवन समाप्त न हो गया। नर पिशाच होते हैं, इसका साक्षी था बेल्स, किन्तु क्या न्यूनाधिक मात्रा में मानव मात्र में ऐसी वृत्ति वाले नहीं हैं ऐसा नहीं माना जा सकता।

मानस भारद्वाज
सप्तम 'ख'
उत्तर प्रदेश खेल निदेशालय एवं बाक्सिंग संघ द्वारा आयोजित सब जूनियर बॉक्सिंग में प्रदेश में प्रथम

दिलीप कुमार
नवम 'क'
सब जूनियर बॉक्सिंग प्रतियोगिता में प्रदेश में तृतीय स्थान

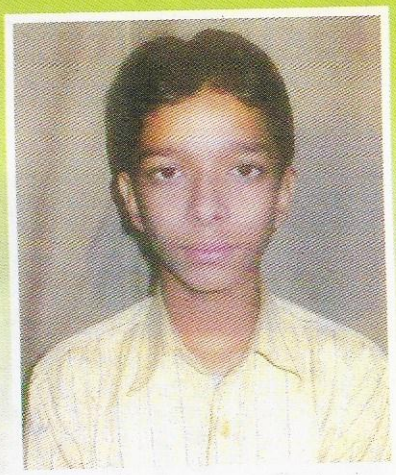

एस.एम. गौरव
सप्तम 'ख'
सब जूनियर बॉक्सिंग २००३–०४ में प्रदेश में तृतीय स्थान

स्नेहिल त्रिपाठी
द्वादश 'ख'
कानपुर मंडल की कबड्डी टीम में चयनित होकर प्रदेश स्तर पर खेले

कृत्तिवास
द्वादश
मंडल स्तर तक कबड्डी टीम के कप्तान

विद्यालय का प्रेरक वार्षिकोत्सव

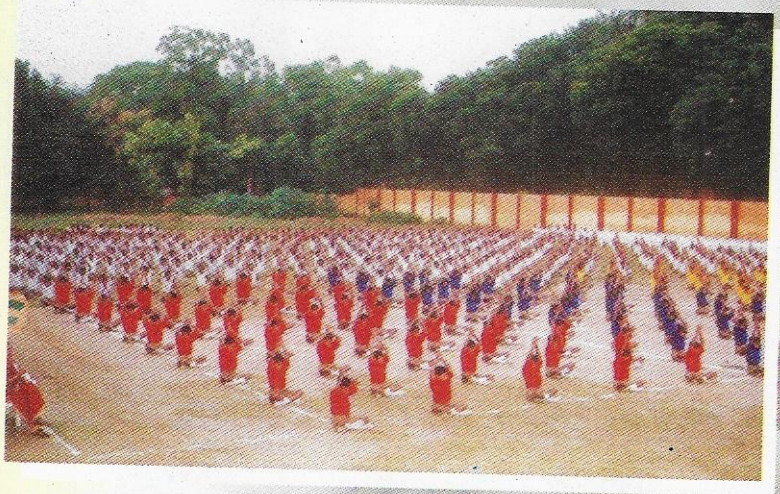

लयबद्धता और अनुशासनः
योग व्यायाम करते छात्र

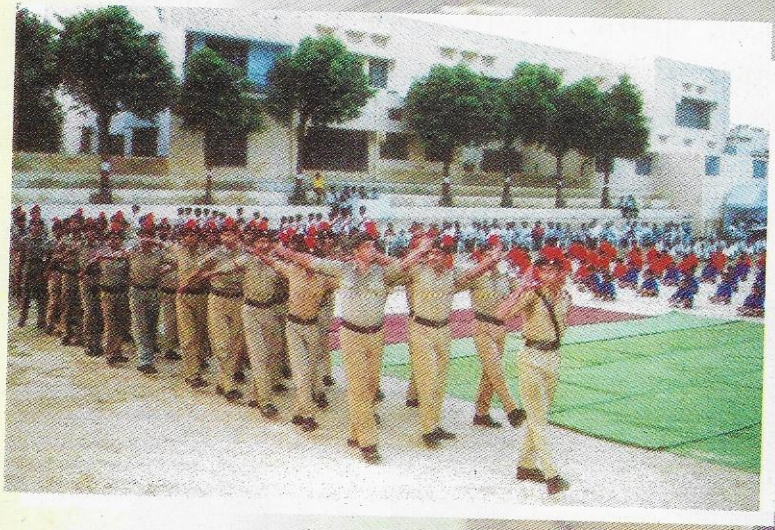

अराति सैन्य सिंधु
में सुवाडवाग्नि से जलो
एन.सी.सी. परेड

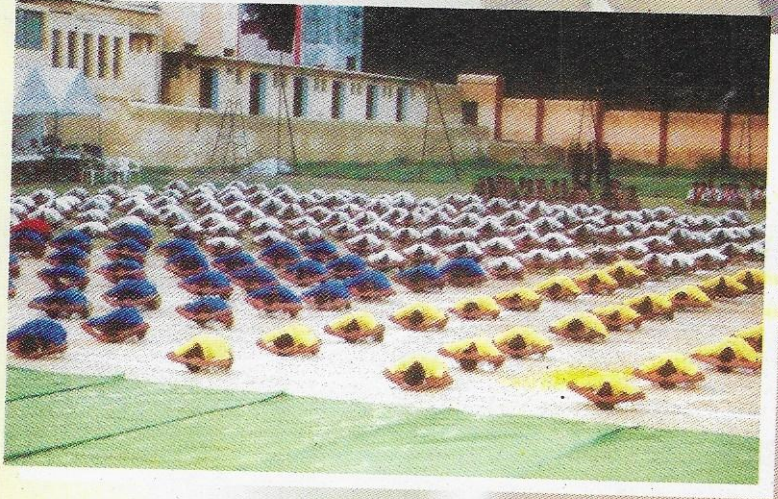

**जेतो नीचो है चलै
तेतो ऊँचो होय।**

योगासन के समय छात्रों की
एक आकर्षक मुद्रा

क्या आप जानते हैं ?

—शशांक
अष्टम 'क'

1. चन्द्रमा के बाद पृथ्वी का दूसरा साथी एक छोटा-सा एस्ट्राएड 'क्रइथने' है जो चन्द्रमा की तरह पृथ्वी के चक्कर लगाता है। ये क्रइथने बारी-बारी से पृथ्वी और सूर्य की परिक्रमा करता है।

2. वैज्ञानिकों ने एक ऐसी बैटरी बनाई है जो रसोई के बेकार खाद्य पदार्थों और सब्जियों के छिकले वगैरह से विद्युत उत्पन्न कर सकती है।

3. वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में हाइड्रोजन के 'एंटी एटम' यानी प्रति अणु बनाने में सफलता प्राप्त की है। और एंटीएटम फ्यूल वाला राकेट मात्र एक ग्राम एंटी हाइड्रोजन एटम की मदद से मंगल ग्रह पर जाकर मात्र तीन महीनों में वापस आ जाएगा।

4. सर्वाधिक तीव्र गति की बात होने पर एक मात्र उदाहरण प्रकाश की किरण का लिया जाता है। लेकिन अब वैज्ञानिकों ने "कोएक्सियल केबिल्स" से बने यंत्र से उत्पन्न इलेक्ट्रिक सिग्नल को प्रकाश की गति से चारगुना तीव्र गति से भेजने में सफलता प्राप्त की है।

5. विटर्न पक्षी (दक्षिण अमेरिका) बाघ की तरह बोलता है।

6. तारपीडो मछली करेंट उत्पन्न करती है। स्टोनफिश सबसे जहरीली मछली होती है तथा मेढक मछली पानी के बाहर कई दिन जीवित रह सकती है।

7. दरियाई घोड़े को गुलाबी पसीना आता है।

8. सबसे छोटा बन्दर अमेजन नदी के तट पर विमी गर्मी सेट (350 ग्रा०) का तथा सबसे बड़ा बन्दर मैड्रल पश्चिमी अफ्रीका भूमध्य रेखा पर पाया जाता है।

9. मच्छर के मुँह में 22 दाँत होते हैं।

10. 'टु आटेरा' जीव के तीन आँखें होती हैं।

11. सहदूल या उकाब पक्षी (रूस) हाथी को पंजे से दबाकर उड़ सकता था।

दूरदर्शन : शारीरिक विकास में बाधक

—अभय प्रताप सिंह सेंगर
अष्टम 'क'

प्रस्तावना

जब-जब टीवी खोला, भ्रष्टाचार का हाल देखा ।
समाचार की सुर्खियों में, नेताओं का कमाल देखा ।।

आधुनिक समय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बढ़ते हुए प्रभाव के कारण दूरदर्शन लघु चल-चित्र की भाँति घरों में छा गया है । आज दूरदर्शन के बिना हम आधुनिक समाज की परिकल्पना नहीं कर सकते हैं । परन्तु इसमें कुछ खामियाँ भी हैं ।

आत्मकेन्द्रित करना

दूरदर्शन ने मनुष्य को गतिशील न बनाकर एक जगह केन्द्रित कर दिया है । आज के बालक, बूढ़े, स्त्री, पुरुष आदि सभी दूरदर्शन पर ध्यान लगाए एक छोटे-से कमरे में बन्द रहते हैं । दूरदर्शन ने गतिशीलता का अभाव पैदा कर शारीरिक क्षमता को कम कर दिया है ।

सामाजिक विकास का अभाव

दूरदर्शन की वजह से एक स्थान पर बैठा मनुष्य इतना आत्मकेन्द्रित हो चुका है कि वह दूसरों के दुःख व दर्द को भूल गया है । बाह्य समाज में होने वाली घटनाओं व दुर्घटनाओं से आदमी बच निकलना चाहता है ।

व्यायाम व गतिशीलता का अभाव

दूरदर्शन के कार्यक्रमों की वजह से मनुष्य को अपने नित्य क्रिया व अन्य कार्यक्रम जैसे - व्यायाम, टहलना आदि में कटौती करनी पड़ रही है । आज इंसान के पास इतना समय नहीं हैं कि वह अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए योग, व्यायाम व टहलना आदि जैसी क्रियाएँ कर सकें ।

बीमारियों को न्यौता

दूरदर्शन ने अनेक शारीरिक व्याधियों को जन्म दिया है । एक जगह बैठा मनुष्य मानसिक चिन्ताओं से ग्रसित हो रहा है । गतिशीलता के अभाव में उसके अंगों-प्रत्यंगों को पूर्णरूपेण व्यायाम नहीं मिल पा रहा है । जिससे मनुष्य में आलस्य, शिथिलता, निकम्मेपन ने जन्म ले लिया है । दूरदर्शन के सामने बैठकर ज्यादा समय तक कार्यक्रम देखने से नेत्रों में विकार व मनोरोगों में वृद्धि हो रही है ।

बीमारियों को मत दो न्यौता ।
दूरदर्शन से कर लो समझौता ।

अश्लीलता में वृद्धि

दूरदर्शन ने बिठाया हम सबको अपने पास ।
अब देखना ये है कि क्या है उसमें खास ।।

दूरदर्शन के माध्यम से ज्यादातर कार्यक्रम जो प्रस्तुत किए जाते हैं, वे अंग प्रदर्शन को बढ़ावा देने वाले होते हैं तथा अश्लीलता में वृद्धि करते हैं जिससे बच्चों व युवकों के मनोभावों पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है ।

सांस्कृतिक अवसान

दूरदर्शन के कार्यक्रम को देखकर लोग कम कपड़े पहनना तथा चुस्त कपड़े पहनना आदि फैशन अपनाते हैं जो कि हमारी भारतीय संस्कृति की मूल-भावना के प्रतिकूल है। इसके कारण लोगों के अन्दर दुर्विचार जन्म लेने लगते हैं। लोग भारतीय परिवेश व गणवेश को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर रहे हैं। जिससे कि हमारी संस्कृति का अवसान हो रहा है।

उपसंहार

इस प्रकार दूरदर्शन हमारे शरीर तथा मन के अन्दर अनेक विकारों को उत्पन्न कर शारीरिक विकास में बाधक बना हुआ है। दूरदर्शन ने बालकों को मानसिक रूप से संकीर्ण बनाकर कूप-मंडूक वाली कहावत को चरितार्थ कर दिया है।

करते जिसका हम स्वागत।
है वो हमारे विकास का बाधक॥

*

बकरे की भूख

—आयुष तिवारी
सप्तम 'क'

एक राजा था। उसके पास एक ऐसा बकरा था जो हमेशा भूखा रहता था, उसे चाहे जितना खिलाया जाए उसका पेट नहीं भरता था। एक दिन राजा ने अपने राज्य में यह खबर फैला दी कि जो भी इस बकरे का पेट भर देगा उसे 10,000 स्वर्ण मुद्राएँ दी जायेंगी। अनेक लोग उस बकरे को ले गए परन्तु कोई भी उसका पेट न भर सका। यह खबर एक पहलवान तक पहुँची वह भी बकरे को ले गया। उसने बकरे को मेवा और अनेक प्रकार के व्यञ्जन खिलाए। बकरा खातागया तथा पहलवान परेशान हो गया। वह निराश रहने लगा। एक दिन वह बकरे के लिये घास ला रहा था। तभी मार्ग में उसे एक साधु मिले और पूछा कि, "तुम इतने निराश क्यों हो ?" तब पहलवान ने सारी कहानी सुनायी। सारी कहानी सुनने के बाद साधु ने कहा कि "तुम बकरे के सामने घास, मेवा आदि रखना जैसे ही वह घास व मेवा खाने आए तो उसके मुँह पर लाठी मारना। एक सप्ताह में वह घास खाना छोड़ देगा।"

पहलवान ने यह कार्य करना शुरू कर दिया। वह बकरे के सामने घास रखता तथा जैसे ही वह घास खाने आता पहलवान उसके मुँह पर लाठी मार देता इस प्रकार एक सप्ताह में उसने घास व मेवा खाना छोड़ दिया। पहलवान बड़ा खुश था। वह राजा के पास गया और कहा कि "बकरे की भूख मर गई।" राजा को विश्वास नहीं हुआ। उसने हरी घास मँगाकर बकरे के सामने रखा। बकरा घास खाने के लिये उठा किन्तु पहलवान ने देखा कि उसकी नीयत में खोट है। अतः उसने धीरे से लाठी उठाई और पटकी। बकरा लाठी देखकर डर गया और दूसरी ओर मुँह करके बैठ गया। यह देखकर राजा ने उसे 10,000 स्वर्ण मुद्राओं से भरी थैली दी।

*

चमत्कारी बाबा लक्ष्मणदास जी

—जयन्त यादव
एकादश 'क'

श्रद्धा एवं विश्वास के अनन्त सागर के रूप में हिलोरें लेता फर्रुखाबाद जिला मुख्यालय से सड़क रास्ते कोई 30 किलोमीटर दूर स्थित गाँव लक्ष्मणदास पुरी का नाम भगवान श्रीराम के दुलारे मारुतिनन्दन के भक्तों की साँसों में बसा है। यहाँ वर्षों पूर्व बाबा लक्ष्मण दास ने घोर तप किया था तथा अपने योग के बल से तमाम चमत्कारों द्वारा भक्तों तथा तत्कालीन विदेशी हुकूमत को अचम्भित किया था। सभी बाबा की महिमा के आगे नतमस्तक थे। कालान्तर में उसी के नाम से यह गाँव बस गया जहाँ हुकूमत को न चाहते हुए भी रेलवे स्टेशन बनवाना पड़ा था।

महीने के प्रत्येक मंगलवार को हजारों की संख्या में देशी व विदेशी भक्त रेल और सड़क मार्ग से बाबा की दिव्य प्रतिमा के दर्शनार्थ तपस्थली नींवककोरी मन्दिर पहुँचते हैं। यद्यपि बाबा सशरीर अब भक्तों के बीच नहीं है, लेकिन भक्त उनके यश को बताते नहीं थकते। उनकी एक शिष्या हर वर्ष वैशाख मास में मेले का प्रबन्धन करती है। इस मौके पर वार्षिक भण्डारा होता है। बाबा लक्ष्मणदास ने यूँ तो कानपुर, लखनऊ, नैनीताल, हरिद्वार, ऋषिकेश आदि स्थानों पर वातात्मज हनुमान जी के मन्दिर बनवाए किन्तु नींवकरोरी और कैंची धाम में उन्होंने लम्बे समय तक मिट्टी से निर्मित गुफाओं में घोर तपस्या की।

वृद्धजन बताते हैं कि बाबा की तपस्या से अतुलित बलधाम हनुमान जी वशीभूत हो गए थे। बाबा जी एक दिन अपने एक भक्त के साथ गंगा स्नान के लिए निकले वैसे ही सामने से आ रही ट्रेन स्वतः रुक गयी, बाबा ने इस गाड़ी में फर्रुखाबाद तक का सफर तय किया और लौटते समय भी यही गाड़ी पकड़ी। थोड़ी दूर चलने पर अंग्रेज टीटी ने टिकट न होने के कारण बाबा जी को गाड़ी से नीचे उतार दिया। इस घटना के बाद चालक के कोटि प्रयासों के बाद भी गाड़ी तिल भर भी न चल सकी। गाड़ी में न तो कोई तकनीकि दृष्टि से कोई खराबी थी और न ही कोई अवरोध था। इसका रहस्य जानने बाबा के भक्तगण उनके पास आए। बाबाजी ने कहा कि हमें ही गाड़ी से उतार दिया और हमसे ही गाड़ी के न चलने का कारण जानने आए हो। भक्त बोले कि महाराज जी आपके पास टिकट नहीं होगा। बाबा जी ने तपाक से अपनी जेब में हाथ डाला और कई आने जाने के टिकट दिखाए। यात्रियों के अनुरोध पर बाबाजी को गाड़ी में बिठाया गया और बाबा के बैठते ही ट्रेन चल दी। बाबा के इसी प्रताप से अभिभूत होकर हुकूमत ने उनके नाम पर स्टेशन बनवाया जिसका नाम कालान्तर में लक्ष्मणदास पुरी पड़ा।

अपनी वर्षों की कठोर तपस्या के बल से महाराज जी का पल में दृश्य पल में अदृश्य हो जाना, एक ही समय में दो जगह उपस्थित होना, जल, वायु की दिशा बदल देना और अग्नि, सूर्य पर काबू पा लेना उनके लिए सामान्य बातें थीं।

विधि निर्धारित समय के अनुसार बाबा जी का कैंचीधाम आश्रम में महाप्रयाण हो गया। यद्यपि बाबाजी सशरीर उपस्थित नहीं हैं परन्तु उनके भक्त उनके तपस्थलों में श्रद्धा से माथा टेककर स्वयं को धन्य मानते हैं।

"श्रद्धा के ये पुष्प कछु, चरनन धरे सम्हार।
कृपासिन्धु गुरुदेव तुम, करि लीजो स्वीकार॥"

हमारे विद्यालय में श्री प्रेमभूषण जी

—कुलदीप यादव, अष्टम 'ख'

हमारे विद्यालय में प्रतिवर्ष जन्माष्टमी बड़ी ही धूमधाम से मनायी जाती है इसमें विशेषकर छात्रावास के विद्यार्थियों का सहयोग रहता है। इस वर्ष हमारे विद्यालय में जन्माष्टमी से श्रीकृष्ण षष्ठी तक प्रेमभूषण जी महाराज प्रवचन करने आये थे। उनके प्रवचन से कुछ अंश मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।

सर्वप्रथम उन्होंने बताया कि बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक हम कई चरणों से गुजरते हैं और प्रत्येक चरण में कोई न कोई सुरसा रूपी राक्षसी बाधक उसी प्रकार बनती है जिस प्रकार भगवान राम के दूत हनुमान जी के मार्ग में सुरसा बाधक बनी थी। जैसे विद्यार्थी के जीवन में सुरसा आलस्य है। अर्थात् विद्यार्जन में आलस्य तथा निन्द्रा सबसे बड़ी बाधा है। हमारे ऊपर भगवान की कृपा तभी हो सकती है जब हम अपना सांसारिक कार्य करते हुए अपने भक्ति-भाव को भगवान के चरणों में अर्पित कर दें। व्यक्ति को कोई लक्ष्य प्राप्त करना है तो उसे संसार को अपने अनुसार चलाना चाहिए न कि स्वयं को संसार के अनुसार चलाना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि सत्संग क्या है सत्य का संग ही सत्संग है। जिसमें हमें ईश्वर, भजन की प्रेरणा मिले वह है सत्संग, जिस व्यक्ति के साथ रहने से हमको ईश्वर की उपासना करने का मन करे वह है सत्संग। साधना उसे कहते हैं जो बिना किसी लालच के की जाये। साधना प्राप्त करने के बाद सिद्धि प्राप्त होती है।

मानव के शरीर में पाँच कोष होते हैं, उनके विकार तथा दूर करने के माध्यम भी होते हैं -

1.	अन्नमय कोष -	मल	-	पृच्छालन
2.	प्राणमय कोष -	विकार	-	उपासना
3.	मनोमय कोष -	आवरण	-	धारणा
4.	विज्ञानमय कोष -	विच्छेपन	-	ध्यान
5.	आनन्दमय कोष -	अस्मिता	-	समाधि

✶

कम्प्यूटर युग में ब्रेल लिपि

—आशीष वर्मा, अष्टम 'ख'

ब्रेल को कम से कम जगह में लिखने और तेज गति से पढ़ने के प्रयास स्वरूप मूल वर्णाक्षरों के अनुपूरकों के रूप में आमतौर पर प्रचलित शब्दों के अनेक संक्षिप्त और लघु रूपों का विकास किया गया है।

लेकिन पुस्तकों का ब्रेल लिपि में अंतरण करने के लिए सदैव ही ब्रेल में दीक्षित परन्तु देखने में सक्षम व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है। बीसवीं सदी के छठे दशक में अमेरिका में कम्प्यूटर की मदद से ब्रेल मुद्रण पद्धति का विकास हुआ। पहली बार ऐसा व्यक्ति छपाई कर सकता है जो ब्रेल में पारंगत नहीं है। इस पद्धति में सामान्य की बोर्ड इस्तेमाल करते हुए एक टाइपिस्ट पांडुलिपि को कम्प्यूटर में फीड करता है। इसके बाद कम्प्यूटर प्रोग्राम इसका ब्रेल में लिप्यान्तरण कर देता है। आज इन मशीनों को आधुनिक वार्ड प्रोसेसिंग द्वाराऔर अधिक कारगर बनाया जा रहा है।

अभी हाल ही में ऐसी मशीन का विकास हुआ है जिनकी मदद से स्याही से मुद्रित मूलपाठ को कम्प्यूटरीकृत ब्रेल पद्धति में इलेक्ट्रानिकी की सहायता से बिना मानवीय त्रुटि के पढ़ा जा सकता है।

पर्सनल कम्प्यूटरों के विकास ने महती संभावनाओं के द्वार खोल दिये हैं। ऐसी मशीनरी तथा कम्प्यूटर साफ्टवेयर का विकास किया जा रहा है, जिससे नेत्रहीन व्यक्ति लिख पढ़ सकता हैं। अब नेत्रहीन व्यक्ति साधारण मनुष्य की तरह बौद्धिक सम्पदा में सहभागिता करेंगे। ब्रेल का प्रयोग करके शायद नेत्रहीन व्यक्ति भी अपना जीवन शिक्षित तथा स्वतन्त्र बना सकें। अपनी तरह की समस्याओं को दूसरों की समस्या समझने वाले ब्रेल लिपि के जन्मदाता- लुई ब्रेल (1809-1852) को हमेशा याद किया जायेगा।

✶

खुदी को कर बुलन्द इतना .....

—शौर्यजीत सिंह, अष्टम 'क'

संसार एक सागर है। उसमें जीवन एक नाव की तरह है। हम अपने उत्साह, धैर्य और आत्मविश्वास रूपी चप्पुओं से इस जीवन को भव-सागर से पार करा रहे हैं। इस कार्य में यदि कोई प्रतिकूलता हो तो हमें उसे हँसकर और उत्साहपूर्वक पार करना चाहिए न कि उदास होकर या खीझकर। हँसने से हमारा विकास होता है हम ऊँचा से ऊँचा उठ सकते हैं और हममें आत्मविश्वास की कोई कमी नहीं होती है। आत्मविश्वास जीवन का सबसे बड़ा सहारा है। कहा भी गया है -

खुदी को कर बुलन्द इतना, कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बंदे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है ?

और भी विकास के कई मार्ग हैं, जो हमारे अन्तर में हैं। उन्हें खोजिए और उन पर अमल कीजिए।

अन्तर में क्या है - उसे व्यक्त कीजिए, हम सभी के अन्दर कई शक्तियाँ छिपी रहती हैं। हमें अपनी शक्तियों और प्रतिभाओं की पहचान करनी चाहिए, उन पर विश्वास करना चाहिए और उन्हें बढ़ाने के लिए पूर्ण मनोयोग से प्रयास करना चाहिए। प्रतिभाओं की कमी से नहीं बल्कि उद्देश्य की कमी से बड़ी संख्या में लोग नाकामयाब रह जाते हैं। हमें अपने लिए एक लक्ष्य चुनना चाहिए। क्योंकि "लक्ष्य की प्राप्ति ही हमारे संघर्ष का पुरस्कार होती है और प्रतिफल की आशा ही हमें अंत तक संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है।"

स्वावलम्बन भी विकास की दूसरी कड़ी है। जिनके दिल में मजबूती है और खून में गर्मी है, वे अपनी जिन्दगी खुद बनाते हैं। चाहे रास्ते कितने ही मुश्किल क्यों न हों, चाहे उस मार्ग में कितने ही काँटे क्यों न हो ? बेधड़क कदम बढ़ाते रहो।

✶

जीवित जीवाश्म (कल्पनाधृत)

—प्रशांत पाण्डेय, नवम 'क'

उस दिन मि० कार्नेल के नेतृत्व में पुरातत्व विभाग, जर्मनी के एक दल को एक गाँव में खनन कार्य करने के लिए पहुँचना था। मि० कार्नेल, ऐसे कई अभियानों का सफल नेतृत्व कर चुके थे। खनन श्रमिकों ने खनन कार्य शुरू भी कर दिया था। कुछ घण्टों की खुदाई के बाद एक कठोर चीज दिखाई पड़ी। मि० कार्नेल से उसे साफ करवाया, फिर ध्यान से उसका निरीक्षण करने लगे।

वह नमूना कई खण्डों में बँटा था। पंख के अवशेष मुँह में चोंच के साथ दाँत भी, विशाल पूँछ, सिर मगर के समान। कुल मिलाकर वे किसी भयानक जीव के जीवाश्म की ओर संकेत कर रहा था। उन्होंने उसकी अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए डा० वाट्सन से सम्पर्क किया। डा० वाट्सन ने उन्हें इसकी विस्तृत जानकारी देने का वायदा किया।

डा० वाट्सन ने उसकी जानकारियों को अनेक उच्च तकनीकी विधियों से प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि ये पंख होने से उड़ते भी थे, मुँह में बड़े दाँत होने से ये बड़े-बड़े पौधों को भी खा जाते थे।

प्रयोग करने के कुछ समय बाद वे यह देखकर दंग रह गए कि उन निर्जीव जीवाश्मों में कुछ हरकत होने लगी। कुछ समय बाद वे मुँह से भयानक आवाजें भी निकालने लगे। अब सभी जीवाश्म पंख फैलाकर उड़ रहे थे और तैयार थे एक बार फिर आधुनिक पृथ्वी को आदि पृथ्वी बनाने के लिए। सब तरफ मौत का अँधेरा छाने लगा। सब कुछ समाप्त हो गया और वे कहने लगे, "धरती पर मानव का नहीं, अब हमारा शासन है। हमारा शासन है, हमारा शासन।" यह सपना था या परिकल्पना थी लेकिन थी बड़ी भयानक व हैरतअंगेज।

✶

कहानी

स्वर्ग का सपना

—गौरव अग्निहोत्री
सप्तम 'क'

बहुत वर्षों पूर्व गगनपुर नामक एक बहुत ही सुन्दर गाँव था। गाँव में सभी लोग मिल-जुलकर रहते थे। किसी के मन में किसी के प्रति भेदभाव नहीं था। उसी गाँव में एक ब्राह्मण परिवार रहता था। ब्राह्मण परिवार बहुत ही सीधा व सरल था। इस परिवार में एक बालक का जन्म हुआ। उस बालक का नाम मुदित था। जब बालक 3-4 वर्ष का हो गया तो वह सुबह खेत पर बैठ जाता; कभी-कभी घर की छत पर बैठकर घण्टों आकाश को देखता रहता था। उसके मन में आकाश में उड़ती हुई चिड़ियों को देखकर कल्पनाएँ उठती थीं। "क्या मैं भी चिड़ियों की भाँति उड़ सकता हूँ।' "क्या मैं भी आकाश में पहुँच सकता हूँ?"

बचपन से ही मुदित के दादा-दादी जी कहानियाँ सुनाते थे। एक बार उसके दादा जी इन्द्र की कहानी सुना रहे थे। दादाजी ने इस कहानी में इन्द्र के बारे में बताया। इस कहानी में स्वर्ग का प्रसंग आया, बीच में ही दादाजी की बात काटते हुए मुदित ने पूछा - "दादाजी ये स्वर्ग क्या होता है?" दादाजी ने कहा- स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहाँ देवता निवास करते हैं, स्वर्ग बहुत ही सुन्दर है, वहाँ सर्वत्र अच्छा मौसम रहता है। मुदित ने दादाजी से दूसरी बार प्रश्न किया - "क्या मैं भी स्वर्ग जा सकता हूँ?" दादाजी ने उत्तर दिया - नहीं बेटे तुम स्वर्ग नहीं जा सकते हो। मुदित बोला - क्यों नहीं जा सकता। दादाजी ने कहा- स्वर्ग में केवल देवता ही निवास करते हैं। जो जीवन में अच्छे कार्य करता है मृत्यु के पश्चात् वह स्वर्ग प्राप्त करता है। मुदित ने ग्रामवासियों तथा दादाजी से सुना था कि सुन्दर उपवन में देवी-देवता निवास करते हैं। यह सुन्दर उपवन गगनपुर के समीप ही था। मुदित 7-8 वर्ष का हो गया, उसके मन में अभी भी स्वर्ग जाने की अभिलाषा थी। उसने सोचा कि यह उपवन मेरे गाँव के समीप है। शायद इसमें कोई देवता मुझे मिल जाये और मेरी इच्छा पूर्ण हो जाए। मन में स्वर्ग जाने की अभिलाषा लेकर वह प्रतिदिन सुन्दर उपवन जाता था। सौभाग्यवश उसे उपवन में एक परी मिल गई। परी ने मुदित से पूछा - "तुम यहाँ उदास क्यों बैठे हो?" मुदित ने कहा मैं स्वर्ग जाना चाहता हूँ। परी ने कहा "तुम स्वर्ग जाना चाहते हो?" मुदित ने प्रसन्न होकर कहा- "क्या आप स्वर्ग से आई हैं?" परी ने कहा - हाँ मैं स्वर्ग से आई हूँ। मैं तुम्हें स्वर्ग ले जा सकती हूँ, पर इसके लिए तुम्हें एक कार्य करना होगा। मैं तुम्हें एक डिब्बा दूँगी। अगर तुम आज से अच्छे कार्य करोगे तो डिब्बा स्वर्ग के सोने के सिक्कों से भर जाएगा। जब तुम्हारे डिब्बे में सौ सिक्के हो जाएँगे तब तुम स्वर्ग जा सकोगे। यदि तुमने गलत कार्य किये तो सिक्के वापस चले जायेंगे। मुदित डिब्बा पाकर बहुत प्रसन्न हुआ, परी वापस चली गई। मुदित ने उपवन में घायल खरगोश को देखा; उसने खरगोश का इलाज किया, वह खरगोश ठीक हो गया। उसके डिब्बे में सोने का एक सिक्का आ गया। इस प्रकार उसके डिब्बे में अच्छे कार्यों के फलस्वरूप नब्बे सिक्के हो गये। एक दिन उसने अपनी दीदी को गुस्से में एक छड़ी मार दी, इसलिये उसके डिब्बे से एक सिक्का उछलकर वापस स्वर्ग चला गया। मुदित ने फिर से अच्छे कार्य करने शुरू कर दिए और उसके डिब्बे में निन्यानवे सिक्के हो गए। वह सुन्दर उपवन में बैठा था, मुदित को इंतजार था कब वह समय आयेगा जब मेरे सौ सिक्के पूर्ण हो जायेंगे और मैं स्वर्ग जाऊँगा। कुछ दिन बाद एक साधु उसी उपवन में मिला। मुदित ने साधु से पूछा- क्या आप मुझे स्वर्ग ले जाने के लिए आये हैं, परन्तु साधु ने मुदित से कहा - "मैं स्वर्ग से आया हूँ, परन्तु वापस स्वर्ग नहीं जा सकता हूँ। मेरे पास एक छड़ी थी जिसकी शक्ति से मैं स्वर्ग से आ या जा सकता हूँ, लेकिन वह छड़ी मुझसे खो गई है अगर तुम मुझे डिब्बे सहित निन्यानवे सिक्के दे दो तो ही मैं स्वर्ग जा सकता हूँ। मुदित ने तुरन्त डिब्बा दे दिया। साधु ने मुदित को स्वर्ग देखने की शक्ति दे दी और वापस स्वर्ग लौट गया। मुदित की स्वर्ग जाने की अभिलाषा तो पूर्ण नहीं हुई, परन्तु वह अपनी आँखों से स्वर्ग देख सकता था।

नमक औषधि के रूप में

—ऋषि द्विवेदी
नवम 'ग'

नमक भोजन को ही स्वादिष्ट नहीं बनाता है, बल्कि इसके अन्य चिकित्सीय उपयोग भी हैं -

- फोड़े पर नमक बाँधने से या तो फोड़ा फूट जायेगा अन्यथा बैठ जायेगा इसमें जमे हुए रक्त को पिघलाने की क्षमता होती है।
- शरीर के किसी अंग में मोच आने पर नमक की सिकाई से दर्द एवं सूजन दोनों ही मिट जाती है।
- काला नमक व शहद चाटने से हिचकी बन्द हो जाती है।
- खाँसी आने पर थोड़ा नमक व मलाई चाटने से खाँसी का दौरा कम होता है।
- सेंधा नमक तेल में मिलाकर सीने एवं पीठ पर मलने से खाँसी में लाभ होता है।
- शरीर में गरम तेल या घी गिर जाने पर उस भाग में नमक लगाने से छाले नहीं पड़ते।
- रेस करने से या अधिक कार्य करने से गर्म पानी में नमक मिलाकर मलने से थकावट दूर हो जाती है।
- सरसों के तेल में नमक मिलाकर नियमित दाँत साफ करने पर सूजन दूर होती है व दाँत साफ होते हैं।
- जल जाने पर नमक का घोल मलने से तुरन्त ठण्डक मिलती है।
- बालों के झड़ने की अवस्था में हल्का नमक डालकर सप्ताह में एक बार सिर धोना चाहिये लाभ होता है तथा ग्लिसरीन डालने पर और अधिक लाभ होता है।
- पानी में नमक डालकर नहाने से शरीर की झुर्रियाँ मिट जाती हैं।
- कान दर्द में भी नमक लाभकारी है।
- खाद्य पदार्थों को नमक ताजा बनाये रखता है।
- दस्त के रोगी को नमक का पानी पीना अत्यन्त लाभप्रद है।
- नीबू के साथ काला नमक मिलाकर सुबह-शाम सेवन करने से भूख खुलती है।
- काला नमक, अदरक तथा नींबू का पेस्ट बनाकर भोजन के साथ लेने से भोजन जल्द पचता है।
- जहर या विषाक्त भोजन ले लेने पर नमक का पानी पिलाने से उल्टी होती है।
- बीमारी के बाद नमक मिले पानी से नहाने पर कमजोरी दूर होती है।

जीत सिंह आर्य
(दशम 'क')

राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र नई दिल्ली द्वारा आयोजित "संयंत्र वैमानिकी एक शताब्दी और वैमानिकी का भविष्य" भाषण प्रतियोगिता में पूरे देश में प्रथम स्थान

अखिल त्रिपाठी
(दशम 'क')

संस्कृत सम्भाषण प्रतियोगिता में प्रदेश में तृतीय स्थान

गौरव श्रीवास्तव
विज्ञान प्रदर्शनी में
मंडल स्तर पर प्रथम

हिमांशु उज्ज्वल
दशम 'क'
विज्ञान प्रदर्शनी में
मंडल स्तर पर प्रथम

अंकित शर्मा
(अष्टम 'क')
अंतर्विद्यालयीय गीत–गायन
प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

पं दीन दयाल उपाध्याय स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता

बाल वर्ग

प्रथम स्थान

निखिल श्रीवास्तव
(अष्टम 'क')

द्वितीय स्थान

चि. अखिल मिश्र
(अष्टम 'क')

तृतीय स्थान

चि. अजय सिंह यादव
(अष्टम 'क')

किशोर वर्ग

प्रथम स्थान

अनिमेष द्विवेदी
नवम 'ख'

द्वितीय स्थान

विधुनाथ त्रिवेदी
नवम 'क'

तरुण वर्ग

अर्पित शिवहरे (द्वादश)
पं दीन दयाल उपाध्याय
स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता में
तरूण वर्ग में प्रथम स्थान

योगेन्द्र कुमार (द्वादश)
पं दीन दयाल उपाध्याय
स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता में
तरूण वर्ग में द्वितीय स्थान

अरविन्द प्रताप सिंह (द्वादश)
पं दीन दयाल उपाध्याय
स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता में
तरूण वर्ग में तृतीय स्थान

पं० दीनदयाल उपाध्याय स्मारक निबन्ध प्रयिगोतिता 2003

तरुण वर्ग

प्रथम स्थान	अर्पित शिवहरे	द्वादश 'ख'
द्वितीय स्थान	योगेन्द्र कुमार	द्वादश 'क'
तृतीय स्थान	अरविन्द प्रताप सिंह	द्वादश 'क'

किशोर वर्ग

प्रथम स्थान	अनिमेष द्विवेदी	नवम 'ख'
द्वितीय स्थान	किसी को नहीं	
तृतीय स्थान	विधुनाथ त्रिवेदी	नवम 'क'

बालवर्ग

प्रथम स्थान	निखिलश्रीवास्तव	अष्टम 'क'
द्वितीय स्थान	अखिल मिश्र	अष्टम 'क'
तृतीय स्थान	अजय सिंह यादव	अष्टम 'क'

✶

'गाय' शब्द से बने अनेक शब्द

प्राचीन काल में गाय हमारी 'अर्थव्यवस्था' में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। तत्कालीन लोगों ने इसके महत्त्व को समझा था। लोग विवाहादि में मुद्रा के स्थान पर गायों का लेन-देन करते थे। प्राचीनकाल में हमारी समृद्धि का मापक गाय थी। लोगों को इसी के अनुसार शदु गः (सौ गायों वाला), सहस्रगः (सहस्र गायों वाले) कहा जाता था। इसके आर्थिक महत्त्व के कारण लोग इसे चुराने भी लगे थे। चोरी से बचाने के उद्देश्य से लोगों में इसे छिपाने की प्रवृत्ति जागृत हुई। इस प्रकार गाय को छिपाने का शब्द बना 'गोपन'। इसी 'गोपन' शब्द से 'गोपनीय' अर्थात् छिपाने योग्य बना। गायों के खो जाने या चुरा लिये जाने के लिये 'जुगुप्सा' शब्द प्रयुक्त हो गया, जिसका अर्थ निन्दित कार्य करना (यहाँ चोरी करना है) है।

गायों के खो जाने या चुरा लिये जाने पर ढूँढ़ने के लिये 'गौ अन्वेषणा' शब्द प्रयुक्त हुआ। गायों के रहने, ठहरने के लिये गोष्ठ, गोस्थान आदि नामों से पुकारा गया। इन शब्दों (गोष्ठ, गोस्थान आदि) का अर्थ विस्तार होता गया और गोष्ठ या गोष्ठी शब्द, सम्मेलन के अर्थ में प्रचलित हो गया। इसी से काव्य गोष्ठी, विचार गोष्ठी आदि शब्द बने।

✶

शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

—निशीत कुमार, नवम 'ख'

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में जाने कितनों ने प्राणों की बाजी लगा दी, जाने कितने शहीद हुए और जाने कितनों को आजीवन एक ही काल कोठरी में सड़ने को विवश होना पड़ा। परन्तु उन्होंने कभी भी प्रसिद्धि की आकांक्षा नहीं की। यदि वे चाहते तो उन्हें इसकी कोई कमी नहीं होती। श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल ने अपनी पुस्तक बन्दी जीवन में उल्लेख किया है "हम क्रान्तिकारी कभी भी अपने कर्म से यदि किसी को तृप्त करना चाहते हैं, तो अपनी ही अन्तरात्मा को, इसीलिए किसी से कुछ भी अपेक्षा न कर शान्ति से मरना चाहते हैं।"

श्री रामप्रसाद बिस्मिल भी इन्हीं क्रान्तिकारियों में से एक थे। परतन्त्र भारत की उत्पीड़क ब्रिटिश सरकार की अदालत ने पं० रामप्रसाद बिस्मिल को उत्तर प्रदेश में सशस्त्र क्रान्तिकारी दल का मुख्य संगठनकर्त्ता और काकोरी षड्यंत्र केस में उन्हें प्राणदण्ड दिया, जबकि भारत सरकार ने सशस्त्र क्रान्तिकारी देशभक्ति का सर्वोच्च पुरस्कार प्रदान किया। इनके जीवन के विषय में जो हमें थोड़ी-बहुत जानकारी प्राप्त हुई है वह भी इन्होंने जेल की काल-कोठरी में फाँसी देने के तीन दिन पूर्व लिखी थी। उसका प्रारम्भ इन्होंने कुछ पंक्तियों से किया था जिनको वर्णन करने के लोभ का मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूँ।

क्या ही लज्जत है कि
रग-रग से नहाती है सदा,
दम न ले तलवार
जब तक जान बिस्मिल में रहे।

और अन्त इन्होंने इन शब्दों से किया है -

"मरते बिस्मिल, 'रोशन', 'लहरी' 'अशफाक' अत्याचार से,
होंगे पैदा सैकड़ों इनके रुधिर की धार से।"

रामप्रसाद जी का जन्म शाहजहाँ पुर में "सम्वत् 1954 विक्रमी को हुआ था। इनका परिवार मूलतः तोमरधार में चम्बल नदी के किनारे बसे एक गाँव का रहने वाला था। इनके पिताजी कचहरी में सरकारी स्टाम्प बेचने का कार्य करते थे।" इनकी माताजी बड़े उच्च आदर्शों वाली थीं। इन्होंने अपनी सन्तानों को भी इसी प्रकार की शिक्षा दी थी। श्री रामप्रसाद जी ने कहा है "वास्तव में, मेरी माताजी स्वर्गीया देवी हैं। मुझमें जो कुछ जीवन तथा साहस आया, वह मेरी माताजी तथा गुरुदेव श्री सोमदेव जी की कृपाओं का ही परिणाम है। यदि मुझे ऐसी माता न मिलती, तो मैं भी अति साधारण मनुष्यों की भाँति संसार-चक्र में फँसकर जीवन निर्वाह करता।"

रामप्रसाद जी की शिक्षा स्थानीय विद्यालयों में ही हुई। परन्तु उनके अन्दर आश्चर्य जनक परिवर्तन, ईश्वर के प्रति लगाव, देश प्रेम इत्यादि की उत्पत्ति आर्य समाज की सभाओं में नियमित जाने तथा "सत्यार्थ प्रकाश" के अध्ययन के कारण हुई।

उनका क्रान्तिकारी जीवन में प्रवेश उस समय हुआ जब वह अंग्रेजी के नवें दर्जे में पढ़ते थे। कुछ स्वदेश सम्बन्धी पुस्तकों का अवलोकन प्रारम्भ हुआ। उसी वर्ष लखनऊ में अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस का उत्सव हुआ। वह भी उसमें सम्मिलित हुए। कतिपय सज्जनों से भेंट हुई। देश दशा का कुछ अनुमान हुआ, और निश्चय हुआ कि देश के लिए कुछ विशेष कार्य करना चाहिए। कांग्रेस के अवसर पर ही लखनऊ में ही मालूम हुआ कि एक गुप्त समिति है, जिसका मुख्य उद्देश्य क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेना है। यहीं से वे उस समिति की कार्यकारिणी के सदस्य बन गए। वे पूरे तन-मन-धन से समिति के द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध एक भीषण युद्ध की तैयारी करने लगे। समिति में हथियारों की खरीद के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। इन्होंने काकोरी के निकट रेल से सरकारी खजाना लूटने की योजना बनायी। दल के दस सदस्यों के साथ इन्होंने इस योजना को अंजाम दिया। उस घटना के बाद पुलिस लुटेरों की खोज में जुट गई। पुलिस को विश्वास था कि ये काम क्रान्तिकारियों का ही है। क्रान्तिकारियों का दल जो इस काम में शरीक हुआ था उसके सभी सदस्य रामप्रसाद जी के विश्वासपात्र थे परन्तु उन्हीं में से एक ने पुलिस के सामने सारा भेद खोल दिया।

जिन्हें हम हार समझे थे गला अपना सजाने को,
वही अब नाग बन बैठे हमें ही काट खाने को ।

पुलिस इन लोगों के पीछे पड़ गई । इनके पास भागने के बहुत सारे मौके थे पर इन्होंने किसी के साथ विश्वासघात करना उचित नहीं समझा । इनकी गिरफ्तारी के समय इन्हें हथकड़ी तक नहीं लगाई गई थी । इनके साथ अशफाकउल्ला खाँ, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी तथा रोशनसिंह पर मुकदमा चला । पुलिस का पक्ष कमजोर था फिर भी अंग्रेस सरकार ने उसी का पक्ष लिया तथा तीनों वीरों को जयमाल पहना दी और 19 दिसम्बर 1927 को वन्देमातरम् और भारत माता की जय कहते हुए वे फाँसी के तख्ते के निकट गये । चलते समय वे कह रहे थे -

"मालिक तेरी रज़ा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरजू रहे ।
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जूस्तजू रहे ।"

तत्पश्चात् उन्होंने कहा -

"I wish the downfall of the British Empire"

फिर वह तखते पर चढ़े और 'विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव' का जाप करते हुए फन्दे से झूल गए ।

वह शानदार मौत जो बिस्मिल को प्राप्त हुई, शायद लाखों में दो चार को ही मिल सकती है ।

इतना बड़ा देश भक्त जिसने देश के प्रति अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया उसे देश ने क्या दिया ? उसकी माँ और बहन अपने जीवन के अन्तिम समय तक मजदूरी करके अपना तथा अपने बच्चों के पेट पालन करने के लिए मजबूर थीं ।

कितने लोगों ने स्वतन्त्र भारत की कल्पना कर इसके सम्बन्ध में जोखिम उठाया होगा, बिना किसी यश की आशा के, केवल भारत माता के प्रति अपनी स्वाभाविक श्रद्धा और प्रेम के कारण, जो वस्तुतः स्वातन्त्र्य प्रेम का ही स्वरूप है और उन बेचारों को आज भी कोई श्रेय, कोई यश नहीं मिला । हम उनका नाम भी नहीं जानते, जबकि स्वातन्त्र्य आन्दोलन में दो तीन मास की कैद पाये हुए लोग फूलमालाएँ पहने फोटो बड़े अभिमान के साथ प्रदर्शित करते हैं तथा एतदर्थ प्राप्त आर्थिक लाभ भी उठाते हैं ।

अपने स्वातन्त्र्य के प्रति प्राण होमने वाले शहीदों के प्रति स्वतन्त्र भारत की कृतज्ञता की भावना से यह आशा करना क्या कोई बड़ी बात होगी कि बिस्मिल जैसे अनेक क्रान्तिकारियों के परिवारजनों को ढूँढ़कर आर्थिक सहायता तथा सहानुभूति प्रदान की जाए । तो फिर मैं उन्हें रामप्रसाद जी की ही पंक्तियों में धन्यवाद देना चाहूँगा ।

"वह फूल चढ़ाते हैं, तुर्बत भी दबी जाती है ।
माशूक के थोड़े से भी एहसान बहुत हैं ।"

ऐ माँ ! मेरी यादों को तुम दिल में बसा लेना
बदनाम न हों आँसू, दामन में छिपा लेना ।
जब याद मेरी आये, भरना न कभी आहें
तुम मेरी निशानी को सीने से लगा लेना ।

सफलता के रहस्य

—निखिल श्रीवास्तव
द्वादश 'क'

मनुष्य जीवन में बहुत से उतार चढ़ाव आते हैं। ये उतार चढ़ाव किसी के प्रेरणा स्रोत बन जाते हैं तो किसी को दुःखी कर देते हैं। मनुष्य को किसी कार्य में मिली असफलता ही उस कार्य की सफलता की सीढ़ी होती है। असफलता से घबराना नहीं, बल्कि असफलता को चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहिये।

"विश्वास से पंख-पखेरू उड़ जाता है,
जब चाहे जिस ऊँचाई से जुड़ जाता है।
हम होकर इंसान हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं
संकल्पों के साथ जमाना मुड़ जाता है।"

मनुष्य प्रत्येक दशा में अपने विचारों का परिणाम है। मैं, आप, हम या सभी अपने विचारों के अनुकूल ही परिणाम प्राप्त करते हैं। जैसा विचार वैसा ही वह मनुष्य और वैसी ही उसकी स्थिति। असफलता के विचार होते हैं तो मनुष्य असफल होता है, सफलता के विचार होते हैं तो मनुष्य सफल होता है। दरअसल मनुष्य के विचारों का सीधा प्रभाव उसके कार्यों और स्वभाव पर पड़ता है और जीवन में सफलता-असफलता हमारे क़ार्य-स्वभाव आचरण पर निर्भर करती है इसलिये विचारकों का कहना है कि मन में केवल उन्हीं विचारों को स्थान दीजियै जिनसे हमको सफलता मिलती है।

हमें अपने विचारों पर ध्यान रखना चाहिये क्योंकि ये विचार ही हमारे शब्द बनते हैं। हमें अपने शब्दों पर ध्यान रखना चाहिये क्योंकि ये शब्द ही हमारे कर्मों का रूप बनते हैं। हमें अपने कर्मों पर गौर करना चाहिये क्योंकि इन कर्मों से ही हमारा चरित्र निर्धारण होता है। अच्छे विचारों, शब्दों, कर्मों से हम मन मस्तिषक के नकारात्मक विचारों को पैदा होतेही उखाड़ फेंकने की स्थिति में होंगे। दरअसल कम्प्यूटर का एक सिद्धान्त गीगो (GIGO - Garbage in, Garbage out) बिल्कुलसही है जिसका मतलब है जैसा बोया वैसा पाया। सही डालिये, सही बाहर आयेगा (Positivity in Positivity out)। 'कम्प्यूटर एवं मानव' दोनों एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं इंसान बड़ा ही मजेदार प्राणी है। वह खुद को दूसरों से अधिक बुद्धिमान समझता हैऔर सोचता है कि यह नियम उसे छोड़कर बाकी सब पर लागू होता है। कितने भ्रम में जीता है मानव ? हम सभी रात में सोने से पहले अपनी जेबों से सामान निकालकर दराज, अलमारी बगैरह में रख देते हैं। इस क्रिया से प्रेरित होकर हमेंअपने भीतर दिनभर इकट्ठे हुए बुरे विचारों को रात में सोने से पहले मन से निकालने की आदत बना लेनी चाहिये क्योंकि आज हमारेपास जमा हुए बुरे विचारों की हमें कल कतई जरूरत नहीं होगी।

"हमारा जीवन वही होता है जैसा हमारे विचार उसे बनाते हैं।" - मार्क्स ऑरीलियस

पुराने जमाने में लोग तंत्र, मंत्र एवं यंत्र का प्रयोग करके सफलता प्राप्त करने का प्रयास करते थे परन्तु इनको आधुनिक युग में इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है -

तंत्र - हमारे कार्य करने का तरीका।

मंत्र - हमारे मन के विचार (कार्य के प्रति एवं व्यक्तियों के प्रति)

यंत्र - हमारे अन्यव्यक्तियों के साथ सम्बन्ध।

यदि हम उक्त 'तन्त्र, मंत्र एवं यंत्र' का प्रयोग सही ढंग से कर रहे हैं तो सफलता हमारेकदम चूमेगी।

सपने एवं उनका लक्ष्यों में क्रियान्वयन - मनुष्य की मूल प्रवृत्ति ही कल्पनाशीलता है। वास्तव में सपना देखना काफी कठिन काम है। निश्चित मात्रा में इच्छा शक्ति उद्देश्यों एवं प्रेरणा के साथ हम इन्हें अमली जामा पहना सकते हैं। इसके लिये संकल्प करना होगा एवं सपनों को लक्ष्य में क्रियान्वित करना होगा।

किसी ने कहा है - ''अफसोस इस बात का नहीं है कि हमने कठोर फैसला नहीं लिया बल्कि इस बात का है कि हम इसके लिये तैयार नहीं हैं।'' अधिकांशतः यहदेखने में आता है कि सामान्य व्यक्तिकिसी क्षेत्र विशेष में सफलता प्राप्त न होते देख एक या दो प्रयासों के बाद ही विचलित हो जाता है, अपना आत्मविश्वास खो बैठता है तथा स्वयं को अयोग्य, अक्षम तथा हीन समझने लगता है। मनुष्य को सदैव अपने मनोबल को ऊँचा बनाये रखना चाहिये। निरन्तर प्रयास में लगे रहने वाला व्यक्ति एक न एक दिन अवश्य सफलता प्राप्त करता है। किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के मूलमंत्रों को व्यक्ति स्वयं में समावेशित करके सफल हो जाता है तो कोई भी शक्ति उसे उसके लक्ष्य तक पहुँचने से नहीं रोक सकती। सफलता रातोंरात प्राप्त नहीं होती है। पौधा लगाने के बाद माली उसे दिनों, हफ्तों तथा महीनों तक सींचता है तब कहीं जाकर ऋतु आने पर फल की प्राप्ति होती है।

एक बार एक यात्री एक चौराहे पर रुका, उसने एक बुजुर्ग से पूछा - 'यह सड़क मुझे कहाँ ले जायेगी ?' बुजुर्ग ने पलट कर पूछा - 'आप कहाँ जाना चाहते हैं ?' उस यात्री ने कहा 'मैं नहीं जानता।' बुजुर्ग ने कहा - 'तब कोई भी सड़क लेलो, क्या फर्क पड़ेगा, जब आप जानते ही नहीं कि आपको कहाँ जाना है ?' कितनी सही बात है। क्या हम किसी रेलगाड़ी या बस में बैठेंगे बिना यह जाने कि वह कहाँ जा रही है ? इसका सीधा सा जवाब होगा नहीं। बस या ट्रेन में तो नहीं बैठेंगे, लेकिन जिन्दगी के सफर में बिना लक्ष्य के लोग चलने को क्यों तैयार हो जाते हैं ? लक्ष्य वे सपने हैं जिनमें निश्चित समय और उन्हें हासिल करने की योजना होती है। लक्ष्य ही सपने को असलियत में बदलते हैं। सपनों को असलियत में बदलने के लिये लक्ष्य- स्पष्ट, मापने योग्य, हासिल करने योग्य, वास्तविक एवं समयबद्ध होने चाहिये। नजर बड़े लक्ष्य की ओर होनी चाहिये।

इच्छा शक्ति को सुदृढ़ बनाना - इच्छा प्रायः स्वार्थपरक होती है। हम भाँति-भाँति की वस्तुओं की इच्छा करते हैं और प्रत्येक छोटे से छोटे प्रयत्न को सफल होते देखना चाहते हैं, साथ ही अपने प्रत्येक कार्य के लिये पुरस्कार एवं प्रशंसा की इच्छा करते हैं। संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसकी समस्त इच्छायें पूरी हो गयी हों, उसको कभी असफलता का मुँह न देखना पड़ा हो, निन्दा का पाठ न बनना पड़ा हो और प्रशंसा से वंचित न होना पड़ा हो। लेकिन इन सब बातों का मुकाबला करने वाला ही कार्य में सफलता पाता है।

कार्य की सफलता की कामना मनुष्य का सहज स्वभाव हैपरन्तु इस स्वाभाविक प्रवृत्ति को नियन्त्रित भी किया जा सकता है। प्रत्येक फल समय पर प्राप्त होता है, पुरस्कार एवं प्रशंसा अवश्य मिलेगी परन्तु अपने निश्चित समय पर अपने ढंग से, यही चिन्तन पद्धति निष्काम कर्म भावना को उभारती है जो कालान्तर में इच्छाओं को नियन्त्रित करने में सहायक होती है। हमको किसी हल्की इच्छा को आश्रय नहीं देना चाहिये। एक बार की बात है नेपोलियन की सेना चली जा रही थी। सामने आल्पस के ऊँचे पहाड़ थे, सिपाही थोड़े संकोच में पड़ गये। नेपोलियन ने आवाज लगाई - ''सिपाहियों समझ लो आल्पस है ही नहीं'' और देखते ही देखते सेना आल्पस के पार हो गई। नेपोलियन दृढ़ इच्छा शक्ति वाला व्यक्ति था। उसका कहना था कि 'असम्भव शब्द मेरे शब्द कोष में है ही नहीं, एक व्यक्ति वह सब कुछ कर सकता है जो अन्य किसी व्यक्ति ने किया है।'

इच्छा-शक्ति एवं अभिलाषा की कमी हमें आगे बढ़ने से रोकती है। एक मछुआरा था, जो मछलियाँ निकाल रहा था, जब भी कोई बड़ी मछली पकड़ता तो उसे वापस नदी में फेंक देता था और सिर्फ छोटी मछलियों को अपने पास रहने देता। उसकी इस अजीब सी हरकत को देखने वाले एक आदमी ने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा है ? इस पर उस मछुआरे ने जवाब दिया, ''मेरी कड़ाही बहुत छोटी है।' बहुत से लोग जीवन में बड़ी सफलता इसलिये प्राप्त नहीं कर पातेक्योंकि वे उस मछुआरे की तरह छोटी कड़ाही लेकर घूमते हैं।

कार्य के प्रति समर्पण भावना - संसार के समस्त प्राणी अपने गुण एवं स्वभाव के अनुसार कार्यों में संलग्न होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के पास कोई न कोई कार्य है। पाश्चात्य विद्वान् कारलाइल ने कहा, 'Work is Worship' अर्थात् 'कार्य ही पूजा है।' इस कथन में गहरी सत्यता निहित है। वास्तव में जब हम अपने कार्य को पूजा मानकर करते हैं तब हमारे अन्दर ईश्वरीय शक्ति द्वारा कार्य के प्रति पूर्ण सरगर्मी, दिलचस्पी, जोश और जिम्मेदारी, निष्ठा, अनुशासन, गर्व तथा आत्मविश्वास जागृत हो जाते हैं। हमारे तन-मन-प्राण एकरस होकर काम में एकाग्र हो जाते हैं। एक अद्भुत शक्ति हमारे रोम-रोम में कार्य के प्रति सच्ची श्रद्धा और सरसता भर देती है।

बत्तख पानी में जितनी तेजी से पाँव चलाती है, ऊपर से उतनी ही शान्त और स्थिर दिखती है। कुदरत चिड़ियों को खाना तो जरूर देती है लेकिन उनके घोसलों में नहीं डालती, उन्हें अपना खाना पाने के लिये कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। वास्तविक दुनिया में सफलता केवल कड़ी मेहनत से कार्य के प्रति समर्पण भावना रखने वालों को ही मिलती है।

काम के अलावा एक इंसान की दिलचस्पियाँ, उसके बारे में काफी कुछ बताती हैं। कोई व्यक्ति अपने समय को किस तरह बिताता है, वह कार्यालय में उसके काम में झलकता है। महात्मा गाँधी ने बहुत अच्छी बात बताई है कि-

"पढ़ो ऐसे कि- जैसे तुम्हें सदा जीना है।"

(Study as if, you were to live for ever)

"जियो ऐसे कि जैसे तुम्हें कल ही दुनिया से चले जाना है।"

(Use as if you were to die tomorrow)

इससे आगे बढ़ते हुए - "कार्य में मेहनत ऐसे करो कि जैसे सफलता अवश्य मिलेगी ही।" अब्राहिम लिंकन ने कहा है - "इन्तजार करने वालों को चीजें मिलती हैं लेकिन सिर्फ वही मिलती हैं, जो संघर्ष करने वाले छोड़ देते हैं।"

उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही - किसी भी चुनौती का मुकाबला करने के लिये आवश्यक है कि हमारे में स्वयं के प्रति, अपने कार्य के प्रति, अपने जीवन के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिये। हम जो भी काम करें, उसे पूरे मन से करें। वर्तमान में यदि हम किसी तनावपूर्ण स्थिति से गुजर रहे हैं तो उसे एक कागज पर लिख लें और कुछ बातें ऐसी लिखें जिनसे यह परिस्थिति बिगड़ सकती है अथवा सुधर सकती हैं। इससे हमारे अन्दर यह समझने की क्षमता उत्पन्न होगी कि विपरीत परिस्थितियों से किस प्रकार निपट सकते हैं।

जवाबदेह हमें अधिक परिपक्व, बड़ा और जिम्मेदार बनाता है। अगर हम कोई उत्तरदायित्व नहीं लेना चाहते तब इसका अर्थ यह है कि जीवन में हम कोई बड़ा कार्यभार संभालने के योग्य नहीं है। यदि हम जीवन में स्वयं को किसी मुकाम पर देखना चाहते हैं, तो हमें अपने परिवार, समाज, राष्ट्र में भी कुछ उत्तरदायित्व ग्रहण करने चाहिये। यह जवाबदेही हमें गर्व का अनुभव करायेगी। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये उत्तरदायित्व एवं जवाबदेही का होना बहुत आवश्यक है।

अनुशासनबद्धता - अनुशासन दो प्रकार से आता है - एक तो बलात् लादा जाता है और दूसरा आत्मप्रेरणा से। बलात् लादी हुई चीज कभी भी अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न नहीं करती। इसके लिये आत्मप्रेरणा ही अधिक उचित है। युग पुरुष महात्मा गाँधी ने भी इसी प्रकार के अनुशासन की बात कही थी। न केवल कही थी बल्कि उसको कार्यरूप में परिणत भी किया था। इसी कारण वे अकेले ही वह सब कुछ कर पाये, जिसे अनेक मिलकर भी नहीं कर पा रहे थे। सफलता के लिये व्यक्तियों को अपनी आत्मप्रेरणा से प्रेरित व अनुशासनबद्ध होकर शान्त भाव से सतत् कार्य करने की भावना और लगन के साथ इस ओर प्रवृत्त होना पड़ेगा तभी वे अपने लिये, संस्था के लिये, राष्ट्र के लिये कुछ कर पायेंगे।

एक विशाल जानवर - जिराफ को हम अच्छी तरह से जानते हैं। माता-जिराफ खड़े-खड़े ही अपने बच्चे को जन्म देती है। माँ के आरामदेह गर्भ से निकलकर बच्चा एकाएक सख्त जमीन पर आ गिरता है और कहीं जमीन पर बैठ जाता है। इसके बाद माता जिराफ का सबसे पहला काम होता है बच्चे के पीछे जाकर उसे एक जोरदार ठोकर मारना। इस चोट से बच्चा उठ तो जाता है लेकिन कमजोर और लड़खड़ाते पैरों की वजह से फिर गिर जाता है। माँ फिर से बच्चे के पीछे जाकर एक ठोकर और मारती है। बच्चा खड़ा होकर फिर से गिर जाता है। माँ बच्चे को तब तक ठोकर मारती रहती है जब तक बच्चा अपने पैरों पर खड़ा होकर चलने न लगे। अपने ही बच्चे के साथ माँ ने ऐसा क्यों किया ? माँ जिराफ जानती है कि जिन्दा रहने का यही एक जरिया है कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाये नहीं तो उसे जंगली जानवरों का शिकार बनने में देर नहीं लगेगी।

एक लड़के ने पतंग उड़ाते हुये अपने पिता से पूछा कि पतंग हवा में ऊपर कैसे टिकी रहती है ? पिता ने जवाब दिया कि डोरी से। बच्चे ने कहा "पिताजी डोर ही तो है जो पतंग को ऊपर जाने से रोक रही है।" पिता ने

बच्चे से कहा कि देखो, अब मैं इस डोर को तोड़ देता हूँ। सोचिये कि उस पतंग के साथ क्या हुआ होगा ? वह नीचे आ गई। क्या हमारी जिन्दगी में भी ऐसा नहीं होता। कुछ चीजों के बारे में हम सोचते हैं कि वे हमें सफल होने से रोक रही हैं लेकिन असलियत में वे हमें सफलता की ओर ऊपर उठा रही हैं। अनुशासन इसी का नाम है।

हर एक का अपना व्यक्तित्व है जो ईश्वर से मिली एक देन है। हमारा जन्म ही अपनी एक पृथक् विशिष्टता के साथ हुआ है। फिर भी मैं मानता हूँ कि अपने व्यक्तित्व को हम और भी उन्नत करके उसे और भी व्यापक बनाकर अपना कल्याण-साधन कर सकते हैं। छोटा-मोटा काम करने वाला भी कड़ी मेहनत करे तो सेठ बन सकता है। मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि हमारा काम कैसा भी क्यों न हो, हमें साहस से काम लेना चाहिये, हमारी योग्यता चाहे जैसी भी हो, हम चाहे विद्यार्थी हों, अध्यापक हों, इंजीनियर हों, डाक्टर हों, दुकान के मालिक हों या कर्मचारी, अपने काम में सफलता पाने के लिये हमें अपनी सारी शक्ति अपनी योग्यता को बढ़ाने में लगा देनी चाहिये। यहाँ पर यह ध्यान रखना चाहिये कि यह कभी महसूस न करें कि हम किस्मत के मारे हुए हैं या भाग्यहीन हैं, दुर्भाग्य की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखना चाहिये। हम आज जिन्दा हैं यह भी बड़े भाग्य की बात है।

जिन्दगी में सफलता इस बात से नहीं मापी जाती कि दूसरों के मुकाबले में हम कैसा कार्य कर रहे हैं, बल्कि हमारी अपनी क्षमताओं की तुलना में क्या कर रहे हैं। सफल व्यक्ति खुद ही से मुकाबला करते हैं, वे अपने ही काम में सुधार लाकर अपने ही रिकार्ड तोड़ते हैं और लगातार तरक्की करते रहते हैं। एक अंग्रेजी कहावत है "एक शांत समुद्र में नाविक कभी कुशल नहीं बन पाता।"

हर काम आसान होने से पहले मुश्किल लगता है। हमें मुश्किलों से नहीं भागना चाहिये। मुश्किल बातों को आसान करने में ही सही काबिलियत है।

"बाधाएँ कब बाँध सकी हैं आगे बढ़ने वालों को,
विपदाएँ कब रोक सकी हैं मर कर जीने वालों को।"

✶

मेहनत का रंग

—आशीष यादव
सप्तम 'ख'

घटना जुलाई 1980 की है जब डा० अब्दुल कलाम आजाद के पास ढंग के कपड़े, चप्पल न होने के कारण उन्हें प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी से मिलने में संकोच हो रहा था।

उनकी दिन रात की मेहनत रंग लायी। भारत के पहले उपग्रह प्रक्षेपण यान एम०एल०3 का परीक्षण सफल रहा। इस अनूठी उपलब्धि ने भारत को उंन चुनिन्दा देशों के समकक्ष लाकर खड़ा किया था जो उपग्रह प्रक्षेपण की क्षमता रखते थे। पूरे देश के लिये गौरव की बात थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री ने इस उपलब्धि के नायक डा० कलाम से मिलने की इच्छा जाहिर की। उन्हें यह सूचना मिली तो वे धर्मसंकट में पड़ गये। उनकी परेशानी यह थी कि उनके पास ढंग के कपड़े व चप्पल न थे। जिन्हें पहनकर प्रधानमंत्री के सामने जाया जाये। तब उनके वरिष्ठ प्रो० धवन ने कलाम से कहा तुम्हें सुन्दर कपड़ों की जरूरत नहीं है। तुम पूर्ण सफलता के लिवास में हो।

✶

विश्व के कुछ खास नगरों, देशों की उपाधियाँ

क्र०सं०	नाम	उपाधि
1.	वेनिस (इटली)	एड्रियाटिक की रानी
2.	न्यूजीलैण्ड	दक्षिण का ब्रिटेन
3.	जंजीबार	लौंग का द्वीप
4.	रोम	सात पहाड़ियों का नगर
5.	न्यूयार्क	ग्रेट व्हाइट वे
6.	एवरडीन (स्कॉटलैण्ड)	ग्रेनाइट सिटी
7.	मिस्र	नील का वरदान/नील का उपहार
8.	केण्ट	इंग्लैण्ड का बगीचा
9.	ल्हासा (तिब्बत)	निषिद्ध शहर
10.	न्यूयार्क	एक्पायर सिटी
11.	आयरलैण्ड	मरकत द्वीप
12.	अफ्रीका	अन्ध महाद्वीप
13.	फिलाडेल्फिया	क्रेकर सिटी
14.	क्यूबा	एण्टिलीज का मोती
15.	थाईलैण्ड	सफेद हाथियों की भूमि
16.	जापान	उगते सूर्य का देश
17.	नार्वे	मध्यरात्रि के सूर्य का देश
18.	कोरिया	प्रातःकालीन शान्ति की भूमि
19.	म्यांमार	स्वर्णिम पैगोडा का देश
20.	ऑस्ट्रेलिया	कंगारूओं का देश
21.	स्कॉटलैण्ड	केकों का देश
22.	जिब्राल्टर जलसन्धि	भूमध्य सागर की कुंजी
23.	बहरीन	मोतियों का द्वीप
24.	येरूशलम/फिलीस्तीन	पवित्र भूमि
25.	पामीर का पठार	संसार की छत
26.	तुर्की	यूरोप का रोगी
27.	ह्वांगहो नदी	चीन का शोक
28.	बेल्ग्रेड (यूगोस्लाविया)	श्वेत शहर
29.	गिनी तट	गोरों की कब्र
30.	प्रेयरीज (उ० अमेरिका)	विश्व की रोटी की टोकरी
31.	सिंगापुर	पूर्व का मोती
32.	चीन	यलो पेरिल
33.	रोम	पश्चिम का बेबीलोन

34.	रोम	प्राचीन विश्व की साम्राज्ञी
35.	कोरिया	हरमिट किंगडम
36.	भूटान	लैण्ड ऑफ थण्डरबोल्ट
37.	क्यूबा	विश्व का चीनी का पात्र
38.	स्टॉकहोम	उत्तर का वेनिस
39.	ब्रिटेन	डूबते सूर्य का देश
40.	रोम	पोप का शहर
41.	मीकांग नदी	कम्बोडिया (कम्पूचिया) का शोक
42.	इटली	संगमरमर की भूमि
43.	ओसाका (जापान)	पूर्व का मैनचेस्टर
44.	जिब्राल्टर जलसंधि	हरक्यूलिस का स्तंभ
45.	अफ्रीका	कोलानट की भूमि
46.	आइसलैण्ड	अग्नि द्वीप
47.	फ्यूजीयामा (जापान)	पवित्र पर्वत
48.	ऑस्ट्रेलिया	प्यासी भूमि का देश
49.	ब्राजील	विश्व का कहवा-पात्र
50.	एण्टार्कटिका	श्वेत महाद्वीप
51.	राइन नदी (यूरोप)	कोयला नदी
52.	नाइजरनदी (रूस)	तेल की नदी
53.	स्वर्डलोवस्क (रूस) यूराल	प्रदेश की राजधानी
54.	ब्लाडीबोस्टक (रूस)	पूर्व का शासक
55.	ब्राजील	साँपों का देश
56.	लेबनान	पश्चिम एशिया का स्विट्जरलैण्ड

पात बिन कीन्हे ऐसी भाँति गन बेलिन के,
परत न चीन्हें से ये लरजत लुंज हैं।
कहै पद्माकर बिसासी या बसन्त के,
सु ऐसे उतपात गात गोपिन के भुंज हैं।
ऊधौ यह सूधो सो सँदेसो कहि दीजो भले
हरि सों, हमारे ह्याँ न फूले बन कुंज हैं।
किंसुक गुलाब कचनार औ अनारन की,
डारन पै डोलत अँगारन के पुंज हैं।

कठिन जीवन का सहज अभ्यास : शिविर

—प्रत्यूष प्राञ्जल
अष्टम 'क'

विद्यालय में लगने वाले स्काउट शिविर कठिन जीवन का सरल अभ्यास कराते हैं । यद्यपि हम किसी दुर्गम स्थान पर नहीं गये परन्तु विद्यालय परिसर में ही अलग-अलग वितान तानकर हमने सैन्य जीवन जैसा अभ्यास किया ।

— सम्पादक

छात्रों के बहुमुखी विकास को ध्यान में रखते हुए हमारे विद्यालय में प्रतिवर्ष स्काउटिंग के अन्तर्गत बाल चेतना शिविर का आयोजन किया जाता है । प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा षष्ठ से अष्टम के छात्रों ने इस शिविर में पूर्ण हर्षोल्लास के साथ भाग लिया ।

यह शिविर दिनांक 24 फरवरी 2004 से 26 फरवरी 2004 तक आयोजित किया गया । पहले दो दिनों में कक्षा षष्ठ और सप्तम के छात्रों ने इस शिविर का आयोजन किया । आखिरी दिन अर्थात् 26 फरवरी 2004 को कक्षा अष्टम के छात्रों में यह उल्लास दिखा । आचार्य श्री सुभाष शर्मा जी के निर्देशन में सभी छात्र 9.55 बजे विशाल कक्ष में प्रार्थना हेतु उपस्थित हुए । प्रार्थना के पश्चात् आचार्य जी ने सभी छात्रों को पूरी दिनचर्या से अवगत कराया । सभी छात्र 11.00 बजे विद्यालय के 'माधव-स्मृति' प्रांगण में उपस्थित हुए । इस शिविर में कक्षा को आठ टोलियों में विभक्त किया गया । सभी टोलियों ने अपनी-अपनी टोली की एक-एक पटकुटी लगाई । पटकुटी की साज-सज्जा के पश्चात् 12.00 बजे सभी छात्रों ने जलपान किया । जलपान करते हुए सभी छात्रों का निरीक्षण आचार्य श्री सुभाष जी, श्री महेश जी, श्री श्रीप्रकाश ओझा जी द्वारा किया गया । जलपान के पश्चात् सभी टोली नायकों ने अपनी टोलियों से गीत-गायन, गाँठ सांकेतिक भाषा प्रतियोगिता के लिए एक-एक छात्र का चयन किया । इसके पश्चात् सभी छात्रों को 2.00 बजे भोजन हेतु एकत्रित किया गया । सभी छात्रों द्वारा लाये गये भोजन को एक साथ एकत्रित करके पूरे आनन्द के साथ ग्रहण किया गया । भोजन में आचार्य श्री अनिरुद्ध जी भी उपस्थित रहे । आचार्य जी ने कहा कि 'इन नन्हें स्काउटों में भारत का भविष्य झलक रहा है' भोजन के पश्चात् छात्रों ने अपनी-अपनी पटकुटियों में विश्राम किया । भोजनोपरान्त ही आचार्य श्री अनिरुद्ध जी एवं श्री राहुल जी ने सभी टोलियों का निरीक्षण किया । इसके पश्चात् प्रतियोगिताओं की बारी आई । गीत-गायन प्रतियोगिता में पहले स्थान पर अंकित शर्मा, द्वितीय स्थान पर शशांक पंत और तीसरे स्थान पर चाकमा गीत के साथ दृश्यमुनि चाकमा रहें । गाँठ प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर निशान्त, शुभम दीक्षित व राहुल कुशवाहा रहे । सांकेतिक भाषा प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तीसरे स्थान पर क्रमशः विकास कुमार शर्मा, पुष्पेन्द्र सिंह यादव व राघवेन्द्र सिंह राज रहे ।

सभी टोली नायकों को उनके विशेष योगदान पर पुरस्कृत किया गया । संतमणि, रमाकान्त शर्मा और शीतांशु तिवारी को कुशल व्यवस्थापक के रूप में पुरस्कृत किया गया । पूरे शिविर को योजनाबद्ध तरीके से संचालित करने हेतु प्रत्यूष प्राञ्जल व सुजीत ओमर को भी पुरस्कृत किया गया ।

अन्त में आचार्य श्री सुभाष जी ने स्काउटिंग के उद्देश्य को बताते हुए कहा कि किसी भी परिस्थिति में अपने आप को ढालने वाला ही सच्चा स्काउट कहलाता है । वन्देमातरम् के साथ कार्यक्रम का आनन्दमय समापन किया गया।

★

भारतीय संस्कृति

—सोमनाथ सिंह
सप्तम 'क'

भारतीय संस्कृति सामासिकी संस्कृति है । इसने समय समय पर न जाने कितनी संस्कृतियों, सभ्यताओं और विचारों को अपने में समाहित कर लिया परन्तु अपना मूल तत्त्व फिर भी अक्षुण्ण ही रखा। —**सम्पादक**

मनुष्य की बुद्धि और विचारों के जन्म के साथ ही संस्कृति की भी शुरुआत हुई । भारतीय संस्कृति मानवता का मेरुदण्ड है । यह शिष्टता, सौजन्य तथा शील की आधारशिला है । इसने क्रमशः विकसित होकर समाज को सुसंस्कृत किया । भारतवर्ष की आत्मा भारतीय संस्कृति में ही तो निहित है । भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है । जहाँ पाश्चात्य संस्कृति भौतिकवाद की ओर उन्मुख है, वहीं भारतीय संस्कृति आध्यात्मवाद पर आधारित है । आध्यात्मिकता हमारी संस्कृति को अपनाने तथा पूर्ण रूप से समझने की कुंजी है । जब समस्त विश्व अज्ञान के गहन अंधकार में डूबा था तब हमारी संस्कृति अपने ज्ञान का आलोक फैला रही थी । इस संस्कृति की प्रचण्ड शक्ति इसकी महान उदारता है । इसने अनेक संस्कृतियों को अपने में आत्मसात् करके अपनी शक्ति और क्षमता को विकसित किया है । हर संस्कृति की एक सभ्यता होती है । जब संस्कृति के मुख्य तत्व समाज द्वारा परम्पराओं में परिवर्तित हो जाते हैं, तब वे उस देश की सभ्यता के अभिन्न अंग हो जाते हैं । इस संस्कृति की नींव में यहाँ के ऋषियों का अनंत तप एवं त्याग की भावना निहित है । हमारी संस्कृति का प्रयोगात्मक पक्ष ही उसकी सभ्यता है । हमारी सभ्यता बाह्य एवं हमारी संस्कृति आन्तरिक विकास को दर्शाती है । सभ्यता मानव जीवन के विकास का तो यह संस्कृति उसके गुणों का पूर्ण परिचय कराती है । हमारी भारतीय संस्कृति मानव केन्द्रित और अगणित जीवन मूल्यों का विशाल पुंज है अर्थात् भारतीय संस्कृति के केन्द्र में मानव समाज है । यह मानव आदर्शों का प्रकाश पुंज है । संस्कृति की विचारधारा सर्वप्रथम मानव के ही अंतःकरण में अवतरित होती है ।

इस संस्कृति ने एक होते हुए भी अनेक रूपों में अपनी अभिव्यक्ति दी है । हमारी इस संस्कृति की जड़ें इतनी गहरी हुई कि उनकी शाखाएँ दूर-दूर तक विस्तार करती चली गईं । जिससे की हमारी संस्कृति का विस्तार बहुत दूर तक हो गया है । ऐसा होने के कारण यह बहुत ही आदर्श, लोकप्रिय तथा प्रभावी हो गई है । हमारी इस संस्कृति का अतीत अवश्य ही अत्यन्त पवित्र एवं प्रखर था । परन्तु जब अतीत और वर्तमान के बीच टकराहट पैदा होती है, तो बहुत सी विकृतियाँ सक्रिय हो उठती हैं, जो कि सांस्कृतिक पतन का कारण बनती हैं । जब हमारा मानव जीवन भोग-परायण बन जाता है, तब सांस्कृतिक सृजनशीलता का ह्रास होने लगता है तथा संस्कृति में इसके परिणाम नजर आने लगते हैं । एकदम आधुनिक एवं पूरी तरह से पारम्परिक संस्कृति के ये दोनों स्वरूप घातक हैं । संस्कृति को सही अर्थ में समझने के लिए उसकी सतह को भेदना आवश्यक है । उस सतह के भीतर ही मिलती हैं । सहजता, प्रवाह एवं जीवन तत्व और यही है किसी भी या हमारी संस्कृति का मूलमंत्र । इस संस्कृति का कुछ भाग कला, परम्परा, रहन-सहन के रूपों में भी होता है । इसी कारण इतिहास के भिन्न-भिन्न चरणों में हमारी इस संस्कृति को संरक्षण एवं प्रोत्साहन विभिन्न वर्गों से मिलता रहा है । यह संस्कृति एक दो मंजिले मकान की तरह है । इसकी पहली मंजिल में एकदम मूलभूत जीवन के तत्व होते हैं जो कि शाश्वत हैं । इसकी दूसरी मंजिल का निर्माण ऐतिहासिक परम्परा, सामाजिक सम्बन्ध व मानवता के मूल तत्वों का समावेश रहने के कारण हुआ है । आज यह संस्कृति ही समस्त मानवीय विकास का आधार है । हमारी संस्कृति सम्पूर्ण विश्व की सबसे प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है । हमारी भारतीय संस्कृति रूप का नहीं अपितु गुणों का सम्मान करती है । पाश्चात्य संस्कृति रूप को मान एवं प्रमुख महत्व देती है जबकि हमारी भारतीय

संस्कृति आन्तरिक गुणों को महत्व दे उसे सर्वश्रेष्ठ समझती है। हमारी संस्कृति ही आशा की एकमात्र किरण है, क्योंकि इसी में सांस्कृतिक आदर्श जीवन केसारे आधारभूत तत्व विद्यमान हैं। भारतीय संस्कृति में प्रतीकों का भी अत्यधिक महत्त्व है। यहाँ प्रतीकों के माध्यम से अपने इष्ट एवं लक्ष्य की उपासना व आराधना का विधान है। यही वजह है कि इसकी महत्ता वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक अक्षुण्ण है। डॉ० राधाकृष्णन् भारतीय संस्कृति की इस प्रवृत्ति के बारे में कहा करते थे - भारतीय संस्कृति में गहन चिन्तन खोजने की प्रवृत्ति सदा से ही रही है। हमारी भारतीय संस्कृति में सौम्यता है, सृजनात्मक शक्ति है साथ ही इसमें सुरक्षा एवं संघर्ष के तत्व भी हैं। हमारी संस्कृति अपने आप में बर्बरता का पूर्ण विलोम है। इसने आततायियों के आक्रमण से अपनी रक्षा की है, तो विश्व के अनंत परिवर्तनों का स्वागत भी किया है। हजारों अघातों के बीच भी इसका अस्तित्व मिटा नहीं है। इसकी सुरक्षा के लिए पैदा संघर्ष में अनगिनत वीर बलिदान हुए और अन्त में बर्बरता को हार माननी पड़ी क्योंकि इस शाश्वत संस्कृति को किसी भी तरह से विनष्ट नहीं किया जा सकता है। मानवता का अन्तिम कल्याण ही इसका आदर्श है। हमारी भारतीय संस्कृति ही समस्त मानवीय विकासों का आधार है।

✶

देव और दानव

—**उदित पाण्डेय,** नवम 'ग'

अच्छाई और बुराई ये दोनों ही मन की स्थितियाँ हैं देव और दानव दोनों ही मनुष्य के मन के भीतर ही हैं परन्तु आत्मा मुक्त व निष्पाप है।
— **सम्पादक**

प्रजापति की संतान, देवों तथा असुरों में एक बार झगड़ा हो गया। देवों ने वेद मंत्रों द्वारा उपासना करनी आरम्भ कर दी। यह सोचकर कि उसकी सहायता से वे असुरों को पराजित कर लेंगे।

सबसे पहले नासिका से देवताओं ने उपासना आरम्भ की। असुरों ने भी नासिका से उपासना प्रारम्भ कर नासिका को पाप से बाँध दिया। इसलिए मनुष्य नासिका से सुगन्ध तथा दुर्गन्ध, दोनों को सूँघता है।

फिर देवों ने वाणी से वेद मंत्रों का उच्चारण किया। दैत्यों ने भी वाणी से उच्चारण कर वाणी को पाप से बाँध दिया। इसलिए मनुष्य वाणी से सत्य तथा असत्य दोनों बोलता है।

फिर देवों ने आँखों से उपासना की, असुरों ने आँखों से उपासना कर आँखों को पाप से बाँध दिया। इसलिए मनुष्य आँखों से जो देखने योग्य होता है और जो देखने योग्य नहीं होता है, दोनों को देखता है।

उसके बाद देवों ने कानों से उपासना की, असुरों ने कानों को भी पाप से बाँध दिया। इसलिए मनुष्य कान से जो सुनने योग्य है तथा जो योग्य नहीं है, दोनों को ही सुनता है।

तत्पश्चात् देवों ने मन से उपासना की। असुरों ने मन से उपासना कर मन को भी पाप से बाँध दिया। इसलिए मनुष्य विचारने योग्य और विचारने के अयोग्य दोनों बातें सोचता है।

अन्त में देवों ने प्राणों से उपासना की परन्तु प्राण को असुर पाप से बाँध न सके। कहने का भाव यह है कि देव और असुर मनुष्य की उत्कृष्ट तथा निकृष्ट प्रवृत्तियाँ हैं, इनमें संग्राम होता ही रहता है। केवल आत्मा ही ऐसी है जिसे कोई बुराई या पाप से बाँध नहीं सकता। आत्मा निष्पाप है।

✶

भारत में बाल श्रम

—सात्विक
सप्तम 'ख'

यह बड़ी विसंगति है अपने देश की जहाँ लाखों करोड़ों बच्चे जिन्हें अपने जीवन को सँवारना सीखना चाहिये वे जीवन बचाने के लिये कुछ भी करने को विवश हैं । गरीबी तथा सामाजिक वैषम्य ही इसका जिम्मेदार है । सरकार ही नहीं समाज भी उत्तरदायी है । — सम्पादक

आश्चर्य है कि जिस देश में बच्चों को ईश्वर का प्रतिरूप और देश का भविष्य कहा जाता है वही नौनिहाल आज बदहाल जिन्दगी जी रहे हैं। बाल श्रम राष्ट्रीय विकास में बाधा, मानवता के नाम पर कलंक है तथा बच्चों के लिये अभिशाप है। कष्टकारी बात तो यह है कि बच्चों के कल्याण को ध्यान में रखकर बहुत से नियम बनाये गये लेकिन विश्व बैंक की एक ताजा रिपोर्ट हमारे सामने एक भयानक पहलू प्रस्तुत करती है। उसके अनुसार सबसे ज्यादा 6 करोड़ बाल श्रमिक भारत में हैं। जेनेवा स्थित अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ने बाल श्रम पर अपनी रिपोर्ट में लिखा है ''जो बच्चे अपने स्वास्थ्य'' तथा शारीरिक व मानसिक विकास को क्षति पहुँचाने वाली परिस्थितियों में कम मजदूरी पर लम्बे समय तक काम करने कभी-कभी अपने परिवारों से बिछड़कर स्वयं का भविष्य निर्माण करने वाली शिक्षा तथा प्रशिक्षण के अवसरों से पूर्णतया वंचित हैं। बाल श्रम समस्या कोई एक कारण नहीं है। यह संसाधनों के असमान वितरण के उत्पन्न गरीबी के कुचक्र बेरोजगारी, औद्योगीकरण, नगरीकरण का परिणाम है। विद्यालयों की कमी अथवा विद्यालयों तक पहुँच का अभाव, व्यवसायिक शिक्षा पद्धति का अभाव तथा शिक्षा पर होने वाले व्यय बच्चों को मजदूरी की तरफ ढकेल देते हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् बाल श्रम की समस्या के समाधान के लिये भारत सरकार द्वारा अनेक कारगर कदम उठाये गये हैं। संविधान में भी अनेक नियम बनाये गये। 1986 में बाल श्रम पर प्रतिबंध लागू किया गया जो इस संदर्भ में महत्वपूर्ण कदम कहा जा सकता है। इसके द्वारा चौदह वर्ष से कम आयु के बच्चों द्वारा अठारह खतरनाक उद्योगों में कार्य करने पर रोक लगा दी गई है। दूसरा महत्वपूर्ण प्रयास 'राष्ट्रीय बाल श्रम नीति' बनाकर किया गया। पर इन तमाम उपायों के बावजूद यह समस्या बनी हुई है। संभवतः इसीलिये न्यायमूर्ति 'सत्येश्वर राय' ने कहा है कि संवैधानिक संरक्षण और कानून बच्चों की तभी मदद कर सकते हैं। जब सरकार तथा नागरिक कानूनों को कार्यान्वित होने दें। अन्त में हम इतना कहेंगे - इन मासूम बच्चों को उनकी मासूमियत व बचपन लौटाने हेतु उन्हें थामने का प्रयास सिर्फ सरकारी या गैरसरकारी संगठनों को ही नहीं बल्कि हम सबको मिलकर करना होगा।

✶

चक्कियाँ कर्तव्य की पीसी बहुत दिन
आइये अधिकार के चूल्हे जलाएँ
ताकि शासन के तवे पर चार रोटी
सेंक कर ये बाल-बच्चे तो जिलाएँ।

मान्यताएँ एवं वैज्ञानिक आधार

—महेन्द्र कुमार पाल
दशम 'ग'

भारतीय जीवन पद्धति में तमाम प्रकार के निर्देश तथा व्यवस्थाएँ हैं । हमको अपने बड़े बूढ़ों से तमाम बातें सुनने को मिलती हैं कि ऐसा करो, ऐसा न करो । इनके वैज्ञानिक आधार भी होते हैं जिनकी पड़ताल कर रहे हैं महेन्द्र पाल ।

— सम्पादक

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि एवं मनीषी अच्छे विचारकों एवं वैज्ञानिकों की श्रेणी में गिने जाते हैं । उन्होंने मानव जीवन को सुखमय बनाने के लिए शरीर एवं मन पर आधारित अनेकों प्रयोग एवं अनुसंधान करते हुए कुछ जीवन सूत्र निर्धारित किये थे जो आज भी प्रासंगिक हैं । ऋषियों का एकान्त में तप करने का उद्देश्य संभवतः यही था । आज के वैज्ञानिक युग में वे कितने सत्य हैं इसके लिए कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं-

गंगा जल पवित्र / क्यों ?

1. गंगा जल में वैक्टीरियोफेज (जीवाणुभोजी) नामक एक वायरस होता है जो जल में उपस्थित किसी भी प्रकार के जीवाणुओं का भक्षण करके जल को जीवाणु मुक्त बनाए रखता है । इसीलिए गंगाजल कभी खराब नहीं होता है । गंगा जल से स्नान करने से त्वचा सम्बन्धी सभी रोग ठीक हो जाते हैं । आजकल गंगा जल प्रदूषित हो गया है जिसके कारण वांछित परिणाम नहीं मिल पा रहा है ।

2. **पीपल व तुलसी की पूजा की जाती है । क्यों ?**

   हिन्दू दर्शन में पीपल व तुलसी का वृक्ष पूज्य है क्योंकि ये वृक्ष लगातार 24 घण्टे आक्सीजन निकालते रहते हैं जिससे वायुमण्डल शुद्ध रहता है । जबकि अन्य वृक्ष केवल सूर्य के प्रकाश में ऐसा कार्य करते हैं । तुलसी के वृक्ष के पास धृत-दीप जलाने और वहाँ बैठने से दिव्य वातावरण बन जाता है जो श्वसन क्रिया के माध्यम से शरीर में पहुँचकर शुद्ध रक्त संचार करता है । फलतः शरीर व मन को आनन्द व शान्ति मिलती है ।

3. **यज्ञोपवीत दाहिने कान में लपेटा जाता है । क्यों ?**

   यज्ञोपवीत दाहिने कान में लपेटा जाता है क्योंकि दाहिने कान में एक विशेष प्रकार की नस होती है । यज्ञोपवीत कान में लपेटने पर वह नस दबती है और भगन्दर रोग से बचाव रहता है ।

4. **भोजन मौन करना चाहिए । क्यों ?**

   ग्रसनी के नीचे व वायु के लिए एक ही मार्ग होता है । जब हम भोजन निगलते हैं तो श्वांसनली एक ढ़क्कन द्वारा बन्द हो जाती है । सांस लेते या बोलते समय खाना निगलने पर भोजन श्वास नली में पहुँच जाता है और जोर से खाँसी तब तक आती है जब तक कि भोजन के कण श्वांस नली से निकल नहीं जाते । कभी-कभी यह जानलेवा भी हो सकता है ।

5. **भोजन निश्चित समय पर करना चाहिए । क्यों ?**

आमाशय में हाइड्रोक्लोरिक अम्ल (नमक का अम्ल, HCl) व पाचक रस भोजन को पचाने के लिए निश्चित समय पर निकल आते हैं । भोजन देर से करने पर ये पाचक रस निर्धारित समय पर स्वतः स्रावित होने लगते हैं परन्तु भोजन की अनुपलब्धता के कारण हाइड्रोक्लोरिक अम्ल आमाशय की दीवार पर घाव बना सकता है । इस कारण से एसिडिटी या तेजाबियत हो सकती है । जो बाद में अल्सर का रूप धारण कर लेती है ।

समय से पूर्व भोजन करने पर पाचक पदार्थों का स्राव नहीं होता है फलस्वरूप खट्टी डकार या अपच जैसी स्थिति बन जाती है ।

6. **प्रार्थना पद्मासन पर बैठकर की जाती है । क्यों ?**

ईश्वर का ध्यान पद्मासन में बैठकर करते हैं जिससे जाँघ पर दबाव पड़ता है अतः कमर के नीचे रक्त का प्रवाह कुछ कम हो जाता है । फलस्वरूप हृदय के ऊपरी भागों जैसे मस्तिष्क में रक्त प्रवाह तेजी से होता है जिससे बुद्धि बलवती होती है । ईश्वर का ध्यान करने से मन एकाग्र होता है तथा स्मरण क्षेत्र बढ़ जाता है ।

7. **पूजा पाठ में शंख, घंट-घड़ियाल बजाए जाते हैं । क्यों ?**

पूजा पाठ में शंख तथा घंट-घड़ियाल बजाए जाते हैं । शंख से निकली तरंगों (पराश्रव्य तरंगें) से वायुमण्डल के जीवाणु व कीटाणु नष्ट हो जाते हैं ।

8. **भोजन बैठकर व प्रसन्न मन से करना चाहिए । क्यों ?**

भोजन बैठकर व प्रसन्न मन से करना चाहिए क्योंकि इस स्थिति में पाचक रसों का स्राव उचित ढंग से होता है । फलस्वरूप भोजन उचित प्रकार से पच जाता है तथा शरीर स्वस्थ रहता है । जबकि क्रोध, ईर्ष्या, चिन्तायुक्त होकर भोजन करने पर पाचक रसों का स्राव उचित ढंग से न होने के कारण भोजन का पाचन नहीं हो पाता है ।

✶

मैंने छाती का लहू पिला, पाले विदेश के क्षुधित लाल
मुझको मानव में भेद नहीं, मेरा अंतस्थल वर विशाल
जग के ठुकराये लोगों को लो मेरे घर का खुला द्वार
अपना सब कुछ हूँ लुटा चुका, फिर भी अक्षय है धनागार
मेरा हीरा पाकर ज्योतित परकीयों का वह राजमुकुट
यदि इन चरणों में झुक जाए कल वह किरीट तो क्या विस्मय
हिन्दू तन मन हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय ।

– अटल बिहारी वाजपेयी

संस्कृत सम्पर्क-भाषा भवितुं शक्या

—अखिल कुमार त्रिपाठी
दशम 'क'

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा आयोजित संस्कृत सम्भाषण प्रतियोगिता में अपने विद्यालय की दशम कक्षा के छात्र चि० अखिल त्रिपाठी को पूरे प्रदेश में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ । विषय था - ''संस्कृत भाषा भारतवर्षस्य सम्पर्क भाषा भवितुं शक्या न वा'' । प्रान्त स्तरीय प्रतियोगिता लखनऊ के हिन्दी भवन में हुई जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार डॉ० विद्यानिवास मिश्र ने की । चि० अखिल को राज्यपाल आचार्य श्री विष्णुकान्त शास्त्री ने पुरस्कृत भी किया । चि० अखिल का वक्तव्य यहाँ यथारूप प्रस्तुत है ।

— सम्पादक

सुरसरि दिवपूता पावयन्ती मनुष्यान्
विमलमति मनोभिः प्राज्ञकैः स्तूयमाना ।
रसगुण परिपूर्णे वाङ्मयैः शोभमाना,
जयतु जयतु नित्यं देववाणीं समृद्धा ॥

'संस्कृत' नाम दैवी वाक् व्याख्याता महर्षिभिः इत्यादि सूक्तिषु दैवी वाक्, देवभाषा, गीर्वाणभारती सुरभारतीत्यादि रूपेण प्रशंसितस्य संस्कृतस्य महत्त्वं को न जानाति लोके ।

परमश्रद्धेयाः सभापति महोदयाः, वन्दनीयाः मुख्य अतिथि महोदयाः, समीक्षक विद्वांसः प्रतिभागी भ्रातरः भगिन्यश्च । अद्य वयं सर्वे संस्कृत भाषा भारतवर्षस्य सम्पर्क भाषा भवितुं शक्या न वा अस्मिन् विषये वाद-विवादाय समुपस्थिताः स्मः ।

संस्कृतभाषा सरला सुमधुरा हृद्या चेति सर्वैरपि स्वीक्रियन्ते । भारतीयाः पाश्चात्याः चापि सर्वे विद्वांसः एकस्वतरेण संस्कृतस्य महत्त्वं स्वीकुर्वन्ति । अहं तु एवम् अनुभवामि यत् संस्कृतं तु भारतस्य आत्मैव वर्तते । संस्कृतं विना भारतीयायाः संस्कृते-संकल्पना कर्तुं न शक्यते, इदं सत्यम् -

विना वेदं विना गीतां विना रामायणीं कथाम् ।
विना कविं कालिदासं भारतं भारतं नहि ॥

संस्कृतं विना राष्ट्रभाषायाः अपि कल्पना कर्तुं न शक्यते । अतः राष्ट्रभाषायाः भारतीय संस्कृतेः संगणकस्य च कृते संस्कृतस्य अनिवार्यं स्थानम् । यथा इयं पुरा सर्वसाधारण-जनानां वाक् व्यवहार भाषा आसीत् तथैव अद्यापि भवितुं शक्नोति । एतत् श्रूयते यत् आदिगुरुः शङ्कराचार्यः उत्तरभारतस्य सर्वैः विद्वद्भिः सह शास्त्रार्थं कुर्वन् काशीं प्राप्तः । प्रथितयशसः विद्वद्धौरेयस्य मण्डनमिश्रस्य दर्शनलाभाय तद्गृहम् अन्वेष्टु कामः काञ्चित् धीवरीम् अपृच्छत्-'क्वास्ति मण्डनमिश्रस्य धामेति ।' सा धीवरी प्रत्यवदत् -

स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणम्,
कीराङ्गना यत्र गिरोगिरन्ति ।
द्वारस्य नीडान्तर सन्निबद्धाः
अवेहि तद्धाम हि मण्डनस्य ॥

अनेन स्पष्ट मस्ति यत् पुरा संस्कृतभाषैव साधारण जनानां भाषा आसीत् ।

दर्शनशास्त्रस्य एको सिद्धान्तः स्यादवाद रूपेण अति प्रसिद्धः । तस्य अभिप्राय एव अस्ति यत् अस्मिन् संसारे नहि किञ्चित् असम्भवम् । भारते संस्कृतभाषायाः प्रतिदिनं विविध संस्कार कार्येषु प्रयोगः भवति । अस्याः वाङ्मये विद्यमानाः सूक्तयः जनान् अभ्युदयाय प्रेरयन्ति । भारत प्रशासनस्य विभिन्नेषु विभागेषु ध्येय वाक्यरूपेण एतेषां प्रयोगं पश्यामः । भारतशासनस्य राजचिह्नस्य अधः 'सत्यमेव जयते' लिखितः अस्ति । वायुसेनायाः ध्येयवाक्यम् 'नभः स्पृशं दीप्तम्' संस्कृत भाषायाः गौरवगाथां प्रकटयति । लोकसभा अध्यक्षस्य आसनस्योपरि सर्वोच्चस्थाने 'धर्म चक्र प्रवर्तनाय' उल्लिखिता अस्ति । लोकसभायाः केन्द्रीय सभातलस्य भित्तिकायां 'अयं निजः परोवेति' सुप्रसिद्धः श्लोकः लिखितः अस्ति। राष्ट्रीय शैक्षिकानुसन्धान प्रशिक्षण परिषद् ध्येयवाक्यं 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' संस्कृतभाषायामेव अस्ति । एतेन सुस्पष्टमस्ति यत् संस्कृतभाषा भारतस्य जीवनभूता । यदा संस्कृतभाषा सर्वेषां भाषाणां जननी तर्हि मातुः उपक्षेया सुतस्य सुतायाः च कल्पना अतीव मूर्खता । दैनिक प्रार्थनायामपि सर्वे भारतीयाः जनाः 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव', 'कर्पूरगौरं करुणावतारम्' इत्यादयः श्लोकाः पठन्ति । यदा अशिक्षिताः जनाः पूर्वोक्ताः श्लोकाः सरलतया उच्चारणं कुर्वन्ति तदा संस्कृतविद्वद्भिः प्रयासेन सरलसंस्कृतसम्भाषण माध्यमेन कथं न उच्चारणे समर्थाः भविष्यन्ति । इदमुल्लेखनीयः अस्ति यत् सम्प्रति सर्वकारस्य सहयोगेन सरल संस्कृत सम्भाषण कार्यक्रमाः भारतवर्षस्य समस्तभागेषु संस्कृतस्य विद्वांसः संचालयन्ति ।

मम प्रतिपक्षी महाभागाः मोहकरूपेण कथयिष्यन्ति यत् अन्तर्राष्ट्रीय आंग्लभाषा समक्षे संस्कृत भाषा कथं स्थातुं शक्नोति ? वदामि तावदहं यत् आंग्लाभाषा पुरा इंग्लैण्डदेशस्य कश्चित् ग्रामस्य भाषा एव आसीत् तत्रत्याः जनानां स्वास्मिता भावेन न केवलं इंग्लैण्डदेशस्य अपितु वर्तमानकाले सम्पूर्ण विश्वभाषा रूपेण प्रतिष्ठिता, तर्हि नहि सः दिवसो दूरं यत् संस्कृतभाषा भारतवर्षस्य सम्पर्क भाषा भविष्यति यदि सर्वे भारतीयाः जनाः सर्वेषां भाषाणां जननी संस्कृतमातुः रक्षार्थं तथैव सर्वथोभावेन प्राणपणेन संलग्नाः भवन्तु यथा स्वभारतमातुः रक्षार्थं भारतीयसेनायाः वीराः सीमाप्रान्ते कटिबद्धाः भवन्ति । इदमेव, विचार्य यत् वयं पुनः जगद्गुरुरूपेण प्रतिष्ठां प्राप्तुं यत्नवन्तः तर्हि संस्कृतभाषा एव अस्माकं उद्धारका । केनापि कविना मधुरमुक्तम् -

भवति भारत संस्कृतिरक्षणं प्रतिदिनं हि यया सुरभाषया ।
सकलवाग्जननी भुवि सा श्रुता बुधजनैः सततं हि समादृता ॥

वामः कामो मनु ष्याणां यस्मिन् किल निबध्यते ।
जने तस्मिंस्त्वनुक्रोशः स्नेहश्च किल जायते ॥

(रामायण)

अर्थ - मनुष्यों में यह प्रेमभाव बड़ा वक्र है । वह जिसके प्रति बँध जाता है उसी के प्रति करुणा और स्नेह उत्पन्न हो जाता है ।

सुख और दुःख

—अनिल कुमार
नवम 'ग'

चि० अनिल कविताएँ भी लिखते हैं और निबन्ध लिखने का भी प्रयास करते हैं । इनके पास विचार हैं परन्तु उनको भाषागत निबन्धन सीखने की जरूरत है । सुख और दुःख सभी के जीवन में आते हैं एक जैसी स्थिति कभी नहीं रहती है । हम सुख में मदोन्मत्त न हो जायें तथा दुःखों में निराशा के गर्त में न चले जायें इसकी आवश्यकता है । **— सम्पादक**

सुख और दुःख एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । जीवन एक ऐसा सफर है, जिसमें समय-समय पर मोड़ आते रहते हैं और सभी मोड़ एक समान नहीं होते हैं, किसी मोड़ पर दुःख मिलता है, तो किसी मोड़ पर अपार खुशी । किन्तु जिस प्रकार व्यक्ति किसी भी सौदे में अधिकतम लाभ प्राप्ति की अभिलाषा रखता है, न कि हानि की, ठीक उसी प्रकार से जिन्दगी के हर मोड़ पर व्यक्ति खुशी की इच्छा रखता है । किन्तु यह इस मायावी संसार का नियम है कि व्यक्ति को कभी सुख और कभी दुःख दोनों मिलते हैं, इसलिए व्यक्ति को जीवन के हर मोड़ के लिए अभ्यस्त होना चाहिए ताकि वह खुशी के क्षणों में तो अभय और हर्षोल्लास के साथ जीवनयापन करे ही एवं दुःख या दुर्दिन आने पर धैर्य धारण कर उस समय भी आनन्द से परिस्थितियों का सामना करते हुए जीवन जिये ।

गलतियाँ करना व्यक्ति की जन्मजात प्रवृत्ति होती है । कहते हैं- 'यदि ये गलतियाँ मनुष्य न करे तो वह कुछ भी नहीं सीख सकता है, क्योंकि प्रत्येक गलती उसके जीवन में एक नया अनुभव लेकर आती है और अपनी एक-एक गलती में सुधार कर मनुष्य एक सभ्य सदाचार से युक्त, सुसंस्कृत मानव बनता है, बिना गलती किये ये परिवर्तन असम्भव है । इसलिए मेरी दृष्टि में गलतियाँ करना मानव का स्वभाव है, जो उसे कदम-कदम पर उसकी कमियों का अहसास कराके उसे प्रगति के सुपथ में अग्रसर करती हैं । किन्तु विरले ही ऐसे लोग मिलते हैं, जो अपनी गलती को सहर्ष स्वीकार करते हैं । यहाँ ऐसे लोगों की संख्या अधिक है जो गलतियाँ कर दुःख को आमन्त्रित करते हैं और सारा दोष अपने भाग्य पर थोप कर सोचते हैं कि मेरी किस्मत में ऐसा ही लिखा होगा । किन्तु मेरी दृष्टि में अपनी किस्मत का निर्माता व्यक्ति स्वयं ही होता है और सुकर्मों और सतत् परिश्रम से अपना भाग्य बदल सकता है ।

''छिपा दिए सब तत्त्व आवरण
के नीचे ईश्वर ने,
संघर्षों से खोज निकाला
उन्हें उद्यमी नर ने ।''

''ब्रह्मा से कुछ लिखा भाग्य में
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है ।''

इस संसार में ऐसा कोई व्यक्ति, जो दोषों से पूर्णतः मुक्त हो ढूँढ़ना अन्धकार में चींटी को ढूँढ़ने से भी कठिन है । प्रत्येक व्यक्ति समय-समय पर पाप कर्म भी करता रहता है, जिस प्रकार पेड़ लगाने पर उससे फल एक दिन अवश्य ही प्राप्त होते हैं, ठीक उसी प्रकार मानव पाप कर्म का प्रतिफल दुःख के रूप में प्राप्त करता है । किन्तु दो क्षणों की

खुशी मिलते ही वह आनन्द की दुनिया में खो जाता है, और दुःख का अहसास होते ही दुनिया से मुख मोड़ना चाहता है। मनुष्य दुःख देखते ही भयभीत हो जाते हैं, उसका सामना करने का प्रयत्न नहीं करते हैं और कभी-कभी खुशी न मिलने पर वह पथ भ्रष्ट हो जाता है और अपने कर्त्तव्य को भी विस्मृत कर देता है। ऐसे समय में भी ईश्वर का स्मरण कर अपने लक्ष्य, अपने मार्ग को कभी नहीं भूलना चाहिए।

"पथ में काँटे तो होंगे ही,
दूर्वादल-सरिता, सर होंगे।
सुन्दर गिरि-वन-वापी होंगी,
सुन्दर-सुन्दर निर्झर होंगे।
सुन्दरता की मृग-तृष्णा मे,
पथ भूल न जाना पथिक कही ॥"

मेरी दृष्टि में

"आज सुख है तो कल,
दुःख झेलना पड़ेगा।
जिन्दगी का ये खेल,
खेलना पड़ेगा ॥
खुशी की नाव में सदा
सैर करता रहा है,
देख दुःख किसी को
तू हँसता ही रहा है।
आज देख दुःख तू,
रो क्यों रहा है ?
पथिक हो के पथ को,
तू खो क्यों रहा है ॥"

तन्द्रिल निशीथ में ले आए, गायक तुम अपनी अमर बीन
प्राणों में भरने स्वर नवीन।

तममय तुषारमय कोने में, छेड़ा जब दीपक राग एक,
प्राणों-प्राणों के मन्दिर में, जल उठे बुझे दीपक अनेक।
तेरे गीतों के पंखों पर, उड़ चले विश्व के स्वप्न दीन।

सिद्धान्तनिष्ठ चन्द्रशेखर आजाद

—शशांक पाण्डेय
सप्तम 'क'

आजादी के संघर्ष में क्रान्तिकारियों को डकैतियाँ भी डालनी पड़ती थीं । परन्तु ये डकैतियाँ केवल सेठ-साहूकारों के यहाँ ही पड़ती थीं और क्रान्तिकारी स्त्रियों पर हाथ नहीं उठाते थे । एक बार डकैती के समय आजाद का रिवाल्वर एक महिला ने छीन लिया । —. **सम्पादक**

स्वाधीनता के लिए बलिदान देने वालों में चन्द्रशेखर 'आजाद' का सर्वोच्च स्थान है । वे सदा स्वाभिमान के साथ जिए और स्वाभिमान के साथ मरे । चन्द्रशेखर आजाद स्त्री जाति का बहुत सम्मान करते थे । उनके इसी आदर्श से सम्बन्धित एक उदाहरण निम्नलिखित है -

प्रायः नित्य प्रातःकाल दण्ड बैठकें लगाना आजाद का पहला काम होता था । कुछ खुराक मिल गई तो ठीक अन्यथा कोई परवाह नहीं । उनको अपनी किसी प्रकार की चिन्ता नहीं थी । सबसे बड़ी चिन्ता उनको अपने दल की सताया करती थी । दल की सदस्य संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी । खर्च बढ़ गया था । खर्च पूरा कर पाना मुश्किल हो रहा था । आजाद के सामने यही सबसे बड़ी समस्या थी ।

दल के लिए धन-संग्रह करने के लिए आजाद ने कई उपाय किए पर परिस्थिति सँभल न सकी । तब दल की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में विचार-विमर्श के लिए सदस्यों की बैठक हुई । इस बैठक में पंडित राजेन्द्रलाहिड़ी, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला, शचीन्द्र बख्शी, मन्मथ नाथ गुप्ता, रोशनसिंह तथा रामकृष्ण खत्री आदि ने भाग लिया । योगेश बाबू ने इसमें प्रमुख हिस्सा लिया ।

प्रस्ताव रखा गया कि पार्टी के लिए राजनैतिक डकैतियाँ डाली जाएँ । एक दो सदस्यों ने इसका विरोध किया- 'यह हमारे लिए भारी संकट साबित हो सकता है । हम सरकार की नज़रों में चढ़ जायेंगे । डाका डालकर धन लाभ के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नहीं था । अतः सर्वसम्मति से यही निश्चय हुआ कि डकैती डाली जाए । ये डकैतियाँ सिर्फ सेठों के यहाँ डाली जाएँ और स्त्रियों पर हाथ न उठाया जाए । पं० रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में आगे का कार्यक्रम बनाया गया । डाका डालने के समय एक विशेष प्रकार के कोड शब्दों का प्रयोग किया जाता था । जैसे- ''ज्ञान जो है सो बरिन्डा'' इस वाक्य का प्रयोग तब होता था जब डाका डालने की तैयारी व्यर्थ हो जाती थी ।

प्रतापगढ़ के निकट एक गाँव की घटना है । वहाँ एक सूदखोर दुष्ट साहूकार था । उसके यहाँ डाका डालने इस दल के लोग घुस पड़े । भीतर गए लोगों ने अपना काम चालू कर दिया पं० बिस्मिल बाहर पिस्तौल लिए खड़े हुए। ताकि, गाँव के लोग भीतर न आ जाएँ । उस सेठ के घर की स्त्रियाँ काफी मर्दानी थीं । गहने, रुपये लुटते देखा तो वे संघर्ष करने लगीं । उनमें एक स्त्री काफी मोटी-तगड़ी और हिम्मती थी । उसने आजाद का हाथ पकड़ कर घूसे मारना शुरू कर दिया परन्तु आजाद चुपचाप खड़े रहे । उस स्त्री ने आजाद का रिवाल्वर छीन लिया ।आजाद का चेहरा तमतमा गया । तब तक बिस्मिल ने हांक लगाई- चलो ।' मजबूरन सबको लौटना पड़ा । मगर आजाद रिवाल्वर के बिना नहीं लौट सकते थे । तब तक गाँव के लोगों की भीड़ उन डाकुओं को मारने के लिए खड़ी हो गई । बिस्मिल ने दो तीन फायर किए । इससे गाँव के लोग भयभीत हो गए तथा भाग गए । आजाद को अपने दल में न पाकर बिस्मिल बोले अरे ! आज़ाद कहाँ रह गए ? तभी आजाद झपट कर आ गए ।

'कहाँ फँस गए थे ?' लोगों ने पूछा ।

आजाद ने कहा- 'एक स्त्री ने मेरी पिस्तौल छीन ली थी ।'

बिस्मिल ने कहा - हः हः हः । क्या तुम उससे छुड़ा नहीं सकते थे ? उसे गोली मार देनी चाहिए थी ।

आज़ाद ने गम्भीरता से उत्तर दिया - 'स्त्री पर हाथ नहीं उठाते ।'

✶

मन के जीते जीत .....

—आशीष पाण्डेय
सप्तम 'क'

मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है । कोई भी व्यक्ति टूटे मन से खड़ा नहीं हो सकता है और छोटे मन से कोई बड़ा नहीं हो सकता है । वास्तव में मन की फकीरी पर कुबेर की सम्पदा भी रोती है ।

— सम्पादक

प्रस्तावना - संस्कृत की एक कहावत है - ''मन एवं मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः'' अर्थात् मन ही मनुष्य के बंधन और मोक्ष का कारण है । तात्पर्य यह है कि मन ही सांसारिक बंधनों में बाँधता है और मन ही बंधनों से छुटकारा दिलाता है । यदि मन न चाहे तो व्यक्ति बड़े से बड़े बन्धनों की भी उपेक्षा कर सकता है तभी स्वामी शंकराचार्य ने कहा है कि - ''जिसने मन को जीत लिया, उसने जगत् को जीत लिया ।'' मन ही मनुष्य को स्वर्ग या नरक में बैठा सकता है। स्वर्ग या नरक में जाने की कुंजी भगवान ने हमारे हाथों में ही दे रखी है ।

मन मानव-व्यक्तित्व का वह ज्ञानात्मक रूप है जिससे व्यक्ति के सभी कर्म संचालित होते हैं । मन के टूटने पर बड़े-बड़े संकल्प भी धराशायी हो जाते हैं और जब तक मन संकल्पशील रहता है तब तक कठिन से कठिन अवस्था में भी मनुष्य पराजय स्वीकार नहीं कर सकता ।

उक्ति का आशय - निबन्ध में उल्लिखित शीर्षक की सूक्ति पूर्ण रूप से इस प्रकार है -

''दुःख-सुख सब कहँ परत है, पौरुष तजहिं न मीत ।
मन के हारे हार है, मन के जीते जीत ।।''

अर्थात् दुःख और सुख सभी पर पड़ा करते हैं, इसलिये अपना पौरुष मत छोड़ो क्योंकि हार और जीत केवल मन के मानने तथा न मानने पर निर्भर है । अर्थात् मन के द्वारा हार स्वीकार किये जाने पर व्यक्ति की हार सुनिश्चित है । इसके विपरीत यदि व्यक्ति का मन हार स्वीकार न करे तो विपरीत परिस्थितियों में भी विजय श्री उसके चरण चूमती है । जय-पराजय, हानि-लाभ, यश-अपयश और दुःख-सुख सब मन के ही कारण है । इसलिये व्यक्ति जैसा अनुभव करेगा वैसा ही वह बनेगा ।

मन की दृढ़ता के कुछ उदाहरण - हमारे सामने ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें मन की संकल्प शक्ति के द्वारा व्यक्तियों ने अपनी हार को विजय श्री में परिवर्तित कर दिया । महाभारत के युद्ध में पांडवों की जीत का कारण यही है कि श्रीकृष्ण ने उनके मन को दृढ़ कर दिया था । नचिकेता ने न केवल मृत्यु को पराजित किया अपितु अपनी इच्छा अनुसार वरदान भी प्राप्त किये । सावित्री के मन ने यमराज के सामने भी हार न मानी अन्त में अपने पति को मौत के मुँह से बाहर निकालने में सफल रहीं । अल्प साधनों वाले महाराणा प्रताप ने अपने मन को दृढ़ संकल्प करके मुगल सम्राट अकबर से युद्ध किया । शिवाजी ने बहुत छोटी सेना लेकर औरंगजेब के दाँत खट्टे कर दिये । द्वितीय विश्व युद्ध में अमेरिका द्वारा किये गये अणुबम के विस्फोट ने जापान को पूरी तरह बरबाद कर दिया था । किन्तु अपने मनोबल के कारण जापान आज शक्ति-सम्पन्न देशों में से एक है । दुबले-पतले गाँधी जी ने अपने दृढ़ संकल्प से ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को हिला दिया था ।

कर्म के सम्पादन में मन की शक्ति - प्रायः देखा गया है कि जिस काम के प्रति व्यक्ति का रुझान अधिक होता है उस कार्य को वह कष्ट सहन करते हुए भी पूरा करता है । जैसे ही मन की आसक्ति कम हो जाती है वैसे ही

प्रयत्न भी ढीला पड़ जाता है। हिमाच्छादित पर्वतों पर चढ़ाई करने वाले पर्वतारोहियों के मन में अपने कर्म के प्रति आसक्ति रहती है।

सफलता की कुंजी : मन की स्थिरता, धैर्य एवं सतत् कर्म - वस्तुतः मन सफलता की कुंजी है। जब तक हमारे मन में किसी कार्य को करने की तीव्र इच्छा होगी। तब तक असफल होते हुए भी उस काम को करने की इच्छा बनी रहेगी। उदाहरण के रूप में एक राजा कई बार युद्ध करने पर भी विजय न पा पाया और दुश्मनों से बचकर गुफा में छिप गया। गुफा में मकड़ी अपने छत्ते के ऊपर चढ़ रही थी किन्तु बार-बार गिरती थी। लेकिन अन्ततः वह ऊपर चढ़ जाती है। उससे प्रेरणा लेकर उस राजा ने सेना इकट्ठी करके युद्ध किया और विजय प्राप्त की।

मन और शक्ति सम्पन्न कैसे बनेगा

"मनो यस्य वशे तस्य भवेत्सर्व जगद् वशे।
मनसस्तु वशे योऽस्ति स सर्वजगतो वशे॥"

चंचल मन को एकग्र करने की आवश्यकता है। चंचल रहते हुए उसमें किसी प्रकार की शक्ति का संचयन संभव नहीं है। एकाग्रता के लिये आवश्यकता है कि हम विचारों के चक्र को रोकें और अपने जीवन को शुद्ध बनायें। आचार-विचार में शुद्धता का पालन करें तथा अन्याय का विरोध करें।

"मैमन्ता मन मारि के, घट ही माहैं बेर।
जब ही चालै पीठि दै, अंकुश दै दै फेर॥"

मन को शक्ति एवं सम्पन्न बनाने के लिये हीनता की भावना को दूर करना भी आवश्यक है। जब व्यक्ति यह सोचता है कि मैं कमजोर हूँ, दीन-हीन हूँ, शक्ति और साधनों से रहित हूँ, तो उसका मन कमजोर हो जाता है इसलिये इस हीनता की भावना से मुक्ति प्राप्त करने के लिये मन को शक्ति-सम्पन्न बनाना आवश्यक है।

उपसंहार- मन परम शक्ति सम्पन्न है। यह अनन्त शक्ति का स्रोत है। मन की इसी शक्ति को पहचानकर ऋग्वेद में यह संकल्प अनेक बार दोहराया गया है कि - "अहीमन्द्रो न पराजिग्ये।" अर्थात् मैं शक्ति का केन्द्र हूँ, और जीवनपर्यन्त मेरी पराजय नहीं हो सकती। यदि मन की इस अपरिमित शक्ति को भूलकर हमने उसे दुर्बल बना लिया तो सब कुछ होते हुए भी हम अपने को असन्तुष्ट और पराजित ही अनुभव करेंगे, और यदि मन को शक्ति-सम्पन्न बना के रखेंगे तो जीवन में पराजय और असफलता का अनुभव कभी न होगा।

मन पर विजय प्राप्त करने वाले व्यक्ति ही युगस्रष्टा, युगद्रष्टा और युग प्रवर्तक कहे जाते हैं। सत्य ही है -

"कोई चलता पग चिह्नों पर,
कोई पग चिह्न बनाता है।
है वही सूरमा इस जग में,
जो मन को वश कर पाता है॥"

मन छोटा कभी बड़ा होता, गिर सीना तान खड़ा होता
सारे प्रपंच के बंधन और मोक्ष का कारण मन ही है
संजालों में जकड़े तन का तत्काल निवारण मन ही है
मन फूल कभी काँटा होता, मृदु छुवन कभी चाँटा होता
उल्लास उमगती डोली में, मन खाँसे कभी खटोली में।

भारतीय आध्यात्म की प्रस्तावना

—मृदुल मिश्र
एकादश 'ख'

मन, बुद्धि और चित्त का परमात्म तत्त्व की ओर गमन तथा चिन्तन ही आध्यात्म है । प्राण अपावन को पावन बनाता है । अनासक्ति तथा सद्भाव के सोपानों से ही आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

— सम्पादक

अखिल जगत् में अपनी प्रसिद्धि प्रसार पा चुका भारतीय आध्यात्म को आज किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है । कई देशों के लोग भारत में केवल इसी पारलौकिक, अतुलनीय, अनासक्त आनन्द की कामना से आते हैं ।

प्रश्न ये है कि 'आनन्द की कामना' भी तो आसक्ति है और आध्यात्म में तो आसक्ति होती ही नहीं है । इसका समाधान है कि जब हम आध्यात्म के संसार में प्रवेश करते हैं तब तो आसक्ति होती है परन्तु आध्यात्म का आनन्द ही अनासक्ति पर आधारित है अर्थात् यदि वह आनन्द प्राप्त हो गया तो न कोई आसक्ति शेष रहती है न ही कोई कामना । परम सत्य के सामने अन्य सभी कार्य सस्ते सिद्ध हो जायेंगे ।

हमारे आत्म में प्राणिक ऊर्जा है जो हमारे शरीर को पवित्र एवं क्रियाशील बनाये हुए हैं । जब तक हमारे शरीर में इस प्राणिक ऊर्जा का संचार है तब तक ये पवित्र है जैसे जब तक हमारी त्वचा शरीर में है हम इसे चूम सकते हैं तथा पवित्र भी कह सकते हैं परन्तु यदि यही त्वचा शरीर से अलग पड़ी है तो अशुद्ध कहलाती है तथा हम इसे छू भी नहीं सकते हैं । इसी प्रकार जीवित मानव का शरीर तो पवित्र है परन्तु मृत शरीर अशुद्ध है, अछूत है । अर्थात् जब तक आत्मा की ऊर्जा प्रवाहित है तब तक तत्व पवित्र है आत्मा के अलग होते ही इसकी पवित्रता भी नष्ट हो जायेगी ।

इस प्रकार आत्मा की शाश्वतता एवं अस्तित्व पर किसी सम्पुष्टि की आवश्यकता नहीं है । इसी आत्म को परम आत्म से जोड़ने का प्रकल्प ही आध्यात्म कहलाता है । परमात्मा अर्थात् वह शक्ति जो इस सृष्टि की व्यवस्था तथा सामञ्जस्य बनाये हुए है ।

जैसे कि मृदा से उपजा पेड़ ही मृदा का कल्याण करता है । उदाहरणार्थ गेहूँ की फसल से मृदा की प्रोटीन कम हुई तो दलहन की फसल से मृदा में प्रोटीन की प्रचुरता हो गई । वैसे ही परमात्म से उपजा आत्म उससे मिलकर अपना कल्याण करेगा तथा उस परमात्म का भी चक्र पूर्ण करेगा ।

हम एक सुन्दर पूर्ण विकसित पुष्प को पौधे से तोड़कर परमात्मा को चढ़ाते हैं ''हे परमात्मा ! मेरा कल्याण करो ।'' पुष्प का पौधा अपने खिले रूप से सुन्दरता हटने का विलाप करता है, ''हे परमात्मा ! ये क्या हो गया ?'' दोनों का सम्बल परमात्मा पालक परमात्मा फिर एक ही कार्य पर दोनों की अलग-अलग प्रतिक्रिया, आखिर यही तो है परमात्मा का चक्र जो प्रकृति के साथ-साथ आत्माओं का भी है । इस सामञ्जस्य को बनाये रखकर जो परम आत्म से जुड़ेगा उसको परमानन्द की प्राप्ति होगी । उसे इस सांसारिक सुख-दुःख, लोभ, मोह, दुनियादारी, माया प्रपञ्च का ध्यान नहीं रहता है । वह तो परम सुख को प्राप्त करता है तथा जब चाहे अपनी प्राणिक ऊर्जा दूसरे शरीर को देकर सतत् कार्य कर सकता है । उसे साध्य मिल जाता है । साधन से उसका ध्यान हट जाता है । उसी प्रकार जैसे किसी भवन में कोई मूर्ति है- यदि मूर्ति सिद्ध हो तो भवन यदि जीर्ण भी हो जाये मूर्ति को अन्य भवन में रखा जाता है । उसी प्रकार सिद्ध आत्मा के लिये जब एक शरीर जीर्ण हुआ तो वह पुनः शरीर प्राप्त कर सकती है परन्तु इस सिद्ध आत्म को दूसरा शरीर प्राप्त करने के लिये परमात्मा के सम्बल की आवश्यकता है ।

आशय है कि आध्यात्म का अर्थ है कि स्वयं के आत्म को परम आत्म से जोड़ कर इस प्रकृति के चक्र चलते हुए परमानन्द की प्राप्ति ।

✶

संयंत्र वैमानिकी : एक शताब्दी और वैमानिकी का भविष्य

राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र नई दिल्ली द्वारा आयोजित विज्ञान संगोष्ठी 2003 में इस बार विषय था - "संयंत्र वैमानिकी: एक शताब्दी और वैमानिकी का भविष्य ।" 11 अक्टूबर 2003 को नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में पहली बार उत्तर प्रदेश को स्थान मिला और यह गौरव विद्यालय की दशम कक्षा के मेधावी छात्र जीत सिंह आर्य ने पाया । जीत, जीत गये । उन्हें पूरे देश में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ । विशेष बात यह रही कि हिन्दी में बोलने वाले जीत सिंह अकेले थे परन्तु आत्मविश्वास और हिन्दी के स्वाभिमान से परिपूर्ण थे । पुरस्कार स्वरूप जीत को3000 रुपये नगद, 1000 रु० की पुस्तकें, 500 रु० प्रतिमाह के हिसाब से दो वर्ष छात्रवृत्ति तथा एक बार की हवाई यात्रा की सुविधा मिली । जीतसिंह अपनी इस सफलता के लिये आचार्य श्री दीपक जी के समर्पित परिश्रम, निर्देशन तथा श्री हेमन्त जी के योगदान को आधार मानते हैं । चि० जीत के हमेशा जीतने की शुभकामना । **— सम्पादक**

माननीय अध्यक्ष जी,

हम जानते हैं कि नई चुनौतियों को स्वीकार कर, नवीनतम लक्ष्यों को प्राप्त कर सफलता के उच्चतम आयाम स्थापित करना मानव की प्रकृति रही थी, और रहेगी । जिसके लिये दृढ़ आत्मविश्वास व प्रबल इच्छाशक्ति अतीव आवश्यक है ।

नील गगन में स्वच्छन्द विचरण करते पक्षियों को देखकर महत्वाकांक्षी मानव ने भी असीम आकाश की सीमाओं को नापने का स्वप्न सँजोया । पर शब्द मात्र से सफलताएँ नहीं मिलतीं, इच्छाओं से इतिहास नहीं रचे जाते । इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ लिखे जाते हैं अथक परिश्रम व अपनी कर्मठता के दम पर ।

पक्षियों से तुलना करने पर यह विदित हुआ कि मानव को उड़ने के लिये 20 फुट विस्तार वाले पंखें की आवश्यकता होगी लेकिन उन्हें सँभाल पाना उसकी पेशियों की सामर्थ्य के बाहर था ।

पर - 'कौन कहता है कि छेद आसमां में नहीं हो सकता ।
एक पत्थर तो दिल से उछालो यारों ।।'

17 दिसम्बर 1903 का वह स्वर्णिम दिन जब राइट बन्धुओं द्वारा निर्मित विमान ने धरती का आंचल छोड़कर आकाश में चन्द पलों की उड़ान भरी तो मानव जाति की एक महान कल्पना ने मूर्त रूप ले लिया और प्रारम्भ हुआ सयंत्र उड्डयन का गौरवशाली सफर । गुब्बारे से अंतरिक्ष यान तक का यह सफर मानव जाति की कर्मठता का यशोगान करता है । सर्वप्रथम 1783 ई० में मांटगोल्फियर बन्धुओं ने गर्म हवा से भरे गुब्बारे को आकाश में उड़ाकर इस सफर की शुरूआत की । इसी वर्ष फ्रांसीसी वैज्ञानिक एम० चार्ल्स ने गुब्बारे में गर्म हवा के स्थान पर हाइड्रोजन का सफल प्रयोग किया ।

धीरे धीरे गुब्बारों को सिगार का आकार दिया गया जिनको एयरशिप कहा गया । जर्मनी के काउण्ट जैपलिन ने एयरशिपों के निर्माण में विशेष सफलता प्राप्त की । इनके द्वारा निर्मित एयरशिप जैपलिन कहलाए । इनका व्यास 15 फुट व लम्बाई 800 फुट थी और ये एक बार में कई टन सामान व सैकड़ों यात्रियों का परिवहन करने में सक्षम थे । एक समय के लियेऐसा प्रतीत हुआ कि एयरशिप पूर्णतयाः सफल हैं परन्तु कुछ मूलभूत कमियों व 1930 में लेकहर्स्ट में घटी हिण्डलबर्ग एयरशिप दुर्घटना से एयरशिपों का अस्तित्व अंधकारमय हो गया ।

इसके उपरान्त प्रारम्भ हुआ वायुयानों का युग । इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक सर जार्ज कैली ने उड़ान में डैनों के प्रयोग की अवधारणा प्रस्तुत कर इस नवीन युग का सूत्रपात किया । सर्वप्रथम 1891 में जर्मनी के लिलियन्थल बन्धुओं ने डैनों युक्त ग्लाइडर का सफल प्रयोग किया । इसके उपरान्त ग्लाइडरों का प्रयोग एक बड़े पैमाने पर होने लगा परन्तु यह केवल ऊँचाई वाले स्थानों तक ही सीमित था ।

इसके पश्चात् 1903 ई० को राइट बन्धुओं ने ग्लाइडर में प्रोपेलर लगाकर उसको पेट्रोल इंजन की सहायता से शक्ति प्रदान की और अपने विमान को सफलतापूर्वक उड़ाया। 12 एच०पी० की क्षमता वाले 341 किग्रा० के इस विमान ने 12 सेकेण्ड में 30 एम०पी०एच० की गति से 36.5 मी० का सफर तय किया। इसके उपरान्त सम्पूर्ण विश्व में वायुयानों का निर्माण एक बड़े पैमाने पर होने लगा।

महोदय, अब प्रश्न यह उठता है कि एक विमान कैसे ऊपर उठता है ? कैसे आगे बढ़ता है ? एक विमान में प्रमुखतः 4 बलकार्य करते हैं। gravitational force, Lifting force, Thrust तथा Drag। एक सफल उड़ान के लिये आवश्यक है कि Lifting force, Gravitational force से तथा Thrust, Drag से अधिक हो।

महोदय, आवश्यक Lifting force प्राप्त करने के लिये विमानों में बरनॉली प्रमेय का उपयोग किया गया। पंखें की ऊपरी सतह की वक्रता उसकी निचली सतह की वक्रता से अधिक होने के कारण पंखों के ऊपर वायु का वेग पंखों के नीचे वायु के वेग से अधिक होता है। अतः पंखों के ऊपर कम एवं नीचे अधिक दाब होता है और यही दाबान्तर विमान को आवश्यक Lifting force प्रदान करता है। सामान्य गणना के अनुसार यदि वायु के सापेक्ष विमान की गति 100 एम०पी०एच० है तो पंखों के प्रत्येक वर्ग फुट पर 18.72 पौण्ड का Lifting force प्राप्त होगा। विमान को आवश्यक Thrust प्रदान करने के लिये पेट्रोल इंजन चालित प्रोपेलरों का प्रयोग कियागया जो विमान को आगे बढ़ाने के साथ ही Lifting force प्राप्त करने में भी मदद करते थे।

विमान के Angle of attack अर्थात् air foil के leading edge एवं trailing edge को मिलाने वाली chord line तथा वायु धारा की दिशा को निरूपित करने वाली रेखा के मध्य बनने वाला कोण। इसे एक निश्चित सीमा तक बढ़ाकर प्राप्त होने वाले Lifting force में वृद्धि की जा सकती है। जैसे जैसे angle of attack का मान बढ़ता है प्राप्त होने वाले Lifting force की मात्रा भी बढ़ जाती हैं विमान के Angle of attack के उच्चतम मान पर विमान stall हो जाता है।

इन सिद्धान्तों के प्रयोग से तात्कालिक विमानों की गति 300 किमी/घंटा हो गयी पर क्या मानव भी कभी सन्तुष्ट हुआ है। मानव की इसी असन्तुष्टि की परिणति है आज का जैट विमान।

इंग्लैण्ड के वैज्ञानिक फैंक ह्विटल ने विमानों में जेट इंजन के प्रयोग का विचार प्रस्तुत किया जो न्यूटन के क्रिया प्रतिक्रिया नियम पर आधारित था। जेट इंजन विमानों में युगान्तरी परिवर्तन का वाहक बना। जेट विमानों ने ध्वनि की गति को मात दे 1200 किमी/घंटा कीगति प्राप्त कर ली। जेट इंजन में ईंधन की अधिक खपत को देखते हुये कम ईंधन खपत व अधिक कार्यक्षमता वाले टर्बो जेट इंजन का विकास किया गया। ये जेट इंजन वातावरण की वायु को तेजी से अन्दर की ओर खींचता है। कम्प्रेशर वायु को उच्च कम्प्रेस कर तेजी से उसे कम्बस्टन चैम्बर में भेजता है जहाँ वायु fuel को तेजी से जलाती है। fuel के जलने से एक बड़ी मात्रा में गैस उत्पन्न होती है। ये गैसें उच्च दाब पैदा करती हैं व तीव्र वेग से एक Narrow Nozzel से निकलती है जिसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप विमान आगे बढ़ता है।

रूसी वैज्ञानिक इगोर सिकोस्की ने हेलीकाप्टर का विकास कर उड्डयन को नए आयाम प्रदान किए। पर इस विकास क्रम को एक लम्बा सफर तय करना था। मानव की अंतहीन महत्वाकांक्षाओं का अगला कदम बढ़ता है अन्तरिक्ष की ओर 14 अक्टूबर 1951 को रूस द्वारा प्रथम अन्तरिक्षयान स्पुतनिक प्रथम का प्रक्षेप किया गया। इसी कड़ी में 1961 में यूरी गागरिन ने अन्तरिक्ष यात्रा की। 1969 में अमेरिका के नील आर्मस्ट्रांग ने चन्द्र तल पर पहला कदम रखकर मानव की विजय यात्रा का एक और सोपान पूरा किया। और इस महान जीत के बाद मानव ने कभी मुड़कर नहीं देखा।

मान्यवर आज वैमानिकी अपने चर्मोत्कर्ष पर है। कॉनकर्ड विमान ध्वनि से दोगुनी रफ्तार से चलने में सक्षम है। Jet asisted take off व STOL प्रणाली के प्रयोग से विमान 150 मी की हवाईपट्टी से उड़ान भर सकता है। सुखोई विमान जो पहले 2 किमी की हवाईपट्टी का प्रयोग करता था अब मात्र 1200 मी० की हवाईपट्टी से उड़ान भरता है। जेट की दिशा में परिवर्तन कर ऐसी प्रणाली भी विकसित की गयी है जिससे विमान सीधे अपने स्थान से उड़ान भर सकता है। इसे Jump Jet कहते हैं। वैज्ञानिकों ने पानी की सतह पर उतर सकने वाला व वहीं से उड़ान

भर सकने वाला विमान Sea plane विकसित किया है। Crop Desasturs यानों के प्रयोग से कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हो रही है। वर्तमान में वायु यातायात परिवहन का तीव्रतम साधन है। प्रतिदिन 3 करोड़ टन सामान व लाखों यात्रियों का परिवहन वायु यातायात के द्वारा होता है। स्वयं भारत का 96 राष्ट्रों के साथ वायु सम्पर्क है।

यदि हम वैमानिकी के भविष्य पर दृष्टिपात करें तो हम पायेंगे कि यह अत्यन्त उज्ज्वल व स्वर्णिम है। वैज्ञानिक मानव रहित विमानों का निर्माण करने में सफलता प्राप्त कर चुके हैं। विमानों में ईंधन के अत्यधिक व्यय को देखते हुए सितम्बर 1999 को कैलीफोर्निया में सौर ऊर्जा चालित विमान का सफल प्रयोग किया गया। वैज्ञानिक ऐसे एयरशिपों का निर्माण करने का प्रयास कर रहे हैं जो लगातार 6 महीने तक उड़कर संचार सुविधाएँ प्रदान कर सकेंगे। विमानों द्वारा होने वाले अत्यधिक ध्वनि प्रदूषण को कम करने का प्रयास किया जा रहा है। वैज्ञानिक हल्के व अधिक कार्यक्षमता वाले इंजनों का विकास कर रहे हैं। भारत में हैदराबाद DRDO ने 21 एच०पी० की क्षमता वाले 10 किग्रा० व 37 एच०पी० की क्षमता वाले 22 किग्रा० के इंजन का सफल प्रयोग किया है। ऐसे यात्री विमानों का विकास किया जा रहा है जिसकी सभी प्रणालियाँ स्वचालित होंगी व विमान मानव रहित होने पर भी सफलतापूर्वक यात्रा कर सकेगा। विपरीत मौसम में भी विमानों को उड़ाने की प्रणाली विकसित की जा रही है। Super Sonic विमानों के बाद वैज्ञानिकों के अनुसार विमानों की आगामी पीढ़ी के विमान hyper sonic होंगे। विमानों की सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर ऐसे काक पिटों का निर्माण किया जा रहा है जिसमें कोई व्यक्ति बिना अनुमति प्रवेश नहीं कर सकता। ऐसे अन्तरिक्ष यानों का विकास किया जा रहा है जिन्हें वायुयानों की भाँति बार बार प्रयोग में लाया जा सकेगा।

महोदय, आज सौ से भी अधिक प्रकार के विमान प्रयोग में हैं। शताब्दी पूर्व राइट बन्धुओं द्वारा बोया गया बीज एक पूर्ण विकसित वृक्ष बन गया है और उसमें उगती विकास की नयी संभावनाएँ मानव जाति के लिये वरदान सिद्ध हो रही है।

✶

ज्ञान-सूत्र

—आनन्द बाबू, अष्टम 'क'

- मरण क्या है ?

  मूर्खता।
- जीवन भर काँटों की तरह क्या चुभता है ?

  छिपकर किया गया कार्य (पाप)।
- बहरा कौन है ?

  जो हित की बात नहीं सुनता।
- मूक कौन है ?

  जो समयानुकूल बात बोलना नहीं जानता।
- राज्य क्या है ?

  आज्ञा का पालन होना।
- अमूल्य क्या है ?

  समय पर किया हुआ दान।
- दरिद्रता क्या है ?

  असंतोष।
- अंधा कौन है ?

  जो दुष्कर्म में रत रहता है।
- विष क्या है ?

  अपयश।
- सुख क्या है ?

  परदेश न जाना।

✶

तुलसी का भक्तिभाव

—आलोक मिश्र
द्वादश

प्रत्येक मंगलवार को छात्रावास के विद्यार्थियों के मध्य मंदिर में माननीय प्रधानाचार्य जी प्रवचन करते हैं। प्रवचन रामकथा तथा तुलसी की भक्ति भावना पर केन्द्रित रहता है। एक दिन के प्रवचन का सारांश आलोक ने यहाँ पर प्रस्तुत किया है।
— सम्पादक

तुलसी ने राम को परमात्मा के रूप में माना है, जबकि कुछ कवियों ने राम को एक आदर्श मानव के रूप में देखा है।

तुलसी कहते हैं कि राम ने एक सफल नायक व अभिनेता की तरह संसार रूपी मंच पर सभी दृश्यों व परिस्थितियों का सफल मंचन किया है और लोगों को अपने अभिनय से इतना प्रभावित किया है कि दर्शक व श्रोता राम को साधारण मनुष्य ही समझ बैठे, क्योंकि सही मायने में अच्छा अभिनेता वही है, जो दर्शकों को उस घटना के साथ जोड़ सके जिसका कि मंचन किया जा रहा है। तुलसी को राम से इतनी आसक्ति है कि वह चाहते हैं कि उनका जीवन ही राममय हो जाए इसलिए उन्होंने कहा है -

राम को गुलाम नाम,राम बोला राख्यो नाम।

तुलसी को राम में अति विश्वास है और वह कहते हैं कि राम की इच्छा के बिना कुछ भी संभव नहीं है, इसलिए वह कहते हैं कि -

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावै साखा॥

जबकि और कवियों के अनुसार राम परमात्मा हुए भी मनुष्य योनि में होने के कारण कर्म के पाश में बँध गए। कबीरदास जी कहते हैं कि -

करम गति टारे नाँहि टरी
मुनि वसिष्ठ सम पण्डित ज्ञानी
सोधि कै लगन धरी
सीता हरण मरण दसरथ को
वन में विपद् परी॥

तुलसीदास जी कहते हैं कि राम की शक्ति के बिना सांसारिक वस्तुओं के प्रति मोह खत्म नहीं होता, क्योंकि

राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा।
थल विहीन तरु कबहुँ कि जामा॥
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई।
बिनु महि गंध कि पावई कोई॥

राम में विश्वास और भक्ति के बिना जीव सपने में भी प्रसन्न नहीं रह सकता।

बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह विश्रामु॥

इसलिए उन्होंने मानस के अन्तिम काण्ड उत्तर काण्ड में एक बार फिर कहा हैकि उनकी मति में जो कुछ आया वह उन्होंने लिख दिया -

तुलसीदास जी ने रामचरित मानस की रचना से पूर्व यह स्पष्ट किया है कि उन्होंने यह काव्य स्वान्तः सुखाय लिखा है। उन्होंने कहा है, कि उनके मस्तिष्क ने राम को जिस रूप में देखा, उसी को शब्दों व छन्दों के रूप में बाँधकर प्रस्तुत कर दिया। अतः कोई मुझसे इसके पूर्ण सत्यापित होने के सम्बन्ध में तर्क आदि न करे, क्योंकि न तो मैं कोई कवि हूँ और न चतुर। तुलसी ने इसे स्वान्तः सुखाय इसलिए लिखा है, क्योंकि इस संसृति में जो भी व्यक्ति परमार्थ करता है, वह कभी न कभी किसी न किसी रूप में इसका मूल्य अवश्य चाहता है और तुलसी ने तो कभी सांसारिक वस्तुओं की चाह की ही नहीं।

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-
भाषा निबन्ध मतिमञ्जुल मातनोति ॥

तुलसी ने जब मानस का लेखन प्रारम्भ किया, तो उस दिन प्रायः वही योग थे, जो त्रेतायुग में रामजन्म के समय थे और जिस दिन यह रचना पूर्ण हुई उस दिन राम विवाह का दिन था। तुलसी ने मानस में सात काण्डों का समावेश किया है। तुलसी ने पहले केवल अयोध्या काण्ड की रचना की थी लेकिन तुलसी को यह अनुभव हुआ कि राम केरूप में आदर्श पुरुष तथा उनके दुष्ट दलनकारी स्वरूप का भी वर्णन किया जाना चाहिए। अतः इसके पश्चात् उन्होंने राम के सम्पूर्ण जीवन वृत्त का काव्यात्मक रूप में लेखन किया। तुलसी की यह कृति इतनी अधिक प्रचलित हुई कि उस काल के संस्कृत के विद्वान् कवियों के मन में ईर्ष्या उत्पन्न हो गयी, क्योंकि संस्कृत उस समय की श्रेष्ठ भाषा थी और हिन्दी की उपभाषा अवधी या ब्रज में रचित इस कृति की प्रसिद्धि उन्हें खटकने लगी। अतः ईर्ष्यावश उन कवियों ने कुछ चोरों को तुलसी के घर के सामान को चोरी करने के लिए भेजा ताकि तुलसी दुःख व भय से वह स्थान छोड़कर चले जाएँ। रात को जब चोर चोरी के इरादे से तुलसी के घर के समीप पहुँचे तो उन्होंने देखा कि दो अत्यन्त सुन्दर राजकुमार घोड़े पर सवार हुए, हाथ में धनुष बाण लिए तुलसी केघर के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। यह देखकर चोर अत्यन्त भयभीत हो गए और वहाँ से भाग गए। चोर इतने भयभीत हो गये कि प्रातःकाल ही, वे तुलसी के घर पहुँचकर उनके चरणों मेंगिर गये और सब कुछ सच-सच बता दिया। यह सुनकर तुलसी अत्यन्त, दुखी हुए कि उनके कारण उनके इष्ट देवों को कष्ट उठाना पड़ा और उन्होंने इस कष्ट की जड़ जो कि उनका पूजा का सामान था, तो सब उन्होंने चोरों को दे दिया।

✶

बालक मृणालनि ज्यों तोरि डारै सब काल,
कठिन कराल त्यों अकाल दीहदुःख को।
विपति हरत हठि पद्मिनी के पात सम
पंक ज्यों पताल पेलि पटवै कलुख को
दूरि कै कलंक अंक भवसीम-ससि सम,
राखत है केशोदास दास के बापुरव को।
साँकरे की साँकरन सनमुख होत तोरै,
दसमुख मुख जोवैं गजमुख-मुख कौ।

हमारी मनाली यात्रा

—ऋतुपाल
एकादश 'क'

यात्रावृत्त हिन्दी साहित्य की एक सशक्त विधा है । इस वर्ष सितम्बर माह में विद्यालय से एक देशदर्शनार्थ, देश-दर्शक-दल गया । एकादश कक्षा के ऋतुपाल ने मनाली यात्रा का पूरे मन से मोहक मधुरिम वर्णन किया है ।

— सम्पादक

देशदर्शन शब्द का शाब्दिक अर्थ है अपने देश के बारे में जानकारी प्राप्त करना । देश के विभिन्न स्थानों पर जाकर वहाँ के भौतिक तथा भौगोलिक परिवेश का ज्ञान अर्जित करना । जिसके स्थान पर वर्तमान में Tour शब्द कुछ ज्यादा ही प्रचलित हो गया है । इस वर्ष सत्र 2003-2004 में हमारे विद्यालय के आचार्यों ने शिमला, कुल्लू, मनाली भ्रमण का विचार बनाया । एक दिन विद्यालय के विशालकक्ष में सदाचार बेला में मानवीय प्रधानाचार्यजी द्वारा देशदर्शन के विषय में सूचना दी गयी । उसी दिन से छात्रों ने देशदर्शन के लिये विचार-विमर्श करना प्रारम्भ कर दिया । एक तरफ विद्यालय में वार्षिकोत्सव की तैयारी चल रही थी तथा दूसरी ओर कुछ छात्रों के हृदय में देशदर्शन का उल्लास उछाल मार रहा था । अन्त में शुल्क जमा करने के पश्चात् तथा वार्षिकोत्सव होने के बाद हम लोग अपने हृदय में उल्लास उमंग भरकर दिनांक 28-9-03 की रात को, देशदर्शन जाने वाले सभी लगभग 70 छात्र रात्रि के भोजन के पश्चात् एक बस व दो 'क़ालिसकारों' में बैठकर रात को लगभग ग्यारह बजे कानपुर से सहारनपुर के लिये रवाना हुए।

रात के घने अँधेरे को चीरतेहुए हमारा काफिला अपने सुखद गंतव्य पर चला जा रहा था । मौज-मस्ती करने केबाद हम लोग धीरे-धीरे सोने लगे । सुबह 5.00 बजे आँख खुली तो पता चला कि मैनपुरी जिले में आ चुके हैं । वहाँ हमने कुरावली नामक स्थान पर समय बिताया । दूसरी गाड़ी से हमारे साथियों के देर में आने पर हमें पता चला कि हमारा एक साथी अत्यधिक अस्वस्थ होने के कारण वापस हो चुका है । चार घण्टे के विश्राम के बाद हम लोग पुनः चल दिये शाम को अलीगढ़ तथा तदनन्तर मेरठ होते हुए रात के 10.00 बजे हम लोग घने जंगलों के मध्य थे । बस के दोनों ओर से आती जाती लारियाँ व ट्रक थे तथा माहौल भयावह करने वाले दोनों ओर थे साँय-साँय करते घने जंगल रात अत्यधिक घनेरी थी । लगभग एक बजे हम लोग सोते-जागते अपनी यात्रा के प्रथम पड़ाव सहारनपुर पहुँच गये थे । वहाँ पर हमारे साथी पहले से ही हमारा इंतजार कर रहे थे । अपने साथियों के साथ हम लोग भोजन कर विश्राम के लिये 'होमिका सेवा सदन' पहुँचे । रात्रि में वहाँ विश्राम कर तथा नित्यकर्मों से निवृत्त हो हम लोग सुबह 8.30 के लगभग चण्डीगढ़ के लिये रवाना हुए । अब मैं तथा मेरे कुछ सहपाठी क्वॉलिस में थे तथा शेष लोग बस में । कुछ दूर चलते ही हमें शिव जी की विशाल प्रतिमा के दर्शन हुए ।हमारी इसगाड़ी के चालक के 'क्या कहने' ! बस एक बार Accelerater (त्वरक) पर पैर रखने के बाद तो जैसे हटाना ही भूल जाते हों । इस प्रकार राष्ट्रीय राजमार्ग पर 80 से अधिक चाल तथा संगीतमय वातावरण होने से समय कटते देर न लगी । शाम को बस में आ रहे साथियों का घंटों इंतजार करने के बाद हम सभी लोग चण्डीगढ़ के एक सत्संग भवन में विश्राम के लिये पहुँचे । विश्राम कर हम लोग 'पिन्जौर गार्डन' देखने गये वहाँ आकर्षण का केन्द्र रही एक सरदार जी द्वारा निर्मित अजीबोगरीब 'उल्टी चलने वाली घड़ी' । वह घड़ी उल्टी चलते हुए भी सही समय बताती थी । इसके बाद हम लोग सत्संग भवन वापस लौट आये । अगले दिन सुबह हम लोग नित्यकर्मों को पूर्ण कर, चले शिमला की ओर । शिमला पहुँचने से कुछ पूर्व हमें हमारी ही तरह देशदर्शन के लिये आया हुआ आगरा के एक विद्यालय का काफिला मिला, पर उनका व्यवहार अत्यधिक फूहड़ था, जिससे मुझे लगा कि वाकई अपने विद्यालय के छात्र सबसे अलग तथा शिष्ट हैं । कुछ समय बाद हम लोग शिमला पहुँचे । वहाँ पर हम लोग एक सरस्वती शिशु मन्दिर में रुके । शाम होने पर हम सभी लोग आस-पास घूमने के लिये निकले । तीन चार भागों में हम लोग पहुँचे दि माल रोड पर जो वहाँ का प्रमुख बाजार था । बाजार अत्यधिक ऊपरहोने

के कारण हमें कई सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं। मन की उमंगों ने हमें उत्साहित किया और हम जा पहुँचे मंजिलपर, वहाँ पहुँचते ही पहली नजर पड़ी गाँधी जी की मूर्ति पर जिससे कुछदूरी पर ही एक चर्च बना था। इस स्थान से हम नजदीक के, प्रकाश से चमकते पर्वत साफ देख सकते थे जो किसी क्रिसमस ट्री जैसे प्रतीत होते थे जिस पर ढेरों बल्ब लगे हों। अब वहाँ घूमने के बाद हमें याद आया कि हमें वापस भी जाना है उस समय मेरे साथ मेरे पाँच साथी ही बचे थे। हमें याद था कि हमारे कुछ साथी व आचार्य सामने की सीढ़ियों से गये हैं अतः हम भी उन्हीं सीढ़ियों से उतरने लगे पर नीचे अधिक रास्ते और न समाप्त होने वाली सीढ़ियों के कारण मुझे कुछ अजीब सा लगा। मेरी कक्षा के दो तीन साथी खरीददारी के कारण, ऊपर रुक गये थे। फिर भी हम शेष पाँच लोग अगणित सीढ़ियों से अत्यधिक वेग से दौड़े चले गये। अपने जीवन में पहली बार मैंने इतनी सीढ़ियाँ इतनी तेजी से पार की थीं। एक ओर मेरे कुछ साथी छूटने के कारण चिन्तित थे। दूसरी ओर मुझे व मेरे दोस्त दीपक को सीढ़ियाँ उतरने में आनन्द आ रहा था। सीढ़ियाँ खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थीं। पर जैसे ही हमने सीढ़ियों को पीछे छोड़ा हमारे सामने अपने ही साथियों से भरी बस जाने को तैयार खड़ी थी। अब हमें कुछ राहत महसूस हो रही थी।

जब वापस सरस्वती शिशु मन्दिर में हम लोग पहुँचे और छूटे हुए लोगों के बारे में पता किया गया तो दो लोग और कम निकले। उनके वापस आने पर हमने भोजन किया इसके बाद हम लोग थकान के कारण सो गये। सुबह उठकर ठण्डे पानी से हाथ-मुँह धोकर हम लोग अपने सफर के अगले पड़ाव मनाली की ओर चल दिये। हमारे एक ओर थे गगनचुम्बी पर्वतों पर देवदारु के ऊँचे घने जंगल तथा दूसरी ओर पाताल की सी गहराई वाली खाइयाँ और घाटियाँ। कुछ दूर निकलने के बाद हमें एक ओर बहुत दूर बर्फ़ से ढके पर्वत दिखे। अब हमारे मन की तरंगें इस प्रकार उठ रही थीं जैसे महासागर में ज्वार भाठा आ गया हो। धीरे-धीरे समय बढ़ता जा रहा था और हम सभी लोग निरन्तर मनाली की ओर बढ़े जा रहे थे। अब हमारे सामने कैमरे में कैद करने योग्य कई विहंगम दृश्य थे। हमारे साथ ही बह रही थी ब्यास नदी जिसमें पानी कम पत्थर अधिक थे। रात्रि में मौज मस्ती करते हुए हम लोग मनाली पहुँच ही गये। वहाँ पर हम लोग पुनः स्थानीय सरस्वती शिशुमन्दिर में रुके जिसके ठीक सामने से सड़क के दूसरी ओर अत्यधिक वेग में, अत्यधिक शोर के साथ ब्यास नदी प्रवाहित हो रही थी। रात्रि में भोजन कर हम सो गये। सुबह उठते ही हम लोग नित्यकर्मों से निवृत्त होने के बाद मनाली की माल रोड होते हुए पैदल हिडिम्बा मन्दिर की ओर चल पड़े। मन्दिर में दर्शन कर हम लोग आस-पास के ऊँचे पेड़ों के मध्य घूमते हुए अतिदूर दूसरे मन्दिर 'मनु मन्दिर' की ओर चल पड़े।

रास्ते में हमें कई विदेशी पर्यटक तथा उन्हें ठगने वाले स्थानीय विक्रेता भी मिले जो नकली कस्तूरी बेंच रहे थे। पर्याप्त चलने के बाद हम लोग पहुँचे मनु मन्दिर वहाँ दर्शन करने के बाद हम सभी ने हिमांचल के रसीले सेबों का आनन्द उठाया तभी वहाँ पर घूमने आये एक सज्जन ने मेरे पास खड़े मेरे सहपाठी से पूछा - ''आप लोग टूर कर रहे हैं ?'' तो उसने जवाब दिया - जी नहीं शैक्षिक देशदर्शन। वापस विद्यालय आकर हम लोग रास्ते में छूटे एक अन्य मन्दिर के दर्शनार्थ रवाना हुए। वशिष्ठ मन्दिर के निकट ही एक कुण्ड में गर्म पानी पहाड़ों से आ रहा था। विज्ञान वर्ग के छात्र होने के कारण हमें माजरा समझने में देर नहीं लगी। पहाड़ों में उपस्थित सल्फर व जल की अभिक्रिया से पानी गर्म था तथा आसपास हाइड्रोजन सल्फाइड गैस की महक भी थी। दर्शन करने के पश्चात् हम लोग वापस विश्राम करने के लिये शिशु मन्दिर आ गये। शाम को सामने व्यास तट पर घूमने चले गये लौटकर थोड़ी बातें थोड़ा आराम करने के बाद हम सभी सो गये। अगले दिन सुबह उठकर हम लोग सभी कार्य निपटाकर तैयार थे अपने मुख्य सफर को तय करने के लिये। पहाड़ी इलाकों की सड़कों की चौड़ाई से तो हम सभी वाकिफ होंगे। अतः हम लोग अपनी बस वहीं छोड़कर दूसरी किराये पर की गई गाड़ियों में बैठकर तथा गाड़ियों के नम्बर याद कर रोहतांग दर्रे की ओर बढ़ने लगे। अपनी गाड़ी का नम्बर HP01-K 0280 मुझे अभी भी याद है। कुछ दूरी तय करने के बाद हमें बर्फीले पर्वत नजर आने लगे। पहाड़ों पर मैं पहले भी जा चुका था वह वहाँ दार्जिलिंग, गंगटोक, सिलीगुड़ी, शिलॉग आदि में कहीं भी बर्फ के नजारे नहीं मिले थे अतः मैं भी बहुत खुश था।

कभी पास तो कभी दूर का सिलसिला बहुत चलने के बाद समाप्त हो चला था। प्राकृतिक विहंगम, सुन्दर दृश्यों को अपनी आँखों तथा कैमरे में कैद करते हुए हम पहुँचे रोहतांग दर्रे पर। वहाँ पहुँचते ही मन की तरंगें अनन्त ऊँचाइयों को छूने लगीं। एक बार मन में आया कि बर्फीले पहाड़ पर काफी ऊपर चला जाये। पर थोड़ा ऊपर चढ़ते

ही देखा कि एक अन्य व्यक्ति ऊपर से फिसलता आ रहा है अधिक ऊँचाई से आने के कारण वह बहुत तेजी से गिर रहा था। उसने रुकने की कोशिश की पर उठकर खड़े होते ही वह संभल न सका और लड़खड़ाता हुआ सड़क पर खड़ी बस से जा टकराया इस घटना को देखते ही मैं वहीं रुक गया और ऊपर नहीं गया। बर्फ का आनन्द लेकर व फोटो खिंचवाकर हम लोग वापस मनाली को चल दिये। नीचे आते समय हमने कई व्यक्तियों को पैराग्लाइडिंग करते देखा। आसमान में चील, कौओं के समान मानव को उड़ते देखकर मन में लगा कि कितना मजा आ रहा होगा पर इच्छाओं का दमन कर हम लोग वापस मनाली में शिशु मन्दिर आ गये। अगले दिन हम लोग कुल्लू का दशहरा देखने के लिये कुल्लू घाटी को रवाना हुए। वहाँ कईं आसपास केगाँवों के स्थानीय लोग अनेक देवी देवताओं की मूर्तियाँ ला रहे थे। मेला बहुत विशाल था। अचानक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का बड़ा सा काफिला पथ-संचलन करते देखने को मिला जिससे विदेशी पर्यटक बहुत प्रभावित नजर आ रहे थे। भूख लगने पर हम लोगों ने वहीं किनारे फुटपाथ पर खड़े होकर नाश्ता किया। बाजार से खरीददारी करने के पश्चात् इम लोग वापस आने लगे। वापस आते हुए रात में हम लोग मण्डी नाम के स्थान पर एक गुरुद्वारे में रुके। रात में गुरुद्वारे के लंगर का भोजन कर हम लोगों ने वहीं विश्राम किया और सुबह उठकर मण्डी से भाखड़ा ब्यास परियोजना तथा सीमेण्ट फैक्टरी होते हुए सहारनपुर, अलीगढ़, मेरठ, मैनपुरी आदि स्थानों से होते हुए हम लोग वापस आ गये। वापस आते समय अच्छा तो नहीं लग रहा था परन्तु कई दिनों तक मैदानी क्षेत्र न दिखने के कारण बहुत अटपटा लग रहा था। अब मैदान ही मैदान दिखने पर पहाड़ों की याद आती थी।

अब जब कभी फोटो देखता हूँ या याद करता हूँ तो सहारनपुर, शिमला, कुल्लू, मनाली चण्डीगढ़ के चित्र आँखों में उतर आते हैं।

सीढ़ियों पर दौड़ना, फुटपाथ पर खाना, बर्फ पर फिसलना अब हमारे स्मृति पटल से विस्मृत नहीं होता। भविष्य में कभी मित्रों के साथ ऐसा भ्रमण करना सौभाग्य में अब नामुमकिन सा है अतः यह सबबातें रह रह कर याद आती हैं। जहाँ अच्छाई है वहाँ बुराई भी है किसी बुरी वस्तु के कारण ही कोई वस्तु अच्छी होती है। यह हमारे साथ भी हुआ जहाँ सैकड़ों अच्छाइयाँ थी वहाँ चन्द बुराइयाँ भी थीं। तीन-चार स्थानों को रहने दें तो कहीं भी हमें खाने के लिए अच्छा भोजन नहीं मिला घूमने के नाम पर हमने अधिकांश समय यात्रा करने में ही व्यतीत किया। फिर भी वाह रे ! मन इतना अधिक धैर्यवान रहा कि उत्साह, उल्लास के कारण यह सब कुछ पता ही नहीं लगा कोई चिन्ता भी नहीं हुई।

आज भी पुनः पुनः देशदर्शन में साथ बीते लम्हे, सुखद क्षण तथा मनोरंजन के साथ साथ वे प्रकृति के नजारे, वे चाँदी से शिखर याद आ ही जाते हैं।

बानी गजरानी की उदारता बखानी जाय,
ऐसी मति कहौं धौं उदार कौन की भई।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तपवृद्ध,
कहि-कहि हारे सब, कहि न केहूँ लई।
भावी भूत वर्तमान जगत बखानत है,
केसोदास काहू ना बखानी काहू पै गई।
बरनैं पति चार मुख पूत बरनै पाँच मुख,
नाती बरनैं षटमुख तदपि नई-नई।

परोपकार

—संजीव कुमार
षष्ठ 'ख'

परोपकार ही सबसे बड़ा पुण्य तथा दूसरे को शारीरिक या मानसिक रूप से पीड़ित करना ही सबसे बड़ा पाप है । यही महाकवि व्यास के वचनों का सार है और यही बालक संजीव के उद्‌गार हैं। — **सम्पादक**

कालिदास ने कहा है -

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

अठारह पुराणों में महाभारत के महाकवि के दो वचन हैं -

परोपकार से पुण्य होता है और पर पीड़न से पाप । उनके ये वचन बड़े ही कीमती हैं । परोपकार का अर्थ है - दूसरों की ''निःस्वार्थ भलाई'' । केवल अपने लिए तो कीड़े भी जी लेते हैं, किन्तु मनुष्य वही है जो दूसरे मनुष्य के लिए जीता और मरता है । हरसिंगार जब फूलों से सज जाता है, तब हर दिशा को सुगन्धित कर देता है । इसी प्रकार जब एक मनुष्य परोपकार के रास्ते पर चलने लगता है तो उसकी प्रशंसा हर दिशा में होने लगती है । कबीरदास ने ठीक ही कहा है -

वृक्ष कबहुँ नहिं फल भखैं,
नदी न संचै नीर ।
परमारथ के कारन
साधुन धरा शरीर ॥

प्रत्येक मानव का कर्त्तव्य है कि वह परोपकार के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर दे, हो सकता है इसके लिए हम लोगों को काँटों पर चलना हो, लेकिन इससे घबराने की जरूरत नहीं है । जैसे रूई अनेक कष्ट झेलते हुए हम लोगों की रक्षा ठण्ड और सर्दी से करती है । महर्षि दधीचि ने देवताओं के लिए अपनी अस्थियों को दान देकर मृत्यु का वरण किया था । अतः हमें रास्ते में आए काँटों से डरना नहीं चाहिए ।

भूषन भनिति भूति भलि सोई ।
सुरसरि सम सबकर हित होई ॥

तुलसीदास ने कहा था । भूखों को अन्न, नंगों को वस्त्र, बीमारों की सेवा अज्ञानियों को ज्ञान, बेसहारा को सहारा देकर हम विभिन्न प्रकार से परोपकार कर सकते हैं । परोपकार करने का मौका हमें खोना नहीं चाहिए । परोपकार के मार्ग पर चलना मनुष्य का परमधर्म है ।

सुभाष चन्द्र बोस के जीवन पर आधारित नाटक में सम्मेलन को संबोधित करने के लिये उठते सुभाष, पार्श्व, में गाँधी जी व नेहरू ।
क्रमशः स्नेहिल, आशीष व नमन।

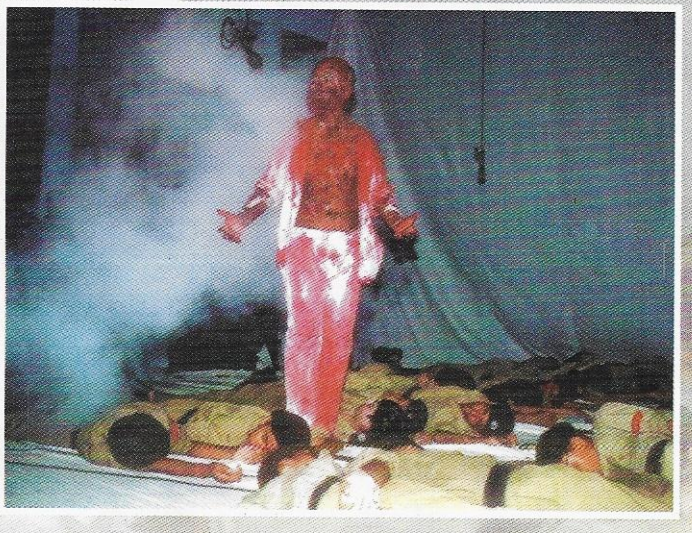

रक्तरंजित क्रांतिबाबू:
"अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों"
प्रभावी अभिनय करते प्रत्यूष प्रांजल

कवि सम्मेलन में एक कवि ये भी थे
- चि. अभिजीत

पं दीन दयाल उपाध्याय की मूर्ति पर माल्यार्पण के बाद क्रातिकारी, लेखक श्री वचनेश त्रिपाठी साथ में मा० प्रधानाचार्य जी, चि० निशांत, अखिल,मुनीश तथा अवतंस।

चि. निखिल को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि मा० मदनदास जी देवी

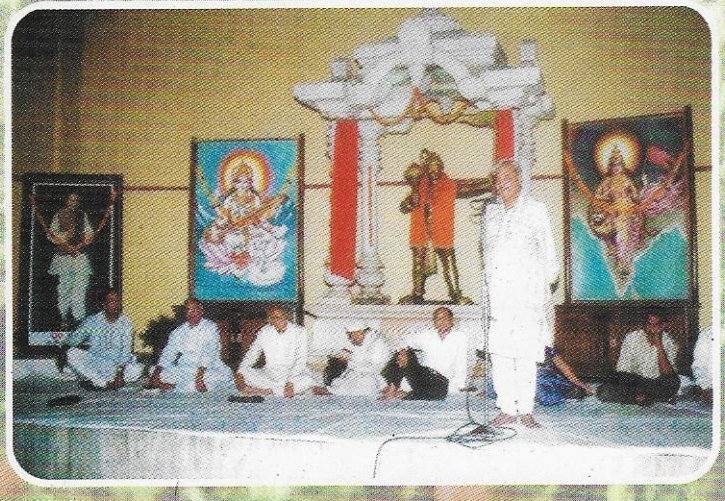

हमारा नाम जवानी
हमने जब चाहा,
आँधियाँ सिर्फ इशारों
में रूख बदलती हैं।
कवि सम्मेलन में अग्निधर्मा सुमन दुबे।

पूरा इतिहास बदल देंगे ...

—दीपक सिंह चौहान 'अंगार'
द्वादश 'ख'

पाकिस्तान से घुसपैठ और उग्रवाद को खुला समर्थन हमेशा जारी रहता है । घाटी में निरीह-निर्दोष भारतीय रोजाना मारे जाते हैं और हमारा नेतृत्व सिर्फ यह कहता भर है कि यह ठीक नहीं है, परन्तु करता कुछ नहीं है । इस कारण पूरे भारत के देश भक्त युवाओं में आक्रोश है । ऐसी ही देश-भक्ति की भावना दीपक की कविता में हिलोरें ले रही है । हमने तो उसका कवि नाम ही 'अंगार' रख दिया है । 'अंगार' की कविता में धार है, विरोधियों पर प्रहार है और कश्मीर पर अपने अधिकारबोध को जागृत करने की एक जिन्दादिल पुकार भी है ।

— सम्पादक

दे दो आज्ञा कुछ करने की,
पूरा इतिहास बदल देंगे ।

एक टावर के गिरने से,
जब दुनिया पूरी हिल सकती है

ताकत तुम मेरी देख चुके,
सन् इकहत्तर के संघर्षों में

कश्मीर हड़पने का सपना
सपना बनकर रह जायेगा

मौके का यही तकाज़ा है,
अब बॉर्डर क्रास किया जाये ।

रोज-रोज की मौतों से,
छुटकारा बहुत जरूरी है

सह चुके बहुत हम छद्म युद्ध
आमने-सामने की बारी है ।

पेशावर को पीछे छोड़ो,
इस्लामाबाद कुचल देंगे ।

तो पाकिस्तानी कब्जे की
धरती हमको मिल सकती है ।

नब्बे हजार को छोड़ दिया था,
मीठी-मीठी बातों में ।

दिल्ली हुंकार उठेगी तो,
इस्लामाबाद दहल जायेगा ।

सीमा पार के अड्डों का,
जड़ से ही नाश किया जाये ।

अब जंग की खुद शुरुआत करे,
यह भारत की मजबूरी है ।

हिम्मत हो तो- दो हाथ करो,
अपनी पूरी तैयारी है ।

कुछ भूल हो गयी पुरखों से
वरना हम तुम्हें बता देते ।

कश्मीर की तुम छोड़ो बातें,
हम पाकिस्तान मिटा देते ।

संसद पर हमला हो जाना,
संगर की खुली चुनौती है ।

बन्दूक थाम लो हाथों में,
भारत माता यह कहती है ।

बोफोर्स, अग्नि हैं पृथ्वी हैं
यह किस दिन जौहर दिखलायेंगी ।

यदि बंद रहीं सीमाओं में,
तो इनमें जंग लग जायेगी ।

अधूरा नक्शा है भारत का
हम इसको नई शक्ल देंगे ।

दे दो आज्ञा कुछ करने की
पूरा इतिहास बदल देंगे ।।

आचार्य की महत्ता

—**नितिन कुमार**, सप्तम 'ख'

ऐसा सत्य सिखाना जग को
अनाचार मिट जाये,

मिटे स्वर्ग की असत् कल्पना
शाश्वत सत्य भूमि पर आये ।

तुम भू के भगवान तुम्हारे
चरणों में ईश्वर मिलते हैं,

तुम अन्तर के माली
तुमसे फूल जिन्दगी के खिलते हैं ।

मैं भूलूँगा, पर तुम मेरी
भूलों से उदास मत होना ।

तुम शिक्षक विद्वान् तुम्हारी
प्रतिभा से लोहा भी सोना ।।

मित्रता क्या है ?

—उदित कुमार पाण्डेय
नवम 'ग'

सच्चे मित्र मिल पाना कठिन है । स्वार्थ की हवि पर ही मित्रता के मंत्र गूँजते हैं । उसकी प्रसन्नता पर हमें आह्लाद हो और उसकी आँखें छलछलाने से पहले हमारी आँखें भर आएँ तब मित्रता का अध्याय प्रारम्भ होता है । **— सम्पादक**

मित्र बनते हैं सभी, पर मित्र बन पाना कठिन है,
मित्र बनकर मित्रता का, निर्वाह करना भी कठिन है ।
मित्र बनना है अगर तो, भूल जाओ स्वार्थ को,
मित्र बनकर याद रखो, सिर्फ तुम परमार्थ को ॥१॥

मित्र यदि गलती करे, तो सामने कह दीजिए,
मित्र का जिससे भला हो, बात वैसी कीजिए ।
स्वार्थ छोड़ त्याग लालच, उपदेश देना भूलिए,
मित्र कहकर शत्रुता का भाव रखना भूलिए ॥२॥

मित्रता अनमोल है, यह सहज ही मिलती नहीं,
छूट जाए, तो उसी रूप में जुड़ती नहीं ।
जुड़ गई तो गाँठ पड़ने में नहीं संदेह है,
मित्र की पहचान आँखों से बरसता स्नेह है ॥३॥

डर है अगर तो आज की, छल भरी मित्रता से,
शत्रु अच्छे हैं अगर कहकर बने इस मित्रता से ।
शक न करिए मित्र पर मत दूर करिए आँख से,
मित्र दुश्मन बन न जाए, दूर होकर आपसे ॥४॥

आजकल तो शर्म आती है, मित्रता के नाम पर,
बोल मीठे बोलकर, कब वार कर दे आप पर ।
तब न यकीन रहता है, उन पर न अपने आप पर,
मित्र सच्चा संकटों में हाथ रहता थाम कर ॥५॥

✶

वृक्षारोपण

—शिवम द्विवेदी
नवम 'ग'

आज विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से पूरा संसार संत्रस्त है । साँसों में जहर घुल रहा है । जंगल काटे जा रहे हैं, ऐसे में वृक्षारोपण करना हमारा कर्तव्य है ।
— सम्पादक

साथी वृक्ष लगाना, साथी वृक्ष लगाना ।
एक वृक्ष यदि लग जायेगा, जीवन भर फल खाना ।।

एक-एक मिल होते ग्यारह, ग्यारह बने हजार ।
हरी-भरी हो जाये धरती, हरा-भरा संसार ।।
काम पुण्य का है यह भाई, इसको भूल न जाना ।
साथी वृक्ष लगाना - - - - - - - - - - - ।।

आज देश की धरती माँगे, हरीतिमा परिधान ।
वृक्ष लगाकर पूरित कर दो, सभी दिशा मैदान ।।
ऐसी सेवा का फिर अवसर, कभी नहीं है आना ।
साथी वृक्ष लगाना - - - - - - - - - - - ।।

शुद्ध हवा के साथ-साथ, यह पानी भी बरसाते ।
देकर अतुल फूल-फल सम्पत्ति, जीवन को सरसाते ।।
मानव जीवन के यह रक्षक, इनको नहीं कटाना ।
साथी वृक्ष लगाना - - - - - - - - - - - ।।

नहीं भेद है पुत्र-वृक्ष में, दोनों एक समान ।
दोनों ही सेवा करते हैं, भूल मान अपमान ।।
इन्हें पुत्र की भाँति पालना, करना नहीं बहाना ।
साथी वृक्ष लगाना, साथी वृक्ष लगाना ।।

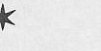

जीवन

—अनिल कुमार
नवम 'ग'

संसार मरणधर्मा है । मनुष्य दुनिया में आकर यह भूल जाता है कि एक दिन उसे सारी धन-दौलत, घर-परिवार छोड़कर महायात्रा पर जाना है । यही याद दिला रहा है बाल-कवि । — **सम्पादक**

जो मिला है ये जीवन वो गँवाना पड़ेगा,
धरा छोड़कर एक दिन जाना पड़ेगा ।
ये धन और दौलत ये इज्जत ये शोहरत
बस कुछ ही दिनों की है, ये शान-ओ-शौकत
फिर तो इन्हें छोड़ जाना पड़ेगा ।
जो मिला है ये जीवन वो गँवाना पड़ेगा ।।

जिन्होंने तुम्हें हँस के रहना सिखाया,
जिन्होंने तुम्हें है चलना सिखाया,
जिन्होंने तुम्हें खाना-पीना सिखाया,
तुम्हें छोड़ उनको भी जाना पड़ेगा ।
जो मिला है ये जीवन तो गँवाना पड़ेगा ।।

जिन्होंने तुम्हें दिल में अपने बसाया,
गले से जिन्होंने तुम्हें अपने लगाया,
पलकों पे जिसने बैठाया है तुमको,
जीवन में जिसने बढ़ाया है तुमको ।
उनको भी छोड़ तुम्हें जाना पड़ेगा,
जो मिला है ये जीवन तो गँवाना पड़ेगा ।।

जिन्हें तुमने अपना बनाकर रखा है,
पलकों पे जिसको सजाकर रखा है,
छोड़ तुमको उन्हें भी जाना पड़ेगा ।
जो मिला है ये जीवन वो गँवाना पड़ेगा,
धरा छोड़कर एक दिन जाना पड़ेगा ।।

★

नैतिकता का क्षरण हुआ है

—निशान्त आनन्द
नवम 'ख'

चि० निशान्त की इस कविता में यद्यपि उनके पितामह का बौद्धिक सहयोग है फिर भी यह कविता भाषा, भाव, विषय लय तथा प्रवाह की दृष्टि से खरी, समसामयिक तथा यथार्थ व्यंजक है । — **सम्पादक**

मानव का कैसा पतन हुआ है ।
नैतिकता का क्षरण हुआ है ।।

कृषक कभी था जग का त्राता, जन-जन की भूख मिटाता था ।
कर्मयज्ञ का होता बन, कम खाय पहिन मुसकाता था ।।
भरा बखारी में अनाज औ, गोधन-शोभित था चौबारा ।
आज हो गया वह व्यापारी, मिलीग्राम औ ट्रैक्टर वाला ।।
विविध मिलावट में रुचिवान, बिना लाग बेधरम हुआ है ।
नैतिकता का क्षरण हुआ है ।।

श्रम आराधक श्रमिक देश का, विश्वकर्मा के कौशल वाला ।
जिसके बल पर अंग्रेजों ने, दुनिया भर का राज सँभाला ।।
वही श्रमिक झूठे लालच का, हो शिकार कॉमरेड हो गया ।
अर्थ व्यवस्था अंध कूप में, श्रमिक स्वयं बरबाद हो गया ।।
साम्यवाद निज मौत मरा पर, साथ श्रमिक का मरण हुआ है ।
नैतिकता का क्षरण हुआ है ।।

पूँजीवादी सरकारी सेवक पगार पाये, लेने को उधार मुँह बाये ।
ऊपर से रिश्वत की थैली, ले-ले धरता जितनी पाये ।।
दंभ अपव्यय की स्पर्धा कर, सज्जन साथी को भरमाये ।
देश-काल की नहीं है चिन्ता, नारे उसके रटे-रटाये ।।
निपट स्वार्थ की पंकधरा में, ले डुबकी बेशरम हुआ है ।
नैतिकता का क्षरण हुआ है ।।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध टूटकर, टीचर-टाट में बदल गए हैं ।
पास कराने के ठेकों में, ज्ञान कुशलता ठगे गये हैं ।।
नेता, अभिनेता व्यापारी, या फिर ऑफीसर सरकारी ।
सबकी ही मति गयी है मारी, क्या कर लेगा अटल बिहारी ।।
पूरा आवा ही काला या, हमको ही कुछ भरम हुआ है ।
नैतिकता का क्षरण हुआ है ।।

माँ बुला रही है ...

—नमन चतुर्वेदी, द्वादश

कविता का गुण ओज है । यह कविता पाकिस्तान को ललकारने, कायरता को धिक्कारने तथा देशभक्ति के भाव को स्थाई भाव बनाने वाली है । — सम्पादक

हम भारत-सुत अपनी ताकत को पहचाने ।
अपना भारत भा-रत है इसको भी जाने ।।

माँ बुला रही है अपने वीर जवानों को,
बलि पथ पर बढ़ने वालों को, मस्तानों को ।
जो अपनी हिम्मत और हौसला रखते हैं,
ऐसे आहुति देने वाले परवानों को ।।

इतिहास कलंकित करने वाले दुश्मन की,
राहों का कदम-कदम अंगारों से भर दें ।
सुख सेज त्याग अँगड़ाई लेकर हुंकारें,
गद्दारों को जीवनभर जीना दुष्कर कर दें ।।

हाथों में लें तलवार जवानी जाग उठे,
मानवता का सज उठे पालना घर-घर में ।
असहाय बने क्रूरता कब्र अपनी खोदे,
लहलहा उठे जीवन की बगिया दर-दर में ।।

कर्त्तव्यबोध अपने भीतर से उगता है,
अपनी ही आँखों से दिखता है लक्ष्य-द्वीप ।
स्वाती का बूँद बनाता मोती सीपी को,
ठोकर खाती फिरती दर-दर खोखली सीप ।।

माँ का सेवा-व्रत लिए जवानी जीती है
तप और त्याग के गाती गीत जवानी हैं ।
संकट पड़ने पर स्वयं हलाहल हँस पीती,
तलवारों पर तौलती शत्रु का पानी है ।।

पाकिस्तानी 'चिन्तन' विष है गद्दारी है,
इसके बल पर जीने वाला व्यापारी है ।
इसको न देश से प्रेम न धरती से नाता,
इसको विनाश ही सदा सियारों सा भाता ।।

ओ पाक ! अगर गफलत में फिर गलती कर दी,
हिल गया कदम धोखे से कही ठिकाने से ।
परखचे उड़ेंगे आसमान के मंजर में,
गुम हो जाएगी हस्ती हर अफसाने से ।।

भारती पूत पहचान गए अपनी ताकत,
दुनिया भर से मिट जायेंगी ये पहचाने ।।

रहनुमा हमारे

—अमिय आनन्द 'पाण्डेय'
नवम 'ख'

रहना चाहिये जिनको जेलों में,
रहते हैं वो बाग-बँगलों में ।
सैकड़ों धाराएँ हैं जिन पर,
लाखों दाबें हैं बगलों में ॥१॥

राजनीति का यही हाल आज
हो गया कोढ़ में जैसे खाज ।
ये नेता न आयेंगे बाज,
बनते हैं खुद को रंगबाज ॥२॥

राजनीति में फैली महामारी,
कानून ने आँखों पर पट्टी क्यों बाँधी ?
राजनीति बन गया है धन्धा,
कानून क्यों बन गया है अंधा ? ॥३॥

शासन का अर्थ न पता है जिनको,
शासन क्या खाक करेंगे वो ।
एम०पी०एम०एल०ए० बन गए पर,
हाई स्कूल पास नहीं वो ॥४॥

जब कोई नेता पकड़ा जाता,
काण्डों व घोटालों में ।
उस समय देश डूब जाता है,
शर्म की ताल तलैयो में ॥५॥

काश ! पुनः कोई आ जाता,
गाँधी जैसा पथ-द्रष्टा ।
दीनदयाल व शास्त्री जैसा,
कोई सुन्दर युग-द्रष्टा ॥६॥

मुशर्रफ़ और बुश

—ऋषि द्विवेदी
नवम 'ग'

एक बार श्री मुशर्रफ ने श्री बुश को फोन मिलाया
उनको अपना कुशल क्षेम बताया ।
बोले साहब कुछ करो,
आतंकी खजाना फिर भरो,
नहीं तो हिन्दुस्तान आगे बढ़ जायेगा,
और अपना पाकिस्तान मुँह ताकता रह जायेगा ।

ठंडी आहें भरते हुए बोले महाशय बुश
तुम्हारी चाटुकारिता और चापलूसी देख बहुत हूँ खुश
लेकिन मैं क्या करूँ,
तुम ठहरे आतंकी और इसका तुम्हें बुखार है
तुम भले ही निन्यानवे की हार भूल गये
लेकिन मुझे अपनी इज्जत से प्यार है
हिन्दुस्तान किसी कायर का नाम नहीं
तुम जैसों के लिये दहकता गोला है
हर बार धूल-चाटने के बावजूद तेरा मन नहीं डोला है ?

झटका खाकर गिरे, बोले मुशर्रफ़ महाराज
यदि तुमने मेरी लाज न बचाई, तो मुँह की खाऊँगा फिर आज,
आखिर तुम समझने की कोशिश क्यों नहीं करते ?
मुझ भिखारी की पुकार को क्यों नहीं सुनते ?
यदि आज तुम मेरा साथ निभाओगे
तो भविष्य में कश्मीर के अधिपति कहलाओगे
फिर हिन्दुस्तान हाथ मलता रह जायेगा
सारी दौलत इकट्ठा करके तू मालामाल हो जायेगा ।।

✶

दीनदयाल जी की पावन स्मृति में

—निखिल श्रीवास्तव, द्वादश 'क'

जब याद तुम्हारी आती है,
नयनों से बदली सावन सी,
तब अपनी झड़ी लगाती है ।

तुम सच्चे मानव प्रेमी थे,
दुखियों को हृदय लगाते थे ।
जो पास तुम्हारे आता था,
तुम उसकी प्यास बुझाते थे ।
आते दुनिया में बहुतेरे हैं,
कितनों की याद रुलाती है ।
जब याद तुम्हारी आती है ।।

शिक्षालय के लघु कण-कण में,
तव स्मृति राग समाया है ।
उस संत मनस्वी त्यागी को
क्या हमने कभी भुलाया है ?
अनुराग हृदय में उमड़ा है,
और श्रद्धा सुमन सजाती है ।
जब याद तुम्हारी आती है ।।

कथनी करनी में भेद न था,
सुख दुःख चाहे आयें कितने ।
मन बचन कर्म में साम्य रहा,
यद्यपि दुःख-दर्द सहे कितने ।
आशीष दिया यदि एक बार,
रक्खा उसको ज्यों थाती है ।
जब याद तुम्हारी आती है ।।

तब प्यार त्याग का व्रत रक्खे,
विद्यालय बढ़ता जायेगा ।
मंजिल नैतिकता प्रेम ज्ञान,
तक यह सबको पहुँचायेगा ।
बन गये नींव तुम खुद उसकी,
'नीराजन' पुष्प चढ़ाती है ।
जब याद तुम्हारी आती है ।

'बावन' वर्ष तक सेवा की,
अन्तिम क्षण तक थे क्या भूले ?
पर स्वप्न पूर्ण हो न सका,
तुम व्यथा हिंडोला ही झूले ।

अरमान लिए ही चले गये,
यह पीड़ा आज सताती है ।
जब याद तुम्हारी आती है ।

बदल दो राह

—गौरव कृष्ण
अष्टम 'ख'

आज इस्लाम पूरी दुनिया में आतंकवाद का पर्याय बन चुका है । दुनिया के जिस भी देश में उग्रवाद पनपा है उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस्लाम के अनुयायी ही हैं । यद्यपि कोई पंथ हिंसा नहीं सिखाता है परन्तु इस्लाम के अनुयायी अंधभक्त, कट्टर तथा भटके हुए हैं । — **सम्पादक**

मजहब के नाम पर, इन्सानियत का खून करने वालो ।
अल्लाह के पाक नाम को, नापाक क्यों हो करते ?
इस्लाम को बदनाम, क्यों हो करते ?
अल्लाह है क्या, इतना बर्बर और क्रूर
कि जरूरत पड़े उसे कत्ल-ए-आम की ।
फिर क्यों करते हो स्वार्थ वश उसे बदनाम ?
उस अल्लाह से तुम हो,
इस्लाम से तुम हो,
तुमसे ये इस्लाम नहीं ।
कर सकते हो कत्ल,
तो करो कत्ल इस मजहबी जुनून का ।
कर सकते हो मदद,
तो करो मदद लाचारों की ।
तुम क्यों करते हो इस्लाम को बदनाम
किया जो बेइज्जत उस पाक परवर दिगार को
कहर बनकर टूटेगा तुम पर
अल्लाह की कुदरत का इंसाफ ।
बदल दो उस राह को,
जिस पर तुम चले जा रहे हो ।
खुद तुम ही इस्लाम का,
कत्ल किये जा रहे हो ।

*

कटाक्ष

नेता और ज्योतिषी

—अजय सिंह यादव
अष्टम 'क'

आज समाज में 'ठगी' व्याप्त है । यदि नेता समाज को ठग रहे हैं तो तथाकथित ज्योतिषी उन ठगों को ठगने में बीस हैं ।
— सम्पादक

ज्योतिषी ने
चुनाव में खड़े एक उम्मीदवार का
हाथ देखकर तुरन्त कहा - वत्स,
वैसे तो तू बड़ा भाग्यशाली है
इस चुनाव में
तेरे सभी विरोधियों की
जमानत जब्त होने वाली है ।
तेरी भाग्य रेखा बता रही है
मगर जीत की संभावनाएँ कर्मकाण्ड के अभाव में
तुझसे दूर खड़ी हैं ।
नेता ने कहा - गुरुवर, आपके
मुँह में घी शक्कर और
कर कमलों में सोना चाँदी ।
ऐसे मंत्र पढ़िए कि मेरे
पक्ष में चल जाए
समर्थन की आँधी ।
ज्योतिषी ने कहा -
इसके लिए तुझे
विधि के अनुसार विधान करना होगा,
यज्ञ की वेदी पर आडंबर के
वस्त्र पहन कर बैठना होगा,
और मुझे दक्षिणा में विदेश यात्रा
कराने का वचन भी देना होगा ।

विज्ञान से सम्बन्धित दोहे

—अखिल मिश्र
अष्टम 'क'

मटर उगाकर खेत में, दिया नया विज्ञान ।
अनुवांशिकी के पिता, मेंडल हुए महान ।।

दूर बैठकर आपसे, बातें करता कौन ।
ग्राहम बैल का शुक्रिया, दे गये टेलीफोन ।।

नीले लिटमस पत्र को, कर देता जो लाल ।
अम्ल नाम उसका हुआ, अंग न लेना डाल ।।

चाहे घर रोशन करो, सुनिये ग्रामोफोन ।
एडिसन जैसा भी भला, आविष्कारक कौन ?

किसका पुरखा और है, इसका मिला प्रमाण ।
डार्विन के कारण हुई, विकास की पहचान ।।

फिल्म देखने का जिसे, सचमुच में है शौक ।
एडिसन ने था दे दिया, उसको वायरस्कोप ।।

जिसको चाहो भेज दो, अब तुम टेलीग्राम ।
मारकोनी का शुक्रिया, उसको करो सलाम ।।

कल्पना की स्मृति में

—अंकित झा
अष्टम 'ख'

भारतीय अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला जो युवा भारतीयों के लिये प्रेरक थीं, यान दुर्घटना में विगत वर्ष काल-कवलित हो चुकी हैं । महायात्रा पर जा चुकी कल्पना की स्मृति में अंकित काफ़ी भाव-विह्वल जान पड़ते हैं ।

— सम्पादक

कल्पना कहाँ खो गई, चन्दा हमें बताओ ना ।
चाँद सितारों मिलकर ढूँढ़ो, धीरज तनिक बँधाओ ना ।।

कोलम्बिया यान में चढ़कर, दीदी मेरी चली जहाँ ।
तुम सबने भी देखा होगा, दीदी मेरी गई जहाँ ।।
लेकिन वापस नहीं आ सकी, तो फिर आखिर गई कहाँ ।
राखी हमें बँधानी होगी, तब पाऊँगा बहिन कहाँ ।।

हम अधीर हो सिसक रहे हैं, हमको और रुलाओ ना ।
हम बच्चे हैं, सच कहते हैं, दीदी से मिलवाओ ना ।। मेरी - - - -

दिन में तुम पढ़ने जाते हो, तभी दिखाई ना देते हो ।
लेकिन जब छुट्टी होती है, तब दिन में तुम क्या करते हो ।।
नभ में जब बादल घिरते हैं, तो क्या तुम उनसे डरते हो ।
अगर नहीं तो फिर सच बोलो, उतने समय कहाँ रहते हो ।।

समय मिले तो मिलकर ढूँढ़ो, किरणों से ढुँढ़वाओ ना ।
ना ढूँढ़ों साफ बता दो, हमें और भरमाओ ना ।। मेरी - - - -

नहीं बहाना और सुनूँगा, मम्मी से मैं बात करूँगा ।
उनके किस्से वाली परियों से, मिलकर अभियान रचूँगा ।।
उनके पंखों पर बैठूँगा, सारी दुनिया में ढूँढूँगा ।
दीदी जिस दिन मिल जाएगी, उस दिन मैं विश्राम करूँगा ।।

भारत माँ की शपथ तुम्हें है, तुम भी वचन निभाओ ना ।
हम तुमसे वादा करते हैं, तुम भी धर्म निभाओ ना । मेरी - - -

(हास्य कविता)

तीन की महिमा

—दिलीप गुप्त, नवम 'क'

घर वाले कहते हैं बेटा, तुम कौन डिवीजन लाओगे ?
फर्स्ट डिवीजन नहीं मिली तो, जीवन भर पछताओगे ।

कैसे मैं समझाऊँ उनको ? बहुमत का आज जमाना है ।
जिस पथ से जनता अधिक चले, उस पथ पर हमको जाना है ।

वैसे भी तीन तीसरे की महिमा वेदों ने गायी है ।
इसकी निन्दा करने वाला, अल्पज्ञ मूर्ख अन्यायी हैं ।

हैं तीन राम इस धरती पर बलराम, राम और परशुराम ।
हैं तीन धाम सबसे ऊँचे बैकुण्ठ, स्वर्ग, साकेत धाम ।

मिलती हैं नदियाँ तीन जहाँ वह तीर्थराज कहलाता है ।
शिव के त्रिशूल में तीन शूल संसार देख थर्राता है ।

गाँधी जी सदा तीसरे दर्जे में यात्रा करते आए ।
मेरे पुरखे कक्षा तीन से ज्यादा पढ़ने में डरते आए ।

फिर भी अगर थर्ड डिवीजन वालों का, अपमान किया जाएगा ।
तो विश्व विजयी तिरंगा प्यारा नभ में कैसे फहराएगा ?

✶

विदेशी का स्थान

—अनुराग मिश्र, अष्टम 'क'

एक बार स्वामी विवेकानन्द भाषण देकर बार-बार स्वदेशी वस्तु पर जोर दे रहे थे । वे बार-बार कह रहे थे कि हमें अधिक से अधिक स्वदेशी वस्तु का उपयोग करना चाहिए । उनके भाषण के बीच में ही एक विदेशी महिला बोली कि "आप स्वदेशी वस्तु पर बार-बार जोर दे रहे हैं परन्तु आप जूता तो विदेशी पहने हैं ।"'इसका क्या कारण है ?" उत्तर में विवेकानन्द जी ने कहा कि "यही तो मैं बताना चाहता हूँ कि विदेशी का स्थान कहाँ है ।"

✶

एक नया इतिहास लिखेंगे

—विकास शर्मा अष्टम 'क'

हम अपनी इस मौन कलम से
एक नया इतिहास लिखेंगे
मुक्त चाँदनी की आभा से
आलोकित आकाश लिखेंगे

कदम-कदम पर सदाचार से प्रगटे भाईचारा
भारतवासी सभी एक हैं गूँज उठेगा नारा
कठिन दुपहरी में छाया की शीतल -शीतल प्यास लिखेंगे
हम अपनी इस मौन कलम से - - - - - - ।१।

निर्धन की कुटिया में बच्चे भूख प्यास के मारे
कौन भला सुनता है इनकी चीख रहे बेचारे ।।
दीन कुपोषण की दुनिया से क्रन्दन का संन्यास लिखेंगे ।
हम अपनी इस मौन कलम - - - - - - ।।२।।

✶

सीमा पर लड़ रहे जवान

—संकल्प त्रिवेदी अष्टम 'क'

बढ़ा रहे भारत की शान,
सीमा पर लड़ रहे जवान ।
बम गोले और तेज धमाके,
सीमा पर लड़ रहे लड़ाके ।
आगे बढ़ते लड़ते-लड़ते,
बाधाओं से हठकर भिड़ते ।
मातृभूमि का रखते मान,
सीमा पर लड़ रहे जवान ।
वे भी पुत्र इसी धरती के,
मातृभूमि पर मरना सीखे ।
प्राणों को करते न्यौछावर,
भला कहाँ वो डरना सीखे ।
वीरों का करते सम्मान,
सीमा पर लड़ रहे जवान ।।

✶

मेरा विद्यालय

—एक नीराजक

अगणित केन्द्र खुले शिक्षा के,
मेरा नगर विशाल ।
पर सबमें उन्नत ललाट सा,
मेरा दीनदयाल ॥

केवल पढ़ना नहीं है शिक्षा,
विकसें सद्‌गुण और सत्कर्म ।
पर उपकार बड़ों की सेवा,
यही सनातन धर्म ॥

सुरुचि पूर्ण शिक्षण शैली है,
बढ़ती सदा ज्ञान की प्यास ।
मेरा यह महान विद्यालय,
करता सर्वांगीण विकास ॥

✶

आशा

—**आनन्द शाक्य,** अष्टम 'क'

मैं आत्मवेदना से पीड़ित,
झूठे मन को बहलाता हूँ ।
और निराशा की भँवरों में,
आशा की नाव चलाता हूँ ।

झूठे मन की बात मान मैं,
फिर आगे पछताता हूँ ।
और बाद में हर क्षण हर पल
आत्मग्लानि से भर जाता हूँ ॥

मैं निराशा के अंधकार से
मन ही मन घबराता हूँ ।
संबल पाकर सत्पुरुषों से
मैं बाहर आ जाता हूँ ।

✶

नव समाज निर्माण करेंगे

—**अंकित शर्मा,** अष्टम 'क'

हम अपनी अतुलित सेवा से
नए समाज का सृजन करेंगे ।
जातिवाद कीतोड़ प्रथाएँ
राम-नाम का भजन करेंगे ।

ऊँच नीच की मिटा भावना,
हम समाज को स्वच्छ करेंगे ।

हर घर में चूल्हे जलवाकर
सब हाथों को दक्ष करेंगे ।
हम अपने कोमल चरणों से,
हिमगिरि को भी पार करेंगे ।

अंतिम व्यक्ति पंक्ति में जो हो
उसका भी उद्धार करेंगे ।

✶

(विनोद)

मैया मोरी मैं रेल टिकट नहिं लायो

—**निखिल श्रीवास्तव,** अष्टम 'क'

मैया मोरी मैं रेल टिकट नहिं लायो ।
भोर भयो भाभी ने मोहैं, सौ का नोट थमायो
आरक्षण फार्म, रुपये लैके घर से मोहि पठायो ।

भारी भीड़ देखकर भैया, मेरा सिर चकरायो ।
घुस्यो भीड़ में किसी तरह पर तबहुँ न नम्बर आयो ।

परेशान हो जब बाहर आयो जेब कटी तब पायो ।
बहुत कहा, पर भाभी ने मोहै भैया से पिटवायो ।

यह लो आपन आरक्षण फार्म तुम सब मोहि सतायो ।
तंग जान अपने सुत को तब माता गले लगायो ।।

✶

कृष्ण लीला

—आलोक शुक्ल
सप्तम 'क'

खुशियों की सौगात लिए,
आये हैं नंदलाल ।
माखन मिश्री को आतुर हैं
खड़े बाल गोपाल ।

रैंता, पैंता, मना, मंसुखा,
और साथ गोपाल ।
मटकी फोड़ दही खायेंगे,
प्यारे मोहन लाल ।

आस-पास सब गोपी घूमें,
घुमा रहे गोपाल ।
हाथ में मिश्री मुँह में माखन,
खाते हैं नंदलाल ।

गेंद गई जब कालिन्दी में,
दुखी हुए सब लाल
नाग नाथ कर गेंद निकाले
प्यारे माखन लाल
जय बोलो नंदलाल ।।

राजनीति-कैकेयी पर जब से हावी,
पदलिप्सा की दुष्ट मन्थरा दासी है ।
पराधीनता-धनुष भंग करने वाला,
जनसाधारण राम विपिन का वासी है ।

प्रभात वर्णन

—**आलोक शुक्ल**, सप्तम 'क'

हुआ सवेरा सूरज आया,
अंधकार को दूर भगाया ।
चिड़ियों ने चीं चीं गाकर,
इस धरती को स्वर्ग बनाया ।

नव किरणों से रथ सजवाया,
भौरों से बाजा बजवाया ।
रंग-बिरंगी सुन्दर-सुन्दर,
तितली से श्रृंगार कराया ।

मुर्गे ने आवाज लगायी,
चुन्नी घर से बाहर आयी ।
ठण्डे ताजे जल से हर-हर,
नानी तुरन्त नहाकर आयी ।

सभी काम में लग जाते हैं,
फूलडाल पर खिल जाते हैं ।
रोज सूर्य के आ जाने पर,
चन्दा कहीं चले जाते हैं ।

✶

'प' से पढ़ाई

—**शीतांशु तिवारी**, अष्टम 'क'

काश हमारी प अक्षर से कभी होती न लड़ाई ।
न होती परीक्षा, न होता पेपर, और न होती पढ़ाई ।।
हमें कभी पढ़ना न पड़ता, मैथ, साइंस से लड़ना न पड़ता ।
हम हमेशा खुशी मनाते, खेलते-कूदते, नाचते और गाते ।
पर तब पक्षी न होते और न ही होते पेड़,
तब यह पूरी दुनिया नीरस लगती,
यह सब तो होना बहुत जरूरी है,
इन सबके बिना तो दुनिया अधूरी है ।।

✶

कश्मीर

—सुमित
सप्तम 'क'

भारत ने जब शरीफ को बुलाया,
तो कारगिल युद्ध हुआ ।

मुशर्रफ को जब सम्मान दिया,
तो संसद पर हमला हुआ ।

पर हम न बोले कुछ,
वे समझे कि हम गये हैं बुझ ।

पर वे यह नहीं जानते कि हम,
आग हैं, शोले हैं, अंगारे हैं ।

अस्मत पर अगर आ जाय
तो हम ही तूफानी धारे हैं ।

अगर टूट गयी जो
धैर्य की माला ।

बर्बाद हो जायेगा पाक सारा,
नहीं मिलेगा निवाला ।

मैडम बेनजीर कहती हैं बड़े गर्व से,
कश्मीर बिना अधूरा है पाक ।

पर वह यह नहीं जानतीं कि,
भारत का ही एक भाग है पाक ।

जग की शान-भारत देश

—आशीष पाण्डेय
सप्तम 'क'

भारत है दुनिया की शान,
इसका कण-कण बहुत महान ।

पत्थर भी यहाँ पूजे जाते,
मान देवता शीश झुकाते ।

विंध्य, हिमालय और सतपुड़ा,
रक्षक हैं इस देश की शान ।

नदियों को हम माता कहते,
करती रहती कल-कल गान ।

गंगा, यमुना, सिंधु, गंडकी,
देती सबको जीवन दान ।

पौधे वृक्ष वन फूल लतायें,
माटी रोक उर्वरा बढ़ाये ।

शस्य श्यामला इस धरती पर
अन्न फूल-फल दवा उगायें ।

हम सब हैं इसकी संतान,
इसकी रक्षा में हों कुर्बान ।

इसमें है हम सबकी शान,
सदा रहे जन गण का गान ।

भारत है दुनिया की शान,
इसका कण-कण बहुत महान ।।

प्रेरक वाक्य

—**प्रशान्त पाण्डेय,** नवम 'क'

1. जब तू हँसेगा तब विश्व भी तेरा साथ देगा परन्तु जब तू रोवेगा तो कोई पास भी नहीं आवेगा। **विल्काक्स**
2. जो मनुष्य अपनी निन्दा सह लेता है उसने मानो सारे विश्व पर विजय प्राप्त कर ली हो। **वेद व्यास**
3. शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा कोई पाप नहीं है। **लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक**
4. ''असम्भव'' शब्द मूर्खों के शब्द कोष में पाया जाता है। **नैपोलियन बोनापार्ट**
5. जो शत्रु तुम पर आक्रमण करते हैं उनसे मत डरो, जो मित्र तुम्हारी चापलूसी करते हैं, उनसे डरो। **जनरल ओब्रगेन**
6. दुनिया को समझने और इसमें बदलाव लाने की इच्छा, प्रगति की दो महान प्रेरक शक्तियाँ हैं। **बर्टेण्ड रसेल**

✶

संस्कृत वाङ्मय के कवि व लेखक

—**भालेन्दु प्रताप सिंह**
अष्टम 'क'

ग्रन्थ	कवि या लेखक	ग्रन्थ	कवि या लेखक
शिवमहिम्न स्तोत्र	पुष्प दन्त	पञ्चदशी	विद्यारण्य
मीमांसा शास्त्र	कुमारिल भट्ट	कृष्णकर्णामृतम्	लीलाशुक
अर्थशास्त्र	चाणक्य	बुद्धचरितम्	अश्वघोष
पञ्चतन्त्र	विष्णु शर्मा	रावणवधम्	भट्टि
चर्पटमञ्चरी स्तोत्र	शंकराचार्य	किरातार्जुनीयम्	भारवि
विक्रमांकदेवचरितम्	विल्हण	सूर्यशतकम्	मयूर भट्ट
वेणीसंहारम्	भट्ट नारायण	मृच्छकटिकम्	शूद्रक
वाक्यपदीयम्	भर्तृहरि	रणवीर ज्ञानकोश	विश्वेश्वर पण्डित
अष्टाध्यायी	आचार्य पाणिनि	भारत नररत्नमाला	श्रीपादशास्त्री
संगीत रत्नाकर	सारंग देव	सरस्वती कण्ठाभरण	भोजराज
मेघदूतम्	कालिदास	नरनारायणानन्दम्	वस्तुपाल
हितोपदेश	नारायण पण्डित	चाय गीता	सहस्रबुद्धे

✶

Editorial

By the time this issue reaches your hands, the 14th Lok Sabha would have come into existence with Dr. Man Mohan Singh as our Prime Minister. The past few months saw the entire nation in the grip of "Election Fever" Several political parties stormed the election scene with high sounding promises to enchant the gullible voters of India. Hectic campaigns, rallies, mudslinging, extravagant "Road-Shows" highlighted the myriad panorama of the "Indian Election Scene". The nation went to polls for the 14th Lok-Sabha. On the eve of elections, our hon'ble President Dr. Kalam appealed to the countrymen to exercise their valuable right to vote. It is a pity that almost half the citizens of the world's largest democratic country chose to keep themselves aloof from the melodrama of elections. The elite class, the intellectuals, the upward mobile youth remained inside their comfortable co-coons. The nation saw the debacle for the ruling NDA. The results came as a shell-shock for both the masses and the government. "Anti-incumbency factor" was blamed for this dismal rout. The vote of about 50% citizens of India decided the fate of the country and raised several baffling questions. Is 'Democracy' successful in India ? Why do we Indians not realise the immense value of our vote ? Why are we so indifferent, so unconcerned ? Is it not because we were gifted "The Right of Franchise" ? We did not fight for it ! Democracy came to Indians as a legacy where as the other countries of the world got the "Right of Franchise" only after a series of revolutions and sacrifices. Intellectual readers ! it is not only our right but a soleman duty to cast our Vote" as a responsible citizen of the nation because the future of our nation depends on it !

Let us not remain aloof, because our aloofness may cost us dearly - it may endanger our freedom, our integrity and even our national security.

–Sharda Rao

सत्रांत समारोह के संकल्पित क्षण

दशम 'क'

दशम 'ख'

दशम 'ग'

विदाई के मार्मिक क्षण

द्वादश 'क'

द्वादश 'ख'

Dr. Rajendra Prasad

The first President of India

—**Abhishek.** 8th 'A'

Dr. Rajendra Prasas was born in a small village named Ziradei in the district of Siwan. His childhood was spent in his native village. He was a very shining boy with a great promise for future. His life was like a book with countless pages to be learnt.

Rajendra Prasad grew up in an atmosphere pervaded by a living faith in God and spirit of devotion to dharma. He topped the matriculation examination of Calcutta University in 1902, cleared his K.P. examinations, obtained masters for law, yet this prudent gentleman never showed an air of superiority over others, rather he gave free guidance to the needy. He practised law and also became a leader of bar Association at Patna High Court.

Dr. Rajendra Prasad was a great leader, organizer and revolutionary. He became an active supporter of Gandhiji. He shared the hard fate of the country's leaders. Service with humility and indefatigable energy was what made him unforgettable for the masses.

He supported non-violence but believed in intelligent aggressiveness. He was very gutsy and daring. He was sent to Jail several times. Once he was brutally beaten by the police, but his spirit was as strong as ever. A brave spirit was hidden within his frail body.

He was one of the Presidents of the All India National Congress. He was the President of the Constituent Assembly. He neither reigned nor ruled as a president, but worked as public welfare authority. He was the president of free India. He retired as the president of the Republic of India on May, 1962.

His life was an epitome of leadership, virtue, acumen, powerful speech and refined personality. We have lost a fine being; human and humane in the death of first president of independent India i.e. Dr. Prasad. His was, par excellence, a life with a theme; a life dedicated to the great thinker's ideas.

"To see as far as one may, to feel the great forces that lie behind every detail. His sweet nature, deep learning, blotless character and above all, his selfless love and sacrifice for the country had won a matchless place for him in the heart of all. He tried to make India strong in mind and body; now it is up to us to make his dreams come true.

✶

Swami Vivekanand
Urge the Surge of India

—Ashish Verma,
8th B

The young Sanyasi from Bengal showed the world that India was not dead but only sleeping. He burst upon the Indian Society like a bomb shell to see it awakened.

Born on January 12th, 1863 in on opulent family in Calcutta, his name was Narendra. Sharp intellect with a Rational approach made him doubt any belief that was in practice. The characters in him made him question the very existence of God. Thus began his search for a man who had actually seen God. It ended in Shri Swami Ram Krishna Paramhansa by whom his spiritual quest was quenched.

After the death of Ram Krishna Paramhansa, Narendra took the Vow of Sannyas and became Swami Vivekanand. He then travelled extensively across India.

Swami ji had done very good work out of India. When the foreigners attacked Indian Culture Swami Ji went to the United States to take part in the world parliament of Religions held in 1893 at Chicago city. His speech beginning with "My dearest Brothers and Sisters of America ...." held the audience speechless. He expressed the importance of the vision for a universal outlook.

After his return from America. He established the "Ram Krishna Misson in 1897. "The Misson aimed at serving the poor.

Understanding Swami Vivekanand would be understanding India. On the 4th of July 1902., Swami Vivekanand passed away inspite of a short life span the depth of his work is still to be fathomed.

His message far the Indians and whole world.

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत !

Best Use of Time

—Kushagra Krishnan
8th 'A'

Take time to pray.
It is the way to heaven.
Take time to laugh,
It is the music of the soul.
Take time to read.
It is the foundation of wisdom.
Take time to be friendly,
It is the road to happiness.
Take time to look around,
It is the short cut to unselfishness.
Take time to play,
It is the secret of youth.
Take time to work,
It is the price of success.
Take time to relax,
It is the key to long life.
Take time to dream,
It is the highway to the stars.

✶

Hymns

—Pushkar Srivastava
8th 'A'

Lord, receive our prayers for our school and our country. Perfect the innocent, restrain the greedy and the treacherous, and lead us out of our tribulations into a quiet land. rolong our days in peace and honour. give us health, food, bright weather, peace and pleasure. Let injuries be forgotten and kindness remembered. Let us lie down at night without fear, So that we awake and arise tomorrow full of strength and joy.

✶

Tears

—**Arpan Srivastav,** VI 'A'

Tears to borrow
In fears and sorrow
And for the things which are not loving
And also which are bad & pity giving.
Tears also come on mistake
Tears sometimes make our soul shake
Tears also come out on a life too bad
They also come when we are so sad
It comes on the eyes of a little lad
When his feelings about life are bad.

✶

Mother

—**Arpan Srivastava,** VIth 'A'

Mother gave us birth
She let us come on earth.

Mother's love is not measurable.
Without mother's love we are weak and feeble.

Mother is great her love is great
Mother's love is so fathomless

To make our destiny she works like an ant
Her love and affection make us enchant.

Mothers work for building our character
In formation of personality mother is a great factor.

Mother is our first teacher
Who teaches us to make our future.

✶

Where there is a will there is a way

—**Sant Mani,** Eight 'A'

Every body wants to be successful in his life. But while dreaming success one should not forget the battle which is necessary for victory. Life is beautiful when art of living is understood.

Proverbs like 'Where there is will there is a way' are often used in our daily life when someone wants to get something from his heart he tries to get it with all his efforts and will power. If the will power is strong anything can be achieved.

We are often inspired by the example of those who have become successful. The strong will power is the only base of our success. Kiran Bedi the first lady IPS officer struggled hard and became successful and popular in our country. Our cricket star Sachin Tendulkar has achieved fame and wealth and everything Mr. Atal Bihari Vajpayi a simple man has become Prime Minister of India. Our new president Dr. A.P.J. Abdul Kalam got the highest post because of his sheer will power. Was it possible for them to become great with out strong will power. Besides we read in Mahabharat that Eklavya completed his education with the help of statue of Dronacharya. So, one should always remember "God helps those who help themselves." A small sparrow makes a very beautiful nest with the help of her will power. It is an art which comes from her will power to protect her children. The main obstacle in the way of success is lack of will power.

Be active,
Ever green and optimistic
hope for the sky
you will learn to fly.

Do not blame fate only those who struggle become successful. Many believe in fate or luck. Some times those who struggle go on struggling and another person who waits without struggle becomes successful. But it does not happen all the time. Will power is also very important and with the help of will power one can conquer fate. But one should not hope for victory before fighting the battle.

Every body knows that success does not go to those who never struggle. It is not something which can be achieved by spending money. But will power which comes from your soul and heart is needed if your will power is strong. You will be successful and a successful person is always found to be confident. But success demands hard work struggle and sacrifice. Do not be afraid of failure because failure is the killer of success. Bear your troubles don't worry and be happy. Remember that if you laugh the whole world laughs with you but if you weep you will have to weep alone, with your strong will power, enthusiasm any great thing can be achieved.

To dream is your right
To struggle is your duty
Will power is your need
To achieve the sky and to fly.

2nd World War

—Saurabh Dubey
Seventh 'B'

The Second World War was fought from 1939 to 1945. In this War Germany, Italy, Japan, Romania etc were on one side and they were known as "The Axispowers", On the other side were Britain. France America. Soviet Russia, Holland, Belgium Denmark, Norway etc. In all 30 Countries and these were known as "The Allies" Do you know what were the causes of this war ?

The 'Treaty of Versailles' which had been concluded at the end of the first World War (1914-1918) was very unjust and became the root cause of the IInd World War. The treatment meted out to defeat countries of the Ist world war like Germany. Austria, Hungary and Turkey were revengeful and Hence it created feelings of reaction, the minds of Germany and her allies.

The aggressive policy was followed by Germany. Italy and Japan and the total failure of League of Nations to put a check on them was also much responsible for the out break of the Second World War.

Then the western policy of appeasement of the fascist powers like Germany and Italy also emboldended these countries to attack, capture and terrorise other countries.

Germany attacked Poland in 1939 and it forced both England and France to give up the policy of appeasement and to declare war against Germany on third september. 1939 soon after other countries were drawn into this war and it took the shape of world war.

The Second World War came to an end in 1945. When Germany was surrounded by the forces of allied powers from all sides Hitlar committed suicide in May 1945. In May Germany surrendered unconditionally and the war was brought to an end.

The war in Asia, however continued for another three months. But with the dropping of the Atom Bombs on Hiroshima and Nagasaki on 6th August, and 9th August; 1945 respectively Japan also capitulated on August 14, 1945 and thus the second World War came to an end.

✶

Bharadwaja

—**Drishya Muni Chakma,** 8th 'B'

Bharat is a well-known homeland for Sages, Bharadwaja is one of the most renowned sages of all times. He was a saint of the Vedic period, who attained extraordinary power by meditation.

He was not tempted to become an Emperor, but undertook to serve people. He acquired extensive knowledge of the Vedas and did Severe penance. He always stood like a fortress protecting good and righteous people at all times.

Noticing his extraordinary Scholarship, numerous kings accepted him as their preceptar, but even among the kings he sought only the righteous. The vow he took deserves to be a vow for all time in the hearts of one and all, "All people are my relatives and my life is dedicated to their service. My strength acquired by meditation and that of my body shall be used far the benefit of the people." He had extra-ordinary knowledge of aero- dynamics science which is seen in his book 'vimand shashtra.'

He was the sage who spread the name and fame of India through wisdom and kindness.

Even today many research scholars and scientists are enamoured of his work mainly, 'Vimana Shastra' "The Science of Aero-dynamics."

A man of Meditation.

✶

Relation between India & Pakistan

—**Pankaj,** Eight 'B'

The 'divide and rule' policy of the British resulted in partition of the Country into India & Pakistan in 1947. The same year, Pakistan attacked Kashmir and Captured parts of the area. In 1965 and later in 1971, Pakistan attacked India but It was defeated. The bus diplomacy, undertaken by Prime Minister Atal Bihari Vajpai proved a failure because military skirmishes in the Siachen region and in some parts along the LOC Increased. Our Prime Minister from Pt. Nehru to Mr. Vajpai lacked foresight and were gullible they trusted the double stand of Pakistan. Kargil has exposed the short sightedness and lack of strategic vision of India towards its defence.

Pakistan was in no mood to acknowledge its support to crossborder terrorism which is described as a "Freedom struggle".

The biggest setback to India in Kashmir is USA's over dependence on Pakistan for its current military operations is Afghanistan Neither the USA nor Britain can afford to antagonise General Pervez Musharraf at this stage who is carrying an his proxywar in Kashmir despite posing to fight terrorism in Afghanistan along with the USA.

✶

The Memoures of Pt. Deen Dayal Ji

—Anurag Mishra,
8th 'A'

The man has gone but his memories were left behind. There are some memories of Pt. Ji.

Pandit ji knew only to serve, not to be served. In childhood, once his head was full of boils. He knew that there was no wheat flour in the home. He did not lete any one but he went to the "Atta ChakkI" and came back with hot flour on his head.

In 1942, he went to 'Gola Gokaran Nath' as a volunteer of 'Sangh'. There was a school near by. The principal of the school was about to return. The managing Committee of the school offered him Rs. 250 alongwith other facilities and requested him to become the principal of that school. He said, "I want food clothes and shelter. I can not get this much in rupees. Then what will I do with any more ?"

What a selfless life he spent ?

✶

Our India

—Rishabh Kishore Suryvanshi
IX 'C'

Punjab for fighting.
Bengal for writing
Sikkim for duty.
Kashmir for beauty.
Rajasthan for history
Maharastra for Victory.
Karnataka for Silk.
Haryana for milk.

Kerala for Coconut.
Uttar Pradesh for Carrot.
Himanchal for apples.
Orissa for temples.
Madhya Pradesh for tribals
Bihar for minerals
Each place, each state
Makes India so great.

Health is Wealth

—Sanjeev Kumar
VI 'B'

We all know. 'Health is Wealth' It is a state of complete physical, mental and social well-being. The loss of health is the loss of happiness. Mahatma Gandhi also says, "It is health which is real Wealth, and not pieces of gold and silver."

Good health depends on several things. Fresh air and Sunlight are very important for our health. So a morning walk is very useful for health. In pure drinking water is the cause of several diseases today.

Food is also necessary for the body. A balanced diet helps the proper growth of the body.

We know 'A sound mind lives in a sound body' we may take some Yogic execises. Games and sports are very useful for health.

We know early to bed, early to rise make a man healthy and wise. Early rising is equally necessary for good health. Tagore rightly Says, "We have no right to neglect our bodies, so we must try to keep fit. Health is the real wealth.

✶

The Gifts of Science

—Sanjeev Kumar
VI 'B'

The modern age Science is wonderful. We see the work of science in every walk of life. But it is both good and bad. The two world wars show that science is very destructive. But science has given us some good things, too. In modern age Science is progressing. Many new mediciness are available today to cure many diseases. Now operation of the brain or the heart are easy x-ray has done a wonderful job. So, the death rate is lowering every year. It has solved our problems in travelling. In this age jet Planes fly faster than the sound. Big mountains and deep seas do not stand in our way.

Telegraph, wireless, telephone, radio and television are some other gifts of science. Thee things have made the world look small. They have solved the Problem of time. Electricity is another good gift of science. It ran big machines and trains etc. It has become part of life. But Nuclear Weapons can finish the whole world in no time. Bombs are very dangerous. But Science is neither good nor bad. It depends on how we use it. So, Let us make the best use of it.

✶

Smile

—**Saumya Sheel Singh**
XI 'A'

This costless smile draws many in our life.
One who tastes it always becomes joyful.
One who scatters it doesn't loose anything.
It is instantaneous But
It can be forever in memory of its owners.
Nobody is too rich to be happy without it.
It brings happiness into home
It brings eminence in business
It symbolises friendship
It is rest for restless
It is light of hope for disappointed
And a sunny day for sad ones.
Godgifted solution for every problem.
Yet it can not be begged, bought, borrowed or stolen.
It is a thing that is useless unless you transfer it to others.
During the busy schedule of whole day you can see
Many people don't want to smile
Ycu can give them your smile
Man who can never give his smile
Needs it more and more.

✶

A Cricket Match

—Yogendra Singh
VII 'B'

Cricket is an international game. I take a keen interest in cricket. Last year our college team played a cricket match against the team of Mahatma Gandhi Inter College. A large crowd of spectators gathered to see the match.

I was selected in the college cricket team. Both the teams reached the Playground at the right time. They were in their white uniforms.

The match started in time. Messrs Omveer Singh and Mohd. Aziz acted as umpires. Our Captain Ram Nath Sharma won the toss. He decided to bat. He himself went as an opening batsman. Another opening batsman was Raju. Both the players played very well. They Scored fifty runs. The Captain Ram Nath Sharma was given run out by the umpire. After his departure Raju could not stand for long. He was caught behind the wicket. The bowlers of the opposite team bowled so well that the whole team was out at Two hundred runs only.

Now our team took the field. The opposite team came to bat. I was incharge of the attack. Our bowlers bowled so decently that the batsmen of the opposite team were dismissed one after another. The whole team was out at one hundred eighty runs only.

In this way our team was victorious Every body praised our captain who batted and bowled very well. The captain of the opposite team tried his best to turn the game into a draw but he could not.

✶

Child is the Father of man

—S.M. Gaurav
Seventh 'B'

Wordsworth was a great Romantic poet of 19th century. According to him the heart of a child is pure. It is in this simple heart that we can find man to be. In fact a child has all the qualities in him that we find in his manhood. The future man remains hidden in the child. That is what we want him to be. We can shape the life of a child in his very childhood.

It is true that the child has in him the future man. But society, plays a great role in shaping the character of child. A child can grow well only in the proper atmosphere. Napoleon used to build forts of snow and straws in childhood.

Alexander Pope had poetic power in his very childhood. He used to make verses once his father beat him for making verses. But Alexander pope wept and spoke the verse itself.

"Father, father pity take

No more verses I will make."

This shows that Pope had the poetic power in his very childhood. He became a great English poet when he grew up.

It is true 'Morning shows the day'. But it cannot always be true. There are many who are intelligent in their childhood. But in the later part of life they do not earn name and fame. George Bernard Shaw, Shakespeare and Tagore were not very intelligent in their childhood. But as they advanced in their age their genius also share brilliantly..

A child is really the father of man. If a boy is given bad training in his childhood his future career gets spoiled. If parents do not take care of their children their future becomes dark. Children copy grown up people. So children should be allowed to grow under suitable and healthy conditions.

Desire Veils Wisdom

—Deepak Singh Chauhan
XII 'B'

Desire - Passions when they mount to the lusty excesses crawl out of us, our thinking power, and come to veil the wisdom in us. The veiling of intelligence by the lust in us is of varying thickness- sometimes the veiling is thin and misty, but at some other times it is dark and complete. It all really depends upon the quality of desires that rise up in the bosom at a given moment.

Lord Krishna said in Geeta -

> "As a flame is covered by smoke, a mirror by dust and the faetus by the womb, so is knowledge covered by the desire and lust."

The three examples indicate the three types of coverings that shroud knowledge depending upon the types of desires - PEACEFUL (Sattwic), RESTLESS (Rajasic) and LOW (Tamasic).

When the desire springs from some noble and illustrious urge to serve selflessly the members of the community or family as an expression of one's devotion to the LORD, it is 'sattwic' desire and even though it too veils 'knowledge', it is like, "the smoke veils the flame". A slight breeze is sufficiant to remove the smoke and bring out the flame in all its resplendent glory.

When desire gushes out from a restless and selfish urge to aquire, possess and enjoy the sense objects, it is a Rajasic desire and it veils knowledge like, "the mirror dimmed by dirt." A little effort with a duster is needed to wipe it clean and bring back its original light and shine.

When desire trickles out and seeps through the gaping wounds of moral ulcerations, lusts, greed, selfishness, love of pleasure itc. it is a Tamasic desire and when it veils and walls in the knowledge, it is like. 'the faetus in the womb." Not only is effort required to remove it, but a time lapse is also needed. The mother is to be well looked after and nursed, and it will be a full nine months before the child emerges from its covering of the womb. Similarly our desires are Tamasic. We have to be under the discipline of sincere penance for a length of time before our discrimination can emerge from its shell of low desires and vulgur ambitions.

Good Boys are those

—Rishi Kumar Rajput
X - 'C'

Good boys are those,
Who are regular in their lessons
Who are not the slave of passions
Who rise early in the Dawn
And play in the open like a fawn.
Who respect their teacher, father and mother
Who love their brother and love their sisters
Who obey the elders and Follow the great.
Who menance none; none they ever hate
Who do their duty and do never complain
By helping others they always take pain
Who never flee from any kind of task
'We shall try' who say, We can not do thus never think.
Who worship and pray to God so may never fail.
Who ever help the poor, the weak and the frail.
They shine in future like a star
Great men of future such boys are.

✶

Science the enemy of man

—**Manas Bharadwaj,** 7th 'B'

Science has dazzled humanity. It has turned impossibilities inted possibilities. Time and distance have been killed. Agriculture has been considerabily mechanized. There is remarkable development of industry. The radio brings to us the songs Television enables us to see distant functions. The diseases have been conquered. Germs die; their victims live.

But there is another part of picture Science has discovered atom bombs and hydrogen bombs which destroy millions in half a second. They cause death and destructions on the head of humanity. Science has, on one hand, given us numerous comforts, on other hand, it is also driving us into the valley of death. It is murdering humanity.

Man has become the slave of machine. One machine can do the work of hundreds of labours. In One factory thousands of labours are out of the work. Unemployment is ever on the increase. Gandhiji fauoured not mass-production by mills and factories but production by the masses.

Another curse of science is that it has made man godless. Science has destroyed Mans character and personality. Man has lost sympathy, love and fellow feeling. It has made a man selfish. Men have became mad. Science has created more problems than it has solved. It has brought comfort but it has also brought death with it. Science is murder. A murder cannot be excused. Science has placed untold power in the hands of man and man may misuse it the memory of death that followed, in the wake of two atom bombs dropped on the two beautiful cities of Herosima and Nagasakhi of japan is still fresh in our memory. The same story may be repeated in a much more virulent form.

At last to sum up I come to this conclusion that we must use science for the good of humanity not for its destruction.

✶

If I were the Prime Minister

—**Prashant Kumar,** Seventh 'A'

Every person has some dreams in life. My dream is to become a Prime Minister. If I were the prime minister I would remove corruption from the country and I would remove terrorism of my country I would have made a law regarding bribery It would state that if a person is found guilty of taking brite then his hands would be chopped off. I would have tried to make the financial situation of the country, Stable. I would have tried to make my country free from the pollution. I would have tried to make the country prosperous. I could have tried to make my country truly secular I would have decreased the cost of every item considerably. I would have promoted education for all people. I would have tried to eradicate all the diseases from the country. I would have tried to make the rivers clean and provide good drinking water to every one. But all this could have happened only if I were the prime minister.

✶

Tell me God

—**Saurabh Singh,** XI- 'A'

Tell me God that,
What am I,
Why is so far,
that blue sky;
How the birds
sing cheerly,
Why so far from us
they fly.
why a man always
wish to high;
Why can not he,
give up the lie;
Why does he kill
his own brothers,
while he has also
to die.
Why the world
Can not tie,
Why are we unable
Can we not try,
Why are the rich
So happy,
Why the poor only
have to cry.
Please try to understand
What I want to say,
Why are you silent
In the temple everyday;
Are you watching the
lowest type of men,
With your bright ray
Show me a new way.

Thoughts Culture

—Gaurav Krishna
8th

1. We must always change, renew rejuvenate our selves. Other wise we harden.

Goethe

2. Life's aspirations come in the guise of children.

Tagore

3. No one can make you feel inferior with out your consent.

Eleanor Roosevelt

4. The future belongs to those who believe in the beauty of their dreams.

Eleanor Roosevelt

5. Attitude is everything.

Burke Hedges

6. Study as if you were to live forever, live as if you were to die tomorrow.

Mahatma Gandhi

7. Fear lessness is the first condition of spirituality.

Swami Vivekanand

8. Love is the strongest force yet it is the humblest.

Buddha

✶

Poem ("Perfect Silence")

Meditation of mind,
Emptiness of soul,
Search of Truth,
Essence of sorrow,
Freedom of thought,
Serenity of solitude
Fear of confession,
Need to rest,
Peace of mind,
That's the kind of "Perfect silence."

✶

Blessings of Self-Control

—Anurag Rajput
12th 'B'

By lack of Self-control we can unwittingly slip and fall psychologically away from our own merits and efficiencies. Naturally a youngman has a dream with ambitions of success. In the life self-control is a very important gift of the life given by God.

But how exactly is self-control helpful ? What really are the benefits of a life of self-control ? It is said that "A Sound mind lives in a sound body." but according to James Allen sound mind and pure thoughts are a pre-condition to a sound and healthy body. Thus we should have self control on our minds .

According to Allen anger, worry, jealousy, greed are the enemy of the self-control. If these short comings are situated in our mind then we can not control our minds.

Lord Krishna gives a set of scientific arguments logical and reasonable and explains how through self-control we bless ourselves, and grow in our inner-personality & vitality. A person becomes a more matured thinker, more balanced, in his emotions, putting out better performances in his field of activity, be he a research schalar or a politician or a priest, a mill worker or an agricultural labourer.

"रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन् ।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ।।"

One who has self-control can easily move among the tempting sense-objects, when his senses are perfectly under his own control. But how ?

Let us take an example. A drunkard and a teetotaller walking along the same road .... see a full whisky bottle lying on the road. The teetotaller is unaffected and passes by. but the drunkard is fond of the drink so he can not control his mind so he stoops down and takes it.

Thus we can say that if we give up the bad habits in our minds, We can control our ambitions. So it is necessary that we should control our mind. Thus the result is that 'The SELF-CONTROL IS A PRECIOUS GIFT OF GOD'.

"क्रोधाद्भवति समोहः समोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।।"

Mother Nature

—Nikhil Srivastava
8th 'A'

Mother nature has a vast treasure.
To see it, gives us great pleasure.
The sun, The stars and the moon.
Tell us about our bright fortune.
The trees and plants which give us many medicines.
Tell us that we should always help others and commit no sins.
The brightness of the sun and of the day.
Advises us to be happy and always remaing gay.
Saving the nature and the environment is the best we all can try.
Before its too late and they bid us Bood Bye.

✶

Value of Plants

—Nikhil Srivastava
8th 'A'

Plants are a part of nature,
They help man and all creatures,
If there are no plants then,
There will be no men, women and children.
They give us wood, with which we make table
Because of them oxygen is available.
Through them we get vegetables like potatoes and peas.
But Alas ! man is cutting many trees.

✶

Trust

–Saumya Sheel Singh
XI 'A'

It is my resolution that most of all relations are based on trust as Master-Servant, Parents-Children Husband-Wife, Teacher-Student, Dealer and Customer etc. Trust is the way to be trustful.

Reliability - It comes from commitment and gives skill of pre-planning.

Consistency - It promote our trust.

Respect - The sense of discipline and care for us and others.

Fairness - It produce the sense of obligation.

Frankness - Opens way for everything without hesitation.

Congruence - How can you trust upon them who say something and do something else ?

Completness - Sense of skillness and self-esteem.

Intigrity - It is right hand of trust.

Acceptance - Acceptance of our good and bad habits from our inner inspiration

Character - It is backbone of trust because any characterless person can not be trusted.

Thus importance of trust is more than love. We can love anybody but it is not necessary that we can trust him. Relations are like a bank account. As we collect more. It will become more and more.

✶

God Helps Those who help themselves

—**Pradeep Tripathi,** XII 'A'

There is an almighty force looking after us A firm faith or belief in god and prayers have their own values. We pray everyday and we also go to a place of worship, but we have to work hard to achieve anythings in life.

"We cannot climb the ladders of success with our hands in our pockets."

To accuse fate and blame the stars is merely acknowledgement of defeat. Every aim or goal in life has to be worked for God grants us several opportunities and we must strive to make use of these opportunities. A belief in God builds, our confidence but we should not sit with folded hands to achieve success. All great men have attained success by hardwork and devotion.

"Life is a precious gift from god. Preserve it, nurture it with love, devotion and hard work."

We can decide our destiny by hardwork and prayer we may fail to succed, but we will always have the satisfaction of having tried. The greatness of man doesn't depend on success or failure. They cannot in fact get success in a moment. We should remain steady and should not be impatient. We should keep trying again and again to overcome all the difficulties till we achieve our goal Fortune favours only the Brave.

"Winners never quit and quitters never win."

A faith in God, coupled with hardwork can take us to the path of success and happiness "Do your best, God will do the rest, for, God helps those who help themselves."

✶

Just Children

—**Raj Gaurav,** VIII 'A'

A daughter is a daughter
A son is a son,
Why compare them ?
Both can be bright as a sun.

Like boys the girls too
Want to be out late night,
Wrong is wrong
Two wrongs don't make a right.

The girls no longer,
Are sad and drab
They are educated and free
Working in field or lab.

Equal opportunities for both we need
Let them do the best they can
Let each be a good person
Whether it is a woman or a Man !

✶

Should Students Take Part In Politics ?

—Tarun Agrawal
XI 'A'

The life of a student is a period of preparation for the future that awaits him in that period he is expected to make an all round development such as- mental, moral and physical.

In the olden days, in India, a student received knowledge from his 'guru' in whose hermitage he lived till he had completed his education. The ancient education was spiritual and sacred. Thus students in those days, were cut off from the affairs of world.

The modern universities on the other hand are not in the forests and our education is no more spiritual and sacred Nowdays, a student studies subjects like economics, politics and history and takes interests in the current affairs of his own country and of the world at large.

But should this awareness prompt a student to take an active part in the politics ?

The main work of student is to develop these qualities which make him a good citizen and enable him to shoulder the responsibility of his life. If a student is actively engaged in politics he cannot pursue his studies regularly and systematically.

When the British ruled over India, students were called upon to come out of their colleges and universities and take part in throwing off the foreign yoke. Conditions were then extraordinary. The great problem before the nation was to end the foreign rule and thereby to create those conditions in which the country could make real progress.

But to make India great and powerful men of sound knowledge and high character are needed, therefore it is necessary for students to acquire both technical and non-technical knowledge and to develop all qualities of character.

We belong to a great nation the students of today are the citizens of tomorrow and the future of the country rests on them. But they are not as yet prepared or experienced enough to get actively involved in the politics of the nation.

Therefore, at present, their duty is to study and understand rightly the political and other problems of the country.

✶

Pearl of Wisdom

—Ashish Pal
XII - 'B'

You are lovingly invited to explore the aim of life and discover spiritual enlightenment and most important peace of mind, to travel through the pathways of earth means that by being freed from the vices and weakness particular to human nature and acquiring angel-like qualities and conduct pleasing to God, One lives one's life in accordance with the requirements of knowledge and love of God and in spiritual delight that comes thereby.

Pearls of Wisdom are the core of your being, your essence or soul, that spark of Divinity, with in you that is forever one with the creator. Your life is an inscribed world, it is a wisdom displaying word written by the pen of power. You can create a peace filled, illuminated life by consciously choosing to experience joy, love health and a prosperous harmonious life.

Divine wisdom is reading the language of creation. The pearls of wisdom are the worlds of the chosen ones who have devoted their lives to comprehending whispers of creation. They are grasping the whole from the pieces and offering it as a horizon opener for us. These words will be divine inspiration for us to solve our problems as well as lights to illuminate our life. Pearls of wisdom will be guidance for us to attain success in life.

✶

Thanks to .....

—Raman Priyadarshi
XI - 'B'

1 Feb. 2003, the darkest day which started with a normal Dawn, but ended with a terrible dusk. How cruel was the fate and how terrible was the night which swallowed up the high aspirations of man. It was not the end of human efforts and his desires to know the sky. It is just an encampment in journey from earth to sky for a man.

Late Mrs. Kalpana Chawla and the other six adventureres got their dream of sceing the universe completed, which remains always a dream for a simple man. This unfortunate end of lives inspires all of us not to stop our mission at this very stage but to take it further a head from our desires.

With the consoling heart we all are determined to get their sacrifices as a milestone in the way of journey from earth to the stars.

✶

My Dream

—**Nikhil Srivastava,** XII- 'A'

'First say to yourself what you would be; and then do what you have to do.'

-Epitectus

A dreamless man is practically no man. A man without dream is like a ship without a rudder or an engine without steam. His ambition puts him into action. We must therefore have some definite aim in life that is, We must choose a profession. One who chooses no profession leads an unhappy life.

The right choice of profession is very necessary, right choice is the key to success in life. The question of choosing a profession was not very serious in the past the son generally followed the profession of his father and if he had lost his father unfortunately like me then he followed the inspiration of his mother. It is not easy now times have changed Talents and tastes differ. Every profession cannot suit everyone so while choosing a profession, we should keep in mind the natural taste, physical fitness, opinion and guidance of teachers, elders and parents, economic condition of the family and the future prospects in the profession.

Everyone no matter how rich or poor, old or young, intelligent or dull, dreams of a rich future life. Some wish to become leaders,some desire to achieve power over nature and some dream of high position. Keeping in mind the factors for right choice. I too-have my own ambition.

My desire is to become a film director. Different people have different aims. Mostly young people want to take up the safe and common careers like engineering, Medicine, civil or Military services, legal practice or some family business. I do not like these dull professions. They may satisfy others. I want something more exciting and challenging.

I have always been attracted by the film world Right from the first day of my seeing a film I was in love with this world I have seen many films-some good and some bad, the good films gave me great pleasure and thrill I have seen social films, religious films, historical films, adventure films, children's films, comedies, tragedies- all However, my favourite films are historical & adventurous films.

My desire to become a film director has become very strong because I find that most directors make very poor pictures their pictures are without taste, Quality or imagination for one good picture there are ten bad pictures. They will make either art pictures without any entertainment value or popular pictures full of cheapness and dullness. Why can't they make pictures which are popular and yet entertaining in a decent manner, I am sure it can be done and I am going to do it.

I shall first complete my studies. Then I shall join the film Institute at Poona for special training in film direction. Then I shall enter the film world and try to bring in an age of good pictures in India. There are some directors even now who are trying to keep up the tradition of making good, clean and entertaining films Unfortunately, they are fighting a losing battle. When I join the group I shall organize the things in a professional manner. There will be a regular, well-planned campaign- We shall try to involve the government in an active manner. So for the government participation is very indifferent and unimaginative. I am sure if we go about the whole thing in a proper manner we can work wonders. I hope and pray that God fulfils my desire.

✶

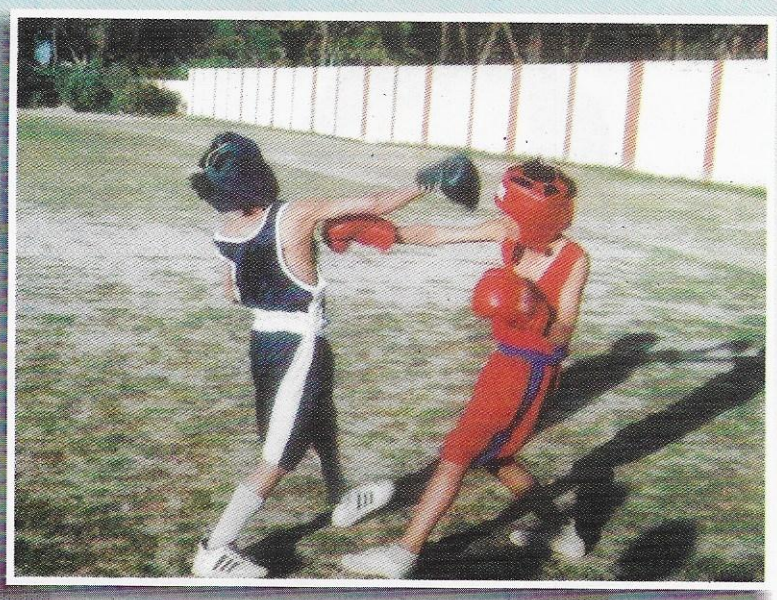

जूझते हुए दो सबल मौष्टिक :-
भारतीय बॉक्सिंग के भविष्य

वार्षिक खेलकूद में ८०० मीटर दौड़ में स्थान प्राप्त छात्र,
क्रमशः शैलेश शुक्ल-प्रथम स्थान (मध्य में),
आलोक रंजन-द्वितीय स्थान (बायें),
प्रशान्त कुमार तृतीय स्थान (दायें),
साथ में आचार्य श्री रामतीर्थ जी व अनिरूद्ध जी।

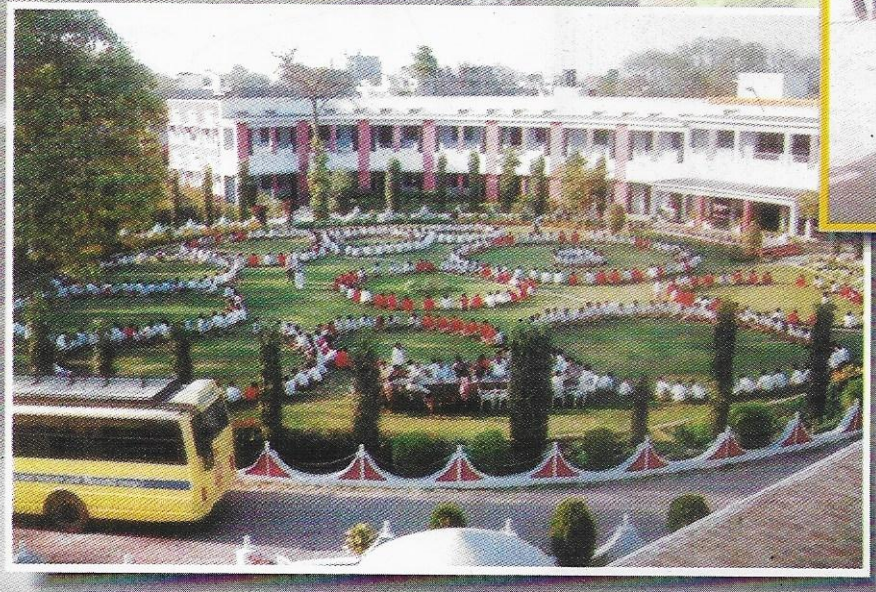

सत्रांत कार्यक्रम के बाद
गोल मैदान में स्वल्पहार
का विहंगम दृश्य

पिपीलिका पाँति की भाँति
पं. दीनदयाल जी के निर्वाण दिवस
पर श्रद्धासुमन अर्पित करते छात्र।

प्रयास भित्ति पत्रिका में बाल चित्रकार

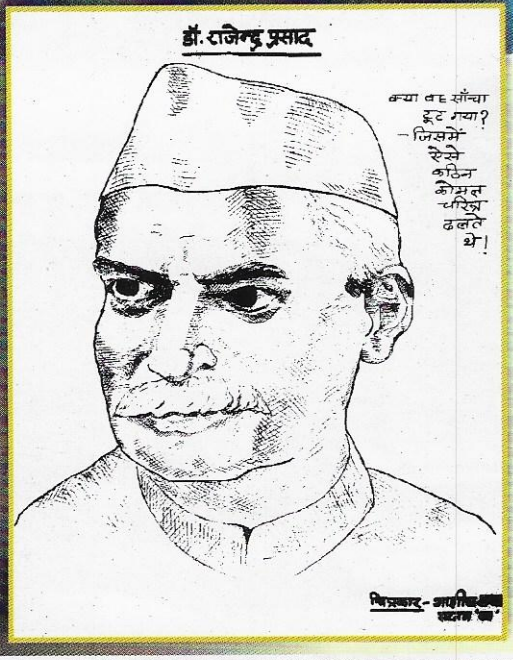

हाईस्कूल परीक्षा 2004 में प्रविष्ट छात्रों की सूची

अनुक्रमांक	नाम	पिताजी का नाम
0964890	Abhinav Chib	Vinod Kumar Chib
0964891	Abhinav Omar	Jayram Omar
0964892	Abhishek Dixit	Krishna Chandra Dixit
0964893	Abhishek Dixit	Onkar Nath Dixit
0964894	Abhishek Dwivedi	Gaya Dutt Dwivedi
0964895	Abhishek Pal	Jai Bihari Pal
0964896	Abhishek Sachan	Ajay Kumar Sachan
0964897	Ajeet Singh Yadav	Santosh Kumar Yadav
0964898	Ajit Singh	Om Prakash Yadav
0964899	Akhil Kumar Tripathi	Rajendra Kumar Tripathi
0964900	Akshay Dwivedi	Shiv Bilas Dwivedi
0964901	Akshay Tripathi	Yogendra Tripathi
0964902	Aman Nigotia	Mahavir Nigotia
0964903	Amit Kumar	Krishna Dev
0964904	Anil Maurya	Man Chandra Maurya
0964905	Ankit Agnihotri	Santosh Chandra Agnihotri
0964906	Ankit Mishra	Rakesh Kumar Mishra
0964907	Ankit Singh	Viveka Nand Singh
0964908	Ankur Gupta	Batya Prakash Gupta
0964909	Ankur Kushwaha	Bhri Ram Kushwaha
0964910	Ankur Nigam	Vinod Kumar Nigam
0964911	Anubhav Mishra	Laxmi Kumar Mishra
0964912	Anurag Srivastava	Ram Shankar Srivastava
0964913	Anurag Tiwari	Vinod Kumar Tiwari
0964914	Arpan Awasthi	Arun Kumar Awasthi
0964915	Aseem Kulshreshtha	Subodh Kumar Kulshreshtha
0964916	Ashish Kumar	Navin Kumar Singh
0964917	Ashish Mishra	Alok Chandra Mishra
0964918	Ashish Kumar Pal	Ram Pal
0964919	Ashutosh Gupta	Raj Kumar Gupta

0964920	Ashutosh Kumar Singh	Mritunjai Singh
0964921	Avijit Dubey	Harish Chandra Dubey
0964922	Avinash Dubey	Sunil Kumar Dubey
0964923	Avinash Kumar	Vinod Thakur
0964924	Avtans Prabhat Singh	Prem Singh
0964925	Awadhesh Shukla	Triloki Nath Shukla
0964926	Azad Kumar Prajapati	Kripa Shankar Prajapati
0964927	Bharat Bhushan	Ramesh Chandra Sahu
0964928	Bhaskar Pandey	Madhusudan Pandey
0964929	Braj Kishor Pal	Om Prakash Pal
0964930	Deepak Saxena	Ashok Kumar Saxena
0964931	Deepak Tripathi	Baij Nath Tripathi
0964932	Deva Shish Singh	Sushil Singh
0964933	Dheeraj Agarwal	Rajeev Agarwal
0964934	Gaurav Singh Kushwaha	Vishwa Nath Singh
0964935	Gaurav Sachan	Siva Ram Sachan
0964936	Gaurav Singh bisht	Narain Singh Bisht
0964937	Govind Mishra	Pradeep Kumar Mishra
0964938	Hemant Gupta	Vijay Kumar Gupta
0964939	Himanshu Mishra	Kamalesh Kumar Mishra
0964940	Himanshu Shukla	Gyanendra Kumar Shukla
0964941	Himanshu Ujjawal Singh	Ravi Ranjan Kumar Singh
0964942	Indrajeet Vishwkarma	Chandra Shekhar Vishwkarma
0964943	Ishan Agrawal	Kamal Agrawal
0964944	Jagrat Gupta	Satish Chandra Gupta
0964945	Jeet Singh Arya	Mahendra Singh Sachan
0964946	Kaushalendra Singh	Mahendra Pal Singh
0964947	Kundan Kumar	Shailendra Mishra
0964948	Kush Porwal	Kashi Nath Gupta
0964949	Kushagra Gupta	Akhilesh Kumar Gupta
0964950	Lav Porwal	Kashi Nath Porwal
0964951	Madhur Sachan	Devendra Nath Sachan
0964952	Mahendra Kumar Pal	Brahma Dutt Pal
0964953	Maneesh Singh	Shiv Mohan Singh
0964954	Manish Kumar	Ram Naresh Yadav

0964955	Manvendra Singh	Surendra Singh
0964956	Mayank Tripathi	Uma Kant Tripathi
0964957	Mohan Singh Bhadauria	Virendra Singh Bhadauria
0964958	Munish Sharma	Prem Raj Sharma
0964959	Negendra Tiwari	Dinesh Chandra Tiwari
0964960	Narendra Yadav	Dipti Ram Yadav
0964961	Nikhil Katiyar	Ashok Katiyar
0964962	Nikhil Suman	Hemant Kumar Sinha
0964963	Nishith Tiwari	Suresh Kumar Tiwari
0964964	Nitin Pratap Singh	Upendra Singh
0964965	Nitin Shankar Singh	Shri Shankar Singh
0964966	Nitin Srivastava	Dhruva Kumar Srivastava
0964967	Paras Gupta	Vijay Kumar Gupta
0964968	Piyush Mishra	Prem Chandra Mishra
0964969	Pradeep Singh Parihar	Ram Naresh Singh Parihar
0964970	Pradyumn Bajpai	Satish Kumar Bajpai
0964971	Prafulla Sachan	Lalitesh Sachan
0964972	Pranav Bachan	Ramendra Singh Sachan
0964973	Praphullit Pandey	Narender Kumar Pandey
0964974	Prashant Mishra	Dinesh Chandra Mishra
0964975	Prashant Mishra	Mahendra Prasad Mishra
0964976	Prateek Pandey	Parmanand Pandey
0964977	Rahul Gangwar	Satyendra Singh Gangwar
0964978	Rahul Kumar Gupta	Choote Lal Gupta
0964979	Rahul Sachan	Randhir Singh Sachan
0964980	Ravi Bhusan Singh	Rama Bhankar Singh
0964981	Ravi Kant Dwivedi	Shiv Shankar Dwidevi
0964982	Ravi Katiyar	Surendra Narayan Katiyar
0964983	Ravi Singh Niranjan	Krishna Pal Niranjan
0964984	Ravindra Pratap Singh	Chhote Singh Kushwaha
0964985	Rishabh bajpai	Mahesh Chandra Bajpai
0964986	Rishi Kumar Rajpoot	Rambhuvan Singh Rajpoot
0964987	Rishi Raj Trivedi	Ravi Prakash Trivedi
0964988	Ritesh Agrawal	Shravan Kumar Agrawal
0964989	Rohit Katiyar	Suresh Babu Katiyar

0964990	Romil Kapoor	Omkar Narain Kapoor
0964991	Sachin Kumar Nigam	Krishna Kumar Nigam
0964992	Sagun Gupta	Om Prakash Gupta
0964993	Sarvesh Kumar	Shatrughna Prasad Singh
0964994	Sarvesh Kumar Pal	Mahadev Pal
0964995	Satyam Gupta	Santosh Kumar Gupta
0964996	Satyam Kushwaha	Vishwanth Singh Kushwaha
0964997	Saurabh Katiyar	Ram Kesh Katiyar
0964998	Saurabh Katiyar	Ranvir Singh Katiyar
0964999	Saurabh Katiyar	Surendra Chandra Katiyar
0965000	Saurah Katiyar	Suresh Chandra Katiyar
0965001	Saurabh Mishra	Vinod Kumar Mishra
0965002	Saurabh Shukla	Chandra Prakash Shukla
0965003	Saurabh Tewari	Mithlesh Naryan Tiwari
0965004	Saurabh Verma	Ashok Kumar Verma
0965005	Shantanu Sharma	Chandeshwar Sharma
0965006	Sharad Kashyap	Prem Kishor Kashyap
0965007	Shashank Gupta	Ashok Kumar Gupta
0965008	Shishir Mishra	Satish Chandra Mishra
0965009	Shivnath Singh	Omkar Nath Singh
0965010	Snehdeep Mishra	Shankar Pratap Mishra
0965011	Sudhanshu Kishore	Shiv Kishore Sharma
0965012	Sudhanshu Shekhar	Murari Prasad Singh
0965013	Sudhanshu Shukla	Laxmikant Shukla
0965014	Sumit Singh Kushwaha	Ram Prakash Kushwaha
0965015	Sumit Shukla	Raj Kumar Shukla
0965016	Sumit Kumar Yadav	Krishn Dev Yadav
0965017	Surya Prakash Shukla	Jagadish Prasad Shukla
0965018	Vaibhav Dwivedi	Rakesh Kumar Dwivedi
0965019	Vaibhav Tiwari	Ashok Kumar tiwari
0965020	Vipin Verma	Parmeshwar Deen Verma
0965021	Vivek Chaturvedi	Hanuman Parsad Chaturvedi
0965022	Vivek Katiyar	Har Prasad Katiyar
0965023	Yash Pandey	Jitendra Kumar Pandey
0965024	Yatendra Singh	Lal Bahadur Singh

✶

इण्टरमीडिएट परीक्षा 2004 में प्रविष्ट छात्रों की सूची

अनुक्रमांक	नाम	पिता जी का नाम
0381263	Abhinav Chaturvedi	Ram Pratap Chaturvedi
0381264	Abhinav Dwivedi	Ashok Kumar Dwidevi
0381265	Abhishek Dixit	Vishnu Dutt Dixit
0381266	Abhishek Gupta	Pramod Kumar Gupta
0381267	Abhishek Kumar	Umesh Chandra
0381268	Abhishek Pandey	Aditya Narayan Pandey
0381269	Abhishek Sharma	Anil Kumar Sharma
0381270	Ajay Pratap Singh	Shiv Pratap Singh
0381271	Ajeet Singh	Kishuna Lal
0381272	Akhand Pratap Singh	Shiv Kumar Singh
0381273	Akhil Chaturvedi	Ved Prakash Chaturvedi
0381274	Akhil Pratap Singh Pundhir	Arvind Kumar Singh Pundhir
0381275	Alok Kumar Mishra	Mahavir Mishra
0381276	Amit Dwivedi	Dinesh Chandra Dwivedi
0381277	Amit Kumar Gautam	Kailash Chandra Gautam
0381278	Amit Kumar Gupta	Shambhoo Dayal Gupta
0381279	Anand Narayan Patel	Subhash Chandra Patel
0381280	Anand Shukla	Dhani Ram Shukla
0381281	Ankit Arya	Ved Mitra Arya
0381282	Ankit Tiwari	Prakash Tiwari
0381283	Ankit Trivedi	Om Prakash Trivedi
0381284	Ankush Jain	Manoj Kumar Jain
0381285	Ankush Singh	Siya Ram Singh
0381286	Anoop Patel	Satish Babu
0381287	Anubhav Srivastava	Krishna Kumar Srivastava
0381288	Anuj Awasthi	Ram Krishna Awasthi
0381289	Anup Kumar Singh	Ram Murti Singh
0381290	Anurag Rajput	Virendra Kumar Singh
0381291	Apoorv Vajpayee	Rakesh Vajpayee
0381292	Arpit Gupta	Anil Kumar Gupta
0381293	Arpit Shivhare	Priysharan Shivhare
0381294	Arvind Partap Singh	Gyanendra Kumar Singh
0381295	Ashish Pal	Om Prakash Pal
0381296	Ashish Shukla	Ashwani Kumar Shukla
0381297	Ashutosh Katiyar	Onkar Katiyar
0381298	Ashutosh Verma	Rama Kant Verma
0381299	Avanish Pratap Singh	Narendra Singh

0381300	Avinash singh Pal	Kashmir Singh Pal
0381301	Bhupendra Kumar Pal	Ranveer Singh Pal
0381302	Deepa Singh Chauhan	Tej Bahadur Singh Chauhan
0381303	Deepak Singh Sengar	Anil Singh Sengar
0381304	Dharmendra Tiwari	Dinesh Chandra Tiwari
0381305	Dhruv Gupta	Arvind Kumar Gupta
0381306	Gaurav Bajpai	Rajesh Kumar Bajpai
0381307	Gaurav Katiyar	Suresh Chandra Katiyar
0381308	Gaurav Mishra	Rakesh Mishra
0381309	Gaurav Shrivastava	Yogendra Shrivastava
0381310	Gaurav Shukla	Rajendra Kumar Shukla
0381311	Girijesh Kumar	Chandrabhal Patel
0381312	Hari Partap Singh	Gyan Singh
0381313	Harsh Kulshreshtra	Subodh Kumar Kulshreshtra
0381314	Hemant Kashyap	Prem Kishor Kashyap
0381315	Himanshu Tiwari	Badri Vishal Tiwari
0381316	Jitendra Kumar Singh	Goti Ram
0381317	Kapil Singh Niranjan	Krishna Pal Singh
0381318	Krittivas	Subodh Sharma
0381319	Kshitij Kumar Dubey	Yogendra Kumar Dubey
0381320	Kuldeep Kumar	Beche Lal
0381321	Kuldeep Pandey	Raj Kumar Pandey
0381322	Kundan Singh	Ghanshyam Singh
0381323	Mohit Katiyar	Suresh Babu Katiyar
0381324	Naman Chaturvedi	Vimlesh Kumar Chaturvedi
0381325	Naveen Tiwari	Brijendra Kumar Tiwari
0381326	Neeraj Katiyar	Pratap Narayan Katiyar
0381327	Jeenraj Rajpoot	Siyaram Rajpoot
0381328	Nikhil Sachan	Ashok Kumar Sachan
0381329	Nikhil Srivastava	Dhruva Kumar Srivastava
0381330	Nitin Pal	Asha Ram Pal
0381331	Nitin Kumar Gupta	Krishna Narayan Gupta
0381332	Pahul Kamal	Hari Shanker
0381333	Pankaj Kumar Niranjan	Pradeep Kumar Niranjan
0381334	Pankaj Purwar	Pradeep Kumar Purwar
0381335	Pankaj Tiwari	Ganesh Prasad Tiwari
0381336	Pradeep Tripathi	Jagdish Narayan Tripathi
0381337	Prafulla Srivastava	Gyanendra Pratap Srivastava
0381338	Prashant Bhardwaj	Dinesh Bhardwaj
0381339	Prateek Shukla	Nand Kumar Shukla
0381340	Prateek Singh	Babu Ram Kushwaha

0381341	Prateek Singh	Raghvendra Singh
0381342	Praveen Dubey	Anil Kumar Dubey
0381343	Praveen Kumar Agrawal	Raj Kumar Agrawal
0381344	Priyanshu Agrawal	Ravi Shankar Agrawal
0381345	Puneet Dubey	Ramesh Chandra Dubey
0381346	Rahul Agrawal	Rajeev Agrawal
0381347	Rahul Kumar Niranjan	Ashok Kumar Niranjan
0381348	Rahul Mishra	Kamlesh Mishra
0381349	Rahul Pathak	Satyendra Prakash
0381350	Ram Ji Shukla	Raj Narayan Shukla
0381351	Ranjeet Singh	Sheopujan Singh
0381352	Ravi Prakash	Raghvendra Kumar
0381353	Ritesh Agrawal	Ramesh Chandra Agrawal
0381354	Rohit Gupta	Jai Prakash Gupta
0381355	Sanchit Mishra	Shekhar Saran Mishra
0381356	Sandeep Kumar Gupta	Umesh Chandra Gupta
0381357	Sandeep Mishra	Kailash Nath Mishra
0381358	Saumya Dixit	Vinay Kumar Dixit
0381359	Saurabh Singh Niranjan	Man Singh Niranjan
0381360	Shailendra Porwal	Sudhir Porwal
0381361	Shashank Pachauri	Virendra Kumar Pachauri
0381362	Shaswat Dixit	Mahendra Dixit
0381363	Shubham Chaturvedi	Sadsharan Chaturvedi
0381364	Siddhrtha Tiwari	Ashok Kumar Tiwari
0381365	Snehil Tripathi	Brahma Prakash Tripathi
0381366	Somkant Mishra	Mahendra Prasad Mishra
0381367	Subodh Rajput	Rajaram Rajput
0381368	Sumit Jaiswal	Umesh Chandra Jaiswal
0381369	Surendra V.V.B Singh Chauhan	Ghanshyam Singh Chauhan
0381370	Suvesh Sachan	Arun Kumar Sachan
0381371	Utkarsha Mishra	Kapil Dev Mishra
0381372	Utkarsha Tripathi	Kamlesh Kumar Tripathi
0381373	Viashnavi Vivek	Radha Raman Prasad
0381374	Varun Gupta	Sushil Kumar Gupta
0381375	Vibhor Dwivedi	Amar Nath Dwivedi
0381376	Vijay Narayan Verma	Shiv Narayan Verma
0381377	Vinod Kumar	Trilok Narayan
0381378	Vishal Singh	Yogendra Bahadur Singh Chauhan
0381379	Yogendra Kumar	Nawab Singh

✶

हमारा आचार्य परिवार

1.	श्री ओमशंकर त्रिपाठी, एम०ए० (हिन्दी) बी०एड०	प्रधानाचार्य
2.	श्री प्रकाश नारायण बाजपेयी, एम०एस०सी० (जन्तुविज्ञान) बी०ए०	उपप्रधानाचार्य
3.	श्री राजेश कुमार शुक्ल, एम०एस०सी० (रसायनविज्ञान) बी०एड०	प्रवर आचार्य
4.	श्री रामतीर्थ मिश्र, एम०ए० (हिन्दी), बी०एड०	प्रवर आचार्य
5.	श्री हेमन्त कुमार शुक्ल, एम०एस-सी० (भौतिकी) बी०एड०	प्रवर आचार्य
6.	श्री कैलाश जोशी, एम०एस-सी० (गणित), एम०एड०	प्रवर आचार्य
7.	श्री बिहारी लाल मिश्र, एम०ए० (अंग्रेजी) बी०एड०	प्रवर आचार्य
8.	श्रीमती शारदाराव, एम०ए० (अंग्रेजी) बी०एड०	प्रवर आचार्या
9.	श्री आनन्द प्रसाद वर्मा, आई०जी०डी० (बाम्बे)	कला आचार्य
10.	श्री महेशचन्द्र श्रीवास्तव, एम०एस०सी० (गणित), एम०ए० (समाजशास्त्र) बी०एड०	आचार्य
11.	श्री दीपक राजे, बी०ए०, बी०एड०	आचार्य
12.	श्री सुभाषचन्द्र शर्मा, एम०ए० (भूगोल) बी०एड०, डी०पी०एड० व्यायाम विशारद	आचार्य
13.	श्री वीरेन्द्र सिंह पाण्डेय, एम०ए० (समाजशास्त्र), बी०एड०	आचार्य
14.	श्री गणेशशंकर बाजपेयी, एम०ए० (संस्कृत) बी०एड० शास्त्री	आचार्य
15.	श्री गया प्रसाद वर्मा, एम०ए० (अंग्रेजी), बी०एड०	आचार्य
16.	श्री सतीश चन्द्र गुप्त, एम०ए० (प्राचीन इतिहास, राजनीतिशास्त्र) एम०एड०	आचार्य
17.	डॉ० उमेश चन्द्र तिवारी, एम०एस-सी०, पी०एच-डी० (वनस्पति विज्ञान), बी०एड०	आचार्य
18.	श्री जगपाल सिंह, एम०ए० (भूगोल) बी०एड०	आचार्य
19.	श्री दिनेश सिंह भदौरिया, एम०एस-सी० (रसायन) बी०एड०	आचार्य
20.	श्री श्रीप्रकाश ओझा, एम०एस०सी० (भौतिकी), बी०एड०	आचार्य
21.	श्री प्रदीप वाजपेयी एम०एस-सी० (गणित)	आचार्य
22.	श्री सुधीर अवस्थी, एम०एस-सी० (रसायन) बी०एड०	आचार्य
23.	डॉ० मनोज शुक्ल, एम०ए० (संस्कृत) पी-एच०डी०	आचार्य
24.	श्री दुर्गेश वाजपेयी, एम०ए० (हिन्दी साहित्य), पत्रकारिता परास्नातक (IIMC)	आचार्य
25.	श्रीमती सीमा (बी०एस-सी०, ए० लेबिल) संगणक	आचार्या
26.	श्री ज्ञान प्रकाश वाजपेयी (एम०सी०ए०) संगणक	आचार्य

प्रबन्ध समिति

अध्यक्ष	-	डॉ० ज्ञान चन्द्र अग्रवाल, अ० प्रा० प्राध्यापक	कानपुर
उपाध्यक्ष	-	श्री कृष्ण गोपाल लाहोटी, व्यवसायी	कानपुर
मंत्री	-	श्री वीरेन्द्रजीत सिंह, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट	कानपुर
सहमंत्री	-	श्री यतीन्द्रजीत सिंह, व्यवसायी	कानपुर
सदस्य	-	श्री जयगोपाल जी, सामाजिक कार्यकर्ता	लखनऊ
		श्री जगमोहन गर्ग, उद्योगपति	गाजियाबाद
		श्री इन्दु प्रकाश रस्तोगी, अ०प्रा० प्रधानाचार्य	मेरठ
		श्री रामबालक मिश्र, अधिवक्ता	कानपुर
		श्री ओमप्रकाश भार्गव, व्यवसायी	कानपुर
		श्री प्रेमचन्द्र गुप्त व्यवसायी	कानपुर
		डॉ० देवेन्दु बहादुर सिंह, अ०प्रा० कर्नल	कानपुर
		श्री तरुण विजय, पत्रकार	नई दिल्ली
		श्री ओमशंकर त्रिपाठी, प्रधानाचार्य	कानपुर
		श्रीमती शारदा राव (शिक्षक प्रतिनिधि)	कानपुर
		श्री महेश चन्द्र श्रीवास्तव (शिक्षक प्रतिनिधि)	कानपुर

अन्तरताना ठिकाना (web site) - www. geocities.com/Pddusdv
या www.Pddusdv.org.
अणुडाक (e-mail) - Pddusdv@hotmail.com
नवीन प्रिंटर्स, कानपुर, दूरभाष - 2645966

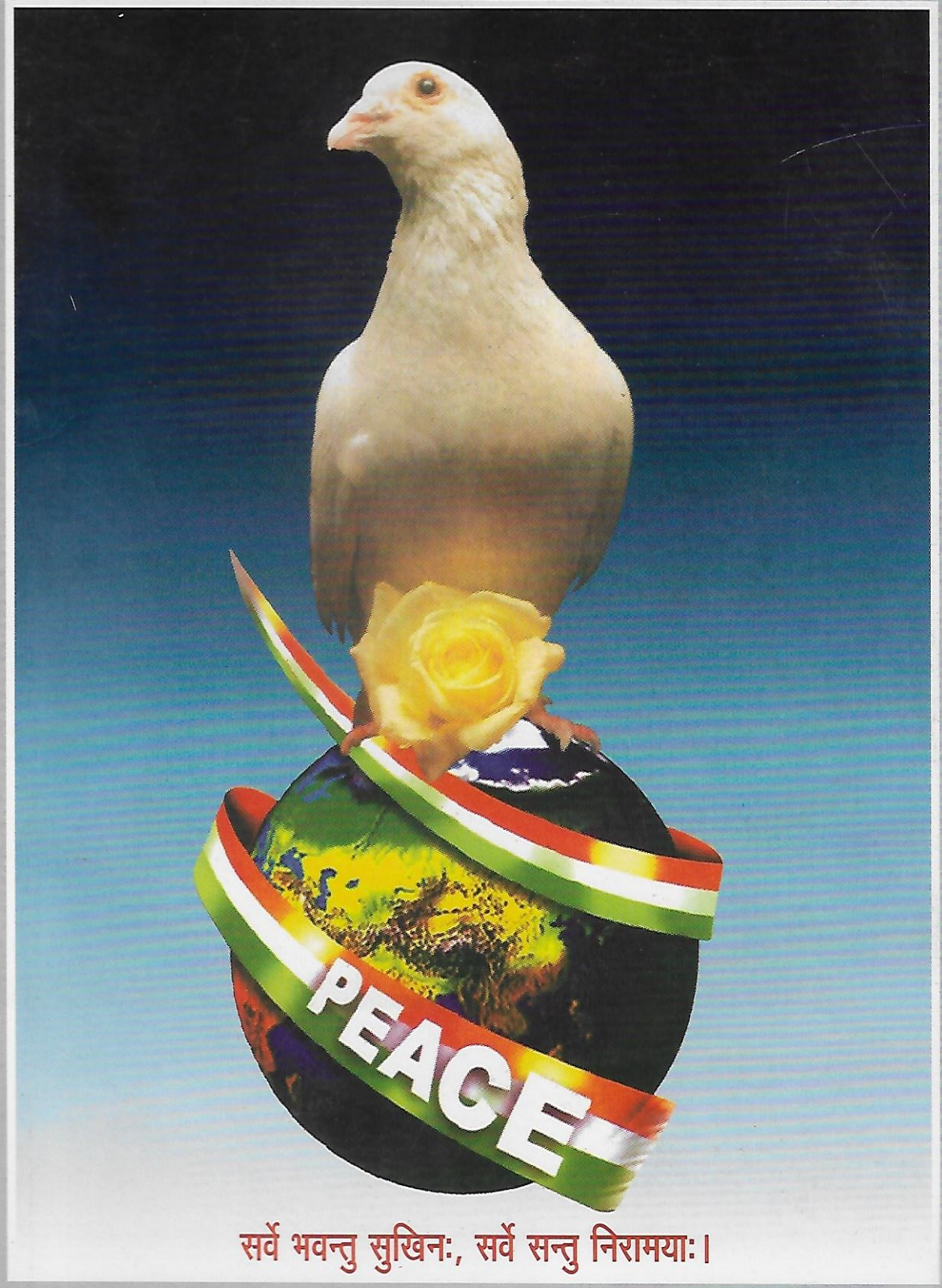

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

Naveen Printer Kanpur Ph : 2645966